श्री जैन तीर्थ निर्णय ग्रंथ.

तथा

उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काळ महात्म्य.

कर्त्ता,

विजापुरनिवासी

शा. सुरचंदभाइ स्वरूपचंद.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता,

शा. रतनचंद लाधाजी

तथा

झवेरभाइ भगवानदास

प्रगणे पेटलाद-मु० कावीठा.

अमदावाद.

श्री "जैन" प्रिन्टिंग प्रेसमां

शा. जेठालाल दलसुखभाइए छाप्यु.

संवत १९६५. वीर संवत २४३५. सने १९०९.

किंमत ०-८-०.

प्रस्तावना.

आ ग्रथमा शा शा अधिकार छे ते जे जीवो वाचशे ते समजी शकशे.

आ ग्रथमा द्रव्यानुयोग तथा अध्यात्म विषय मुख्यताथी छे. अध्यात्मज्ञाननु शास्त्राधारे सपूर्ण स्वरुप जाणवु सहेल नथी अध्यात्मग्रथनी शैली गहन छे द्रव्यानुयोगनु स्वरुप गीतार्थो विना पूर्ण सत्य कही शकाय नहि. तोपण यथामति शास्त्राधारे लखवा प्रयत्न कर्यो छे.

१ अध्यात्मशास्त्रमा अध्यात्मज्ञाननु वर्णन करता व्यवहारनयनी पुष्टि न थइ होय तेथी व्यवहारनयपक्ष दुहवाय तेम थाय एम थयु होय तो वाचको प्रसग अनुसरीने नयोनी मुख्यता अने गौणतानो विचार करशो

२ श्रीयशोविजयजी उपाध्याय आदि महापुरुषोना ग्रथोथी आ पुस्तकमा छद्मस्थ दृष्टिथी विरुद्ध जे काइ लखायु होय तेने सज्जनो सुधारशो श्रीयशोविजयजी उपाध्यायजी तथा श्री आनदघनजी तथा देवचद्रजी विगेरे सुविहित श्वेताबर आचार्योना करेला ग्रथोथी मति दोषथी विरुद्ध लखायु होय वा समजायु होय तो ते सबधी लेखकर्ताने असत्यनो आग्रह नथी

३ आ ग्रथमा निश्चयनयनु विशेष वर्णन छे तेथी आ ग्रन्थ पडित पुरुषोने वाचवा योग्य छे बालजीवो आ ग्रथ वांची यथार्थ लाभ मेळवी शके नहि पडित पुरुषो यथार्थ लाभ मेळवी शके जे जीवोए व्यवहारनयनी महत्ता जाणी छे अने व्यवहारनय कथीत धर्माचारमा स्थिर छे तेवा जीवोने अध्यात्मज्ञान थवामा आ ग्रन्थ उपयोगी थशे एम धारी आ ग्रन्थ रच्यो छे, तेथी सुज्ञो समजशे के व्यवहारमा व्यवहारनी महत्ता अने निश्चयमां निश्चयनी महत्ता छे. व्यवहार अने निश्चयनयमाथी कोइनु उत्थापन न थाय एम ज्ञानपूर्वक लेखकनी श्रद्धा छे

४ आ ग्रन्थमां दिगम्बरी पुरुषोना केटलाक ग्रन्थोनी शाख आपी छे. पण तेथी दिगम्बरोना ग्रन्थो के जे श्वेतांबर आम्नायना सूत्रो तथा ग्रन्थोथी विरुद्ध होय ते ते दिगबरोनी उत्सूत्रप्ररुपणा अमारे मान्य नथी.

५ आ ग्रन्थनी अंदर पंडित पुरुषोने वांचता जे कइ विपरीत लागे तो तेओ (लेखकने) जणावशे तो ते ते वातनो सुधारो बीजी आवृत्तिमां करीशु पुस्तक वाचता कोइने शका पडे तो पत्रद्वारा वा मलीने खुलासो करवो.

६ वाचकोने आ ग्रन्थनी भाषा उत्कृष्ट न लागे ते स्वाभाविक छे. अने वाक्य अशुद्धि पण कोइ कोइ स्थळे रही हशे. तोपण सार ग्रहण करनारा सज्जन पुरुषो सार ग्रहण करशे.

७ व्यवहार अने निश्चयनयनी शैलीथी जे कइ विरुद्ध समजायु होय, लखायु होय तेनी मन वचन कायाथी चतुर्विध संघ समक्ष क्षमापना इच्छुछु

८ आ ग्रन्थ जूनी शैली प्रमाणे लखायो छे, तेथी नवी शैलीना लेखको सार ग्रहण करशे; गमे ते शैलीमां सार होय तेने विवेकी ग्रहण करे छे.

९ जैनतीर्थ निर्णय प्रथम पानाथी पत्र २३२ सुधी छे, तेमा लखेलु स्वरुप सूक्ष्म वाची समजशे. पत्र २३३ थी उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी कालमाहात्म्य विषय शरु थाय छे ते ग्रन्थात पर्यंत छे, तेमा सर्व पुरुषो समजी शकशे.

१० सर्व जीवो आ ग्रन्थ वाची अनेकान्तमत समजी व्यवहार अने निश्चयनय पूर्वक ज्ञानदर्शन चारित्रनी आराधना करो. एज हिताकाक्षा छे–अर्ह सोऽहं३

आ ज्ञानसीतलविलास भाग पहेलो नामनो चोपडो छपावतां पहेलां अगाउथी पैसा आपनार भाइओ गुणना जाण, गुणना रागी, धर्मस्नेही ग्रहस्थोना नाम नीचे प्रमाणे छे:—

१००) भाइ मुळचद सरुपचद घणा प्रमोदे जीवता आपीने छपाववानु शरु कराव्यु.

१००) श्री भरुच परगणाना पादरीया गामना शा. साकरचंद नथुभाइ.
५०) दोशी. वेणीचद हीराचद थी वीजापुरना.
४०) शा सुरचद स्वरुपचद ग्रथ कर्त्ता.
५) बेहन मेनाना (सदर शा सुरचद स्वरुपचदनी दीकरी)
५) बेहेन माणकना (शा. पीतावर स्वरुपचदनी दीकरी)
३०) शेठ. दलसुखराम सरुपचद श्री वीजापुरना.
१०) भगत खुशाल वीठल गाम धमराड परगणे श्री दासोदना.

३४०)

ए प्रमाणे मदद करीने आ ग्रथनी ५००) नकल छपावी छे.

आ चोपडी नीचेना ठेकाणेथी मळी शकशे

१ विजापुर शा सुरचद स्वरुपचद
२ अमदावाद शा. नेमचदभाइ नगीनदास ठे. झवेरीवाडे वाघणपोळ.
३ शा रतनचद लाधाजी. गाम कावीठा, परगणे पेटलाद
४ वकील मोहनलाल हेमचद मु पादरा (वडोदरा)
५ शा. डाह्याभाइ पीतांबरदास मु. पालेज. (परगणे भरुच)

आ ग्रथमा दृष्टि दोषथी अथवा त्वरीत दोषथी न समजी शकाय तो शुद्धिपत्रक प्रमाणे सुधारी तपासीने वांचशो.

ज्ञाननी अशातना न थाय अने घणा माणसो लाभ लेइ शकेए हेतुथी आ ग्रथनी कीमत मात्र आठ आना राखी छे ने ए रीते जे रकम उत्पन्न थशे ते ज्ञान खातामा वपराशे, साधु शा रीने तेमज जैन पुस्तकालयोने विनामुल्ये आपवामा आवशे.

अनुक्रमणिका.

पृष्ठांक   विषय.

उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी कालमहात्म्यग्रंथनी अनुक्रमणीका.

२५९ प्रथम दुःख अने पछी सुख तेनु कारण जणाव्यु छे.
२६३ अजितनाथथी वीरस्वामी थया त्या सुधी त्रेवीस तीर्थकरनो अधिकार आंतरा साथे दर्शाव्यो छे.
२७३ आ वर्तमान चोवीसी अने आवती चोवीसीना तीर्थंकरोना वचमा कालना आंतरा पण तेनो यत्र दर्शाव्यो छे.
२७९ पाचमो आरो एकवीस हजार वर्षनो दुःषम नामे छे तेनु सविस्तरे स्वरुप जणाव्यु छे
२८५ पाचमा आरामा रात्रीने विषे चन्द्रसमान प्रकाश करवावाला महामुनि थशे-थया तेमनी स्तुति करी प्रमोद भावना भावी छे
२९८ छठो आरो एकवीस हजार वर्षनो दुःषम कह्यो छे, ते दुःख उपर दुःख केवी रीते आवी पडशे तनी व्याख्या करी छे अवसर्प्पिणी कालना छ आरानी समाप्ति करी छे
३००, उत्सर्प्पिणीकालना छ आरानो भाव कह्यो छे
३०४ पाच भरत, पाच ऐरवत ए दश क्षेत्रमा मनुष्य अने तिर्यंच पचेंद्रि जीवोना समुदायने सुख दुःख अनुभवाय छे ते आश्रीने सामान्य विशेषता कही छे.
३१० पूर्वनु प्रमाण जणाव्यु छे.
३१० पल्योपमनु तथा सागरोपमनु स्वरूप जणाव्यु छे
३१२ जीवोनी गति आगति विस्तारीने कही छे.
३२५ निगोदनु स्वरूप सक्षेपे गवेषीने कह्यु छे.
३२९ कायस्थितिनी व्याख्या विस्तारे करी छे.
३४९ सात भयनी व्याख्या तेमा प्रथम आजवना भयनु निवारण कथन कर्यु छे.
३५२ बीजो परलोक भय तेनु निवारण कथन कर्यु छे
३५३ त्रीजो मरणभय तेनु निवारण कथन कर्यु छे
३५५ चोथो वेदना भय तेनु निवारण कथन कर्यु छे
३५७ पाचमो अनरक्षाभय तेनु निवारण कथन कर्यु छे
३६० छठो चोर भय तेनु निवारण कथन कर्यु छे
३६३ सातमो अकस्मात भय तेनु निवारण कथन कर्यु छे
आ वर्त्तमान अवसर्प्पिणी काळे त्रेसठ सलाका पुरुष थइ गया तेमनो यत्र दर्शाव्यो छे
' आ वर्त्तमान चोवीसीनो त्रेवीस बोलनो यत्र दर्शाव्यो छे.



श्री जैन तीर्थ निर्णय.

॥ दुहा ॥

नमुं वीर जीनेंद्रने, तीरथ वर्तक सार,
दिये देशना त्रिपदी, ग्रहे गुण गणधार. १
लब्धि क्षयोपशम नाणथी, स्वभाव भानु प्रकाश,
महुरतमां द्वादश रचे, सूत्र पूर्ण उल्लास २
नयो द्रव्य पर्यायनुं, ज्ञान अति गंभीर,
स्वयंभू रमण समुद्रनो, पार लहे थइ धीर. ३
संघ चतुर्विध तीरथनुं, स्थापन त्यां कहेवाय,
जैन तीरथ निर्णयतणो, भाषा ग्रंथ लखाय. ४
अल्प बुद्धि में आदर्यो, देजो भारती साह्य,
जीन वाणि निरंतरे, प्रणमु धरि उछाह. ५

जैन तीर्थ कहेता साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध सघ ते सर्वे आत्म सत्ताना ग्राहक छे परंतु आत्मसत्ता ग्राहकमां आवती नथी तेनु कारण ए छे के अनादि सबधे आत्मसत्ता कर्मे करीने अवराइ गइ छे दबाइ गई छे ने उदय जोगे हणाइ गइ छे ते कर्म प्रकृतिना मूळ आठ भेद छे तेमा चार घाती छे ते आत्माना गुणनी घात कर्ता छे. ने चार कर्म अघाती छे ते आत्माने शुभाशुभ

सुख दुःख दाता ठे जे घाती कर्म ठे तेमा ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी ने अतराय ए त्रण कर्मनो क्षय उपशम थाय ठे वळी क्षय पण थाय ठे ने चोथु मोहनी कर्म ठे, तेनो क्षय उपशम थाय ठे, उपशम थाय ठे, ने क्षय पण थाय ठे ए क्षय उपसमादी भेदो कह्या ते जोगे श्रावकनो ने सजतीनो धर्म सपजे, ते विना न लाधे तेमा क्षय उपसमना वे भेद, एक अज्ञान जोगनो ने अज्ञान जोगनीश्रानो बीजो ज्ञान जोगनो ने ज्ञान जोगनी श्रानो, हवे अज्ञान जोगनो क्षय उपसम तेना त्रण भेद, मती अज्ञाननो, श्रुत अज्ञाननो ने बीभग ज्ञाननो, ए त्रण भेदो अज्ञानना क्षय उपसमना कह्या ते मीथ्यात्वी देवता नारकीने तो गती प्रत्ये त्रणे भेदो लाधे ठे, ने मनुष्य, तीर्यंचने गती प्रत्ये प्रथमना वे भेदो लाधे ठे, परतु अज्ञाननो क्षय उपसम पण वीचीत्र प्रकारे ठे, ए जोगे वृद्धी पामे, उत्कृष्टता पामे, तो मनुष्यना भवमा केटक उत्सुत्र अन्नापकपणा सुद्धी पहोंचे ठे वळी तेहेन दीपक समकीत पण कह्यु ठे, गती आश्रीने देवगतीए, नवमा ग्रीवेके, जघन्य त्रीस ने उत्कृष्ट एकत्रीस सागरोपमना आयुष्यनी त्या स्थीती ठे ने स्थीतीनो बोभागी ग्राहक थाय ठे, वळी भव्य जीवने बोध बीजनी प्राप्तिनो जावत् मोक्षनो हेतु थाय ठे, एटला सुधी अज्ञान जोग ने अज्ञान जोग नीश्राए, एटले अज्ञान जोगने दीपक समकीतनी द्रव्य चारीत्रनी, तपनी नीश्रा ठे, ते नीश्राए वृद्धी पामता अनत्री पण आवे ठे, यथा प्रव-

तींकरण सुधी आवे साते कर्मनी स्थीती अधीकताने छेदी एक कोडा कोडी सागरोपमनी राखे त्यां सुधी पोचे. परतु उपर अज्ञान जोगनी उत्कृष्टता कही छे तेमा एक अंशे उंगाश छे ते कहु छुं अपूर्व करण जे वीजुं त्यां पण अज्ञान जोग कहेवाय कारण के ग्रथी भेद न थयो त्यां सुधी अज्ञान जोग छे ग्रंथी भेद थयां समकीत कहीए त्यां ज्ञान जोग कहीए ते ग्रंथी भेद वीजा करण अते थाय छे ने समकीत त्रीजा अनीवरती करणे प्रास छे

यतः कह्युं छे के—

जागंठीतापढमं गंठिं समइ उर्उभेववीअं।
अनिअट्टिकरणंपुण सम्मत्तपुरखमे जीवे॥१॥

परतु वीजा अपूर्व करणे कोण आवे छे के जे शुकल पक्षीउ जीव छे ने ससार स्थीती अर्ध पुदगल परावर्तननी मांहली कोरे रही छे अधीक नथी ते आवे छे वीजा न आवे एम छे ए अज्ञान जोगने अज्ञान जोग नीआनो क्षय उपसम उतकृष्ट भांगे कह्यो ते आत्म हेतु नथी. पुदगलीक सुख हेतु छे. एटले पून्य वंधनो हेतु छे ने क्षय उपसमनी हानी ते दु.ख हेतु एटले पापबध हेतु छे

गाथा.—

विरयासावज्जाउ कसायहीणामहाव्रयधरावि
सम्मदिट्ठीविहूणा कयाविमुक्खं न पावंति. १

हवे ज्ञान जोग कहु छु ज्ञानावरणीना क्षय उपसम जोगे अर्थी भेद थयो चोथा गुणगणाथी ज्ञान जोग कहीए ए क्षय उपसम भावे ज्ञान जोगना चार भेद मतीज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधी ज्ञान, मन• पर्यव ज्ञान ए चार भेदो कह्या तेमा प्रथमना त्रण भेद समकीती देवता नारकीने गती प्रत्ये लाधे छे ने समकिती मनुष्य त्रीयच सन्नीने प्रथमना बे भेद गती प्रत्ये लाधे छे ने उपरना भेद केटकने गुण प्रत्ये लाधे ए भेद कह्या तेमां प्रथम मती ज्ञानना अठा• वीस भेद कहु छु मती कहेता बुद्धी एटले जाणवारूप प्रकाश शक्ती ते आत्मानो सद्भाव छे परतु कर्मबध आ वर्णे करीने उदय जोगे आमी भींत समान प्रकाश शक्ती हणइ गइ छे ते पोते पोताथी जाणी न शके माटे क्षय उ- पसमनी साजे भींतमा जाळी बारी फांका पराय अजवालुं करता आत्माने पांच इंद्रीने छठु नोइंद्री जे मन ते जाण- वाने नीमीत कारण छे ते नीमीतनी नीश्राये वजनावग्रह अर्थावग्रह, इहावग्रह, अपायावग्रह ने धारणावग्रह ए पांच भेदो कह्या तेनो अर्थ कहु छु वजना ते फरसइंद्री, रस इंद्री, घ्राण इंद्री ने श्रोत इंद्री ए चार इंद्रीने कही तेमा श्रोत इंद्री ते कानमें शब्द आवीने पके छे घ्राण इंद्री में गध आवीने पके छे, रस इंद्री ते जीभमा रस पके छे, फ- रस इंद्री ते त्वचा तेमा फरस पके छे ए चार इंद्री छे, ते प्राप्यकारी छे, ने चक्षु ने मन ए बे अप्राप्यकारी छे माटे तेमा वजनपणानो असभव छे ने बाकीनी चार इंद्री उपर

कही ते प्रमाणे तेमां वंजनपणुं लाधे माटे प्रथम वंजनना चार भेद अवक्तव्यपणे थया हवे बीजो भेद अर्थाअवग्रह कहुं छुं ते वक्तव्यपणे जाण्युं जे मने फरस थयो, स्वाद लाग्यो, गध आवे छे, शब्द सांभळीए छीए ए चार ने पांचमो चक्षुथी देखे ने छठो चींतवणा ए मनमां जाणीए ए छ भेद अर्थावग्रहना कह्या एटले दश भेद थया हवे इहा अवग्रह त्रीजो भेद कहु छुं इहा एटले वीचारणा शक्ती तेने इहा कहीए ते वीचारे जे फरस तो थयो पण शेनो फरस छे उंदरनो छे के सर्पनो छे वळी स्वाद तो लाग्यो पण खारो छे वा खाटो छे के मधुरो छे वळी मधुरो तो खरो पण दराखनो छे वा साकरनो छे वळी गध आवे छे ते सुरभी छे के दुरभी छे सुरभी छे तो चंपानो के केवडानो छे वळी चक्षुए देखीए छीए ते मनुष्य छे वा तीर्यंच छे के घउ बाजरी आदे छे वळी शब्द सांभळीए छीए ते सर्प बोले छे के होलो बोले छे वली मनसु वीचारे के एम तो नही पण आम छे, ए छ भेदे इंद्रीनो इंद्रीना वीषयनी वीचारणा गवेखणा करवी तेनुं नाम इहा कहीए ते इहानो छ भेद भेगा करतां सोल भेद थया हवे चोथो अपायाअवग्रह कहुं छुं अपाया एटले नीश्चय कर्यो के आ सुवाळो फरस ते सर्पादीकनो छे ने उष्ण फरस ते अग्नीनो छे वा खारु ते लूण छे ने तीखां ते मरचां छे वळी जे सुगधी आवे छे. ते अमूक वस्तुनी छे, वली देखीए छीए ते कीडी छे वा कंथवो छे सांभलीए छीए ते शब्द नगारानो छे वा सारंगीनो

ठे वली मनसु नीश्चय कयो के आ वात आमज ठे ए ठ भेद अपायावगृहना कह्या ते भेगा करता वावीस भेद थया हवे पाचमो अवग्रह धारणा ठे, ते जे ए ठ भेदे वस्तुनु जाणपणु थयु ते घणा काले पण भूले नही काम पमे क्षय उपसम पूर्वक सरयात असख्यात काळ सुधी यादी रहे ठे,ए धारणाना ठ भेद भेगा करता मती ज्ञानना अगवीस भेद थाय, ते गवेखीने कह्या सो अगवीस भेदोना प्रत्येके एक एक भेदना वहु, अवहु, वहुवीध, अवहुवीधादी, वार वार भेदो थाय ठे ते कहुतु वहुश्रुत गीतारथनी देशना साभलवा अनेक भाइउ वाइउ आवे ठे, गीतारथ महा मुनी करूणाना सागर भव्य जीवने तारवानी वुद्धि-ए नय गर्भीत वचनो वरसावता ठता मेघाकवर नाद धुनीए गाजता थका उपदेस करे ठे, भव्य जीवोनो समुदाय साभळे ठे ते मधे क्षयो पसमनी वीचीत्रताए क-री केइ एक जीव घणा शब्द ग्रहे, ते पहेलो भेद वहु, ने केइ एक जीव थोमा शब्द ग्रहे ते वीजो भेद, अवहु केइ एक जीव एक एक शब्दना परमार्थने स्यादवाद पद्धनी अने कातताने जाणे ते त्रीजु वहुवीध केइ एक जीव थो-मा भेद शब्दार्थ पुर्वक जाणे ते चोथु अवहुवीध केइ-एक जीव वचन श्रवण थताज भावार्थने समजे, ते पाचमु क्षीप्र, कइएक जीव हेतु दृष्टाते समजाव्या समजे, ते ठठु अक्षीप्र, कइएक जीव उच्चारणनी पटुतादि जोइने उपदेश कर्ताने पर्मीत माने ते मातमु सलींग, कइएक जीव पुर्वा-

पर अवीरोधीपणु वस्तुगते वस्तुपणानी प्ररुपणा नय नय पक्के ज्ीन्न ज्ीन्न अपेक्षा हेय ते हेय, उपादेय ते उपादेय, साधक ते साधक, वाधक ते वाधक, नीर्जरानुं कारण ते संवर, ने वंधनु कारण ते आश्रव, सकाम नीजरा ते मोक्षनुं कारण, ने वंध ते ज्ञवज्रमण एम यथास्थीत वोध उपयोगी क ज्ञाव जोइने वचननी पटुतानी अपेक्षाने राखता उपदेश कर्ताने पंन्मीत माने ते आठमो ज्ेद अलींग, केइएक जीव उत्तर प्रती उतरे सकाने ठेदे नही असंकीत थाय नही थीर ज्ञावे श्रधा करे नही ते नवमुं, सदीग्ध, केइएक जीव संका संदेहनी पुच्छा करी टाळी असंकीत थइ, थीर ज्ञावे श्रधा करे ते दशमुं असदीग्ध, केइएक जीवने गुरुराए एकवार कह्युं ते जूले नही ते अगीयारमु ध्रुव, केइएक जीवने रोज शोखामण देवी पन्मे ते वारमु अध्रुव ए वारे वोलने पुर्वोक्त अठावीस ज्ेदोथी गुणाकार करतां त्रणसोने ठत्रीस ज्ेद मती ज्ञानना थया इत्यादि मति ज्ञानना घणा ज्ेदो ठे परतु ए ज्ेदो कह्या ते श्रुतनीश्रीत जाणवा, कारण के श्रुत ज्ञानना चउद अथवा वीस ज्ेद कहीएठीए ते द्रव्य थी उत्पत्ती आदी आश्रीने ठे, हवे मती ज्ञान ठे ते श्रुत ज्ञाननुं कारण ठे ने ज्ञाव श्रुत ठे ते मती ज्ञाननुं कार्य ठे तथा मती ते नीरक्षर ठे, ने श्रुत ते साक्षर ठे, नीरक्षर ते उच्चारण, जे वोलवु वचननुं प्रवर्ताववु तेना अज्ञावे नीरक्षर कहीए, ने वचन प्रवृती जोगे साक्षर कहीए, ते वचन प्रवृती मती ज्ञानादी मे नही ठे ए शकित तो श्रुत ज्ञा-

न मां छे, परतु मतीना अन्नावे श्रुत ज्ञानादी न्नेदो कोइ जीव पामेज नही ते कारणे मती ज्ञान मुख्य छे, परतु श्रुत वीना मती ज्ञानादी जे न्नेदो छे ते स्व अपेक्षीज हेतु छे, पर एटल बीजा जाण्ळे वाइळने उपगार न करी शके परने उपगार करवामा तो श्रुत ज्ञान वचन जोगे प्रवर्तावी योग्य जीवने हठ कदाग्रहथी मुक्त करी तत्व, अतत्वनो न्नेद जणावी सरक्षता मेलावी असकीत करी, अज्ञात पणु नी वारी, सम्यक संवेग ज्ञान सम्यक सवेगे दर्शन जे समकीत ते पमाके एटले ग्रंथी न्नेद करवानी शक्ति पामवी तेनो हतु थाय, ए उपगारनी बरोवरीमा वीजा घणा उपगार करीए ते ना आवे ए शक्ति श्रुत ज्ञानमा वचन जोगे छे, माटे श्रुत ज्ञान छे ते स्वपर अपेक्षी हतु छे, ते कारणे श्रुत ज्ञान मुख्य छे हवे श्रुत ज्ञानना चौद न्नेद कहे छे तमा प्रथम अक्षर श्रुतना त्रण न्नेद सज्ञाक्षर व्यजनाक्षर स्था लब्ध्याक्षर तेमा संज्ञाक्षर ते अढार प्रकारनी लीपी अक्षरना आकारे करी छे. ए पहेलो न्नेदने वीजो न्नेद व्यंजनाक्षर ते अकार आदि हकार पर्यंत वावन अक्षर मुखे उचारवा रूप जाणवो ए बन्ने न्नेदो अदपि अज्ञानात्मक छे तथापि श्रुतना कारण होवाथी उपचारें करी तेने श्रुत ज्ञाननी सज्ञा आपी छे हवे त्रीजो न्नेद लब्ध्याक्षर ते शब्द श्रवण तथा रूप दर्सनादिक थकी अर्थ परिज्ञान गर्न्नित जे अक्षरनी उपलब्धि ते लब्ध्याक्षर ए अक्षर श्रुतना त्रण न्नेद कह्या बीजु अनक्षर श्रुत ते. सिरकपन हस्त चालन प्रमुख. समस्याए

करी गमना गमनादिक मनना अभिप्रायनुं परिज्ञान एटले जाणपणु थाय तेने अनक्षर श्रुत कहीए त्रीजु संज्ञि श्रुत ते संज्ञा त्रण प्रकारनी छे दीर्घ कालिकी हेतु वादोपदेसिकी तथा द्रष्टि वादोपदेसिकी हवे तेहनी समज कहे छे अतीत अनागत घणा कालनु जे चितववु ते दीर्घ कालिकी सज्ञा सज्ञी पचेन्द्रीने छे, अने जे तात्कालिक इष्ट अनिष्ट वस्तु जाणीने प्रवृत्ति निवृत्ति ते हेतु वादोपदेसिकी संज्ञा विकलेन्द्रिय असंज्ञीने छे,अने द्रष्टि वादोपदेसिकी संज्ञा तो क्षयोपसम ज्ञाने करी सम्यक द्रष्टीने कही छे ए सज्ञी श्रुत कह्यु.

हवे चोथो भेद असज्ञी श्रुत ते इंद्रीयोना प्रयोगे बोध पामे तेने असज्ञी श्रुत कहीए, पांचमुं समकीत श्रुत ते अनेक कारणथी बोध पामी आतम स्वरूपनो जाण थइने ग्रथी भेद करे, तेने समकीत श्रुत कहीए, छठो भेद मीथ्या श्रुत ते अनेक वस्तुने जाणे पण आत्माने न जाणे, न ओलखे तेने मीथ्या श्रुत कहीए, सादी श्रुत, ते पांच भरत ने पाच ऐवरत ए दस खेतरमा अवसरपिणी, उत्सरपिणी काले जैनतीर्थ सुत्र सीद्धात प्रवर्ते एटले प्रथम तीर्थंकरने केवळ ज्ञानादी क्षायक भावनी लब्धी प्राप्त थाय, देव देवेंद्र मली समोवसरणनी रचना करे तीर्थंकर देव देसना देइ भव्यने बोध बीज पमाडी गणधर आदे चतुर वीधी सघनी थापना करे गणधर देव द्वादसागी सीद्धांत रचे त्या श्रुत ज्ञाननी आदी कहीए, ते सातमो भेद

कह्यो, ने आगमो भेद सपर्यवसीत श्रुत ते ए ती रथ जीनेंद्र देवनु पाट परपरागत चालता वीछेद पामे, तीहा ते अवसरे ते काळे सुत्र सीद्धांतनो अत आवे एटले नाश थाय तेने सपर्यवसीत श्रुत कहीए, नवमो भेद अनादि श्रुत ते पच महावीदेह क्षेत्रमा अनादी सबधे अवीछेदपणे सदा सर्वदा जैन तीरथ प्रवर्ते छे माटे अनादी श्रुत हवे दशमो भेद अपर्यवसीत श्रुत ते कोइ काळे जैन तीर्थनो वा द्वादसागी सुत्र सीद्धातनो महावीदेह क्षेत्रमां वीछेद थयो नथी, थवानो नथी ने आतरो पडवानो नथी माटे अपर्यवसीत श्रुत कहीए, अगीयारमो भेद गमीक श्रुत एटले सरखा पाठ आलावाए रच्यां छे, वाध्यां छे, द्रष्टीवाद प्रमुख सीद्धांतो ते सुत्रने गमीक श्रुत कहीए, बारमो भेद अगमीक श्रुत ते काळीक सुत्रनी पेरे सरखा आलावा सरखा पाठ न होय ते सुत्रने अगमीक श्रुत कहीए, तेरमो भेद अग प्रवीष्ट श्रुतने आचारगादी द्रष्टीवाद पर्यंत सुत्रने अग प्रवीष्ट श्रुत कहीए चउदमो भेद ते अगबाह्य बार उपागादी छेद पयन्ना मुळ नदी अनुयोग आदे सुत्र सीद्धांत तथा ग्रथ प्रकरणादी सर्वेने अगबाह्य श्रुत कहीए ए श्रुत ज्ञानना चउद भेद कह्या हवे अवधि ज्ञान कहु छु तेना विशेष अपेक्षाए असख्याता भेद छे ने सक्षेप छ भेद कह्या छे तेमा पहेलो भेद अनुगामी ते जेने जे स्थानके अवधि ज्ञान उपज्यु छे ते स्थानकने छोडी देश देशांतर ज्या जाय त्या पोताना चर्म चक्षुनी पेठे साथे आवे तेने

अनुगामीक अवधी कहीए बीजो भेद अनानुगामी ते जे
ने जे स्थानके अवधी ज्ञान उपज्युं छे. ते स्थानकेज पो-
ताना क्षय उपसम पूर्वक खेत्रनी मरजादा पूर्वक जाणे
देखे ने ए खेत्रने छोडी अळगा थाय त्यारे न जाणे न देखे
पाछा उत्पति स्थानके आवे त्यारे जाणे देखे एम ए ज्ञान
क्षेत्र आश्री प्रत्येक क्षयो उपसमना लीधे घरना दीपकनी पेठे
उत्पत्ति स्थानकेज प्रकाश करे बीजे न करे तेने अनानुगामीक
अवधी कहीए त्रीजो भेद हीयमान ते क्षयोपसमनी विसु-
द्धी जोगे अवधी ज्ञान उपजे ते क्षय उपसम बाह्य भाव
बाह्य रमण जोगे अवराती थकी हांणी पामे ते कारणे ज्ञान पण
हानी पामे तेने हीयमान खीण पामतु अवधी कहीए चोथो
भेदवर्धमान ते अवधी ज्ञान उपज्यु त्यांथीज वर्धी पामे जेम
अग्नी सळगी छे तेमां सर्पण नाखता जाइए तेम तेम अ-
ग्नी वर्धी पामती जाय छे तेज दृष्टांते अंतगत अंतर रमण
जोगे क्षयो पसम वर्धी पामे छे तेज कारणे ज्ञान पण वर्धी-
ने पामतुं जाय छे तेने वर्धमान अवधी कहीए पांचमो
भेद लोका अवधी ते जावत समय लोक चउद राज प्रमा-
ण जाणे देखे तेने लोका अवधी कहीए ए पाच भेद क-
ह्या हवे छठो भेद परमा अवधी अप्रतीपाती छे ते एक अंतर
महुर्तेज केवळज्ञान पामे तेने उपजे छे ते ज्ञाने समय लोकने
अलोकमां लोक प्रमाण असंख्याता खंम कल्पव्यापणे जाणे
देखे एटली सत्ता मरजादा परमा अवधीज्ञाननी छे परंतु ए ज्ञान
पाम्या ते बहुधा उपयोग करता नथी. कारण के श्रे णीगते

आठमा गुण गणाथीज अवधी मन पर्यवनो उपयोग नथी ने एक अतर महुरतमां तो केवलज्ञान प्रगट करवु ठे ते केवळज्ञान तो तदगत न्नावमे परिणाम पामता एकत्र शुद्ध स्वरुप अनुन्नवता प्रगटे ठे माटे ऊपयोग तो न करे पण सातमा अपरमतस्थानके उपजे ते आठमे जइ क्षपक श्रेणी मांमी सुकल ध्यान जोगे घातीकर्म हणी केवलज्ञान पामे एम सन्नवे ठे ए अवधी ज्ञानना ठ न्नेद कह्या ए अवधीज्ञानने अवधीदर्शननी नीश्रा ठे तेथी ज्ञाने करी जाणे ने दर्शने करी देखे वळी इडीनो इडीआदीकनी अपेक्षा वीना प्रत्यक्ष प्रमाणे स्पष्ट उतकृष्ट न्नागे असरयाती उसरपिणी, अवसरपिणी पर्यंत अतीत अनागतकालने जाणे ने देखे ठे

हवे मनपर्यव ज्ञान कहु ठु मनपर्यव ज्ञान एक मनुष्यना न्नवमाज सजतीपदे अप्रमत, सातमा गुणठाणे उपजे ठे ते परन्नवे साथे पण जतु नथी तेना वे न्नेद ऋजुमतिने वीपूलमती ऋजुमती ते त्रीठु मनुष्य क्षेत्रमा अढीद्वीप लगे ने उर्व जोतशी पर्यंत अधो पहेली रत्नप्रन्ना नरकना क्षूलक परतर लगे एम उचु नीचु अढारसो जोजनमा रह्या जे सज्ञी पचेंडी जीव तेना मनोगत चितवीत न्नावने जाणे ने वीपूलमती अढी अगूळ खेत्र अधीक परतु विशुद्धिपणे विस्तारे जाणे ठे उतकृष्ट न्नागे एक पल्योपमनो असरयातमो न्नाग अतीत अनागत काळने जाणे देखे ठे ए मनपर्यव ज्ञानना वे न्नेद कह्या एटले क्षय

उपसम भावे, त्रण अज्ञानने चार ज्ञान कह्या ते ज्ञानमां मतीना अठावीश श्रुतना चौद,अवधीना छ, मनपर्यवना वे, मळी चार ज्ञानना पचाश भेद कह्या तेमां जे ज्ञान छे ते विशुद्धीपणे यथार्थ, जाणे छे ने जे अज्ञान छे ते मलीन छे तेथी वीपर्यासपणे अवळाने, सवळु ने सवळाने अवळु एम बहुधातो विप्रीत जाणे छे ते अज्ञानी पण क्षयो,ज्ञापसमनी अधीकता पामतां जातीस्मरण मतीज्ञाननो भेद छे, ते पामे छे ते ज्ञाननी सता उतकृष्ट भागे अतीत एटले गया कालना सज्ञी पचेन्द्रीना सख्याता भव पोताना जाणे छे परंतु अवधी दर्शनना अभावे देखे नही ए क्षयो उपसम भावे ज्ञान अज्ञानना भेद समुदाये कह्या परंतु सर्व जीवने प्रथम अज्ञान मीथ्यात्व होय छे तेनो नाश थतां ग्रंथी भेद पूर्वक चोथु गुण ठाणु पाम्या समकीत कहीए, त्यां ज्ञान कहीए, ते ज्ञान प्राप्तीनो हेतु मतीश्रुत अज्ञाननो क्षय उपसम जातीस्मरण आदे छे विभग नथी ए कारणनी अधीकता पामता मतीश्रुत आदे ज्ञान पामीए परंतु केवलज्ञान पामवुं तेनो हेतु कोण छे तो मतीश्रुत ज्ञान छे. अवधी मनपर्यव नथी कारण के केवल ज्ञाननी प्राप्ती श्रेणीगते शुकल ध्यान ध्यातां थाय छे ने त्या अवधी मनपर्यव ज्ञाननो उपयोग करता श्रेणी वा शुकल ध्यान नजीक पण आवतु नथी पुठ करे छे माटे, केवलज्ञान प्रगट करवानु कारण तो मतीश्रुत ज्ञान छे ते मतीश्रुत ज्ञानना क्षय उपसमना समुदाय वे भेद एक प्रतीपाती वीजो अप्र-

तीपाती प्रतीपाती ते ज्ञान जोग वृद्धी पामेलो आवरण उदयागत प्राप्त थये छते हणाइ जाय ने जमता वृद्धी पामे ते क्षयो पसमने प्रतीपाती कहीए. हवे अप्रतीपाती ते क्षय पसम ज्ञान जोगमा ज्ञानावरणी कर्म प्रकृतीनो क्षय पसम थयेलो छे एटले आत्माना असख्याता प्रदेश छे तेमा जे जे आत्म प्रदेशथी, आवरण उदयागत वीपाके प्राप्त थ-यां तेने क्षयो 'पसम चले खेरव्यां एटले नीर्जयां ने जे जे आत्म प्रदेशथी उदयागत आवरण प्राप्त न थयां तेने उपस आव्या,(एटले दबाव्या) तेनुज नाम क्षय उपसम छे त्यां सत्ता ए रहेला आवरण क्षपक श्रेणीगते भेद ज्ञाननी, अनती शक्ती आठमा अपूर्व, गुणठाणे पामता आत्माना सर्व प्रदेशोथी घातीकर्मनां आवरण चलायमान करी मुकयां छे ते उदयागत प्राप्त थइने सामा आवे तेने पोताना ज्ञान जोगने अबाधा पूर्वक पोते हणे छे (नीर्जरे छे) एम करता करतां आत्माना असंख्याता प्रदेशे रहेला घाती कर्मना आ-वरण प्रकृती दल छेवटे खुटे एटले आत्माना असख्याता प्रदेश घातीकर्म रहीत (नीरावरण थाय) त्यीहा केवलज्ञान प्रगटे ते केवलज्ञाने द्रव्यथी अरुपीने रुपी, क्षेत्रथी लोकने अलोक, कालथी, अतित अनागतने, वर्तमान, भावथी उत्प-त्ति वीनासने ध्रुवपणे समस्त पदार्थने केवल उपजे तेज स-मे जाणे तेने केवलज्ञान कहीए, देखे तेने केवल दर्शन कहीए ते केवलज्ञान, केवल दर्शननी प्राप्तीनो हेतु रुप उ-पसमभावनो अप्रतीपाती मतीश्रुत ज्ञान जोग उपर कह्यो

छे ते अप्रतीपाती ज्ञान जोगने चर्म शरीरी एटले छेले भवे सर्वे जीवो पामे छे. ए ज्ञान जोग समुदाये पांच भेदे परिपूर्ण कह्यो परंतु नीश्राविना परिपूर्ण थाय नही ते ज्ञान जोगने समकीतनी चारित्रनी अने दानादीक पाच लब्धीनी नीश्रा छे ते आत्मीक जाणवी तेमां प्रथम समकीतनी कहुं छुं. ते समकीतना वे भेद, एक वहेवार बीजो निश्चे,तेमां प्रथम, व्यवहार समकीत, ते त्रण तत्वनी श्रद्धा,देवनी,गुरुनी ने धर्मनी, तेमा प्रथम देव तत्वनी कहुं छु. देव ते वितराग [अरिहृत ने सिद्ध] ए सीवाय बीजाने विषे देवपणु न माने एटले मोहनी कर्मनो सत्ताथी उछेद थया क्षीण मोह बारमा गुण ठाणेथी वीतराग कहीए ने ज्ञानावरणी दर्शनावरणी ने अंतराय ए त्रण कर्मनो वीतराग भावे क्षय करतां चोघाती कर्म अभावे अढार दोषे रहित थया बार गुणे वीराजमान केवलज्ञान केवल दर्शन यथाख्यात चारित्रने क्षायक समकीत वली क्षायक भावनी दानादी पाचलब्धीवंत सजोगी तेरमे ने अजोगी चउदमे गुणठाणे वर्ते तेमने अरिहंत कहीए वली देहातीत रुपातीत जोगातीत अरुपी अटल अवगाहनावत अव्याबाध सुखना भोगी अगुरु लघु परजायवंत नीरंजन नीराकार अलख अगोचर अचल अविनाशी जोती स्वरुपी अनंत गुणपर्याय प्रगट वक्ती रुपे एकमां अनेक अनेकमें एक लोकाग्र भागे सादी अनंत भांगे स्थीर रह्या. तेमने सिद्ध भगवान कहीये. एम द्रढ श्रद्धा छे जेने तेहने देव तत्वनी प्रथम श्रद्धा कहीए.

हवे गुरु तत्व उलखावु छु गु, कहेतां जे पाप एटले द्रव्यभाव दु भेदे हींसा, मृषा, अदत्त, मेथुन, ने परिग्रह, ए पांच दुःस भेद पापना थया, ते ओलखावु छु, पहेलु पाप तो हींसा छे, तेना बे भेद, द्रव्यहींसा, भावहींसा, द्रव्यहींसा ते त्रसथावर जीवना द्रव्य प्राण हणवा ते द्रव्य हींसा कहीए, ने भाव हींसा ते मीथ्यात्व, अज्ञान, कषाय, जोगे आत्माना भाव प्राणज्ञान दर्शन, चारीत्र आदे हणाय छे, ते भाव हींसा कहीए, ए बे भेदे प्रथम पाप कह्यु, हवे बीजु पाप, मृषावाद छे, तेना बे भेद, १ द्रव्यभाव, २ द्रव्य मृषावाद ते असत्य, एटले जूठु बोलवु, तेना हेतु चार कषायने, हास्य, भय, ए बेनो कषाय, मली छ प्रकृती छे, तेनी त्रगस करीए त्यारे द्रव्य मृषावाद टले छे, ने भावमृषा वाद तो घटमे ज्ञान लावी, वस्तु स्वभावने उलखीए, उदीकता उपर दृष्टी न राखीए, उदीकताने वस्तु मानवी, ते बाह्य दृष्टीनो भ्रम छे, ने स्वभावने वस्तु मानवी ते अतर दृष्टीनु ज्ञान छे, एम, समज आवी नही ने द्रव्यभाव दुभेदे मृषावाद रह्यु, ते बीजु पाप कह्यु, हवे त्रीजु पाप ते चोरी छे, एटले अदत्त (वीना दीधे) लेवुं तेना बे भेद, द्रव्य भाव, द्रव्य चोरी ते अणमागी वस्तु, रस्तामां पमेली, वाताला कुची कवजानी, नीधान होय के एक त्रण होय तेने लेवु ते द्रव्य अदत्त कहीए, हवे भाव अदत्त तेना बे भेद, एक आज्ञा अदत्त, बीजु वस्तु अदत्त, आज्ञा अदत्त ते सीद्धांतमा परमात्माए आज्ञा करी छे, ने गुरु

माहाराजे आपणने उपदेश कर्यो छे, अप्पाण भावि माणे विहरीय एटले अप्पाण कहेता आत्मा तेने भाविमाणे कहेतां भावता थका विहरीय केंवीचरो, एम कह्या छते आपणे तेम न प्रवृतीए ने जरु भावमा इंद्रीनो इंद्री संगे वीषय भोग करता थका उपरागा रहीए, वळी आज्ञा करी छे के हे भव्यो तमे मीथ्यात्वने तजीने समकीत प्रगट करो, अज्ञानने तजीने ज्ञान प्रगट करो, कषायने तजीने चारीत्र प्रगट करो, अतरायने तजीने दानादी लब्धीने प्रगट करो, वेदनीने हणीने अव्याबाध सुखने प्रगट करो, आउखा कर्मने हणी ने अटल अवगाहना अक्षय स्थितीने प्रगट करो, नाम कर्मने हणीने अरुपी गुण प्रगट करो, गोत्र कर्म हणीने अगुरु लघु गुण प्रगट करो, इत्यादी परमात्मानी आज्ञा वळी गीतारथ बहु श्रुतनो उपदेश ते आज्ञा कहीए, तेने आपणे ग्रहण करीए नहीं, ने मीथात्ववसे अवळी चाले चालीए, तेने आज्ञा अदत्त कहीए, हवे वस्तु अदत्त कहुंछुं, जीव समये समये सात आठ कर्म छट्ठा गुणठाणा सुधी बांधे छे, एटले आउखु बांधे त्यारे आठ बंधाय, नही तो सात बांधे, एटले आउखा कर्म आवता भवनु आखा भव में एकवारज बंधाय छे, ने सात कर्मनो बंध तो समय समय थाय छे, वळी छट्ठा गुणठाणा उपरात आउखा कर्मना बंधनो प्रारंभ होतो नथी, छट्ठा गुणठाणे आउखा कर्मनो बंध प्रारंभेलो सातमे गुणठाणे पुर्ण करे, परंतु सातमेथी आरंभे नही माटे सातमा गुणठाणाथी नवमा गुणठाणाना

अत सुधी सात कर्म वाधे ने दशमा गुणठाणे मोहनी कर्म न वाधे ने आउखा कर्म सातमेथी वाधे नही, एटले ए वे कर्मनो वध न करे, ते वर्जीने दसमे गुणठाणे ठ कर्म वांधे एम श्री जगवती सुत्रे, ठठा सतके गउतम स्वामीए पुठयु तेनो जगवान वीर स्वामीए उत्तर कर्यो ठे, वळी पन्नवणा-जीना वध पदमे पण एज रीते ठे, उपरात एटले अगीयारमा गुणठाणेथी कर्म वंध कह्यो नथी, परतु कर्म ग्रंथना मते अगीयारमे, वारमे ने तेरमे ए त्रण गुणठाणे एक सातावेदनी वाधे, एम ठे ने कर्म वध ते कारमण वर्गणा आठमी, ते पुजल दल ठे, तेनो स्वामी पुजल ठे ते आपणे ग्रहण करीए, ने एकापणे आत्म प्रदेश साथे वाधीए, तेने जावथी वस्तु अदत्त कहीए, एशुजाशुज आश्रव कारमण दळ तेनो दाता कोइ ठे नहीं, माटे एम जव्यजाव जेदे सरागता वृतीए आत्माना असुध्ध उपयोगे अदत्त ग्रहण करवु ते त्रीजु पाप कह्यु, हवे चोथु पाप मैथुन ठे तेना वे जेद जव्य जाव जव्य मैथुन ते वेद वीषय जोगने कहीए, एटले पुरूपने स्त्री सगे ने स्त्रीने पुरुष सगे वली नपुसकने स्त्री पुरूष वेउना सगे वेद वीषय सेववो ते जव्य मैथुन ठे, हवे जाव मैथुन कहु ठु, जाव मैथुन ते परप्रणती जोगे पुजलने मथवु एटले ज्या सुधी शुद्ध प्रणती परीपूर्ण थइ नथी त्या सुधी अशुद्ध प्रणती कहीए, एटले प्रणती ए इच्छा नीष्टपणु रह्यु छे, तेनुज नाम राग द्वेष, ने एज अशुद्ध प्रणती ठे, ते अशुद्ध प्रणतीनेज परप्रणती कहीए, वली तेन

ज्ञाव मैथुन पण कहीए, ते ज्ञाव मैथुननो पुर्णना, सदसमा गुणठाणा अते थाय ठे, ने अशे नाश चोथा गुणठाणे थाय ठे, आठमा गुणठाणेथी शुद्ध प्रणतीनी पुष्टता ठे, ने सातमा गुणठाणा सुधी शुद्ध प्रणती कृश ठे, अशुद्ध प्रणती पुष्ट ठे, चोथा समकीत गुणठाणाना अज्ञावे एकली अशुद्ध प्रणती ठे, ते ज्ञाव मैथुनने पूर्वे कह्युं ते द्रव्य मैथुन ए वेहु ज्ञेदे चोथु पाप कह्युं. हवे पांचमुं पाप ते परीग्रह छे, तेना वे ज्ञेद एक द्रव्य वीजो ज्ञाव, द्रव्य परीग्रह ते नव ज्ञेदे ते वंदीता सुत्रनी गाथा

धणधन्न खित्तवत्थु रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे
दुपएचउप्पयंमि, पडिक्कमे देसियं सव्वं.

अर्थ–धन्न कहेता तोळीने वा ज्ञरीने वा मापीने वा नजरे जोइ परीक्षा करीने वस्तु आपीए लइए सोधन करीए,१ ने धान्य ते साळी प्रमुख घउ जव आदे धान्य कहीए,२ ने खीत कहेतां क्षेत्र खळु,३ वत्थु कहेतां घर दुकान, महेलात,४रुप कहेतां रुपु,५सुवन्नेअ कहेतां हीम,६कुवीअ कहेतां कुधातु, तांबु पीतळ, कांसु, जसत, कलइ, लोढु आदे,७ परीमाणे कहेतां देश वीरतीने घरे परीमाण करवानु ठे, इहातो मुनीपदे सर्वथी त्याग ठे, दुप्पए कहेतां वे पगे चालवावाळा मनुष्यो दास दासी आदे,८ने चउप्पयंमी कहेतां चार पगे चालवावाळां तीर्यंचो गाय ज्ञेंस प्रमुख जाणवां,९ एम नव ज्ञेदे परीग्रह कह्यो ते द्रव्य परीग्रह, हवे ज्ञाव

परीग्रह कहु छु, तेना चउद भेद छे, एक मीथात्व, चार कषाय, ने नव नोकषाय, मळी चउद भेदे अभ्यंतर ग्रथी कहीए, ते भावपरीग्रह छे, एम द्रव्यभाव दुभेदे परीग्रह ते पाचमु पाप, ए प्रकारे द्रव्यभाव अपेक्षाए पाच दुदश भेद पापना थया, तेने रुधे सो पुरुषो तमने बीजो गुरु तत्व कहीए, हवे धर्म तत्व एह लखावु छु, धर्म ते केवळज्ञानीए प्ररुप्यो, तेज धर्म तत्व छे, तेने संक्षेपे वर्णवु छु, तेना बे भेद एक व्यवहार बीजो, नीश्चय, व्यवहारना बे भेद एक शुद्ध, बीजो अशुद्ध, शुद्ध व्यवहार छे ते समकीत पक्षी छे, ने अशुद्ध व्यवहार छे ते मीथात्व पक्षी छे, ए वचन तो यथारथ छे, परतु मतीने खुच्यो ते प्रश्न करे छे, द्रव्य प्राण ते जीव खरो के नही वळी आवश्यकादी क्रीया ते चारित्र कहीए के नही, तेनो उत्तर, हे भाइ द्रव्य प्राण ते एकेंद्रीना चार, बेरद्रीना छे, तेरद्रीना सात, चउरद्रीना आठ, पचेद्री, असज्ञीना, नव, सज्ञीपचेद्रीना दश, एम एकेद्रीथी पचेद्री पर्यंत सर्वे जीव छे, वळो आवश्यकादी क्रीया एटले बे वखत प्रतीक्रमण करवु, बे वखत पडीलेहण करवुं, बे वखत पोरसी भणाववी, सातवार चैत्यवदन करवा, बेताली दोष रहीत आहार लेवो, पाच दोष तजीने वापरवो, नव कल्पी वीहार करवो, पाच सुमति, त्रण गुप्ति, आठ चरण सीतरी, करण सीतरी, मळीने एकसोने चालीस भेदे क्रीया तेने चारीत्र कहीए, त्यारे मती उवाच, तमे द्रव्य प्राण ने जीव कहो छो वळी आवश्यकादी क्रीयाने

चारीत्र कहो ठो, ए कीयो व्यवहार ठे, उत्तर—हे नाइ अशुद्ध व्यवहार ठे, मतीउवाच, तमे अशुद्ध व्यवहार मीथात्व पक्षी कहो ठो, त्यारे शु करवा चारीत्र कहो ठो तेनो उत्तर-हे नाइ अमे जे द्रव्य प्राणने जीव कहीए ठीए वली आवश्यकादी कीयाने चारीत्र कहीए ठीए, तेनी साथे उपचरीत अनुपचरीत ए वे व्यवहार नेद ज्ञान घटमा लावीने मेलवीए ठीए, एटले हमारे तो शुद्ध व्यवहारनीज मुख्यता ठे, वळी समकीत पक्षी ठे, मीथात्व पक्षी होतो नथी, तमे पण एज रीते ए वे व्यवहार मेलवता होय तो अमने समजावो, त्यारे मतीउवाच, ए वे व्यवहार उपचरीत अनुपचरीत, मेलववा तमो कहो गे ए समज तो मने नथी तमो समजावो, तेनो उत्तर, हे नाइ नय पक्ष रीते समजो इहा कइ हठ मतनु काम नथी, तमारे हठ होय तो ग़ोमी देजो ने थीर चीत्ते धारजो वली शका पमे तो पुगजो, हवे जे द्रव्य प्राणने जीव कहेवो तेने समजो जे इंद्रीयादीक द्रव्य प्राण ठे ते पूर्व कृत कर्मवंध योगे ने उदीकनाजोगे जीवने प्राप्त थया ठे ते वस्तु गते पुद्गल ठे जीव नथी, जीव तो चेतना लक्षणवत अतर व्यापकपणे रह्यो ठे, ने ठे, एम वीन्नाग वहेचण थइ नही, ने नेदज्ञान आव्यु नही, ने पुद्गलने जोइने एटले एकेंद्री, वेइद्री, आदे पुद्गलने जीव कहेवो ते अशुद्ध व्यवहार थयो, तेनी साथे उपचरीत, अनुपचरीत, ए वे व्यवहार मेलवीए एटले एकेंद्री यादीने जीव कहेवो, तेमा नेदज्ञान जोगे अतर दृष्टी करी

वीन्नाग वहेची स्वन्नावने ओलखी जीवने जीव कहेवो तेमा कशोए उपचार नथी, ते अनुपचरीत व्यवहारने इ-न्द्रीयादी पुद्गलने जीव कहेवो ते उपचरीत व्यवहार एम वे न्नेदे व्यवहार जोईए, तेनुज नाम शुध्ध व्यवहार छे, हवे आवश्यकादी क्रीयाने चारीत्र कहीए छीए ते पण अशुद्ध व्यवहार छे कारण के जडनो कर्त्ता जड छे, शा माटे के पुद्गलनी करणी करे छे, ने आत्मानी माने छे, एटले क्षय उपसम न्नावनु चारीत्र माने छे, पण एमतो जाणता नथी के क्षय उपसम न्नावनु चारीत्र तो स्वरुपे ज्ञान दर्शन उपयोगनु स्थीरपणु ते छे, एम न्नेदज्ञान घट मेलावी वीन्नाग वहेचण करी, वस्तुगते वस्तु मानीए सद्दहीए ते अनुपचरीत व्यवहार थयो ने कलपनी मर्यादाए आवश्यकादी क्रीया व्यवहार नयने अनुसरीने चारीत्रनी एटले द्रव्य चारीत्रनी कहीए ते उपचरीत व्यवहार एम वीन्नाग वहेचण ज्ञान जोगे थाय तेनुज नाम शुद्ध व्यवहार कहीए, न्नेदज्ञानना अन्नावे अशुद्ध व्यवहार छे तेना वे न्नेद, एक शुन्न, वीजो अशुन्न, शुन्न ते शुन्न कर्मवध हेतु, मन जोग ए कृत्यमा न्नळे तो एटले वीजे न जाय त्यारे मन द्रुर्याने हणाएलु होय, ने क्रीया शुन्न करीए, तीहातो शुन्न कर्मवधनी न्नजना शुन्ने वाधे ने अशुन्ने वाधे, ए व्यवहार नयना छ न्नेद कह्या तेमा नयो कहु छु, उपचरीत व्यवहार कह्यो ते नैगम नयनो पक्ष छे, अनुपचरीत व्यवहार कह्यो ते सग्रह नयनो पक्ष छे, शुन्नाशुन्न व्यवहार

सो व्यवहार नय छे, शुन्न व्यवहार सो रुजुं सुत्र नयनो पक्ष छे, ने शुध्ध व्यवहार सो शब्द नयपक्षी छे, नैगम, संग्रह व्यहवारने रजु सुत्र ए चार नयो सो द्रव्यास्तीक कहीए, शब्द, संमन्नीरुढ, ने एवंज्ञुत, ए त्रण नयो सो पर्यास्तीक कहोए, पर्यास्तीक नयने न्नाव कहीए, वली नीश्चय नय कहीए, सो गवेखु छुं, शब्द नय समकीत प्रासीथी कहीए तीहां ज्ञान जोग कहीए, वली दगमा गुणगणाना अंत सुधी शब्द नयनी मुख्यता छे. वीतराग न्नावे वारमा क्षीण मोहथी अयोगी अंत सुधी समन्नीरूढ नय कहीए दशमा गुणगणाना अंत सुधी 'परणती' धर्मे पाच नयनुं प्रवर्तन छे. ने क्षीण मोह वारमाथी अयोगी चउदमा अंत सुधी छ नयनु प्रवर्तन छे सिद्धमां लोका अग्रन्नागे आत्म प्रदेशनो नोवरुघन जे अटळ अवगाहना सो सिध्ध तीहां एवंज्ञुत नय एकज कहीए ज्यां सुधी काया छे ने सत्ताए तेजसकारमण वर्गणा छे त्यां सुधी द्रव्यास्तीक नयनो संन्नव छे सो कायानो एटले उदारीक कायाने तेना सगे श्वासोश्वास वर्गणा वली तेजस कार्मण शरीर आदे सर्वे पुदगलना बंधनथी अयोगी गुणगणा अंते तुट्या त्यां द्रव्यास्तीक नयनो अन्नाव थयो एटले अशुध्ध समग्रह नय हतो ते तुटी गयो ने शुध्ध संग्रह नय द्रव्यास्तिकपणे शक्तीरूपे हतो ते परीपूर्ण व्यक्तिरुपे न्नाव पर्यायमय सो एवंभूत थयो ए नीश्चे नय वली पूर्वे कह्यो सो व्यवहार नय सो त्रीजो धर्म तत्व कहीए एम त्रण तत्वनी दृढ श्रध्धा सो व्यवहार समकीत

त्मकीत थयो नहीं, एकरणे रहेतो एक अतर महुर्त रहे, चढे तो अपुर्व करणे जाय पके तो मुळ ठेकाणे पाछयो आवे, ए प्रथम करण कह्यो, हवे बीजु अपुर्वकरण चींतवु छु, अपुर्व कहेता पुर्वे कोई काळे आव्यो नथी ने आत्माए जाण्यो नथी, एवो अपुर्व परिणाम, ज्ञानशक्ति अतरकरणमा प्रगट थई छे, तीहा सात कर्मनी स्थीती यथा प्रवृतीकरणे एक कोडाकोडी सागरोपम, ते मधे एक पल्लोपमनो असंख्यातमो भाग न्युन एटली रही छे, तेमांथी एक महुर्त खपावे त्यारे अपुर्वकरण थाय, तीहा अपुर्व वीर्य उदेरे पछी अपुर्व मोगर लेईने ग्रथी उपर जाय तीहा गाठने वीदारे सो ग्रथी भेद, एटले वीदारे कहेतां अनादी सवध्ये अशुद्ध प्रणती छे तेहने तोडवी ने भेद एटले छेदजोगे असे शुद्ध प्रणती प्रगट करवी तेनुज नाम ग्रथीभेद, कहीए, वली समकीत कहीए, ने ग्रथी भेद थयो तीहा अपूर्व करणनी सीमा आवी रही, त्रीजु अनीव्रतीकरण कहीए, तीहा अपुर्वकरण रहेला कर्म ते स्थीतीमाथी एक महुर्त खपावे, तीहा मीथात्व मोहनी तथा अनतानुबधी कषायनी चोकडीए पांच प्रकृती उदये आवी रुधे, वीपा के तथा प्रदेसे अतर महुर्त मात्र ए पांच प्रकृती उपसमावेतीहा उपसम समकीत कहीए, ते समकीतमाही शुभ परीणामे मीथात्व मोहनीना त्रण पुज करे, एक सुद्ध पुज बीजो अर्ध सुद्ध पुज, त्रीजो असुद्ध पुज, इहा उपसम समकीतनी एक अतर महुर्तनी स्थीती छे, तेनी पुर्णता एटले अंते ए पुजनो उदय थाय तेमा शुद्ध पुजनो

उदय थाय तो क्षय उपसम समकीत कहीएने अर्ध शुद्ध पुंजनो उदय थाय तो त्रीजुं मीश्र गुणठाणुं कहीए, अशुद्ध पुंजनो उदय थाय तो मीथ्यात्व गुणठाणुं पहेलुं कहीए, ए उपसम समकीत वर्णव्यो. हवे क्षय उपसम समकीत कहुं छुं क्षय उपसम समकीत दर्शन मोहनीना क्षय उपसम जोगे आवे, ने क्षय उपसमनुं पामवुं वीचीत्र भेदे छे त्यारे जेटला भेदे दर्शन मोहनीना क्षय उपसम थाय एटला भेदे क्षय उपसम भावनुं समकीत पामे एम जोतां तो क्षय उपसम समकीतना वीचीत्र भेद थाय, ते कइ कहेवामां आवे नहीं, परंतु क्षय उपसम समकीत चोथा गुणठाणेथी सातमा गुणठाणा सुधी छे, माटे एकतो चोथा गुणठाणानु तत्व द्रष्टी सो समकीत, बीजुं रोचक समकीत ते पांचमा गुणठाणानु, त्रीजुं कारक समकीत छठा सातमा गुणठाणानुं ए त्रण भेदे क्षय उपसम समकीत कहुं छुं, तेमां प्रथम तत्व द्रष्टी थवी जोइए, ए द्रष्टी तो ज्यारे नीजपर भेद समज्यामां आवे एटले नीजपर भेद समजवाने बे कारण छे,एकनी सर्ग,ने बीजो उपदेश, नीसर्ग ते पोते पोताना स्वभावे गुरु उपदेश विना बोध पामे एटले ज्ञान पामे, त्या घटतर वृती पलोचन प्रगट थाय, त्यांज नीजपर भेद समजाय छे, ए प्रथम कारण बीजु कारण सदगुरुनो उपदेश छे, ते गुरु महाराजनां नय गर्भीत वचनो श्रवण इंद्री जोगे मन पात्रमें श्रोताजनो वक्ता पुरुषना सामी द्रष्टी करीने जीले एटले धारणामां राखे, वळी तेमां मनन करे, चींतवन [illegible] जोगे नीजपर भेद समजे ने

नीजपर भेद समज्यामा आव्यो त्या पर वस्तु अतत्व भासे छे, त्या पर वस्तु उपरथी रुची हठे छे ने सरागता छुटे छे, नीज वस्तु उपर रुची जाय छे, ने आगता थाय छे, ते आगताना प्रेर्यो थको नीज वस्तुनो अर्थी थयो, त्या बाह्य रमण अवल्लभ लागे, ने घटंतर वृ-तीए नीजस्वरुप रमण वल्लभ लागे ते जोगे आनदीत थाय, एटले अभ्यासी थाय एम करता करतां मनजोग थीर थाय त्यां हेय, ज्ञेय, उपादेय, बुद्धि प्रगट थाय छे त्यां ज्ञान जोती वीस्तारे प्रकासीत थाय छे, त्या नीजपर सर्व ज्ञेय व-स्तु गुण प्रयाय लक्षण स्वभाव साधक बाधक कारण अकारण, युक्त अनुंभव ज्ञाने जाणवामा आवे छे, ने हेय कहेता पर वस्तु भेद रुपे एटले जुदाइ रुपे छाडवा योग्य समजाय छे, ने उपादेय कहेता एक पोतीको आत्मा सीद्धनो साधर्मी मोक्षमइ, मोक्षमा रहेनवालो अनत गुणपर्यायनो पुंज अरु-पी, अवीनासी, नीरजन नीराकार, जोती स्वरुपी, अलख, अगोचर, अव्याबाध सुखनो भोगी, सो आदरवा जोग छे, एम अनुभव युक्त प्रत्यक्ष, दृष्टीगोचर थाय, सो तत्व दृष्टी चोथा गुणठाणानु नीश्चय समकीत कहीए, मथी भेद तो पुर्वे करेलो छे, ते फरीने कहेवानी जरुर नथी, इहा छ प्र-कृतीनो क्षय उपसम थयो छे ने समकीत मोहनी तो उदयमां छे ए समकीतभाव गवेर्यो ते स्व अपेक्षीत छे,बीजा बाजद-ष्टि पुरुसो एने समकीती वा धर्मी ना जाणे,जेने एवी तत्व दृष्टी प्रगट थइ छे ते पुरुसोमा सदगुरुना सनमुख उभा थइने बे

हाथ जोडी मस्तके चढावी चतुरवीधी सघनी साक्षी पूर्वक दवादस वृत उचरे, त्यां पांचमुं देश वीरती गुणठाणुं कहीए वळी त्यां रोचक समकीत कहीए, इहां दवादस वृत श्रावकनां वर्णवुं छुं, पांच अणुव्रत त्रण गुण व्रत, चार शीक्षा व्रत, तेमां पहेलुं व्रत सो दया, तेना त्रण भेद, स्वरुप दया, हे तुं दया अनुंबंध दया, स्वरुप दया तो केवळीने घरे पण स्वरुप हींसा लागे छे एटले जे पोतानी काया छे एज जीवने हणवानुं सस्त्र छे, ए पहेलो भेद कह्यो, बीजी हेतु दया एटले दयानो हेतु सो जतना बुद्धि जीवने बचाववानी रक्षण करवानीबुद्धि तेना बे भेद, थावरनी जतना, त्रसनी जतना ए बेहुनी जतना करे, रखोपु करे, सो वीस वसानी दया कहेवाय छे, एतो छठा सातमा गुणठाणे महा वीरतीना घरे सम्भवे, इहां नही छे, एटले स्थावरनी दया ग्रहस्थीना घरे छे नही, माटे दसवीसा थावरना गया ने त्रसना दस रह्या तेमांथी कारण जोगे जतना थाय नही ने जीवो हणाय ते दसमांथी कारणना पांच वीसा गया ने विनाकारणे पांच रह्या तेमां पण अप्राधीने हणुं मारो अपराध करे तेनी जतना थाय नही माटे अढी वीसा अप्राधीना पांचमांथी गयाने अढी रह्या तेमां पण कारण परुयु नथी नेए जीवो ए आपणो अपराध कर्यो नथी ते जीवोनी जतना पण ग्रहस्थोने घरे नही छे तेवी वरीने कहुंछु. घोडा उपर बेसीने गामंतरे जाय छे, पीठ उपर तो चढी बेठो छे घोडुं चाले छे आपणो अपराधी पण नथी उतावळा जवानु कारण पण नथी ते वीना कारणे वीना ... जेरबध मारे दोडावे, इहांज-

तना रहेती नथी एम अनेक प्रकारे ग्रहस्थीना घरे जतना रहीतना दृष्टांतो लागु पडे छे, ने अजतना थाय छे तेनो सवावीसो गयो ने सवारह्यो ते वीना कारणे वीना अपराधे संकल्पीने त्रस जीवने नमारु न हणु एम सवावीसानी दया व्रतधारी श्रावकने धरे छे, ए बीजो भेद कह्यो, हवे त्रीजो भेद अनुबंध दयानो ते इहा दर्शन मोहनीनी तथा चारीत्र मोहनीनी प्रकृतीयोनो क्षय उपसम थयो छे, तेथी सद्भावे, आत्मीक गुणनी नीर्मळता प्रगटता स्वरुपे सामान्य वीशेस उपयोग नीस्पन्न पणे थइ छे, शोभा व दया कहीए, तेनुज नाम अनुबंध दया छे, ए त्रीजो भेद कह्यो ए प्रथम अणु व्रत हवे बीजु व्रत सत्य वचन, असत्य वचननो त्याग सर्व थी तो महा वीरतीना धरे छे, इहा तो देशथी छे तेना पाच भेद, कन्याळी, भूमाळी, गवाळी, थापणमोसो, ने कुडो साख, ए पाच भेद कह्या तेमा राग ध्वेस मोहना वसथी असत्य वचन बोलाय छे तेनो त्याग करे एटले ससारमे माता पीता भाइ बेन, स्त्री, पुत्र, आदे माया, प्रीती स्नेही साथे जे सगपण वालेसरीपणो, हेतुपणो, मारापणो, बाध्यो छे वळी पोताने जे जे अणमलता पोताथी प्रतीपक्षी कुटुंबी, अकुटुंबी ज्ञाती अज्ञाती साथे दुश्मन दावो बांध्यो छे ते सबधी पणो लोकीक रीते हेतु अहेतु छे, परंतु लोकोत्तर सबधे बने अनुकुल प्रतीकुल समुदाय अहेतु छे, एम जाणी राग ध्वेस मोहनो त्याग बेहु पक्षथी थाय ने वीरतीपणाथी खरूं सगपण लोकोत्तर रीते हेतुपणो मारापणो अती रागे वाल-

पण थाय,त्यारे व्यवहारे देशथी सत्य वचनी कहेवाय, ए बीजुं अणुंव्रत, कहु हवे त्रीजुं व्रत अदत्तदान ते अणदीधे मालीक पासे माग्या वीना दांत खोतरवा सळी जोइए ते न लीए एम सर्वथी अदत्तनो त्याग तो महा वीरतीने धरे छे, ते इहां न संभवे इहां तो राजा दंडे एवी चोरी करू नही ते चोरी करवाना बे हेतु छे, एक तो कपट मायाने बीजो लोभ ए बे प्रकृतीनी डांगस करीए त्यारे गुनापात्र न थइए, ए त्रीजु अणुव्रत,कहु हवे चोथु व्रत ब्रह्मचर्य ते स्त्रीथी खेटे अलगा थइए वली नव वाड युक्त पालवु सो सर्वथी स्त्रीनो त्याग तो महा वीरतीने घरे संभवे इहा तो देसथी छे, माटे परणेली जे होय एटलेज संतोष करे नवी बीजी न करू वली एमांथी पण मुर्छा उतरे तो शुकल पक्ष कृष्न पक्ष,ए बेमांथी एक-पक्षनो त्याग करे एटले सेवे नही वली मुर्छा उतरे तो समजे के, चामकी कोटडीमां मास भरया हे,मांही भरया मल मुत्र वीकारा, एटले असुचीज भरी छे, अपवीत्र स्थान छे तेमां चतुर नेरी जनथी कर्म बंधको कारण, संसार वृधीनु मुल, भवनी परंपरानो हेतु एम वीगोवी वीगोवीने वीषय भोगनो त्याग सोय दोराना आकारे करे सो चोथु अणुव्रत, कहु हवे पांचमु व्रत तेमां परीग्रहनो त्याग सर्वथी करवो तो संजती पदे छे ते इहां न संभवे इहां तो देशथी त्याग छे एटले जेटलु पोता पासे होय एटलेज संतोष करे, अप्रसस्त वेपार, मोहपल्लीनो वडो पुत्र लोभ तेना वस थइने अढारे पापस्थान करे वननो अहो रात्रीनो मनथी,वचनथी ने काया-

थी, आशा, तृष्ना, मुर्छा, उतारीने व्यासी जेदे पाप बध करवानो हेतु अशुभ उद्यम तेनो त्याग करे जेटलु पोता पासे होय एटलेज सतोष, ए पाचमु अणुव्रत कह्युं, हवे त्रण गुण व्रत कहु छु, गुण व्रत ते शा माटे के जे पाच अणुव्रत कह्या तेने गुण करता छे, तेमा पहेलु गुण व्रत दीसी परीमाण, ते चार दीसी, चार वीदीसी, उर्धदीसी, ने अधोदीसी, ए दस दीसाए पोतानी कायाथी लोकीक सबधे गमना गमन करवु एटले जवानो आववानो प्रथक्क दसे दीसीए सरखो वा न्युनाधीक पोतानी इच्छा पुर्वक प्रमाण बाधे ते प्रमाणने कारण पडे उलगे नही वली एक दी· सीए प्रमाण राखेलु छे तेथी गमना गमन ओछु कर्युं तेना बदले बीजी दीसीए अधीक जवानु कारण आवे वधारीने जाय नही, वली पोताना जाना आववाना प्रमाणथी जणस मगाववी मोकलवी प्रमाणथी अधीक दीसी साथे कायाथी वचनथी जवा आववानो, वा जणस मगाववा मोकलवानो अशुभ एटले ससार हीत अर्थे पच्चखाण छे, एम लोकीक सबंधे अशुभनु सकोचन करवुं एटले गमना गमन दसे दीसीए ओछु करवानु प्रमाण करवु ते प्रतीबध आत्म हीत अर्थे छे, वली लोकोत्तर सबधे ज्ञान दर्शन चारीत्र अर्थे देव गुरूना वदन नमन पुजननो वा बोध बीज प्राप्तिनो वा देश वीरतीपणानो, वा जीनेंद्र पथ प्रवर्जा दीक्षानो लाभ लेवा वीचारवा अर्थे कोइ दीसीए गमना गमन करवानो प्रतीबंधज नथी इहा तो प्रतीबध करवो आत्माने अहीत

ञ ए प्रथम गुण व्रत कह्युं. हवे बीजुं गुण व्रत ते जोग उपजोग जोग ते एकवार जोगववुं, ने उपजोग ते वारंवार जोगववुं, तेना बे जेद एक शुज ने बीजुं अशुज, शुजना बे जेद एक आरोपीत शुज बीजुं अणारोप शुज, आरोपीत शुजना बे जेद, एक नीमीत्त बीजु उपादान अशुजना बे जेद एक नोमीत्त बीजु उपादान ए जेदो वहेंच्या तेनो अर्थ कहुं छुं जोग उपजोग ते अंतराय कर्मना एक तो त्रुटवाथी ने बीजुं क्षय उपसमथी वा क्षयथी आत्मा करे छे तेमां जे तुटवाथी कह्यु ते अघाती कर्मनी अशुज प्रकृतीना उदय, अजावे अंतराय तुट्यो कहीए, त्यां सुज आरोपीतना नीमीत्त उपादान बे जेद लागु छे शुज एटले रुडा मनोज्ञ मनने गमता पुद्गल सातावेदनीना हेतु तेनुं उदय जोगे पामवुं ते नीमीत्त शुज आरोपीत कहीए, तेनो जोग उपजोग आत्माने आरोप प्रशस्त छे. तेनु उपादान कारण पुर्वकृत शुज प्रकृती सताए रहेली ते छे ते कर्मने उपादान शुज आरोपीत कहीए, ते जोग उपजोगमां हेतु छे, हवे अशुजना बे जेद कहु छु, अशुज एटले अमनोज्ञ अणगमता पुद्गल असाता वेदनीना हेतुं तेनुं उदय जोगे पामवुं ते नीमीत अशुज कहीओ, तेनो जोग उपजोग आत्माने अप्रसस्त छे तेनुं उपादान कारण पुर्वकृत अशुज प्रकृती सत्ताए रहेली ते छे ते कर्मने उपादान अशुज आरोपीत कहीए ते जोग उपजोगमे हेतुं छे, एम शुजाशुजनो जोग उपजोग कह्यो तेमां जे अशुजनो जोग उपजोग छे ते आ-

स्माने पुद्गल जोगे करणवीर्य शक्तीनी हाणी करता थाय छे, ते माटा जोग उपजोग जोगे व्यवहारे बहुधा अशुभ आचरण करे तेथी पातु अशुभ उपार्जे, ते आगल जोगवबुं पके एम पापजोगनी परंपरा चाले माटे आ जोग उपजोग बीजा गुणव्रमे अशुभ आचरणनो वीवेक लावी त्याग करे ते कहुं छुं कायाथी, वचनथी, ने मनथी, पोते करे नही ने बीजा पासे करावे नही ते वर्णवुं छुं, कंदमुल बादर साधारण वनसपती आदे बत्रीस अनत कायवळी बावीस अजक्ष तेनुं जक्षण न करे, वळी फागण चोमासे, तली, खसखस, जाजी आदे अजक्ष कहेवाय छे, वळी अषाढ चौमासाना काळे खांड आदे वार अजक्ष कहेवाय छे वळी बारे मास रात्री जोजन अजक्ष छे, वली चार महावीगे जे मध, माखण, मदुरा, ने मांक्ष ए सदा सर्वदा अजक्ष छे, वली रातनी करेली सुखडी तेने पण वासीनो जागो लागे छे सो आ जक्षमा गणवा योग्य छे, वली वासी वोळो, वीदळ, करा, काचु मीठुं, पापडीनुं उधेलीयुं आदे अजक्ष वस्तु जक्षण करवा योग्य नही छे तेनो त्याग करवो वली पोताने आजीवीका अर्थे वेपार करवो ते पंनर कर्मादान वर्जीने न्यायोपार्जीत लाज मळे एम चींतवे, दीन प्रत्ये चौद नीम धारे, संक्षेपे, एम अशुभ प्रवृत्ती व्यवहारे [illegible] तेनुज नाम बीजुं गुणव्रत छे ते कहुं, परं [illegible] वहेंच्या छे तेमां एक अणारोप शुभनो [illegible] करे छे, ते देखाडुं छु [illegible]

गीयार प्रकृतीनो क्षय उपसम थयो छे एटलो आत्मा नीर्मळ थयो समकीत गुणवळी देश वीरतीपणानो गुण ते स्वरुपे ज्ञान दर्शन उपयोगनुं स्थीरपणुं गुणठाणा पुर्वक समाधीपणुं नीश्चल श्रद्धापणुं थयुं ते स्वरुपे गुण नीस्पन कहीए, ते गुणनो जोग सुद्धात्मा करे छे, वली उपजोगपण सुद्धात्मा करे छे तेमां कसोए उपचार नथी, कारण के आत्मानो गुण आत्मा जोगवे तेमां उपचार सेनो,सदजुतपणामां उपचारनो, असंजव छे माटे अणारोप कहीए, ए जोग उपजोग स्वअपेक्षाए प्रमोदीत छे वळी वृधी पामवाने मागीए छीए ए जोग उपजोग कह्यो, हवे त्रीजुं गुणव्रत कहुं छुं, गुण एटले ज्यां सुधी आत्मा दंमाय छे त्यां सुधी गुणी नहीं छे, एटले गुनाइत छे तेना बे जेद एक अनार्थे ने बीजो अर्थे ए बे जेदमे प्रवृत्ती त्रण जेद थाय छे, मनथी, वचनथी ने कायाथी, तेमा प्रथमथी समजो के पांचमे गुणठाणे जे जीवो वर्ते छे तेने माथे चारीत्र राय धणी छे, वळी पांचमु गुणठाणुं छे ए तो चारीत्ररायनो देश कहेता मुलक छे ने ए गुणठाणामां जेटला जीवो वसे छे सो चारीत्ररायनी रैयत छे ते रैयत सत्ताए बाह्य अपेक्षाए केटली रीद्धीए धनाढ्य छे,ते कहुं छुं तेना बे जेद,जगन्य उत्कृष्टा जघन्य सत्ता सुधर्म कल्पवैमानीकनीने उतकष्टी सत्ता अचुत बारमा देवलोकनी मनुष्यनी अपेक्षाए ने तीर्यंच पंचेंद्री संज्ञीनी अपेक्षाए उतकष्ट सेहसार देवलोक आठमु त्यां सुधी कहीए एथी ठंठी रीद्धीनी सत्तात्तो राजानी आज्ञाए त्रीकरण जोगे आराधक थइने, चाले तेनी

होतीजनथी सर्व रैयतने चारीत्रराये धनाढय करी मुक्या छे परंतु आज्ञावीराधक छे तेना बे भेद जगन्य उतकष्टा जगन्य सत्ताभुवन पतीनीने उतकष्टी सत्ता ज्योतीसीनी एम वीरती परीणामे वीराधक छे तेना आत्म प्रदेसे एक रीते रीद्धीनी योग्यतानुं उपादान कारण शुभ कर्म प्रकृती सत्ताए होय छे वळी देवगतीना ए स्थानको कह्यां तेनी स्थीती पुर्वक आउखा कर्म बधाय छे ते सत्ताए देश वीरतीने होय छे वीरती परणामे कदापी मनुष्यनुं वा तीर्यंचनुं वा नारकीनुं आयुष्य न बाधे एक देवगतीनुंज बाधे, तेमां जे आराधक छे ते तो वैमानीकनुज बाधे एम भगवती सुत्रे प्रथम शत के बीजे उदेसे कह्युं छे

अवीराहीय संजमासंजमाणं जहणेणं सोहमे कप्पे उकोसेणं अचुए कप्पे, विराहिय संजमा संजमाणं, जहनेणं भवण वासिसु उकोसेणं जाइसीयेसु तिरिगियाणं जहनेणं भवणवासिसु उकोसेणं सहसारेकप्पे

एम वीरती परीणामे तो एक देवगतीनुंज आयुष्य बांधे वळी कर्म ग्रथे पण पाचमा गुणठाणे एक देवगतीना आयुष्यनो बंध कह्यो छे ते कारणे वीरती परीणामी जीव बीजुं आयुष्य न बाधे न जाय परंतु वीरत्तीपणुं पामीने बीजी गतीमे जाय छे तेनुं कारण ए छे के एक तो वीरती परीणाम करता पहेला जे गतीनुं आयुष्य बाध्यु छे तेने ते गतीमां जावुं पडे छे ने बीजुं कारण वीरती परीणामनो भंग करे सो नर-

कादीगतीनुं आयुष्य बांधी ते गतीमां जाय छे कुरुरीक मुनी वत एक हजार वर्ष सुधी सर्व वीरती महावीरतीपणुं पाळीने छेवटे अढी दीवस अवीरती थइ सातमी नरके तेत्री साग- रोपमने आउखे गया तदवतः, हवे पांचमा गुणठाणे जे जीवो वर्ते छे तेने इष्ट शुं छे ते कहुं छुं एक तो परमात्मानी आज्ञा इष्ट छे ने बीजुं आत्मगुणनी प्रगटता सो तत्व इष्ट छे त्रीजुं वीधी पूर्वक पांचमा गुणठाणानी क्रीया सो इष्ट छे चोथु जे- टलो समजाव एटलो नीर्जरा करे सो इष्ट छे पांचमुं सर्व क- र्मथी रहीत थइने मोक्षनुं पामवुं सो इष्ट छे, हवे अनीष्ट शुं छे ते चींतवुंछुं, पांचमा गुणठाणानी शुज क्रीया करे छे ते क्रीयावीधी पूर्वक न थाय ते अनीष्ट लागे छे. वळी क्रीयामां मनथी, वचनथी ने कायाथी डुसण लागे ते अनीष्ट छे वळी अप्रसस्त सुजासुजनो राग तो छेव्यो छे परंतु प्रसस्त राग सो गुणनो राग छे ते जोगे शुज कर्मदळ आवे छे तेनो बंध आत्मा करे छे सीद्धांतना वा कर्म ग्रंथना अज्ञीप्राये सो जव अटवीमांनी अनीष्ट लागे छे कारण के मोक्षना अर्थीने शुज आश्रव पण वल्लज होतो नथी कदाच पुर्वकृत घाती कर्मनी माहादीक प्रकृतीनो उदय गुणठाणानी हद छोडीने अधीक प्राप्त थाय ते जोगे क्षय उपसम जाव हणाय त्यां चेतनजाव हणइ जाय ने जरुता थाय सो अती अनीष्ट लागे छे ए पां- चमा गुणठाणानी शुज परवृती स्थीती कही ए पांचमा गु- णठाणानी वृत्तोए आरत ध्यान करतां धर्म ध्यान थाय छे, सो अचंजाजुत वात छे ए तो वीरतीपणानो गुण गवेल्यो,

हवे ए गुणना रखोपा माटे दंडाय नही सो दंड ते शु छे तो- अशुभकृत जोगे आत्मा दंडाय छे ते गवेखुं छुं राजकथा, देश कथा, स्त्री कथा, ने भक्त कथा, ए चार वीकथा करवी, आरत ध्यान रूद्र ध्यान ध्यावुं इत्यादी कारणे आत्मा दंडाय छे माटे घटमा ज्ञान लावी संसारने पुंठ देई मोहपल्लीनी आज्ञा छोडी चारीत्ररायनी आज्ञा ग्रहण करी इच्छा रहीत थई एक मोक्षनो प्रमोद लावी कर्म क्षय मारगे चालीए, त्या गुनाहत थईए नहीं दंडैए नही, ए त्रीजु गुणव्रत कहुं, हवे चार सीक्षाव्रत कहुंछुं, सीक्षा एटले धर्म शीक्षा साधन शीक्षा अयोगी चौदमा गुणठाणा अंत सुधीनो बोध तेने शीक्षाव्रत कहीए, तेमा पहेलुव्रत सामायक ते सातेनये गवेखुं

॥ जस विलासमे पद पात्रीसमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥

चतुर नर सामायक नयधारो ॥ टेक ॥ लोक प्रवाह छांडकर अपनी परिणति सुध विचारो ॥ चतुर नर ॥ १ ॥ द्रव्यत अखय अजग आत्मा सामायक निजजाति सुधरुप समतामय कहीए संग्रह नयकी वाते ॥ चतुर ॥ २ ॥ अव व्यवहार कहेयु सवजन सामायक हुइ जावे ॥ ताते आचरना सो माने असा नै गमगावे ॥ चतुर नर । ।३ ॥ आचरना रिजु सुत्र सियलकी विनु उपयोग न माने ॥ आचारी उपयोगी आतम सो सामायक जाने ॥ चतुर नर ॥४॥ शब्द कहे संजत जो असो सो सामायक कहिये चोथे गुणठाने

आचरना उपयोगे जिन लहिये ॥ चतुर नर ॥ ५ ॥ अप्रमत गणे इर्याको समजिरुढ नय साखी ॥ केवलज्ञान दसाथिति उनकी एवंभूते जाखी ॥ चतुर ॥ ६ ॥ सामायक नय जोहु न जाने लोक कहे सो माने ज्ञानवंतकी संगति नाही रहियो प्रथम गुनठाने ॥ चतुर नर ॥७॥ सामायक नय अंतरदृष्टे जो दिन दिन अभ्यासे जग जस वादल हेसो वेठो ज्ञानवंतके पासे ॥ चतुर नर॥८॥ संपूर्ण हवे ए पदनो जाव ग्रहीने अर्थ कहुं छु

लोकप्रवाह मारगे परानुजाइ दृष्टीए अन्योअन्य अनुष्टान आचरणाए सामायक कहीए, सो नैगमनये, सामायक कहीए हवे बीजो संग्रह नय छे सो सत्ताए परीपुर्णनीज वस्तुनो शक्तिजावे ग्राहक छे, सुद्ध छे, बुद्ध छे, अलिप्त छे आवरण मले लेपातोज नथी हणातोज नथी, एवो अनादी अनंत जांगे जीवनो सदजावनीज वस्तु ए एकत्व अजेदपणो सो संग्रह नये सामायक कहीए श्री जगवती सुत्रे कह्युं छे

आया सामाइए वळी दृष्टाते समजावुंछुं, जेम माटीमां घटनी सत्ता छे तंतुमे पटनी सत्ता छे, काष्टमे अग्निनी सत्ता छे दुधमे घीऽनी सत्ता छे, तेम जीवमे ज्ञानदर्शन चारीत्रनी सत्ता छे, तेनुज नाम संग्रहनय सामायक कहीए, हवे त्रीजो व्यवहार नयसो घटमे ज्ञान लावी वीचार करे के सत्ता ए यथारथ नीर्मल वस्तु शक्तिजावे तादृस छे परंतु व्यक्तिजावे नथी, ए महारीज भूल छे कारण के मे परने पोतानुं मान्युं ने पोतानी वस्तु जूली गयो ते जोगे चउगती संसारमे ज्र-

मण करतां अनंता पुद्गल परावर्त कीधा, अनतां दुःख सह्यां हवे तो हे चेतन तने कर्मे वीवर दीधा छे एटले क्षय उपसमनी वृद्धि थाता तु संज्ञी पंचेन्द्रीपणुं पाम्यो तेमां पण मनुष्यनो नव साध्यो ने तने नीज पर वस्तुनो भेद जाणवामे आव्यो माटे ऊभो उतरीने विचार करके आत्मा साक्षात परमात्मा सरखो नीज वस्तुनो भोगी ने पर वस्तुनो अभोगी तेने तुं मीथात्व मोहना वस थइने सुपर एटले पुद्गलनो भोग पंचेन्द्रीना विषयनो आपे छे ए भोग तो तारे अग्राह्य छे, छांडवा योग्य छे एम वीचारी इन्द्री एटले श्रवण चक्षुरस घ्राणने फरस ए पांच इंद्री संगे वीषय व्यापकपणे चेतनाहुती तेने वीर्य फोरवी पलटावी स्वरुपे प्रणमावी स्वरुपे रसीक करी तीहांनो इंद्री जे मन ते पण थीर थयो, राजीपो मान्यो एटले इंद्रीयो संगे पुद्गल भोगी हुतो ते भोग अनीष्ट लाग्यो ने स्वरुप रमण अती वल्लभ लाग्युं उपाधी हती ते वुटी गइ समाधी प्राप्त थई सो शुद्ध व्यवहार नय सामायक कहीए ने अशुद्ध व्यवहार तो नेगम पुर्वक जाणवो हवे चोथो रजु सुत्रनय गवेखुं तुं, व्यवहार नय समाधीमे स्वरुप रमण भेगो मन जो रसीक थैने चाले छे, उपयोगी थैने प्रवर्ते छे परंतु वस्तु गले ए पण जरुजाती छे एटले पुद्गल वस्तु छे ते उपाधी कहीए, तेने रमणथी अटकावी पलटावी अचेतन करी ज्ञान खीले ने समाधी दोरके बाधीए, थीर मन तीहां कहीए सो रजुसुत्रनय, सामायक कहीए, हवे शब्दनय चोथा गूणठाणाथी भीन्न एटले उपाधीथी अळगो उ-

-पयोगी एटले पोतानो प्रकास कर्ता पोतेज अनुभव भुवने प्रत्यक्ष द्रष्टीगोचर चीनमुर्ती एटले ज्ञानमुर्ती सो सहेज समाधी कहीए वलि सामायक, अप्रमत गुणठाणा सुधी शब्द नय कहीए, हवे समभीरुढनय अप्रमतादी आठमा गुणठाणेथी श्रेणीगते शुकल ध्यान जोगे क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए भेद छेद करता उपाधी उनमुलन रुपे अनंतो-संवर अनंती नीर्जरा करता वीशुद्धी वरता चढती कळाए अपुर्व गुणठाणेथी नीरालंब, आकासवत, अरुपी सो ज्ञान मुर्ती अनंतदान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, स्फुरणा स्व अपेक्षीतपणे वीशुद्ध अनुभव ज्योती प्रकास स्वभावभानु उदय पाम्यो छे अपुर्व खेल खेले छे त्यां प्रस्थुळ सपाट वगीचो छे चौधारु हाथमे खड्ग छे उधागत उपाधी आवतीज, ज्ञान ध्यान जोगने अबाधा पुर्वक छेदाती हणाती जाय छे, सांमो पकदो वा भींत कंइपण देखातुज नथी अनंती अ-क्षयरीद्धि अनुभव भूवने आळेखी छे एम प्रत्यक्ष द्रष्टीगो-चर द्रव्यगुण पर्यायनु संक्रमण एटले पर्यायने गुणमे संक्र-मावे गुणने द्रव्यमे संक्रमावे, वळी भीन्न गवेखे सो भेद ज्ञान कहीए ने गुण पर्यायमय आत्मा गवेखवो तेने अभेद ज्ञान कहीए, भेदज्ञान जोगे शुकलध्याननो पहेलो पायो क-हीए, ने अभेद ज्ञान जोगे वीजो पायो कहीए, वीजापाये एकत्व स्वरुप प्रणमतां मोहपक्षीनोने रागरूप असुद्ध प्रणतीनो ध्वंशा कहीए त्यांज सुद्ध प्रणती पुर्ण कहीए सो समभीरुढनय सामायक, कहीए हवे सातमो एवंभूत नयसो क्षीणमोह

वीतराग गुणठाणाथी यथाख्यात चारीत्र कहीए तीहां ज्ञानावरणी दर्शनावरणीने अंतराय, ए त्रण कर्म उथागत प्राप्त थयां ते उपाधीने शुकल ध्याननो बीजो पायो ध्यातां हणयां त्यां केवलज्ञान केवल दर्शनने क्षायक भावनी दानादी पांच लब्धी, प्राप्त थइ, तेने एवंभूतनय सामायक कहीए, ए प्रथम शीक्षाव्रत कह्यु, हवे बीजुं देशावगासीक व्रत तेमा मन वचन ने कायाना जोगने एकत्व करी एक स्थानके बेसी एटले पोषधशाळा कही एवा उपासरो कहीए, त्यां ध्यान करवुं वली ते नगरीमे जीन मंदीरो होय त्या दर्शन करवा जवुं, वली बहु श्रुत गीतारथ होय तो तेमने वांदवा वली उपदेश सान्भलवा, बोधबृधी अर्थे जवु वली काया संबंधी वलवरती जोगे वडी मात्रु करवा जवु पडे, एटली दीशाउ मोकळी राखी बाकीनुं गमनागमन करवुं बंध करे वली उपर ध्यान करवुं कह्यु छे ते ऊंडा उतरी घटंतरव्रतीए चक्षु प्रगट करी वस्तुनो वीचार करे एटले धर्मास्ती, अधर्मास्ती, आकास्ती, काळ, पुद्गलास्ती, जीवास्तीए षट द्रव्य सो वस्तु कहीए तेमा प्रथमना चार द्रव्य तो आपणथी नोखाज छे कारण के शुद्ध छे माटे कारणमे हेतुपणे साजकर्ता थाय छे, परतु प्रणमन पोतानु पोतामे छे, ने ससार स्थीतीए जीवने पुद्गल ए बे द्रव्यनु एकत्व प्रणमन अनादी संबंधीत छे, तेने भेदज्ञान घटमां लावी बीभाग वहेचण करी उपयोगि थे स्वरूपे परीणाम पामीए त्या भीनता थाय, सो चेतन शक्ति नता गुण पर्यायनो पुज साक्षात् प्रमात्मा छे तेनु

वमां आरोपण करी अनुन्नव करे, सो आत्मध्यान कहीए एम सीद्धा अवस्था सु उपादेयपणो सो देसावगासीक वीजुं शीक्षाव्रत कहीए हवे त्रीजुं पोसहव्रत एटले दीवसनो पोसह ते चार पहोरनो ने दीवस रात्रीनो पोसह ते आठ पहोरनो समता परीणामे सावद्य ठोमी नीरारंन्नपणे ज्ञान ध्यान जोगे आत्माने पोसी पुष्ट करे, पर्वतीथी दीवसे सो पोसह कहीए, तेमां सावद्य ठोमवानुं कह्युं ते जीवने अढारे पाप स्थानक सावद्य ठे तेने तजवां पमे, सो गवेखुंटुं तेमां प्राणातीपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, ने परीग्रह ए पांच पापस्थानक तो प्रथम गुरुतत्वना अधीकारे गवेख्यां ठे त्यांथी जाणवां, हवे ठ्ठुं पापस्थान सो क्रोधठे एटले क्रोध सा कारणे आवेठे तो कांतो लोन्नना माटे ने कांतो मानना माटे आवेठे ए वे प्रकृतीनी ठंगास करवाथी एटले तजवाथी क्रोध न आवे, हवे सातमुं पापस्थान सो मान एटले मोटप ठे ते सा कारणे आवे ठे तो के संसारमे वोलुं कुटुंब होय वोलुं धन्न होय मोटी पदवी होय, वोला पक्षी होय, इत्यादि जोगे मान आवे ठे तेनो त्याग करे एटले संसार ठोमी कंचन कामनीना त्यागीथे गीतारथ गुरु पासे जीनेंद्र पंथ प्रवर्जा सो दीक्षालीए, सीद्धांत ग्रंथ आवे जीनवचननो वोध पामे, व्याकरण कोषआदे न्नणे त्यांपण मान मोटपनु प्रगटपणु देखाय ठे, ए मोटी अचंन्नाभूत वात ठे जुवो के मोह राजानो मान पुत्र केवो वळवान ठे कारण के घणा प्रयत्न जोगे जीवात्माए सुक्रीत धन्न मेळवेलुं ते वीना प्रयत्नथी मोह पत्नीनो पुत्र जे मान ते वीचक्षण पुरुसोतम

पासेथी पामी लेइ नीर्धन करी मुके ठे धन सचवातुज नथी इहां घणो वीचार करवानो ठे, शीरीते सचवाय त्यारे पोतानी भूलेज पोते नीर्धन थाय ठे, जुवो के पोताना विषे गुणीपणुं जुवे त्या मान अग आपे ठे जो ठगासने जुवे तो मान अंग आपे नही, ठगासने जोवुं त्यातो चारीत्र रायने पोत्तानुज अंग ठे सो गुण वृधी करता थाय हवे आठमुं पापस्थान सो माया ठे एटले कपट फद केळवणी ते सा अर्थे करे ठे तेनो वीचार करवो तो के कातो मान राखवाने कातो लोजना अर्थे, ए बे प्रकृतीना माटे वक्रता माया करे ठे तेनो त्याग, करीए त्यां मायानो अवकास नथी, नवमु पापस्थान सो लोज ठे तेने शी रीते तजीए त्यां घटमां ज्ञान लावी वीचार करीए के लोज ठे ते सुखना माटे ठे के दुखना माटे ठे, सुखना माटे होय तो तजवानी खप नथी त्यारे तत्व द्रष्टीए जोता तो लोज तजवा योग्य ठे परतु जे लोज ठे ते स्वअर्थे करे ठे ने हांणी पामे ठे वळी तज्यो तजातोज नथी त्यारे वीवेक लावी नीश्चे कर्यो के पुद्गलीक अप्रसस्त वस्तुनो लोज तो नर्कादी गतीनो हेतु ठे, ते माटे लोजने पलटावीने आत्माना ज्ञानदर्शन चारीत्र आदे गुणानो लोज करीए वस्तु गते वस्तुता धर्म रह्यो ठे तेने प्रगट करवानो लोज सो प्रशस्त कहीए, सा सुकीतनो लोज थयो कहीए, सो सुख हेतु वे दुःख हेतुनो त्याग थयो त्यां एक नर्कने बीजी तीर्यंच ए बे गतीमा जवाना बारणा वध थया, एक देवनोने बीजी मनुष्यनी ए बे गतीमां जावु आववुं रह्यु ठे त्या लोजनो प्रेर्यो

थको वीर्य फोरवी क्षपक श्रेणीए चढी क्षीण मोहवार सुगुण गाण पामे त्यां लोजनो अन्नाव थयो कहीए. कांटाथी कांटो नीकळी गयो ए न्याय छे, संसारनुं वीज वळी गयुं तद नवे मुक्ति थइ. हवे दसमु पापस्थान सो राग छे सो पापस्थान तजवुं अती दुर्धर छे. सफरी वहाणनो दोर तोमवो सुखन्न छे परंतु रागतंतु तोमवो अती दुस्कर छे कारण के कसाय कह्या ते, प्रकृती छे, ने राग सो प्रणती छे, वळी अगीयारमुं पापस्थान सो द्वेस छे, एम प्रणतीए इष्टानीष्टपणुं रहु छे सो राग द्वेस कहीए तेनो नास आगळ प्रणतीए समकीत नाव गवेखीसुं त्यां कहीशुं हवे वारमुं पापस्थान सो कलह कहीए, तेनो वीचार करवो के कलहतो लढवुं, वढवुं युद्ध करवुं, सो कलह कहीए ते सा कारणे करवुं पमे छे, त्यारे एक तो लोन्नना माटे, ने वीजु मानना माटे ए वे प्रकृती सो कलह कारण कहीए तेने तजीए त्यां कलहनो संन्नव नथी, तेरमुं पापस्थान अभ्याख्यान कहीए, एटले छतु अछतुं कलंकनुं मुकवुं तेनुंज नाम अभ्याख्यान छे ते सा कारणे कलंकनो आरोप करे छे तारे कारण जोइए तो द्वेस छे, वळी चौदमुं पापस्थान सो पैशुन छे एटले एकनी चाकी वीजाने करे तेनुं नाम पैशुन कहीए, ते पण द्वेस कारण छे एम तेरमु चौदमु ए वे पापस्थाननो हेतु द्वेस छे तेनो विचार करतां द्वेसन्नाव थावानो हेतु एक लोन्नने वीजुं मान ए वे छे तेने तजीए त्यारे ए वे पापथी छुटीए, हवे पंन्नरमु पापस्थान सो रती अरती कहीए तेनो वीचार करवो त्यारे शुन्न क-

मे प्रकृती सो रती एटले सातावेदनीनो हेतु ने अशुभ कर्म प्रकृती सो अरती ते असातानो हेतु, एम साता असाता सो वेदनी कर्म छे तेनो उदय सो रती अरती, पापस्थान कहीए, तेने शीरीते टाळवु तो शुभ प्रकृती सुभवीपाक आपे ने असुभ प्रकृती असुभ वीपाक आपे सो सुभासुभ वीपाक आत्मा अंतर व्यापकपणे सहेज समाधीजोगे स्वरुप रमण एकत्व प्रणमन करता वळी मनवचनने काया ए त्रण जोगमां नही प्रमणता सहन करे, सो समताजोग कहेवाय त्यां ए पाप स्थान टळे छे, रतीअरतीनो संभव नथी माटे पुनरपी कर्म बंधन करे, हवे सोळमुं पापस्थान परपरिवाद ते पारकी नींदा करवी तेनु कारण जोइए तो द्वेसीनीज नींदा करे छे त्यारे द्वेस भाव थावानु कारण तो एक लोभ ने बीजुं मान छे, तेने तजीए त्यारे ए पाप टळे, छे हवे सत्तरमु पापस्थान सो माया मृशावाद छे एटले जुठू बोलवु, तेनी तो परीक्षा चतुर पुरुस करे छे; परंतु कपट साथे जुठू बोलनारनी परीक्षा बहु श्रुतथी पण थती नथी, कारण के वीनय रत्न कपट जोगे दीक्षा लेइ मुनीपणानी क्रीयामां सावधान थइ, वीनय जोगे गुरुराये वीनय रत्न नाम पाड्यु छे घणा वर्ष सुधी गुरु महारायनी सेवा करी छेवटे पोताना ओघामां कंकण छुरी राखेली ते सखेज दाइ राजरुपीने मारी प्राणरहीत करीने गयो, सो महापापी जाणवो सो पाप सा कारणे थाय छे तो एक लोभने बीजु मान ए बेज कारण छे तेने तजीए त्या ए पाप टळे, छे हवे अढारमु पापस्थान सो मीथ्यात्वसल्य एटले मीथ्यात्व कहेता वीप्रीत

श्रद्धा तेना दश भेद छे जीवने अजीव माने ने अजीवने जीव माने धर्मने अधर्म माने ने अधर्मने धर्म माने साधुने असाधु माने ने असाधुने साधु माने देवने अदेव माने ने अदेवने देवमाने, मुक्ति ने अमुक्तिमाने ने अमुक्तिने मुक्तिमाने एम वीपरीत श्रद्धा वली पकड्युं तेने मेले नही खरा खोटानी परीक्षा नही खोटु जाणीने खरु करवानो हठ मत जीनव वचनमां संकाने अजाणपणुं इत्यादी मीथात्व सो महा पाप छे, एक ताजवामे सत्तर पापस्थान मुकी एने एक पल्लामे मीथात्व मुकीए तो मीथात्वनुं पल्लु उपडेज नही अती भारछे माटे अनंत पुद्गल परावर्त संसार स्थीतीनो मालीक वली उतकृष्टी स्थीतीए असुभक कर्म बंध करवानो हेतु जीवने नर्कनी गोदना दुःखनो दातार रुद्र ध्याननो पक्षी मोहपल्लीनो वडो पुत्र संसार स्थीतीनो स्थंभ चारीत्ररायनो महा शत्रु सो मीथात्व महा पाप कहीए, तेनो नाश करवाने अपूर्वकरण सो कारण कहीए, ए करण कीधां ग्रंथी भेद थाय ने समकीत पामे त्यां ए पापनो नास व्यवहारे थायछे ने नीश्चेथी तो क्षायक समकीत पाम्यां थाय तेना अभावे तो एक रागने बीजो लोभ त्रीजु मान ए त्रण प्रकृतीज नजरे आवे छे तेनी पाछल सर्वे पापस्थान लागु थाय छे वली ए त्रण प्रकृतीमे जे मान छे ते पण पोताने वीणे उदासने जोतां टले छे त्यारे बे प्रकृती रही एक रागने बीजो लोभ ए बेनुं रुप तो एकज छे तेनो नाश उनमुल न करवाने शुकल ध्याननो बीजो पायो एकत्व वीर्तक अपरविचार नामे दसमा

गुणठाणा अते सो ठे, ए ज्ञान ध्यान जोगे सो पाप टले ठे त्यारे पाप बंध पडतो नटे, क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए त्यांथी पापबंधनो अजाव थयो कहीए, वली क्षीणमोह बारमु गुण ठाणु कहीए वीतराग जाव कहीए यथाख्यात चारीत्र कहीए, ए पोसह त्रीजुं शीक्षाव्रत कह्यु, हवे चोथुं अतीथी संवी जोगव्रत कहेठे तीहा वीचार करवो के अतीथी कोने कहीए त्यारे अतीथी नाम साधुनुंठे त्या जीनेश्वर जगवाने साधु कोने कह्या ठे, कह्यु ठे द्रव्य गुणपर्यायना रासनी पहेली ढाले

एहनो जेणे पाम्युं ताग जंघे एहनो जेहने राग ए बे विण त्रीजो नहि साध जाण्यो समति अरथ अगाध.

अर्थ —हवे जे ज्ञान विना मात्र चारीत्रथीज संतुष्ट थाय ठे तेहने शिक्षा कहे ठे, एकतो ए द्रव्यानुयोगनो जे ताग के॰ पारपामी संमति प्रमुख तर्क शास्त्र जणीने जे गीतार्थ थया ते तथा बीजा ओघे कहेता सामान्य प्रकारे ए द्रव्यानु योगनो जेने राग ठे ते गीतार्थ निश्रित ए बेहुविना त्रीजो साधु नही, एवो अगाध अर्थ संमती ग्रथमां कह्यो ठे ते माटे ज्ञान वीना चारीत्रजन होय

उक्तंच गाथा—गीयच्छोयविहारो बीज गीयच्छ निस्सि- ज मणीज इत्तोतइय विहारो नाणुणाज जिणवरेहि ।१।

एक गीतारथने साधु कह्या ने बीजा गीतारथनी नीश्राए अगीतारथने साधु कह्या ए बेहुने अतीथी कहीए, तेमने व्रत धारी श्रावक पोसाना पारणे, अथवा सदा स-

वंदा जम्या पहेलां चारे दीशाए द्रष्टी करी अतीथी मुनीनी गोत करे आवता जोइ बोलावे अथवा उपासरे जइ विनंती करी बहु मान पूर्वक घेरे तेमी लावे भक्तिपुर्वक उत्साह पुर्वक सत्य भाषा बोलीये पर आकंक्षादिकुपणे वर्जीत थैने मोकळा मने अढळक दान सुजतु आपे अंगमां प्रमोद लावे गुरुना गुणनी भावना भावे, गुरु महाराजाने थोमे वळावा जइ आवीने पोते जमे सो अतीथी सवीभाग कहीए, वली पोतीको आत्मा इंद्रीनो इंद्री संगे उपयोगी थैने चेतना पुभलमां परीणाम पामी छे,तेने पलटावीने स्वरुपे प्रणमावीए उपयोगी थैए त्या आत्मा अविकारी अत्रीपयी थयो कहीए, वळी ज्ञानी कहीए स्वरुप रमणीजोगे चारीत्रीयो स्थीर उपयोगी कहीए, सो अतीथी छे, तेने स्व अपेक्षाए क्षय उपसम भावनी लब्धीनुं, दान देवु सो नीश्चेथी अतीथी सवीभाग कहीए, ए चोथुं शीक्षाव्रत कह्यु,वली पांच अणुव्रत त्रण गुणव्रत मली श्रावकना बारव्रत कह्यां,हवे साधुनां पंच महाव्रत गवेखुंतुं, जेने पंन्नर प्रकृतीनो क्षय उपसम थयो छे सो पुरुसोतम बहुश्रुत गीतारथ गुरु महाराजना स्वाधीन थैने सन्मुख द्दष्टीए आज्ञा मस्तके चढाववा पुर्वक बे हाथ जोमी मस्तके चढावी चतुरवीध संघनी साक्षी पुर्वक पोतीका आत्माने धन्य मानतो थको प्रमोदीत थैने रोम राजी वीकुश्वर थये छते गुणरागी पणे गुणने उलखीने यथारथ श्रद्धा करीने सात धातु रंगाणी छे जेने सो रागने प्रसस्त राग कहीए, प्रसस्त एटले सारमे सारतो जगतमां

चींतामणी रत्न करता पण अधीक फळदाता महा वीरतीपणु ठे, सो मागणु गीतारथ गुरु पासे करे ठे, हे स्वामी हे नाथ हे दयालु हे दीनबंधु करुणाना सागर हुं अनाथ मारा उपर पसाय करी पंच महाव्रत उचरावोजी गुरुराय दातार हीतवंछक तारवानी बुद्धिए पंच महाव्रत उचरावे, पापपंक सावद्य मळमें खुतेला, अशुभ असुची भरेला, जीवात्माने श्रुत ज्ञान गंगाजळे पखाळी ममत्व मळ उतारी अंगलुणे लुंछवा पूर्वक तेजोमय प्रकासीत पवीत्र करी अप्रमत्त इंद्रस्थान सींहासणे स्थापी धर्म ध्वज मुनी वेस पहेरावी सर्व वीरती सामायक चारीत्र दीक्षा आपी अखुट भंडार अक्षय नीधि भरेलो अनादी सबंधीन असंख्याता प्रदेश महेलमें कायाकोटनी अंदर संग्रह नयनु ज्ञान अतर चक्षु प्रगट करी आपी आत्म सत्ताए देखाड्यो, जोताज तृप्त थयो इच्छा वाछा भागी कारण के पोताना घरमें उंगाशने देखे त्या इच्छा वाच्छा प्रवेश करे ठे पूर्णने घेर तो इच्छा वांच्छानो अवकासज नथी, उपर सर्व वीरती पणु कह्यु ते वीरती नामतो त्यागनुठे एटले संग्रहनयनु ज्ञान थताज नीज पर वस्तुनो भेद पड्यो ठे- एटले जुदइ थइ ठे, परवस्तु सो उपाधी जाणी ठे ने नीज वस्तु सो समाधी मानी ठे माटे उपाधीनो सर्वथी त्याग सो सर्व वीरती कहीये ने समाधी सो नीज स्वभाव कहीये ते- नुज नाम सामायक चारित्र कहीये उपर संग्रह नयनु ज्ञान अतर चक्षु लोचनपूर्वक दृष्टीपूर्वक सत्ताए शक्तिभावे देखाडवा, वस्तुनो स्वभाव ओलखाववा कह्यु सो परिमल सुगधिमय वा-

ससखेप परक्षेप जाणवो इहां सर्व विरतीपदे महावीरतीने कारक समकीतनी अपेक्षा ए नव कोटीनां पच्चखाण ठे सो गवेखुं बुं प्रथम प्राणातीपात वीरमाण व्रत सो षटकाय जीवनी दया पाले सर्व प्राण सर्व नूत, सर्व जीव सर्व सत्व न हणे एटले पोते हणे नही बीजा पासे हणावे नही हणताने नलो जाणे नही मनथी वचनथी ने कायाथी बीजुं मृषावाद वीरमाण व्रत सो असत्य वचन पोते बोले नही, बीजाने बोलावे नही,बोलताने नलो जाणे नही, मनथी वचनथी ने कायाथी त्रीजुं अदत्तादान वीरमाण व्रत सो अणदीधे दांत खोतरवा सळी जोइए वा,कारणे एक चपटी राख जोइए तो रस्तामां पमेली पण लीये नही बीजाने लेवानी बुद्धि ना आपे वली लेताने नलो जाणे नही मनथी वचनथी ने कायाथी चोथुं मैथुन वीरमाण व्रत सो पुरुषने स्त्रीनो त्याग ने स्त्रीने पुरुषनो त्याग पोते करे बीजा नाइउं वाइनने करावे,नेन करताने नलो जाणे नही मनथी, वचनथी,ने कायाथी पांचमुं परिग्रह वीरमाण व्रत सो कोमी मात्र न राखे कुखी संबल जेनुं नाम ठे. इच्छा वांच्छा तो प्रथमथीज त्यजी ठे सर्वथी परिगृहनो त्याग पोते करे बीजाने करावे नेन करताने नलो जाणे नही मनथी वचनथी कायाथीने ए पंच महावृत कह्यां, तेनी वृद्धि करता रक्षण करता, साधन जोगे सुमति जोइए सो वर्णवुंउ, तेमा प्रथम इर्या समीति सो गमना गमन करतां धूंशरा प्रमाण साम्रात्रण हाथ दृष्टी पसारीने मारगे जीव जतना करता ठता पग मूके आमी त्रीठी दृष्टी न करे

सो इर्या समीती कहीए बीजी भाषा समीती सो नीरवद्य वचन बोले नीरवद्य वचन ते कोने कहीए के उपयोगे बोले सो नीरवद्य कहीए वली नय गरभीत वचन सो नीरवद्य कहीए वली सीद्धांतनी मर्यादाए बोलवुं पद संप्रदाये युक्त उचारण सो नीरवद्य कहीए कोइने अप्रीती वीना कारणे न उपजाववीने बोलवुं ए वचनने पण नीरवद्य कहीए तेनुंज नाम बीजी भाषा समीती कहीए हवे त्रीजी एसणा समीती सोमुनी महाराजा अवसर जोइने आहार पाणीअर्थे गोचरी नीकले श्रावकने घरे धर्म लाभ आशीर्वाद देता आवे द्रष्टी करीने जुवे सचीत सगट वर्जीने दोष वर्जीने आपवावाळानो भाव उछरंग जोइने मोकले मने लीए एटले देवावाळानो भक्ति भाव झाझो देखे तो एक ठेकाणेथी लेता पण बाधकता होती नथी कारण के रीषभदेव स्वामीना जीवे धना सार्थे वाहना तेरमा भवमे घीनुं अढळक दान घणा प्रमोदे जंबुद्वीपना पश्चिम महाविदेह में आपु छे त्या धर्म घोष नामे आचार्य चार मासनी पूर्ण तपसा थए आपवावाळानो भाव जोइने नाज पाडी नथी कारण के करुणा सागर एम वीचारे के हु जो ना कहीश तो एनो भाव तुटी जशे ने लाभनुं मळवु तेनी उंगास थशे कारण के भावनु नीमीत कारण तो द्रव्य छे माटे एम अधिकताइ न होय तो घणा घरथी थोडुं थोडुं पण लीये एक रीत नथी वळी दोष वरजीने लेवुं कह्युं ते सोळ दोष तो देवावाळाथी लागे छे ने सोळ दोष लेवावाळा मुनि महाराजा तेमना पोताथी लागे वळी दस दोष लेवावाळा

देवावाला वेजनी नीश्राए लागेछे ते वरजीने वेतालीस दोष रहीत आहार पाणी लीये ने पांच दोष मांमलाना त्यजीने वापरे एम सुमतालीस दोषेण वरजीत आहार पाणी लीए वापरे सो त्रीजी एसणा समीति कहीए

हवे चोथी आ दान नीखेपणा समीती एटले वस्त्रपात्र आदि उपगरण वली पोथी पानुं सांपमा, सुपमी, ठवणी कवली, आदे लेवुं मुकवु ते दृष्टी करी पुंजी परमारजीने लेवु मुकवु सो आदान नीखेपणा समीती कहीए, हवे पांचमी परीठवणीया समीती सो ठल्लो, मात्र सलेखम, वलखो, वमनादी कपमो धोयणादी, प्रठववुं सो नीरवद्य एटले वपराती जग्याए, जीवाकुल न होय तेवी जग्या जोइ पुजीने जीव जतना करता ठता प्रठवे, सो परीठवणीया समीती कहीए, ए पंच समीती द्रव्यथी, व्यवहारे कही, हवे त्रण गुप्ति कहुं छुं, तेमां प्रथम मन गुप्ति तेनो वीचार करवो के मनने साथी गोपववु त्यारे मनने प्रथम असुभमे न ल्वा देवुं जातां रोकवु, ते रोक्यु क्यारे रहेसे के आत्म भवनो भय लागसे त्यारे रहेसे कारण के मन असुभमां पेसवा प्रणमवाथी एक अंतर महुर्तमें रुद्र ध्यान जोगे सातमी नरकनां दलीयां महामुनी प्रश्नचंद्रजीए [illegible] गुणठाणे मेलव्यां छे ऐवी बाधकता जीवने [illegible] प्रवृती करतां संजतीपदे थाय छे, वली सुभमे प्रवृती करतां एक अंतर महुर्तमे एज महा मुनीराजे [illegible] असुभदलीयां वीखेरी नांखी अप्रमत्त थइ [illegible]

फोरवी, श्रेणी मांमी सुकल ध्याननो पहेलो पायो ध्याता सर्वार्थ सीद्ध वीमानना सुखनी योग्यताना सुन्न दल मेलव्यां ठे वली सुद्ध प्रणतीमें प्रवेस करी एक क्षणमे सुन्नदल वीखेरी नाखी क्षायकन्नावे वीर्य फोरवी मोहनी आदे चार घाती कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान केवलदर्शन आदे अनत चतुष्टी प्रगट करी ठे, माटे वीवेकी पुरुसो तमने अवस्य मन जोगने थीर करो, सुन्नासुन्नथी रोकी स्वरुप रमणी उपयोगी थावु ए कृत्य सर्वोपरी उतकष्टामा उतकष्टु दुकर ठे, ए मन गुप्ति कही हवे बीजी वचन गुप्ति कहुं छुं, तेनो चतुर पुरुसे विचार करवो, के वचन सो न्नाषा कहीए ते पाचमी न्नाषा वर्गणाना पुद्गल ठे तेनो सामी पुद्गल ठे, जीव नथी जीवने वचन न्नाषा अग्राह्य ठे ते कारण मौन व्रतीए ऊंमा उतरी उपयोगी थै स्वरुप रमण अनुन्नव जोगे करीए, त्या नीज स्वरुपनो प्रतीन्नाष थाय ठे, ने वचन जोगनी गुप्ति थाय ठे, ते कही हवे काय गुप्ति कहु छु, ज्या सुधी आत्मा पाच इंद्रीना वीषयनो न्नोगी ठे त्या सुधी कायानी गुप्ति करी न शके, कारण के पोते काया मे ढकाइ गयो ठे, ज्यारे पाच इंद्रीना वीषयनो न्नोग न पामे त्यारे जमता जाय ने चेतनता प्रगटे, सो गवेखु छुं, कायाने विषे इंद्रीओ सगे उपयोगी थइने चेतना परीणाम पामी ठे, ते प्रणमन तजीने एटले पलटावीने चेतना अतहकरणे, स्वरुपे प्रणमावे त्यां चेतन स्वरुपने न्नजे, स्वरुपनो न्नोग उपन्नोग करे, त्या कायानी गुप्ति कहीए, ए त्रण गुप्ति कही हवे पूनरपी न्नावथी सुद्ध-

नयनी मुख्यताए पाच समीती कह्यु तुं, तेमां प्रथम इर्या समीती सोभाव एटले स्वभाव में गमनागमन करवुं, ते उपर त्रण गुप्ति गवेखी ते जोगे उपाधीथी आत्मा जुदो थयो, विभाग वहेंचण थइ गइ स्वरुप में प्रवेस करवानो अवसर मल्यो स्वरुपना सन्मुख थयो, स्वस्वरुप चींतवीत ध्यान करे छे, परंतु स्वभावगत प्रवेस करवा में ज्ञान जोगनी मुख्यता छे, ने ज्ञान जोग ज्ञानावरणीना क्षय उपसम पूर्वक स्वभाव गत प्रकास करे छे पण ज्ञान जोगने स्थीर कर्ता मोहनीनो क्षय उपसम वा उपसम भाव छे, वली अंतरायनो क्षय उपसम थया वीना तो कोइ जीव समकीतादी आत्मीक गुण पामेज नही, वली दर्शनावरणीना क्षय उपसमना अभावे तो ज्ञानावरणी आदे कोइ कर्मनो क्षय उपसम थातोज नथी, माटे प्रथमथीतो चारे घाती कर्मनो क्षय उपसम भाव स्वभाव गत प्रवेस करवा में आत्माने हेतु छे, तेमा अंतरगत भावने पामवा में ज्ञाननो क्षय उपसम मुख्य छे, ने मोहनीनो उपसम भाव अधीक छे, परंतु आवरण भाव शत्रुने हणवामें तो एक ज्ञानज अधीक छे, ने चारीत्र वीर्य ज्ञान जोगने स्वभावगत प्रवेस करता अनुकुल सहायकारी छे, ने स्वभावमें पेसवानुं द्वार सो समकीत चोथुं गुणठाणुं छे, ने स्वभावनी पुर्णता सो क्षायक भावनी पूर्णताए संयोगी केवली नामे तेरमु गुणठाणु छे, तेमा उपसमभावनी योग्यताए चोथु गुणठाणु पामे सो स्वभावगत अंसे प्रवेश करीने पाछा पडे छे, ने उपसम समकीत भावे उपसम श्रे-

णी मांनी उपसम जावनु चारीत्र उपसात मोह अगीयारमे गुणगाणे पामे, सो उपसम जावे वीतराग थैने एक अंतर मुहुर्त स्थीती करी पाग पके, ते जावत उतकष्ट जागे मीथात्व गुणगाणे असंख्याती वा अनंती उत्सरपिणी अवसरपिणी,पण केइक जीव करे नीगोद सुधी पण पोचे परतु ए जीव उत्तम ठे कारण के अथी जेद करेलो ठे, माटे सत्ताए ऊव्य समकीती ठे, अर्ध पुद्गल परावर्तनी मांहेली कोरे सीद्धी वरसे, परंतु इहा तो कहेवानु एटलुं ठे के उपसमजावे तदगत जावने पामी वीतरागता अनुजवाय ठे हवे क्षय उपसम समकीतनी योग्यताए चोथु गुण गाणु पामे, सो दर्शन मोहनीना क्षयउपसमथी पामे ने तेने चारीत्र मोहनीना क्षय उपसमनी अधीक साज मलतां सातमा गुणगाणा सुधी प्रवेस करे ठे, एकात क्षय उपसमना वलथी उपरना गुणस्थानकना जावनी स्फर्सना होती नथी, एटले क्षय उपसम समकीतने क्षायक जावनी सहाय ज्यारे मलसे त्यारे वेदक एटले मीथात्वना जागनु सुज दळ जे समकीत मोहनी तेना उदयनो ठेलो ग्रास वेदक समकीत अवसरे सत्ताथी खपावी उच्छेद उनमुलन मीथात्वनुं करीने क्षायक समकीत एटले केइक जीव चोथे गुणगाणे क्षायक समकीत पामे ठे, अने केइक सातमा गुणगाणे पण पामेठे,परंतु क्षायक समकीत प्रामे ते में केइक पुर्वे आवता जवनु आयुष्य वांधीने पामेठे ने केइक नही वाध्यु ने पामे ठे, एटले नही वाध्यु ते अव कायु, क्षायक समकीती सोतदजवेज क्षपक श्रेणी मांडी

मोहनी आदि घाती अघाती कर्म हणी सीझी वरसे, एम वस्तुगत स्वभावमां गमनागमन करवु सो भावथी इर्या समीती पहेली कहीए, हवे बीजी भाषा समीती ते चोथा गुणठाणाथी कहेवाय परंतु व्यवहार में संजतीपदे भाषा समीती कहीए, पण इहां तो तदगत भावमे ज्ञान ज्योतीनो प्रकास जे उद्योत अजवाळु करता थाय छे तेन दृष्टांत पुर्वक गवेखुछुं,उपसम समकीतनो प्रकास चोथा गुणठाणे बीजना चंद्र तुल्य तदगत छे, ने उपसम श्रेणीए, पुनमना चंद्र सम तदगत छे, वळी क्षय उपसम समकीतनो प्रकास चोथा पांचमा गुणठाणे उगता सुर्य सरखो छे, ने सातमा गुणठाणे पाछला चोथा पहोरना सुर्य सरखो छे ने छठ्ठा गुणठाणे पांचमा गुणठाणानी अपेक्षाए विशेष अने सातमानी अपेक्षाए न्यून छे. वळी क्षायक समकीतनो प्रकास वज्र आयुनो एक पहोर दीवस चढतां वादळांना आवरणे रहीत थको सुर्य प्रकास करे छे, तदवत्त तदगत जाणवो, ने अवज्रायु क्षायक समकीतीने श्रेणीगते वादळा रहीत सुर्य मध्यानकाळे ग्रीष्मरुतुए ते जे ज्यादे तपे छे तदवत तदगत प्रकास करे छे, ए प्रकास कह्यो तेनो उपनय कहुं छुं, उपसम समकीतनो बीजना चंद्र सम प्रकास कह्यो ते बीजनो चंद्र एक मुहुर्त अस्त थवानो छे तेम उपसम समकीत पण अंत मुहुर्त स्थीतीकालनुं छे वळी बीजनो चंद्र कृष्न पक्षनी अपेक्षाए घणोज उद्योत कर्ता कहेवाय, तेम मीथ्यात्वी अज्ञानी जन जीवनी अपेक्षाए उपसम समकीती आत्म स्वरुपने तद

गत अनुभवे छे, माटे चेतन कहेवाय, वली अनुमोदवाने योग्य थया. जेम बीजनो चंद्र अल्पकाल रहेवानो छे, पण जोवाने सर्व इच्छे छे, तेम धर्मी पुरुषो ग्रंथी भेदी जीवनी अनुमोदना इच्छे छे, एम सरखापणु छे, वली उपसम श्रेणीए पुनमना चंद्र सम प्रकास कह्यो ते पुनमना चंद्रनो यथा स्थीत पुर्ण प्रकास छे तेम उपसम श्रेणीए तद्गत अरुपी आत्माने प्रत्यक्ष प्रमाणे यथास्थीत वीरागता अनुभवे छे, वली चंद्र छे ते परने अपरितापकारी छे परीताप न उपजावे तेम उपसम भाव छे ते मोहमहा शत्रु छे तेने पण पोताना आत्म प्रदेशे सत्ताए उपसमता परीताप उपजावे नही, हणे नही, एम सरखापणु छे वली क्षय उपसम भावे चोथा पाचमा गुण ठाणानो उगता सुर्य सम प्रकास कह्यो ते पाचमु गुणठाणुं देशे ऊणा पूर्व कोड परीअत स्थीतीकालनुं छे वली चोथु गुणठाणु उतकृष्ट भागे छासट सागरोपम जाजेरी स्थीतीनुं, छे ते अपेक्षाए उगतो सूर्य मलतो छे कारण के आखो दीवस रहेवानो छे माटे वली सूर्य परितापकारी छे. तेम क्षय उपसम भाव पण परितापकारी छे कारण के प्रकृती उदय मे आवे तेने खेरववा नीरजवाने क्षय उपसमभाव शक्तीवान छे वली सातमा अप्रमत स्थानके पाछला चोथा पहोरना सूर्यसम प्रकाश कह्यो ते उगता सूर्य करता घणोज अधिक प्रकास पाछला पहोरनो सूर्य करे छे तेम अपरमते तद्गत उपयोग छे ने प्रमाद ठाणनो प्रकाश तो बहुधा प्रमाद वादलाना समुहे करीने छवराइ गयो छे. तेथी, अवीशुद्ध छे.

ते कारणे न्यून कह्यो छे. वली पाछला पोहोरनो सूर्य जलदीथी अस्त थवानो छे तेम सातमा गुणठाणानो काल एक अंतर महूर्तनो छे एम सरखापणुं छे वली वध आयु क्षायक समकीतनो एक पहोर दीवस चढतां वादला रहीत सूर्य सम प्रकाश कह्यो ते मीथ्यातत्वनी त्रण प्रकर्तीए रहीत क्षायक समकीत अती नीरमल छे तेम ए सूर्यनो प्रकाश जादे चढती कलाए छे, ने त्रण पहोर केडे अस्त थवानो छे तेम क्षायक समकीती वधआयुने त्रीजे भवे संसार स्थीती अस्त थवानी छे. ने चढती कलाए अनंत चतुष्टी पामसे. एम सरखापणुं छे. वली अवध आयुक्षायक समकीतीने वादला रहीत मध्यानकाले ग्रीसम रुतुना सूर्य सम प्रकास कह्यो ते उतकृष्ट भांगे सूर्यनो प्रकाश ए अवसरेज लाधे छे तेम अवध आयुक्षायक समकीतीने उतकृष्ट भांगे क्षपक श्रेणीए क्षय उपसम भावे ज्ञान जोतीनो प्रकाश लाधे छे एम सरखापणुं मलतुं जोइने द्रष्टांतो तद्गत प्रकाशने जाणवाने आप्यां छे ने ज्ञाननो तो अरुपी विषय छे अरुपी वस्तुनो प्रतीभास थाय सो भावथी बीजी भाषा समीती कहीए ने केवल ज्ञाननी जोतीनो प्रकास तो अनंता सूर्य साथे उदय पामे तदवत जाणवो हवे त्रीजी ए सणा समीती गवेखुंटुं एसणा एटले आत्माने चेतनगुणनो आहार एटले भोग उपभोग करवो ते दुषणे करीने रहीत निरदोष केवलीनी द्रष्टीए कहीए ने असनपान खादीम स्वादीम एसणी आहार निरदोष कहीए ते छदमस्थनी द्रष्टीए

नीरदोष छे ने केवळीनी द्रष्टीए तो दोषीतज मान्यो छे. ते इहां न कल्पे आतमा अणहारी छे माटे इहा तो स्वरुपे नीजगुण स्थीरता सो भोगने उपभोग कहीए तेनो भोगी आतमा ते गुण नीस्पन समय भोग कहीए. पूनरपी वारंवार उपभोग कहीए, सो गुण नीस्पन गुण स्थानक गवेखंवुं चोथे गुणठाणेथी सम्यक ज्ञान दर्शननो भोग उपभोग चमती कळाए वृद्धि पामतो पामतो दसमा गुणस्थानकना अंत सुधि कहीए उपरात वितराग पदे यथाख्यात चारित्रनो भोग वध्यो ते संयुक्त भोग उपभोग कहीए तेना उपरांत ते रमे गुणठाणे अरिहत पदे केवळज्ञान केवळ दर्शन वळी दानादीक क्षायक भावनी पाच लब्धी एम सात गुणना भोगनी वृद्धि थइ एटले क्षायक भावनी नव लब्धी गुणना भोग उपभोगनी पूरणता पाम्या उपरात चउदमा गुणठाणा अंते अव्याबाध सुख अक्षय स्थीती-अरुपी अने अगुरु लघु एम चार पर्यायनो भोग उपभोग वध्यो अटळ अवगाहना सो सिद्ध थया लोका अग्रभागे सादी अनंतोकाळ स्थीतीवंत अनंत गुण पर्याय नीरमळपणे ते भोग भोगी उप भोगी सो भावथी त्रीजी एसणा समीती कहीए हवे चोथी आदान नीखेपणा समीती सो उपगरण कारणे लेवुं मुकवुं ते इहा भावमा शु लेवुं मुकवु छे तेने गवेखुं तु भावमा तो क्षय उपसम भावज कारण छे तेमा प्रथम ज्ञानावरणीनो क्षय उपसम लेवो, बीजो दर्सनावरणीनो क्षय उपसम लेवो त्रीजो मोहनीनो क्षय उपसम लेवोअनेचोथो अंतरायनोक्षय उपसम

लेवो हवे तेने मुकवो सो गवेखुं छुं एटले ए चारे कर्मनो क्षय उपसम ज्ञान जोगनी नीश्राए थयो त्यांथी कहीशुं. मोहनीनो क्षय उपसम तेमां दर्सन मोहनीनो क्षय उपसम आत्मा पामे तेन कारण कहीए ते कारण कार्यपणानी योगता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्तावी क्षायक समकीत प्रगट करी चोथे गुणठाणे वा सातमे गुणठाणे मुकीए ने चारित्र मोहनीनो क्षय उपसम लेइ कार्यपणानी योग्यता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्तावी यथाख्यात चारित्र प्रगट करी दसमे गुणठाणे अंते मूकीए ने ज्ञानावरणी दर्सणावरणीने अंतराय ए त्रण कर्मनो क्षय उपसम लेइ कार्यपणानी योग्यता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्तावी केवळज्ञान केवळ दर्सनने क्षायक भावनी पांच लब्धी दान लाभ भोग उपभोग ने वीर्य ए सात गुण प्रगट करी वारमे गुणठाणे अंते मूकीए तेनुंज नाम आदान नीखेपणा समीती कहीए तेमां कार्यपणानी योगता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्तावबुं कह्युं ते चोथा गुणठाणाथी साधन योग्यता कही ए समकीतनी साधना सातमे गुणठाणे पूरण थइ कारण के चोथे गुणठाणे क्षय उपसम समकीत पामी क्षायक न करे तो छेवटे सातमा गुणठाणे क्षायक समकीत करे वली चारीत्र मोहनीनो क्षय उपसम चोथे गुणठाणेथी थयो परंतु व्यवहारमें पांचमा देश वीरती गुणठाणेथी चा० अपेक्षाए धर्म साधन योग्यता कहेवाय तेनी साधना दसमा गुणठाणाना अंत सुधीजे हवे ज्ञानावरणीना क्षय उपसम जोगे ज्ञान सो विशेष उपयोग कहीए ने दर्सना वरणीना क्षय उपसमजोगे दर्सन

सो सामान्य उपयोग कहीए वळी अंतराय कर्मना क्षय उपसम जोगे क्षय उपसम भावनी दान लाभ भोग उपभोग ने वीर्य सो पांच लब्धी कहीए एम सामान्य विशेष उपयोग ने क्षय उपसमभावनी पाच लब्धी ए सात गुण चोथा गुणठाणेथी कर्मना क्षय उपसम पूर्वक आत्माना गुण आत्माने प्राप्त थयाछे तेनी साधना अनुक्रमे बारमा गुणठाणाना अते पूर्ण थायछे, त्यां सूधी साधन योगता कहीएए क्षय उपसम भाव क्षायक भाव नीस्पन थवाने प्राप्ती करवाने हीतवंच्छक कारण छे एना अभावे सर्व अकारण जाणवु क्षय उपसम जेवो बीजो कोइ आत्माने हेतु नथी. ए भावथी आदान नीखेपणा समीती चोथी कही हवे पाचमी परीठवणीआ समीती कहेछे इहातो मळ परठववानोछे तेनो वीचार करवो त्यारे आत्माने कर्म लाग्या छे एनेज भाव मळ कहीए तेमा जे चार घाती कर्म छे तेनो अपेक्षाए कहीए ठीए ते चोथु गुणठाणु आत्मा पामे त्यारे मळ परठववानो वखत आवे छे सो गवेखु छु चोथा गुणठाणे दर्सन मोहनीनी त्रण प्रकरतीने अनंतानुबंधी कसायनी चोकमी मळी सात प्रकरती परठवाय छे. पांचमा गुणठाणे अप्रत्याख्यानी चोकमी परठवाय छे छठे गुणठाणे प्रत्याख्यानी चोकमी परठवाय छे सातमा गुणठाणे पांच वा आठ प्रमाद परठवायछे ने आठमा गुणठाणे आशादी षट परठवायछे नवमा गुणठाणे प्रथम त्रण वेद ने अंते सजळना त्रण कसाय मळी छ प्रकरती परठवायछे दसमा गुणठाणे संजलनो लोभ अणु छे तेने अशुद्ध प्रणती सो राग तेने पर-

ठवाय छे बारमा गुणठाणे ज्ञानावरणी दर्शनावरणी ने अंत-राय ए त्रण कर्म परठवाय छे तेरमे गुणठाणे अघाती चार कर्मनी वहोलता एटले सत्ताए पंचासी प्रकरती रही हूती तेमांथी वहोतेर प्रकरती परठवाय छे. चवदमा गुणठाणे अंते कार्मण कर्म वर्गणा अघाती तेर प्रकरती परठवी पवीत्र अ-संख्यात प्रदेशे नीरमल थइ त्रीजा भागनी कायाना मानथी अवगाहना घटाडी वे भाग परमाण आत्म प्रदेशनो नीव-डघन करी एक समयकाल माने सम श्रेणीए वीजा आकाश प्रदेशने अणफरसते लोक शीखरे एटले अग्रभागे सादी अनंत भागे स्थीती करे सो सिद्ध परमात्मा कहीए एम सिद्ध पद दाता परीठवणी आ समीती पांचमी भावथी कहीए ए द्रव्य भाव भेदे पच समीती त्रण गुप्ती कही तेनो परमारथ कहु छुं समीती सो प्रवर्ती कहीए ने गुप्ती सो निरवृती कहीए नीरवृती सो त्यागनुं नाम छे ने प्रवर्ति सो ग्रहणनु नाम छे त्यारे आत्माने त्याग शु करवानुं छे ने ग्रहण शुं करवानु छे तो उपाधि त्याग करवानीछे ने समाधी ग्रहण करवानीछे. त्यारे उपाधी तो मनवचन ने काया तेज राग द्वेष ने तेज कर्म वंध हेतु छे सो उपाधीस्थान कहीए तेना वे भेद एक असुभ उपाधी अने वीजी सुभ उपाधी वळी समाधीना वे भेद एक द्रव्य समाधी अने वीजी भाव समाधी द्रव्य समाधी सोद्रव्यथी पंचसमीती गवेखी तेने कहीए ते में अ-शुभ उपाधीनो त्याग थाय छे. ने भाव समाधी तो सहेज समाधीनुज नामछे.सो भावथी पच समीती गवेखी ते कहीए

ते में सुन्नासुन्न उपाधीनु ज्ञन मुखन सो मुल साथे त्याग छे तीहां आत्मानुं कारज कहीए एनीश्वरती प्रवर्तिकही तेनुंज नाम व्यवहार सापेक्ष धर्म साधना कहीए वली पंच समीती ने त्रण गुप्ती सो अष्ट प्रवचन माता कहीए तेनो अर्थ कहुं छु प्रवचन तो सीद्धांतनुज नाम छे तेना बे भेद एक द्रव्य सीद्धात बीजो भव सीद्धांत द्रव्य सीद्धात तो पीस्तालीस आगम कहीए सो छे ने भाव सीद्धात तो आत्माने कहीए एम शान्त रस नामें ग्रंथमें कह्युं छे तेनी एटले सीद्धांतनी कहेतां सीद्धातना मालीक आचार्य उपाध्याय ने साधु तेमनी वली आत्मानी कहेता समकीती देश वीरती ने सर्व वीरतीसो अतर आत्मानी माता कहेता पंच समीती ने त्रण गुप्ती सो माता कहीए एटले समीती गुप्तीएज नीत आचार्य उपाध्याय ने साधुपद कहीए वली श्रावक कहीए पुत्र माताने न पाले तो पुत्रने ऐब लागे तेम द्रव्यचारीत्री आ द्रव्य समीती गुप्ती न पाले तो द्रव्य चारित्रने एब लागे ने भाव चारीत्री आ भाव समीती गुप्ती न पाले तो भाव चारीत्रने एब लागे ने एब तो वीराधक भावनुज नाम छे माटे आचार्य उपाध्याय ने साधु वीराधक थाता द्रव्य चारीत्र जोगे नवग्रीवेक न मीले अने भाव चारीत्र जोगे मुक्ती न मीले तेम अनुतर वीमान पण न मीले आराधक थयाज मीले वली समकीती देश वीरतीने वीराधक थता देवलोक न मीले वली वीराधकनो तो नीमजनथी जावत वीराधक थतों नरके पण जाय छे माटे घट में ज्ञान लावी अष्ट प्रवचन माताने

पाळी आराधक थवुं आराधक थयां संजती धर्म कहीए तेने
दस भेदे वर्णवुं छुं तेमां प्रथम धर्म तो क्षीमा कहीए तेना
वे भेद लोकीक क्षीमाने लोकोतर क्षीमा लोकीक क्षीमाना
त्रण भेद उपचार क्षीमा,वीचार क्षीमा अने वीपाक क्षीमा
ए त्रण भेद कह्या तेनो अर्थ कहुं छुं कोइ सामो पुरुष बोल्यो
तेना सामु न बोले, पोताना मनमां वीचारे के बंने सरखा
बनशु एम जाणीने समताभावे रहे तेने उपचार क्षीमा
कहीए वळी कोइए आपणुं अपमान कर्युं वा बगाड कर्यो
तेना सामुं बोलतां वीचारे के महा क्रोधी छे जो कहेवा
जइशुं तो तीखा थइने लडवा आवशे एम वीचारीने क्षीमा
राखे तेने बीजी वीचार क्षीमा कहीए,त्रीजी क्षीमा आगलो जो-
रावर छतां तेना उपर आपणु वल पराक्रम कांइ चाले नहि.माटे
मन मांहे तो क्रोध होय पण देखवाथी बाह्यपणे क्षमा आ-
दरे तेने वीपाक क्षीमा कहीए एवी क्षीमाने लोकीक कहीए,
हवे लोकोत्तर क्षीमा कहुं छुं एक वचन क्षीमा अने बीजी धर्म
क्षीमा तेमा वचन क्षीमासो भेद ज्ञाननी अपेक्षाए जड चेतन
नी वीभाग वहेचण पूर्वक वस्तुने वीषे वस्तुपणुं घटावीने
हेतु दृष्टांत जुक्ती पूर्वक तर्क वीतर्कना खुलासा पूर्वक भवी
जीवने बोधबीज पमाडवा हेते करुणा लावी उपदेश करे
मीथ्यात्व मळ उतारी समकीत पमाडे वा पामेलाने नीरमळ
करी आपे वा गुणठाणे चडवाने आलंबनभुत थाय वा मो-
ळताने थीर करेसो उपदेस ते वचन क्षीमा कहीए हवे बीजी
धर्म क्षीमा तेना वे भेद एक व्यवहारने बीजो नीश्चे.व्यवहार

ते गुणठाणानी हद पूर्वक क्षय उपशम जोगे क्रोध ना आवे क्रोधमा व्यापकपणु न करे ने समता भावे वर्ते ए व्यवहारे धर्म क्षीमा कहीए ने क्रोधनी सत्ताना उनमूळन जोगे क्षपकश्रेणीनी अपेक्षाए नवमा ठाण अते एटले दसमा गुणठाणेथी नीचे क्षीमा कहीए ए बेहु भेदे लोकोत्तर क्षीमा कहीए ए सजती धर्मनो पहेलो भेद कह्यो

हवे बीजो भेद ते मार्दव धर्म कहीए ते मानना एटले उन्माद ते मदना त्यागथी आवे मद करवाथी जीवने अंतराय कर्म बधाय छे ते मदना आठ भेद तेमा प्रथम जाती मद एटले जाती कहेता मातानो पक्ष एटले पोतानो मुसाळ पक्ष घणोज उत्तम होय एव रहीत होय वळी बीजो कुळमद ते पीतानो पक्ष, दादानो वमीलोनो पक्ष घणोज उत्तम होय एटले जावत चक्रवर्ति होय तीर्थंकर होय तेनो मद करवो एटले उन्मादी थावु घणु राचवु माचवु नाचवु ते लघुता पामवाना अर्थे थाय छे ते देखाडु छु जातीनो मद हरीकेसीए पूर्वना भवमें कीधो ते चडाळनी कुखे जन्म पाम्या वळी कुळनो मद वीरस्वामीना जीवे मरीचीना भवे भरतराय चक्रवर्तिना पुत्र थैने त्रीदंडी परीव्राजकनु लींग ग्रहण करी कीधो ते छेल्ले तीर्थंकरना भवमे चवीने भीक्षुक कूळे एटले ब्रामणीनी कुखे आव्या एथी बीजी शी लघुता कहीए एम मद करवाथी जीव लघुता पामे छे माटे वीवेकीने एम वीचार करवानु छे के जगतमें उत्तम मध्यम आदे कहेवाय छे ते पूर्वोपारजीत कर्म छे ते हु नही हु तो अगुरु

लघु गुणे संयुक्त बुं एटले उत्तमे नहीं तुं ने मध्यमे नही तु उतम मध्यम कहेवुं एतो जमना नामा ठे सो आरोपीत कहीए कारण के वीना शशील ठे सनाय रहेवानुं नथी तु अनादी संवधीत चतुरगती संसार भ्रमण करतां अनंतीवार उंच नीच थयो एम वीचार करी मद न करे तेने मारदव धर्ममें गणीए हवे त्रीजो वळमद ते कायानुं घणुं वळ पामीने एटले फोरवीने कांतो वाघने मारे ने कांतो शत्रुने हणे इत्यादी जीवनो वध करी हींसक थइने नरकनु आयुप वांधीने घणो राजीपो माने कारण के मारा जेवो कोण बळीउं ठे कोनी माए सूंठ खाधी ठे ते हुं करु ए काम वीजो करे, वा मारा सामुं जुवे परतु एम न वीचारे के राजानो नोकर आवीने मने केद करी पकमी जाय तो मारु कइ पण चाले नही वली नवांतरे परमाधामी अनंतु दुःख आपशे त्यां पण कंइ चालशे नही हुं शुं मद करुंतुं मारा करतां तो जगतमे घणा जोरावर जोद्धा ठे वळी वीचारे के हे चेतन तुं करण वीर्यने जोइने शुं मद करे ठे. तुं तारु अकरणवीर्यअदगत चीतव्यने स्वस्वरुपे सहेज नावे फोरव तारो अखूट खजानानो नमार अमुलख रत्न शुं नरेलो सो अभ्यंतर लक्ष्मी मोहएह्वी लूंटीने लेइ जाय ठे ते मोहने तुं हणे तो तारुं वळ खप लागे तुं वळीओ अनंत वीर्यनो धणी कहेवाय त्रण जगतने वखाणवा पूजवा ध्यान करवा स्तुती करवा योग्य थाय, परंतु अंत हकरणे सहेज नावे वीर्य फोरववुं ए शक्तीतो पोतामे देखाती नथी तेनो खप करु एम

वीचार करी एता वळे मद त्यजे सो मारदव धर्ममें गणीए हवे चोथो रुप मद सो मनोज्ञ सुंदर रुप कान्ती यथायोग्य आंगोपाग सुदर एटले जेवा जोइए तेवा वखाणवा लायक रस एटले जीहनी पटुता गध एटले कमळना श्वासपूर्वक स्वासोस्वास महके छे जेने फरस एटले घणोज सुकुमाल नीरमळ,वली सुंवाळोने स्नीग्ध आदि तेजस्वीपणो चातुर्यपणो लायकीपणो इत्यादी पामीने मद करे नेबीजाहना सामु जोतो फरे वली मनमें आनंद माने के मारों जेवो कुण रुपवान छे एम पोताना सरीर उपर मोह पामीने मद करे सो रुप मद कहीए परंतु वीवेकीने एम वीचारवातुं छे के सनत कुमार चोथा चक्रवर्ति थया तेमनी अमुलख कायाने एक क्षणमे वणसता वार न लागी असुचीमय दुर्गंध व्यापक पणे थइ तबोळ थुंकीने जोता कीडा दीठा मोरठा उतरी गइ समज्या के ए काया छे सो क्षण भंगुर छे वीनाश शील छे सुभ कर्मना उदय जोगे जीव पामे छे ने अशुभ कर्मना उदय जोगे तेनी हांणी थाय छे ए पामवु ने हानीवु थावुं सो सुभासुभ पूर्वोपारजीत कर्म छे ते हु नही मारु रुपतो अरुपी छे वळी अचळ अवीनाशी छे त्रण कालमे नाश थावानो नथीआ रुपी काया सो हु नही एम घटमें ज्ञान प्रगट होवाथी सनत कुमारे चक्रवर्तीपणानी रीद्धीने पर वस्तु जाणी मोरठा उतारी त्याग करी एकाकीपणे चाली नीकल्या संजती थया रत्न स्त्री आदे वहोळु टोळु छ मास सुधी लो पाछळ फर्युं छे परतु तेमणे सामु पण जोयु नथी रोगनी

वृद्धी थवा लागी रोमे रोम नारां पड्यां छे. परंतु उदीकभाव भोगव्या वीना छुटे नही. एम जाणी ठंसड उपचार पण कर्यो नथी कारण के ठंसड उपचार करीने उपरथी रोगनी शांन्ती करीसु पण अंदरथी शांन्ती नही थाय ने ज्यारे त्यारे दु.ख आपशे माटे आ वखते हुं समताए दुःख भोगववाने सहन करवाने शक्तिवंत छु एम तीक्षण उपयोगी थै सातसो वर्ष सुधी रोग परीसह सहन करी अनंती व्याधी भोगववाना अवसरे समाधी चींतवी छे आयुपनो अंत आवे काळ करीने पांचमा ब्रह्म देवलोके गया धन्य छे ए पुरुषोतमने एम रुप पामीने मोरछा न पामे ने ए रुपथी पोतानुं अंतर रुप जुदु जुवे तेने मारदव धर्ममें गणीए हवे पांचमो तपमद ते केश्कने तप करवानी रुची घणी होय कारण के कायानी शक्ती होय जीभा इंद्रीनु लोलपी पणु ठंवु होय वळी जठराअग्नी पण थोडी पीडती होय वळी तप करवानो अंतराय तुट्यो होय त्यारे रुची उपजे ते जोगे आकरो तप करे सो गवेखुं तुं जाव जीव आंबलनो तप करे अथवा छठ छठ पारणु करे वळी कनकावळी रत्नावळी मुक्तावळी आदे अनेक प्रकारे तप करे एम उतकष्टी तपसा जोगे महा पुरुष जांणीने पारणाना दीवसे घणा सेवको टोळे टोळां मली घणो आग्रह भक्ती बहुमान आदर सतकार करे त्यारे कर्मनी वीचीत्र गती छे तप छे सो तो कर्मनी निर्जरा करवानो हेतु छे परंतु मद आवे के जगतमें मारा जेवा कोई तपस्वी नथी एम चींतवतां अंतराय कर्म बंधाय छे तप उदय आवे नही क्षुधा फाकी पीडे आ-

हार घणो करवो पके तपनो मद करवाथी कुरकगुरु मूनीराय तपनो अंतराय पाम्या ठे माटे वीवेकी पुरुषोने तो एम वीचार, करवानुं ठे के आहार करवो ए पुद्गल जोगे ठे ने आहारनो त्याग करवो ते पण पुद्गल जोगे ठ कारण के आत्मा तो अणहारी ठे आहारनो नोक्ता नही ठे ए तो ज्ञानादी नीजगुण नोगी ठे उपयोगी ठे सो तपे तपेसरी आत्मा कहेवाय त्या कर्मनी अनंती नीर्जरा थाय ठे तेनुंज नाम तप कहीए एम समजीने तप करतां ठतां मद न करे तेने मारदव धर्ममे गणीए हवे ठगो ऐश्वर्य मद सो ठकुराइनो रीद्धीनो मद ते एकदा वीरसामी चौवीसमा तीर्थंकर समोसख्या, दसारण नद्रराये प्रजुना आगमननी वधामणी सांनळी घणा प्रमोदे वधामणी लावनारने घणो द्रव्य आपी पोतानी नगरीमें सर्व रैयतने जाहेराती आपी के वीर परमात्मा पधार्या ठे, वादवा जवु ठे, वस्त्र आजुषण दर दागीना वळी हाथी घोमा, रथ, वृषन, आदे जेने जे जोइए ते लेइ जाव, नमार द्वार खुला मुस्या ठे घणो वाजींत्रनो ठाठ मेळव्यो ठे अगमा प्रमोद तो मातोज नथी, वह्रोळो समुदाय मळी अती हर्षवंत थे, नगरी वहार जातां समोसरण थोडुं खेटे रह्युं ठे त्या दसारण नद्रने सामैयानो अदनूत ठाठ जोइने मद आव्यो के आवी रीद्धीए मोटा आर्मबरे मारा जेवुं सामैयु कोइए कर्यु नथी एम वीचार थाता इंद्र महाराजे अवधी ज्ञाने उपयोग करी जोयु के स्या हारी जाय ठे, एम चींतवी मद उतारवा अर्थे देवताइ रीद्धी वीकुर्वी,तेरीद्धीनु वर्णन

करतां ग्रंथ गौरव थइ जाय सो देवताइ रीद्धी दसारण भद्र समोसरण नजीक आवे छे एटलामां आकासथी नीची उतरतां जोइ दसारण भद्रनुं अभीमान रीद्धीनो मद गळी गयो, देवताइ रीद्धीना आगळ दसारण भद्रनी राजधानी तरणा प्राय मांनी जायछे, त्यांज घटमे ज्ञान आव्युं वीचारवा लाग्या के आवाह्यरीद्धी तो पुद्‌गलना घरनी सो वीनासिक छे, सदा मत्त रहेज नही, मारा आत्मामां ज्ञान चेतना आदे अनंती रीद्धीए हुं ऐश्वर्यवंत छु, ते रीद्धी प्रगट करवाने वीर स्वामी तीर्थंकर देव सो पुष्ट आलंबन मळ्युछे, एम समजी भगवान वीरसांमी पासे जै त्रण प्रदक्षणा देइ वीनययुक्त वांदी बे हाथ जोडी स्तुती करी प्रमोदीत थै रोमाचीत उलसीत थये छते रुदय हर्षे भराणे छते पोताना आत्माने धन्य मानते छते द्वादस प्रर्षदानी साक्षी पूर्वक बोले छे के हे नाथ हे दीनबंधु करुणासागर हु अनाथ मारा उपर पसाय करी महावीरती पद आपो, एज अवसरे संजती थया इंद्र आवीने वांद्या वळी कहे छे के मान तो मांनवने होजो मारामेंए शक्ति नथी एम परवस्तु बाह्यरीद्धी जाणीने ममता मुके तेने मार्दव धर्ममा गणीए, हवे सातमो वीद्यानो मद सो मतीश्रुत ज्ञानना क्षय उपसम जोगे वृद्धी पामता सीद्धांत आचारंगादी, वली ग्रंथ प्रकरण,व्याकरणादी भणे, ज्ञानी कहेवाय वीद्याना वळे घणी वस्तुनु जाणपणुं थाय इहां पण मद आवे के मारा जेवा कोई ज्ञानी नही छे, हु पारगामी छुं, पुछयानो उत्तर आपवाने शक्तिवंत छु एम पोतानी मोटप माने त्यांथी अ-

धीक थावु तो बंधज पडे छे त्यातो वीवेक लावी एम वीचार करवानो छे के, हु जे जाण्यो छे ते तो वीद्या छे अजी मने ज्ञानपणे प्रणमी नथी जो ज्ञानपणे प्रणमी होत तो, मद न ही आवत, मारा वयमा आगळ एटले पुंठे सुं छे तेने देखवाने तो हु शक्तिवान चक्षुवत नथी हु शु मद करु तु, वळी हुं शब्दे मारी काया तेमा व्यापकपणे आत्मा रह्यो छे, सो परमात्मा सरसो शक्तिभावे जोइए तो यथारथ मळ आवरणे रहीत अनादी सीद्ध छे, तेने वस्तीमे क्षायक भावे प्रगट करु त्यारे मारु ज्ञान पद सावीत थाय तो हु पोते ज्ञानी लोक अलोकनो वळी रुपी अरुपीनो ने जीव अजीवनो उत्पात व्यय ध्रुव युक्त त्रणे काळनी वर्तनानो एक समये जाण थाउ, तेनु नाम ज्ञान कहीए, एम समजी छती वीद्याए मद न करे तेने मार्दव धर्ममा गणीए, हवे आठमो लोभ मद सो संसारमें गृहस्थीना घरे मनुष्य संबधीमें एक चक्रवरती करता तो कोइ रीद्धीए वा ठकुराइए अधीकज नथी सर्वोपरी चक्रवरतीपद छे तो ए पदनी पुर्णताए पण आठमा चक्रीनी लोभनी स्थीती अटकी नही छे एटली बीजी मेळववानो उन्माद थयो सो मद कहीए, इहा तो एम विचार करवानो छे के हे चेतन ए रीद्धीमें मोर्हीत थने शुं लोभ सागरमे डुबी अधोगतीए नर्के जाय छे, ए रीद्धी तो पुर्वोपार्जीत कर्म सजोगे मली छे, सो तारी नथी तारी रीद्धी तो क्षायक भावे शक्ति ए आत्मामा रही छे तेने छेळस घटमा ज्ञान लावी जाणपणु कर ने वीर्य फोरवी कर्मजाळने तोडी पोतानी सत्ताने वक्ति

में नीर्मळ कर ए रीद्धी प्रगट थातां अव्याबाध सुखना विभागी सादी अनंत भांगे थासो एम समजीने नीरलोभी थाय, तेने मार्दव धर्ममां गणीए, एम आठ मदना त्यागथी संजती धर्मनो बीजो भेद कह्यो, हवे त्रीजो भेद सो आर्यव धर्म कहीए, ते माया एटले कपटना त्यागथी आवे त्यां वीचार करवो के कपट ते सेनुं नाम छे, त्यारे कायाथी करवुं ते जुदु, ने मुखे बोलवुं ते जुदु, मन शुं चींतववुं ते जुदु एम तरणे योगीनी भीन्नता तेनुज नाम कपट वृती कहीए, एटले कपट भाव तज्या वीना सरळता आवे नही ने सरळताना अभावे कोइजीवसमकीत पामे नही.तेसमकीत पामवा माटे वीवेकी पुरुसोने तो अवस्यवक्ता तजवी पके ने त्रणे जोगनी वांकी चाल छोडी एकज सरळता मारगे लावी मनने थीर करीए, त्यां काया वचन थीरता पांमे एटले त्रणे जोग थीर पड्या त्यां चेतना पुद्गलनो एटले इंद्रीनो इंद्रीनो वीकार न पामेने त्यांज अंतरमां व्यापकपणुंकरे वळी स्वरुपे उपयोगी थाय स्वरुप रमण करे तेनुंज नाम सरळता सो आर्यव धर्म कहीए, हवे चोथो भेद सो मुत्ती धर्म कहीए ते लोभना त्यागथी आवे ए लोभना बे भेद एक आ भव ने बीजो पर भवनो आ भवना लोभना बे भेद एक परीग्रहनो ने बीजो इंद्री पोषणनो तेमांजे परीग्रहनो लाभछे, ते कंचनकामनीना त्यागी थयां संजती पदे टळे छे, ने इंद्री पोखणनो लोभ तो प्रमाद छठ्ठु गुणठाणुं छोडयां सातमा अप्रमत गुणठाणेथी टळे कारण के प्रमाद गुणठाणे स्वरुप रमण उपयोगीपणुं

पांच प्रमाद प्रसंगे नही ठे, नें स्वरुप रमणीपणानो ज्यां अन्नाव तीहा शुद्धी पोषणनो संन्नव ठे माटे लोन्न कहीए, ते आ न्नव आश्रीने लोन्नना वे न्नेद कह्या हवे परन्नव आश्रीने लोन्न तो जेने पुन्यनी आकक्षा ठे तेने कहीए, परंतु कहेवानुं सार एटलुं ठे के लोन्न ठे ते नवमु पाप स्थानक ठे एटले असुन्न प्रकरती ठे, सो वहुधा तो पापने खेंचे ठे माटे पुन्य मागता पाप पण उपार्जे,ने नीरलोन्नीना घरे पून्यनी खपतो नथी पण घणुज पुन्य आवे ठे, ते उपर दृष्टांत कहुडुं, जेम वागमे उत्तम वृक्ष फळना अर्थीए वाव्यु ठे, तेने गास तरणानी खपतो नथी परतु माटी पाणी जोगे घणुंज उगे ठे परंतु नीदी उपाडी नाखे ठे, तो पण उगे छे परतु अर्थी नथी, अर्थी तो फळनो ठे, तेम इहा उपनय जोमीए ठीए, जेने सजती पद ग्रहण करतां पुन्यनी आकक्षा राखी नथी फक्त आत्माने कर्मथी मुक्त करवानी आकक्षा एटले सरागता करी ठे तेने सरागता जोगे शुन्न आश्रव आवे ठे तेम ज्ञान ध्यान जोगे नीर जरता जायठे परंतु आवे तेम नीरजरता जाय, कारण के जेम वागमें वृक्ष वाव्यु ठे तीहा कचरानो सन्नव उपामी नाखे नही तो वृक्ष वृधी न पांमे तेम इहा नीरजरतो न जाय तो वंध पधती वृधी पांमे त्यारे आत्माने कर्मथी मुक्त करवु कह्युं ते वचन असत्त थाय परंतु केटलुं नीरजरे जेम जेम नीरजरता जायठे तेम तेम घणुज आवेठे,ए आववानो सन्नव जीहां सुधी क्षय उपसम न्नाव हणयो नथी त्या सुधी वंधज होतो नथी, वळी प्रमाद गुणगणेथी आगळ जेम जेम

गुणठाणु चढेछ तेम तेम अगीयारमा गुणठाणा सुधी घणुज पुन्य अनुत्तर वीमाननी योग्यतानां सुज दळ उपार्जे छे, उपसम श्रेणीनी अपेक्षाए वळी कहेवानुं सार एटलु छे के जेने पुन्यनी आकंक्षा छे ने पुन्य उपार्जे ते वातनी एकांते नातो कहेवायज नही परंतु आकक्षाए पुन्य ग्रहण थयुं ते पुन्यानुंवंधी पुन्य नहीछे, पापानुवंधीछे, एम समजो आकंक्षानुं नामज नीयाणु, नीयाणु करेछे, तेने पण मोठांछे, ने आकंक्षावाळाने पण मोठा छे एम समजीने वीवेक लावी पर आकंक्षा रहीत धर्म करवो सीधांतमे ग्रंथमे ठांम ठांम एज वचनछे, जेने आकंक्षा नथी तेने नीर्लोभी कहीए, वळी तेने संजती धर्मनो चोथो भेद कहीए, हवे पाचमो भेद सो तप कहीए तेना वे भेद एक वाह्यतपछे, वीजो अभ्यंतर तप, वाह्य तपना खट भेद, इहां सकाम नीर्जरानी भजना तेमां प्रथम भेद सो अणसण तपछे, तेना वे भेद एक थोडा काळनो ने वीजो जाव जीवनो, थोडा काळनो ते नोकारसी, पोरसी, एकासणु आंवील उपवास, छठ, अठम, आदे अठइ करे, पंन्नर करे वळी रत्नावळी, कनकावळी, मुक्तावळी आदे तपना घणा भेद छे, सो तप करे तेने थोडा काळनो अणसण तप कहीए ने जाव जीवनो एटले आयुष्यना अंत सुधीनो अणसण तप तेना वे भेद एक पादो उपगमण अणसण ने वीजो भत्त पच्चखाण अणसण, तेमां पादो उपगमण अणसणना वे भेद एक तो सीह अग्नि प्रमुखनो उपसर्ग थाय तो पण त्यांथी डगे नही ने वीजो एवा उपसर्गना अभावे एटले नही प्राप्त थतां

जेम वृक्षनी डाळ कापेली पडी होय तेम हाले चाले नही, ए वे भेद कह्या हवे भत्त पचखाण अणसणना वे भेद एकतो सींह अग्नि आदे उपसर्ग उपन्या थका भत्त पचखाण करे, नेवीजा मुळथी अणसण कर्युं त्यारथी पचखाण करे ए वाह्य तपनो पहेलो भेद कह्यो, हवे वीजो भेद उणोडी तप तेना वे भेद एक द्रव्य उणोडी, वीजी भाव उणोडी द्रव्य उणोडीना वे भेद एक भात पाणीनीने वीजी उपगरणनी भात पाणीनी उणोडीते भात पाणी ठंडुं वापरवुं वा एक भक्त करवु उपगरणनी उणोडीते नरम वस्तुउं ठीए चाले तो त्रपणी राखवानी जरुर नथी वळी वींगे आहारमे भेळी लेइए तो चेतनानी जरुर नथी वळी चोळपट्टो कपडोतो एकज राखवानो मुख्य मारग छे कारणे अधीक होय तो वीना कारणे एके चाले वळी कदाच कारणसर गृहस्थी थकु वनात साल आदे वस्त्र लाव्या होय तो वापरे परतु कारणना अभावे पाछु आपता पण उणोडीमा गणीए, ए द्रव्य उणोंडी कही, हवे भाव उणोंडी कहु छ॰ छठा गुणठाणे पांचे प्रमाद सेवाय छे तेनी गाथा

मजं विसय कसाया निद्राविकहा पंचहाभणीया
ए पंच पम्माया जीवं पाडंति ससारे,

अर्थ —मजं कहेता आठ मद तेने तजीए वीजु वीषय कहेता पाच इंद्री संगे चेतना वीषय भोगी छे तेने अंतरमें भणसावीए, तहा तेवीस वीषयनो अभाव कहीए, त्रीजो

कषाय कहेतां क्रोध मान माया ने लोभ उदयागत प्राप्त थाय तेने क्षयउपसम वळे खेरवीए नीद्रा कहेतां आंखमां उंघ आवे तीहां ज्ञान भाव उपयोगे चेतना जागृती करीए, तीहां टळे छे. वीकहा कहेतां वीकथा, सो देश कथा राज कथा स्त्रीकथा ने भक्तकथा ए चार कथा वर्जीने सजाय ध्यान, धर्म ध्यान करीए एम प्रमादनी ओठास करतां सात मुअप्रमत गुणस्थानक तेमवा आवे छे ए भाव उणोडी कही सो वीजो तपभेद कह्यो हवे त्रिजो वर्तीसंक्षेप तप कहुंछुं आ तपमें संजतीरायने अभीग्रह करवानो छे, ते द्रव्यथी रोटलो रोटली दाळ भात साक आदे घीइ गोळ दही दुध चहापाणी आदे जे वापरवु होय तेनी धारणा करे ए धारणा सिवाय वीजु नही लेइए, खेतरथी जे गाम नग्रमे रह्या होय तीहां अमुक पोळ, पाडा, महह्वामाथी लेइ शु वीजेथी नही लेइए काळथी अमुक काळ वखते गोचरी जैशुं, भावथी पुरुष आपशे तो लेइशु स्त्री आपशे तो लेइशु तेमां कुवारी आपशे तो लेइशु वीधवा आपशे तो लेइशु, वा एक भाजन मांथी वीजा भाजनमें घालेलु आपशे तो लेइ सुवा अनेराने पीरसेलु वधेलु आपशे तो लेइ सुवा जे पहेली जणस आपशे तेज लेइसु वा हरकोइना त्यांथी आवलु आपसे तो लेइशु वा वधेलुं घाली मूकेलुं हशे ने ते आपशे तो लेइशुं, वहु मान साथे आपशे तो लेइशु अंतआहार, पंतआहार, नींदा ने स्युती थाय एवो आहार आपशे तो लेइशु, अथवा लोकने वखाणवा योग्य प्रीयकारी मोदक प्रमुख आपशे तो

लेइशु, दंतीनी सलाए आपशे तो लेइशुं वा दुःखणी कंगाल थइने आपशे तो लेइशुं, वा उगाहजर आपशे तो लेइशुं वा आखमां आंसु आव्या हशे ने आपशे तो लेइशुं एम भाव-थी अभीग्रह अनेक भेदे संजतीराय करे छे, परतु कहेवानु-सार एटलुं छे के आहारना बे परवइ होय काया बळवान होय शक्ति पोचती होय ते आकरो अभीग्रह करे नही तो सामान्य प्रकारे पोतानी शक्ति जोइ, शक्तिना अनुसारे करे हवे देश वीरती श्रावकने आतपमें चौद नीम धारवाना छे ते धारे ए त्रीजो तपभेद कह्यो हवे रसचाउतप कहुं छुं आ तपमें रसनो त्याग करवानो छे ते सर्वथा रसनो त्याग तो आबील करे त्यारे संभवे नहीतो घी आदे वीगेनो त्याग करे वळी अरूद चणा वाल आपशे तो लेइशु अथवा जुनु धान खांण प्रमुख हशे ने ते आपशे तो लेइशुं इत्यादी चोथो तपभेद कह्यो हवे पाचमो काय कळेश तप कहुं छुं भभा रहीने कावसग करवो साधुनी बार पडीमा वहेवी अथवा परिहार वीशुद्धी त्रीजुं चारीत्र ग्रहण करवु उष्न काळे आ-तापना लेवी सीतकाळे टाढ सहेवी भूय सथारो करवो अ-कवाणे पगे चालवुं लोच करवो शरीरे खाजखणवी नही व-लखो गळी जवो परसेवो लुछवो नही पलांठी वाळीने बे-सवु दांडानी पेरे सुवु शरीरनी ससुरखा करवी नही प्रमाद सेववो नही परीसह उपसर्ग उपजे ते सहन करवो इत्यादी पाचमो तपभेद कह्यो हवे छठो सलीनता तप कहुं छुं तेना त्रण भेद इंद्री सलीनता जोग सलीनता ने कषाय सलीनता इंद्री

सलीनता ते श्रोत इंद्री शब्द जोगी छे चक्षु इंद्री वर्ण जोगी छे रस इंद्री रस जोगी छे. घ्राण इंद्री गंध जोगीछे, फरस इंद्री फरस जोगी छे. तेना संगे इष्टा नीष्टपणु अनुकुळ प्रतीकुळ जोगे चेतना अनुभवेछे. सो वीषयने गोपववा तेनुज नाम सलीनता छे एटले इंद्रीसंगे चेतना परिणाम पामीछे तेने पलटावी,अंतह्ःकरण स्वरुप गत प्रणमावीए त्यांवीषयना अभाव जोगे इंद्री सलीनता कहीए हवे जोग सलीनता ते मन जोग दुरध्याने हणायो थको चटकण थयो छे वचन जोग कषायनो कषाय जोगे वाचाळथयोछे ने कायजोग अशुभ आचारणाए चपळ थयोछे ते त्रण योगने थीर करीए तेनुंज नाम सलीनता छे एटले आत्मानो वीर्य गुणपर संगीपणाना उपण जोग जडता पामीने जोगना स्वाधीन वळ फरणाए थयोछे तेने पटलावीने अंतह्ःकरण सरुपे नीजगुण वर्तिए रमणीपणे उपयोगीपणे स्फुरतो करीए त्यां त्रणे जोग थीर थाय सो जोग सलीनता कहीए हवे कषाय सलीनता ते क्रोध मान मायाने लोभ ए चार प्रकरती उदय आवतां रुधवी अथवा आवीने प्राप्त थाय. तेने क्षय उपसम जोगे खेरवी नीष्फळ करवीने सो कषाय सलीनता कहीए ए सलीनतादी वाह्यतपना षट भेद कह्या हवे अभ्यंतर तप षट भेदे कहुं छुं. इहां सकांम नीर्जरा संभवे.तेमां प्रथम प्रायछीत तप ते व्रत धारीने पोतानी वीरतीमे मनथी वचनथी ने कायाथी करवा कराववा.अनुमोदवापणे महा, वीरतीने स-

वेथी त्याग करेला छे ने देशवीरतीने अनुमोदना मोकली छे बाकीनो त्याग अणुमात्र छे परंतु कहेवानुं एटलुं छे के जे भागे पचखाण करीने वीरती परिणाम कर्याछे ते मे भंग थवुं न जोइए परतु भग जोगे पाप प्रायछीत लागे छे तेने टाळवाने अर्थे वीशुद्ध होवानी बुद्धिए गीतारथ गुरुनी गोत करे गीतारथ समीपे जइने सन्ना समक्ष चतुरवीधी सघनी साक्षी पूर्वक सहुने सांभळे छते लोक लज्जा छोडीने सरळता ग्रहण करी सत्य भाषा बोलीने यथास्थीत पापप्रायछीत लागेलु प्रकासे कपट करे नही तीहां गीतारथ महा मुनी द्रव्य खेत्रकाळ भावना जाण द्रव्यथी प्रायछीत लेवा वाळानी गुणगणानी स्थीती वीचारे खेत्रथी मन वळ वचन वळकाय वळ रोगी वा नीरोगी छे तेवी चारे काळथी बाळ छे. वा तरुण छे, वा वृद्ध छे तेवीचारे भावथी तेनो बोध जाणपणु क्षयउपसम सो वीचारे तेवार पछी कायानु वळ अधीक देखे तो तप करवानो दंड आपे तरुणवये नीरोगी देखे तो देश वीरतीने कातो काउसग करावे ने कातो जीवहिंसानो वेपार तेनो त्याग करावे अथवा धनाढ्य देखे तो सात खेत्रे धन वापरवानो बतावे महा, वीरतीने बोध जादे देखे वीशेष उपयोगी छे स्यादवाद द्रष्टी छे नय नीक्षेपाना जाण छे तो तेने ग्रंथ रचवानी आज्ञाकरे इत्यादी आज्ञा करवाना प्रायछीत आपवा वडे मळ टाळवाना सुगतीआर गीतारथछे. जे आज्ञा करे ते प्रायछीत लेवावाळा कबुल करे तहेत सामी तहेत

सांमी एम सतन्नाग्र बोलीए सरळ थैने जेने प्रायछीत प-
सारु एटले ठांनु कपट ढांकणे ढांक्युं नहि तेनां पाप गयां
ठे कपट करीने प्रायछीत ले ठे तेने वाह्य तपमें गणवो अ-
भ्यंतर शुं ठे तेने समजवु, सरळतापणुं ठे. अंतर व्यापकपणु
ठे. वीशेष उपयोगीपणुं ठे तेने अभ्यंतर कहीए ए तपनो
प्रथम भेद कह्यो हवे बीजो तप तेना वीनीय सात भेद
ज्ञान वीनय दर्सण वीनय चारीत्र वीनय मनवीनय
वचन वीनय काय वीनयने लोक वीनय ए सात भेदे अभ्यं-
तर अपेक्षाए वर्णवु ठुं अ ात्मभावे आत्माना स्वभावे उपयोग
चींतोन ध्यान ते ज्ञानवीनय न दर्शन ते अनतगुण पर्यायमय
आत्मानी सत्ता अनादी वहनु े नीरधार सो दर्शण वीनय
चारित्र ते सामान्य वीशेष उपयोगनुं स्थीरपणु सो चारीत्र
वीनय मन वीनय ते अंतरवृतीए मनने ज्ञान खीले बांधीने
स्थीर करीए ने वचन वीनयते कोइने बाधा पीडा न उपजा-
वतां उपयोगे बोलवुं हवे कायवीनय ते अ तरवृतीए ध्यान
जोगे कायाने भ्रमण करवी के, उदीकाने खेरवाने एटले
कर्मने नीर्जरवाने अर्थे अनुकुळ प्रतीकुळ परीसह उपसर्ग,
उपज ते तारे सहन करवा, कायर थावुं नहि एटले कायर
थावावाळी तो पोतानी उपयोग चेतना कायाना सो ठे
काया नहि ठे. माटे पोतानी उपयोग चेतना सहेज बोधेने
तेमना मोकळो अवकाशे नोआवो लेर सहेज भावे प्रण-
मावीए एटले कायाने सहन करवुं घणुज शुलभ पडे. ए
कायवीनय कह्यो हवे लोक वीनय सो एक आकासना स-

मीपे बीजा द्रव्य पुद्गल आदे देखीए तेने लोक कहीए
तेमा वीनयना अन्नाने जीव पुद्गलमां प्रवेश करे छे तेवीनय
लारी अवीनय छोमी पोते पोतामे रहीए सो लोक वीनय
कहीए ए बीजो तपभेद स्वअपेक्षाए कह्यो हवे त्रीजो भेद
वयावच्च तप कहुं छुं, ते वयावच्च कोनुं करवु के आचार्यनु
१ वळी उपाध्यायनुं (२) साधुनु (३) नव दीक्षीत शीष्यनुं
(४) रोगीनु (५) तपसीनु (६) स्थवीरनु (७) साधर्मी कनुं (८)
चंद्रादीक कुळनुं (९) गण एटले गच्छनुं (१०) एम दश भेद
गुणीजन परम पुज्य तेमनु वैयावच्च करवुं, सो गवेखुं छु, वै
यावच्च करवावाळा साधुने सर्व साधु महामुनीनो समुदाय
तेमनी हाजरने हाजर रहेवुं एमना अभीप्राये वर्तवु, जे काम
बताने ते करवु, वळी पुछवु हे स्वामी आपने शी वस्तुनो खप
छे जेने जे वस्तुनी खप होय ते कहे एटले केइकतो नीर्दोष
ओषध उपचारनुं कहे, केइक ग्रहस्थीना थकु वस्त्र शाल व
नात आदे कारणसर वापरवा सारु लाववानु कहे, केइक सी-
द्धांत ग्रंथ आदे पुस्तक प्रत वाचवा जोवा लाववानु कहे,
केइक तो काप काढवा सारु कथरोट आदे लाववानु कहे,
केइक चोमासाना काळे पाट पाटला वापरवा जोइए ते ला
ववानु कहे, इत्यादी जे जे काम भळावे ते सर्वे धारणामां
राखे चूके नही जे जे मळे ते लावीने हाजर करे, वळी फ-
रीथी जइ बाकीनुं शोत करी लावीने आपे, एम वारंवार जे
जे काम भळावे ते अंगमा प्रमोद लावी उच्छाह पूर्वक करे,
वळी सर्व समुदाय महामुनीने साता पुछे असाता देखे ते

टाळवानो खप करे, पग चांपे केम्रो चांपे, मांथु दावे, संथारो करी आपे, पुस्तक पोथी जोइए ते लावी आपे पुंठे मुकवानुं पाटीयु लावीने मुके, मात्रु करवानी मरजी होय तो कुंमी लावीने आपे, जीवयतना करीने परठवे, केइकने ठल्लानो कवजो न होय केइकने वमन थतुं होय तेमनुं अग कपमा आदे स्वछ-पवीत्र करे, नीर्वद्य जग्या जोइने परठवे त्यां सुग लावे नही, जे जे वोलावे तेमनी समीप जाय, हे स्वामी शुं कहो छो जे जे काम जळावे ते करे, तेनुं फळ कहु छुं लोकोतर एटले मुक्तिदातार छे, कारण के बाहुबलजी रीषभदेव स्वामीना पुत्र तेमने पूर्वे त्रीजा भवे पांचसो साधुनुं वैयावच्च जंबुद्वीपना महा वीदेह क्षेत्रे पुष्कळावती वीजये कर्युं छे, तेथी घणी तो कर्मनी नीर्जरा करी परतु शुभ कर्म प्रकृती बाधी तेथी अनुत्तर वीमान पाचमुं सर्वार्थ सीद्ध तेनां सुख भोगवीने आ भवमे अनतवळ पाम्या वळी घणी रीद्धि संपदा पाम्या यावत भरत पोतानो भाइ तेथी युद्ध करतां जीत्या चक्रवरती नी रीद्धिना मालीक थइने एक तरणा प्राय अथीर वस्तुकलह कारण जांणी भसना स्नेहलत्ता वेलीने छेदी त्यागी वैरागी थइ वाह्य अभ्यंतर तपे उत्कृष्ट स्थीती मही घाती अघाती कर्म हणी सीद्धी वर्या, ए लोकोत्तर फळदाता वैयावच्च तेने त्रीजो तप कह्यो, हवे चोथो तप सझाय पांच भेदे कहु छु, वाचना एटले गुरुमुखथी पाठ लेइने भणवुं अथवा सीद्धांत ग्रंथ आदे उपयोगी थैने वांचवुं, पुछना एटले शका संदेहनुं गुरुरायने पुछवुं, संदेह टाळी नी:संकीत थवुं, पर्यटना

एटले जाणेलुं गुरुनी नीश्राए गोखी वाळवु, अनुपेक्षा एटले एक एक शब्दना अनेक अर्थ थाय छे तेनी अपेक्षा समजवी धर्म कथा एटले चर्चा वार्ता करवी,अथवा वखाण वांची उपदेश करवो, ते जोगे जव्यजीव बोध बीज पामे, तेने धर्मकथा कहीए, ए तपनो चोथो जेद कह्यो, हवे पांचमो ध्यान तप कहुं छु, ते ध्यान तो चार जेदे छे, परतु आर्तध्यान, रुद्रध्यान ए बे ध्यान छे ते तपमें नथी एतो कर्मबध हेतु छे, ने नीर्जरानो हेतु ते तप कहीए माटे नीर्जरा हेतु ध्यान तो धर्म ध्यान, शुकल ध्यान छे तेमां प्रथम धर्म ध्याननां चार पाया अनुक्रमे कहुं छु, आज्ञावीचय,अप्पाय वीचय,वीपाक वीचयने,संस्थान वीचय, तेमां प्रथम पायामें आज्ञा कहेता परमात्मानी शी आज्ञा छे तो "वच्चु सहावो धम्मो" अर्थ–वस्तुनो जे मुळ सत्तागत पोतानो अखरुीत अवीनासी, एवो जे स्वजाव छे तेने वस्तु स्वजाव कहीए, वळी तेनेज धर्म कहीए, ते वीवरीने कहु छु ते वस्तुना सट जेद छे,धर्मास्तीकाय अधर्मास्तीकाय आकास्तीकाय, काळ, पुद्गलास्तीकायने, जीवास्तीकाय,ए षट ड्रव्यना नाम कह्या हवे ड्रव्य ड्रव्य प्रत्ये अनतागुणने अनंतापर्याय रह्या छे,तेमाथी ड्रव्यना मुख्य धर्म गुणने गवेखु छुं,धर्मास्तीकायनो गती हेतु गुण छे, एटले जीव पुज्ञलने गतीनो हेतु अधर्मास्ती कायनो स्थीती हेतु गुण छे, एटले जीव पुज्ञलने स्थीतीनो हेतु आकास्तीकायनो अवगाहक गुण छे, एटले जीव पुज्ञलने मारग आपवानो हेतु काळनो वर्तना लक्षण गुण छे, एटले नवानु जुनु करवानो हेतु पुज्ञलास्तीकायनो

सम्रण, पम्रण, वध्वंसण अथवा मीलण वीखरण गुण छे,एटले एक पुग्नल वीजा पुद्गल साथे अथवा संसारी जीव साथे केटलाएक मीले छे, केटलाएक वीखर छे मीले छे सो वंधाय छे वीखरे छे सो छुटे छे, वळी सम्रण एटले रोग व्यापकपणे सम्री जाय छे, पम्रण एटले पम्री जाय छे, वीध्वंसण एटले स्वन्नावे नासथै जाय छे,श्रेम पुद्गल जीवने संसार स्थीतीए वंधनो हेतुःजीवनो ज्ञायक गुण छे एटले जीवनोने अजीवनो लोकानो ने अलोकनो,रुपीनो ने अरुपीनो अतीत अनागतने वर्तमान ए त्रणे काळनो उत्पात वय ने ध्रुव संयुक्त समकाळे एटले एक समयकाळे सर्वने जाणवावाळो जीवनो ज्ञान गुण छे जीव स्वअपेक्षाए पोते पोतानो हेतु छे, वीजा कोइनो हेतु नथी जीवने हेतु अहेतु कहीए ते पर अपेक्षाए उदीकता जोगे कहीए, ए वस्तुनो मुख्य गुण रुप धर्म गवेख्यो इत्यादी परमात्मानी आज्ञा तनमय चींतववी तेने धर्म ध्याननो पहेलो पायो कहीए, हवे वीजो पायो अप्पाय वीचय धर्म ध्यान ते अप्पाय कहेतां जीवमां अशुद्धपणे कर्म जोगे संसार अवस्थामां मीथात्व, अज्ञान कषाय नोकपाय आदे अनेक दुखणो छे, ते हुं नही, हुं ए थकी न्यारो तु अनंत ज्ञानमय, अनंत दर्शनमय, अनंत चारीत्रमय, अनंत वीर्यमय, अनंत अव्यावाध सुखमय, अनंत उपयोगमय, अटळ अवगाहनामय, अरुपीमय, अगुरुलघुमय, नीरंजन, नीराकार, अलख अगोचर, अखंड, अज, अचळ, अगम, अकळ, अवीनासी अनादी अनंत, सीद्ध, शुद्ध, अक्षर, अनअक्षर, अमर, अना-

मी, अकामी, अकर्मा, अबधक, अनुदय, अनुदीकअजोगी, अज्ञोगी, अरोगी, अरागी, अद्वेसी, अचेदी, अछेदीअवेदी, अखेदी, अत्रीयवी, अकषायी,असहाइ, अलेसी, असरीरी, अनाहारी, अतीद्री, अपर्याप्ति, अयोनी असंसारी, अमळ, अकंप अनाश्रीत, अव्यापी, अवीरुध, अनाश्रव, असंगी, अकींचनी, असोकी इत्यादी अनंता गुणपर्यायनो पुंज शुद्ध चीदानंदघन महारो आत्मा छे, ए गुण गवेख्या तेनो अर्थ कहुं छुं, अनत ज्ञानमय आत्मा छे एटले द्रव्य कहेतां पट द्रव्यनो वळी गुण पर्याय कहेतां पट द्रव्यना गुण पर्यायनो स्वज्ञाव कहेता अस्ति स्वज्ञाव, नास्ति स्वज्ञाव, सामान्य स्वज्ञाव, विशेष स्वज्ञाव, नीत्य स्वज्ञाव, अनीत्य स्वज्ञाव, नेद स्वज्ञाव, अनेद स्वज्ञाव, जव्य स्वज्ञाव, अज्ञव्य स्वज्ञाव, अज्ञीलाप स्वज्ञाव, अनअज्ञीलाप स्वज्ञाव, वक्तव्य स्वज्ञाव, अवक्तव्य स्वज्ञाव, इत्यादी अनंता स्वज्ञाव वस्तु धर्मे रह्या छे, वळी लक्षण कहेतां उत्पात व्यय ने ध्रुव इत्यादी अनंतपणानुं जाणवुं तेनु नाम ज्ञान, एटले वीशेष उपयोग ते आत्मामा स्वज्ञावे रह्यो छे, माटे अनंत ज्ञानमय आत्मा वळी अनंत दर्शनमय आत्मा छे, एटले सामान्य उपयोग पण अनंती वस्तुने वीषे देखवापणु आत्मामा स्वज्ञावे रह्युं छे, माटे अनंत दर्शनमय आत्मा, अनत चारीत्रमय आत्मा छे, एटले ज्ञान दर्शननो स्थीर उपयोग स्व स्वरुप रमणीपणु तेआत्माना अनतां गुण छे तेमां प्रतेक नीजगुण नीजगुणमांज रमे, बीजा गुणमा न रमे, एटले ज्ञान जाणवारुप कार्य करे दर्शन देखवारुप

कार्य करे वीर्य स्फुरणारुप कार्य करे, परंतु एक गुण बीजा गुणनुं कार्य न करे, सो स्थीर उपयोग रमण कहीए, एम अनंता गुणनीज नीज गुणगत रमणीपणे नोंखी नोंखी क्रीयाना कर्ता छे माटे अनंत चारीत्रमय आत्मा अनंत वीर्यमय आत्मा छे एटले आत्माना अनंता गुणनीज गुण रमणीए वर्ते छे तेमां गुण गुण प्रत्ये वीर्य गुणस्फुरणा शक्ति नोंखी नोंखी रीते आपे छे माटे अनंता गुणमां अनंती वीर्य स्फुरणा थइ सो ते अनंत वीर्यमय आत्मा अनंत अव्याबाध सुखमय आत्मा छे एटले आत्माना अनंता गुणछे ते सर्व गुणो आनंदोपेत सुखदायक छे, ने गुण गुणनो आनद जुदो जुदो नोंखा नोखा छे, माटे अनता गुणनो अनंतो आनंद तेमां कसी बाधकता एटले व्याघात नही छे. माटे अव्याबाध आनंदरुप अनंत सुख आत्माने वीषे स्वभावे रह्यु छे ते अनंत अव्याबाध सुखमय आत्मा अनंत उपयोगमय आत्मा छे एटले आत्माना अनंता गुण छे ते गुण गण प्रत्ये पोत पोतानो उपयोग पोत पोताना गुण गत स्वभावमा नोंखो नोखो प्रवर्ते छे, माटे अनंता गुणमां अनत भेदे उपयोग आत्मामां स्वभावे रह्यो छे, माटे अनंत उपयोगमय आत्मा, अटल अवगाहनामय आत्मा छे एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश छे, तेज आत्मानी अवगाहना कहीए तेमाथी एक प्रदेश अधीक न्युन कोइ काळे थाय नही एटले खरे पडे नही, ते अटळ अवगाहनामय आत्मा अरुपीमय आत्मा छे एटले रुपीपणु तो वरणनुज नाम छे, रातो, धोळो, लीलो, पीळो, ने श्याम ए पांचनु नाम वरण कहीए, तेने-

ज रुपी कहीए ते आत्मामा नहीं छे एतो पुद्गलमा लाधे तेथी रहीत आत्मा माटे अरुपीमय आत्मा अगुरुलघुमय आत्मा छे, एटले गुरुपणु ते मोटापणु ने लघुपणु ते छोटापणु वळी उत्तमपणुने मध्यमपणु ए सर्वे पुद्गल जोगे कहीए, ए गुण पुद्गलमा रह्यो छे आत्मामां नहीं छे, माटे अगुरुलघुमय आत्मा वळी नीरंजन आत्मा छे एटले कर्मरुप रजे करी नेरहीत तेज नीरंजन आत्मा,नीराकार आत्मा छे एटले आकारतो जीहां संस्थान परीमरूळ देखीए तीहा आकार कहीए, ए गुण तो पुद्गलमा रह्या छे आत्मामां नहीं छे माटे नीराकार आत्मा अलख आत्मा छे एटले आत्मानुं स्वरुप छद्मस्थथी लख्यु जाण्यु जाय नहीं माटे अलख आत्मा अगोचर आत्मा छे एटले चरम चक्षुए गोचरद्रष्टी प्रत्यक्ष ना आवे एतो अनुभव ज्ञान गोचर छे, माटे अगोचर आत्मा अखन्ड आत्मा छे, एटले आत्माना असख्याता प्रदेश छे अनंता गुण छे अनंता पर्याय छे तेमाथी एक प्रदेश वा एक गुण एक पर्याय कदापी ओछो थाय नहीं, शस्त्र प्रहार लागे नहीं खन्डीत थाय नहीं माटे अखंड आत्मा अज आत्मा छे एटले बाळ, तरुणने, वृद्ध ए त्रण अवस्था पुदगल जोगे लाधे एथी आत्मा रहीत, माटे जन्म जराए रहीत आत्मा कहीए ते अज आत्मा अचळ आत्मा छे एटले आत्माना असख्याता प्रदेश छे ने एक एक प्रदेशे अनंता गुणपर्याय रह्या छे, तेमाथी एक प्रदेशे रहेला गुणपर्याय चळीने बीजा प्रदेशे न जायने बीजा प्रदेशना गुणपर्याय चळीने पहेला प्रदेशमा ना आवे,जीहां छे

त्यांने त्यांज रहे माटे अचळ आत्मा अगम आत्मा छे एटले आत्माने यथारथ जाणवानी गमतो केवळ ज्ञानीने छे बाकी देशथी जाणवानी गम अनुभवीने छे, तेना अभावे अगम आत्मा अकळ आत्मा छे एटले छद्मस्थनी द्रष्टी आत्मानु स्वरुप जाणवाने कळवाने थाके छे माटे अकळ आत्मा अविनाशी आत्मा छे एटले सदासर्वदा त्रणे काळे आत्मा शास्वत भावे छे, द्रव्यास्तीक नयपक्षे विनाश नही छे माटे अवीनाशी आत्मा, अनादी अनंत सीद्ध, बुद्ध आत्मा छे एटले आत्मानी आदी छे नही के अमुक काळे आत्मानी उत्पत्ती थइ वळी अमूककाळे आत्मानो क्षय थाशे, एम आदे नथी ने अंते नथी, आत्मातो सदाय छे छे ने छे, वळी केवो छे के जेवा सीद्ध परमात्मा छे तेवोज पोतानो आत्मा नीर्मळ आवरण मळे रहीत नीर्लेप स्फटीक रत्ननी पेरे नीर्मळ, चंद्रनी पेरे सीतळ, समुद्रनी पेरे गंभीर, अनंत गुणपर्याय भरेलो सागर, सुर्यनी पेरे ज्ञान ज्यातीए प्रकाशीत मेरुनी पेरे अकंप, संग्रह नयनु ज्ञान करीने शक्तिभावे जोइए तो अनादी अनंत भागे सीद्ध छे, वळी बुद्ध कहेतां क्षायक भावे ज्ञानी सो परीत छे माटे अनादी अनंत सीद्ध बुद्ध आत्मा छे, वळी अक्षर आत्मा छे एटले अनत पुद्गल परावर्त चतुरगती संसार परीभ्रमण करता वीत्यां परंतु आत्माना प्रदेसे प्रदेसे अनता अनंता गुणपर्याय रह्याछे तेमांथी गसारो लागी एक प्रदेस वा एकगुण एकपर्याय खरी पडे एम नही छे कारण के गसारो लागे तो उपरथी बाह्यमे पुद्गलने

लागे माहीली कोरा घटंतरवतीए ढुपीने चेतन रह्यो छे तेने गसारो लागे पण नही ने गुणपर्याय वा प्रदेस खरी पडे पण नही एतो सहेज पर्यायमय सास्वतज्ञावे साहसीकपणे वर्ते छे वाह्यना सुख दु खनो नीजागी पण नही छे चेतन सत्ताथी अचेतन सत्ता नाखीज छे, अचेतन सत्तानी लाज्ञ खोटनो मालीक चेतन नहीछे माटे अक्षर आत्मा अनअक्षर आत्माछे, एटले शब्द अक्षर उच्चारण करीए ते मे आत्मानुसरुप आवे नही, आत्मा अक्षर उच्चारणमा प्रणमे नही आत्मा तो आत्माना स्वज्ञावमेज व्याकपणे प्रणमीने रह्यो छे, माटे अनअक्षर आत्मा अम्मर आत्मा छे, एटले आत्मा तो ड्रव्य-प्राण रहीत ज्ञाव प्राणधारीछे वळी कर्म पर्याय कहेता गतीपर्याय जे चार गतीना नरनर्कादी तेथी रहीत स्वज्ञाव पर्यायमय ज्ञानमूर्ती सीद्धा अवस्था तदरुपछे माटे मरवु छे ए तो ड्रव्य प्राण पाच इंद्री त्रण बळ, श्वासोश्वासने आयुष्य वळी गतीपर्याय कहेता काया ते मरे तो जले मरे परंतु ज्ञाव प्राण ते ज्ञानदर्शन वळी तदरुप सीद्धा अवस्था ते आत्म प्रदेसनो घन ज्ञानमूर्ती सो अनीनासीपद छे माटे कदापी मरे नही सो अमर आत्मा, अनामी आत्मा छे एटले जे जे नाम संसारमें छे तेनो नास छे आत्मानो नासे नथी ने आत्मानु संकेतीक नामे नथी माटे अनामी आत्मा अकामी आत्मा छे, एटले कामतो वेद वीषय ज्ञोग नो काम कहीए तेथी रहीत आत्मा माटे अकामी आत्मा, अकर्मा आत्मा छे एटले ड्रव्य कर्म सो ज्ञानावरणादीने ज्ञाव कर्म सो रागद्वेस

तेनो कर्म सो मन वचनने काया,एथी रहीत आत्माछे माटे अकर्मा आत्मा अबंधक आत्मा छे एटले रसबध प्रदेसबंध, प्रकृतीबंध,ने स्थीतीबंध एतो पुदगलनो स्वाभाव छे,आत्मानो नही छे वळी ए बांधवा योग्य पुदगल परमाणु ते पण आत्माने वीपे नहीछे, आत्मातो कोइना बधनमा आवतोज नथी सदाय मुक्ति रुप अबधक छे.माटे अबंध आत्मा अनुदय आत्मा छे एटले कर्मबंधना अभावे उदय सेनो होय आत्मा सदा सर्वदा शक्तिभावे अबंध अनुदय छे माटे अनुदय आत्मा,अनुदीक आत्मा छे एटले कर्म नही तीहां उदीरणानो असंभव कहीए सो अनुदीक आत्मा अजोगी आत्मा छे एटले मन जोग वचन जोगने काय जोग सो पुद्गलना घरनाछे ने आत्मा तेथी रहीतछे माटे अजोगी आत्मा अभोगी आत्मा छे एटले पाच इंद्रीना तेवीस वीपय सो आत्मामें नही छे, वळी इंद्रीउ पण आत्मामां नही छे एतो पुद्गलमा लाधे ने आत्मा तो पुद्गलथी सदा सर्वदा न्यारो छे माटे अभोगी आत्मा अरोगी आत्माछे एटले सरदी गरमीना अनेक रोग पीत्तज्वरादी पुद्गलमां लाधेछे ने आत्मामे पुद्गल छे नही तो रोग केम सभवे नही संभवे माटे अरोगी आत्मा, अरागी अध्वेपी आत्मा छे एटले राग द्वेप छे सो जरु भाव छे वळी अज्ञान छे ते पुद्गल संगे लाधे एथी आत्मा रहीतछे माटे अरागी अद्वेषी आत्मा अभेदी अछेदी आत्मा छे एटले आत्माना असंख्याता प्रदेशछे तेमाथी कोइ देवता अथवा अती बळवत मनुष्यने तीर्यंच तीखा सस्त्रे करीने थोडा प्रदेशने

भेदी छेदी जुदा करे ए वात त्रण काळमें बने नही भेद्यो भेदाय नहीने छेद्यो छेदाय नही शस्त्र प्रहार लागे नही वळी अग्नीमां नही माटे अभेदी अछेदी आत्मा अवेदी अवीषयी आत्मा छे एटले स्त्रीवेद पुरूषवेदने नपुसकवेद ए त्रणे वेद पुद्गलमें लाधेछे,आत्माने ए वस्तुनु चीन पण नही छे, तो तेनो वीषय शेनो होय वेदरूप चीने करीने वळी तेना वीषेय करीने आत्मा सदा सर्वदा रहीत छे, माटे अवेदी अवीषयी आत्मा अखेदी आत्मा छे एटले खेद नाम प्रयास जे गतागती कंठ सोस आवे संसारमें अनेक कामकाज करता थाक लागे छे तेने खेद कहीए ते काम सर्वेनो करता तो पुद्गल छे आत्मा नहि छे आत्मा तो जाणवा देखवा रुप चेतन कार्यनो कर्ता छे. ते में तो थाकनो असम्भव छे माटे अखेदी आत्मा अकषायी आत्मा छे एटले क्रोध, मान, माया ने लोभ ए चारने कषाय कहीए तेथी आत्मा रहीत छे माटे अकषायी आत्मा असखाइ आत्मा छे एटले अनादी सवधे अखरू अकलक अभेदी अछेदीपणु सदा सर्वदा आत्माने वीषे लाधे छे ते सो स्वपराक्रमें लाधे छे नही, नही छे कोइ एक जीवने वीजा जीवनी वा अजीव एटले चार अरूपीने पाचमो पुद्गल रूपी तेहनी साज सो सखाइ कहीए जीव कोइनी साज करे नही तेम कोइनी साज वछे नही माटे असखाइ आत्मा अलेशी आत्मा छे एटले कृष्न लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, तेजो लेश्या, पद्म लेश्या ने शुकल लेश्या ए छ लेश्या तो पुद्गल जोगे लाधे तेथी रहीत आत्माछे माटे अलेशी आ-

त्मा अशरीरी आत्मा छे एटले उदारीक शरीर वैक्रीय शरीर आहारक शरीर तेजश शरीरने कार्मण शरीर ए पांच शरीर सो पुग्गल कहीए तेथी रहीत आत्मा माटे अशरीरी आत्मा अनाहारी आत्मा छे एटले कवल अहार, रोम अहारने झोज अहार इत्यादीक अहारनो ग्राहक तो पुद्गल छे आत्मा नहि छे माटे अनाहारी आत्मा अती इंद्री आत्मा छे एटले फरस इंद्री, रस इंद्री, घ्राण इंद्री, चक्षू इंद्रीने श्रवण इंद्री ए पांचने इंद्री कहीए ने छठु मन सोनो इंद्री ए छेनु नामज पुद्गल छे तेथी रहीत आत्मा माटे अती इंद्री आत्मा अपर्याप्ती आत्मा छे एटले अहार पर्याप्ती, शरीर पर्याप्ती, इंद्री पर्याप्ती, श्वासोश्वास पर्याप्ती, भाषा पर्याप्ती ने मन पर्याप्ती ए छ पर्याप्ती पुद्गल छे तेथी रहीत आत्मा अपर्याप्ति आत्मा, अजोनि आत्मा छे एटले देवता नारकीनी उत्पात योनि, मनुष्य तीर्यंचनी आंवली पत्र इत्यादी बहु विध योनि समुर्छमनी अनेक जातनी योनि इत्यादी योनिनो संबंधी पुद्गल छे, आत्मा नही छे माटे अयोनि आत्मा असंसारी आत्मा छे एटले मनुष्य गती, तीर्यंच गती, देव गती ने नर्क गत ए चार गतीनुं भ्रमण करवुं उपजवुं विणसवु सो कमभावी पर्यायनी अपेक्षाए संसार कहीए, परतु जीव तो द्रव्यास्तीक नयपक्षे सदाय स्वभाव पर्यायमय अनादी सीद्धछे, माटे असंसारी आत्मा अमळ आत्माछे एटले शुभाशुभ पुन्यपापनी प्रकृती सो द्रव्यमळ छे ने असुद्ध प्रणती जे रागद्वेस सो भावमळ छे तेथी रहीत सदा सर्वदा

त्रणेकाळे सुद्ध द्रव्यास्तीक नय पक्षे आत्मा तदरुप सीद्ध छे सो अमळ आत्मा, अकप आत्मा छे एटले अनादी सवधे सीद्ध नीष्पन आत्मा सक्तिन्नावे ताद्रस छे अनंता पुद्गल परावर्त चतुरगती ससार न्नमतां कर्यां ने वळी करसे तो पण पोतानी शुद्ध सत्ताथी एक अंसेपण कंपे नही माटे अकप आत्मा अनाश्रीत आत्मा छे एटले अनादी सवधे आत्मा आत्मरूपे साक्षात परमात्मा न्नासे छे, सो पोतानु रूप कायम राखवाने कोइ परनु आलवन म्रह्यु छे के नीरालंब छे, तो नही नही छे परनुं आलवन सर्व सजोगथी न्यारोनी संग नीरालंब एकाकी आत्मा आकाशवत अनाश्रीत, द्रव्यास्तीक नयपक्षे अनादी अनत न्नागे छे माटे अनाश्रीत आत्मा, अव्यापी आत्मा छे एटले अतीत अनागतने वर्तमान ए त्रणे काळे सुन्नासुन्नमें व्यापे नही ने प्रणमे नही आत्मा आत्माना शुद्ध स्वन्नावमें व्यापक प्रणमन छे, परमें नही छे माटे अव्यापी आत्मा अवीरूद्ध आत्मा छे एटले आत्माना स्वन्नावमें चेतन पणाना अनता गुण छे, अनंता पर्याय छे, अनता स्वन्नाव छे ने अनता लक्षण छे, अचेतनपणानो अन्नाव छे माटे अवीरूद्ध आत्मा अनाश्रव आत्मा छे एटले मीथ्यात्व अव्रत कषायने जोग ए चार हेतु जोगे सुन्नासुन्न आश्रव आवे छे, वळी अढार पापस्थान सो पण पापबंध हेतु छे, वळी पांच इद्रीना तेवीस वीषय ते पण आश्रव हेतु छे, वळी मन जोग, वचन जोग ने काय जोग करण वीर्य स्फुरणा जोगे सुन्नासुन्न आश्रव आवे छे ए सर्व सजोगथी रहीत आत्मा छे माटे अना

अव आत्मा अकीचनी आत्मा छे एटले धन्य धानादी नव नेदे परीग्रहथकी रहीत माटे अकीचनी आत्मा, असंगी आत्मा छे एटले सर्वथा प्रकारे परसग रहीतपणा माटे असंगी आत्मा असोकी आत्मा छे एटले वस्तुनो वीनाश थाय हाणी थाय तीहां सोकनो संजव आवे परंतु हाणी थवारूप वस्तु तो शब्द रुप रस गंध फरसने संस्थान सो पुद्गलमे छे, आत्मामां ए वस्तु नही छे ते हांणी थाय ने सोक आवे माटे असोकी आत्मा इत्यादी अनता गुण पर्यायनो पुज सुरू चीदानंद घन एटले ज्ञानना आनंदनो समुह ढगलो एवो मारो आत्मा छे एम स्वरूप रमण एकत्व स्वन्नाव प्रणमन उपयोग चीतीत एकाग्रता तद्रूप ध्यान सो अप्पाय वीचय धर्म ध्याननो वीजो पायो कहीए हवे वीपाक वीचय त्रीजो पायो चीतवुं छु वीजा पायाना ध्यान पूर्वक पोतीको आत्मा साक्षात वीतराग परमात्मा सरखो सीद्धनो साधर्मी सीधमें रेनेवाळो मोक्षमह तद्रूप पोते एवो छते चार गतीमें जन्म जराने मरण आदे रोगसोक संताप, कलह आदे आधी व्याधीनां अनंतां दु ख वीपाक जोगवे छे, तेनो विचार आ त्रीजा पायाना ध्यानमे करवानो छे ते वीचार करतां एम जास्यु के जीव पोते पोतानी जूल्ये चउगती संसार भ्रमण करेछे त्यारे पोतानी सी जूलछे के पोते पोतानी रीद्धी सत्तानी मांहेली कोरे पूर्वे गवेखी तेनी प्रगटता बाह्य द्रष्टीए जोतां नजरे आवी नही तेथी करीने ते रीद्धीनो रागी न थयो, त्यां प्रसस्त रागतो गयो त्यारे अप्रसस्त संसारनो रागी पोते थैने

धर्म ध्यानथी भ्रस्ट थयो ने आरत रुद्र ध्याननो ध्याता थयो आरतध्यान ध्याता तीर्यं चगती उपार्जी, ने रुद्रध्यान ध्याता नर्कगती उपार्जी एम करता बाह्यद्रष्टीनो प्रसार वधी गयो ने अंतरद्रष्टी पाम्यो नही, क्षय उपसमभावनी हाणी थावा लागी ते कारणे चेतनाहीण थइने जडता वृधी पामी, घाचीनी घाणीना द्रष्टाते चउगती ससार भ्रमण करे छे,अनतां कर्म बाधे छे अनंता दुःख सहे छे, ने ससारथी छुटतो नथी, तेनु मुळ कारण सु छे ते कहुंछु, कर्म बाधवानु ने संसारमें रहेवानु कारण जोइए तो जडता छे जडता एटले अज्ञान भावे बाह्यद्रष्टीनो प्रसार मोहनो वीलास, दुर ध्यान वीध्वस परणाम, कुडकपट, प्रपचपासला, जळोजथा मारु तारु इत्यादी कर्मबध हेतुपद ससारवृधी कारण जाणवुं, हवे कर्मने नीर्जरवानु ने ससारथी छुटवानु कारण जोइए तो ज्ञान छे,ज्ञान एटले नीजपरनु वीभागीपणु वहेचणपणुं परथी छुटवु नेनीज वस्तुनु ग्रहण करवु सो बतावुछु, बाह्यरमण पाच इद्रीने छठु मननो इद्री संगे रमण सो बाह्यरमण कर्म बधहेतुं छे, एनुज नाम अज्ञान छे ते पोतापणो मनाये छे पण प्रवस्तु कहेवाय तेने तजवु पडे एटले पाच इद्रीने छठु मन तेनी अदर आत्मानी चेतना परीणाम पामीने जडताने अनुभवे छे ते चेतना अतर रागी थैने पलटावी स्वरुपे अंतरगत प्रणमावी मनजोगने स्थीर अचळ करी स्वरुप रमणी उपयोगी थेए, त्या पर वस्तुनो वीभाग थै गयो कारण के अतर रमण स्वरुप रमणीपणे पोतीको आत्मा थयो

त्यां इंद्रीउना विषयनो जोगी नथी, वळी इंद्रीयो पण चेतना रहित थइ ते विषय ग्रहण करवाने अशक्त थइ, त्यांज बाह्य-दृष्टिनो प्रसार टळी गयो मोहविलास रूप मदिरानो छाक चढयो हतो, तेथी आत्मा विकल थइने दुर्ध्यान ध्यातो हतो, ते दशा गइ, उपाधि तुटी गइ चेतना विचक्षणपणुं पामी आत्मानुं तत्व शुद्ध स्वरूप अनुजवे छे एटले आत्माना अनंता गुण, पर्याय, स्वजाव अनेलक्षण (जेदज्ञान विस्तारीने) अनुजवे छे, अरुपी वस्तुनो निर्धार करे छे, दृष्टि प्रत्यक्ष निर्णय थाय छे. सूक्ष्म जाव चितवता मुझातोज नथी. विशुद्धिमय अजेद पक्ष एकत्व जावनो ग्राहक थाय छे. त्या जाव संवर अने सकाम निर्जरानो कर्ता पोतानो आत्मा छे. ए कर्मने निर्जरवानु अने संसारथी छुटवानुं कारण कह्युं कर्मने बांधवानुं अने ससारमा रहेवानुं कारण जोइए तो जमता छे कर्मने निर्जरवानुं अने संसारथी छुटवानुं कारण जोइए तो चेतनता छे. जमता छे ते बाह्यजाव छे चेतनता छे ते अतर्गत सहज जाव छे, बाह्य जावनो प्रसार ते मोह छे अने अंतर्गत सहज जावनो प्रकाश ते ज्ञान छे माटे विवेकी पुरूषो ! तमारे मोह दशाथी विरक्त थइ, बाह्य जाव बाह्य रमण छोमी अंतर दृष्टि करी सहज जावे आत्मज्ञानी उपयोगी थवु शुद्ध आत्मानु स्वरूप-जेद अजेद पक्ष-स्याद्वाद दृष्टि पूर्वक अनुजववु एवु तन्मय स्वरूप रमणीपणुं तेने धर्मध्याननो त्रीजो पायो कहीए हवे संस्थान विचय नामे धर्म ध्याननो चोथो पायो छे तेनो सबध कहे छे धर्म ध्या-

नता त्रीजा पायामां पूर्वकृत कर्मना योगे जीव शुनाशुन विपाक अनुजवे ठे ते विचार कह्यो, परतु सुख दुखनु जोगवबु जीवने कायाना योगे ठे ते कायाने वांधवानां एटले उपजवाना अने विणसवाना स्थानको विचारवा जोइए आपणो पोतानो जीव चौद राजलोकमा लोकाकाशना असख्याता प्रदेशे सर्व स्थानके अनंती वार जन्म मरण करी फरशी चुक्यो ठे. सिद्धांतमा एवा पाठ ठे के "अनतखुतो जीवाणं" ए अपेक्षाए जन्म मरण कर्या सिवाय एक आकाश प्रदेश पण लोकमा वाकी रह्यो नथी माटे चौद राजलोकनु स्वरुप विचारवुं जोइए, ते कहे ठे उचपणे चौद राज प्रमाण लोक ठे तेना त्रण नेद ठे, तेना नाम अधोलोक, तीर्छालोक अने नर्द्धलोक एटले नीचेनो, वचलो अने उपरनो नाग तेमा प्रथम अधोलोक ते सात राजथी कइक वधारे ठे तेने विषे सात नरकनिवासी जीवोने नपजवाना रहेवाना स्थानको ठे ते सात नरक पृथ्वी ठे तेमा पहेली रत्नप्रजा नामे पृथ्वी ते एक राजप्रमाण लाबी पहोळी ठे तेनो एक लाख अने अेंशी हजार जोजननो पिंम ठे, तेमाथी एक हजार जोजन निचे मुकीए अने एक हजार नपर मुकीए त्यारे वचमा एक लाख अने इठोतेर हजार जोजननो पिंम रह्यो तेना तेर नाग करीए तेमा पहेली नरकना तेर पाथमा ठे तेमा त्रीश लाख नरकावासा ठे तेर पाथमाना वचला गाळाना अगीआर आतरा रह्या. तेमा दश आतरामा नुवनपति देवोनी दश निकायो ठे, ने एक आतरु खाली ठे, हवे

एक हजार योजन उपरनो पिंड रह्यो. ते मध्ये सो योजन
उपर मूकीए अने सो योजन नीचे मूकीए त्यारे वच्चे आ-
ठसो योजननो पिंड रह्यो, तेमां आठ व्यंतर देवोनी निकायो
छे. उपरनो सो योजननो पिंड रह्यो तेमांथी दश योजन
उपर मूकीए अने दश योजन नीचे मूकीए त्यारे वच्चे अेंशी
योजननो पिंड रह्यो तेमां आठ वाणव्यंतर देवोनी निकायो
छे ए पहेली रत्नप्रभा पृथ्वी कही

प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वीथी एक राज प्रमाण नीचे आ-
काश छे, त्यां बीजी शर्कराप्रभा नामनी नरक आवे छे ते
बे राज प्रमाण लांबी पहोळी छे, ते मध्ये एकादश पाथडा
छे ते बीजी नरकना नीचे एक राज प्रमाण गये छते त्रीजी
वालुक प्रभा नामे नरक त्रणराज प्रमाण लांबी पहोळी छे
तेमां नव पाथडा छे, त्रीजी नरकना नीचे एक राज गये
छते चोथी पंकप्रभा नामनी पृथ्वी चारराज प्रमाण लांबी
पहोळी छे, तेमा सात पाथडा छे ते चोथी नरकना नीचे
एकराज गये छते धुमप्रभा नामनी पांचमी नरक आवे छे
ते पांचराज प्रमाण लांबी पहोळी छे, ते मध्ये पांच पाथडा
छे. पांचमी नरकना नीचे एकराज गये छते छठी तमप्रभा
नामनी नरक आवे छे ते छ राज प्रमाण लांबी पहोळी छे. ते
मध्ये त्रण पाथडा छे ते छठी नरकना नीचे एकराज अधिक
गये छते सातमी तमतमा प्रभा नामनी नरक पृथ्वी सात-
राज प्रमाण लांबी पहोळी आवे छे तेमा एक पाथडो छे
ने तेमां पांच नरकावासा छे. साते नरकना पाथडा भेगा

करता ओगणपचाश थाय छे सातमी नरकना नीचे एक राज गये छते अलोक आवे छे, ए प्रमाण अधो लोकनो विचार कह्यो

हवे तिर्छा लोकनो विचार दर्शावु छुं. तिर्छा लोक अढारसो योजन उच्चपणे ज्योतिषी पर्यंत जाणवो तेमा प्रथम जबुद्वीपथी मांडी एकराज प्रमाण लोक लांबो पहोळो छे, तेना मध्य भागमा एक लाख योजन उंचो अने दशहजार योजन लांबो पहोळो मेरुपर्वत आव्यो छे ते जबुद्वीपमा कर्मभूमीना त्रण अने अकर्मभूमीना छ एम नव क्षेत्र आव्या छे. ते नीचे मुजब १ एक भरतक्षेत्र २ ऐरवत क्षेत्र. ३ महाविदेह क्षेत्र तेम देवकुरु अने उत्तर कुरुआद छ क्षेत्र जुगलीयाना छे जबुद्वीपने फरतो बे लाख योजन प्रमाणे लवण समुद्र छे तेने फरतो चार लाख योजन प्रमाण धातकीखंड छे. ते मध्ये कर्मभूमीना छक्षेत्र पूर्वे कह्या तेथी बमणा मोटां छे एकेक पूर्वमा अने एकेक पश्चिममां छे, एम बे भरत, बे ऐरवत क्षेत्र छे, बे महाविदेह छे, ए छ क्षेत्र कर्मभूमीना वळी अकर्मभूमीना बार क्षेत्र छे हरिवर्ष, रम्यक् आदि पूर्वपश्चिम छ छ मळी बार जुगलीयाना क्षेत्र छे ते पूर्वे कह्या तेथी बमणा मोटा छे ते धातकी खंडना फरतो आठ लाख योजन पहोळो कालोदधि नामे समुद्र छे तेनुं पाणी काळे वर्णे मीठु छे तेने फरतो सोळ लाख जोजन प्रमाण पुष्करवर नामे द्वीप छे, तेना मध्य भागने विषे मनुष्योत्तर नामे पर्वत सत्तरशे अने एकवीश योजन उंचो सुवर्णमय वलयाकारे (चु-

मीना आकारे) रह्यो छे आ पर्वतथी पुष्करवर द्वीपना बे भाग पड्या, एक अरधो आठ लाख योजन प्रमाणे मांहेनी बाजुए अनेबीजो अरधो आठ लाख योजन प्रमाण बहारनी बाजुए रह्योमांहेनी बाजुए रहेला अरधा पुष्करवर द्वीपमांकर्म भूमीनां छ क्षेत्र धातकी खंडमां कहेला क्षेत्रथी बमणा मोटां छे एक एक पूर्वमा अने एक एक पश्चिममा एम बे भरत, बे ऐरवत अने बे महाविदेह छे वळी अकर्मभूमीनां छपूर्व अने छ पश्चिम एम बारक्षेत्र हेमवंतने अरण्यवास जुगली-यानां धातकी खंडमां कह्यां ते क्षेत्रथी बमणा मोटां छे ए अढी द्वीपमा कर्मभूमीना पन्नर क्षेत्र तेम अकर्मभूमीनां त्रीश क्षेत्र थया.बन्नेनां मळी पीस्तालीस क्षेत्र थयां वळी बच्चमां लवण समुद्र कह्यो छे ते समुद्र उपर अढूर अंतराळे हि-मवंत तथा शिखरी ए बे पर्वतो शतशत योजन उंचपणे छे. तेनी दाढाओ प्रत्येक पर्वते बे पूर्वमां अने बे पश्चिममां एम चार नीकळी छे अने एकेकी दाढा उपर सात सात द्वीप छे एक पर्वत उपर अठावीस अने बीजा पर्वत उपर अ-ठावीस मळी छप्पन्न अंतरद्वीप छे ते द्वीपोमा जुगलीयां रहे छे कर्म अने अकर्म भूमीनां मळी पीस्तालीस क्षेत्र तेमा छप्पन्न मेळवता एकशो ने एक क्षेत्र थयां त्या मनुष्य स्थान छे अढी द्वीपनी बहार मनुष्यनुं जन्म मरण नथी. अढी द्वीपनी बहार देवता तथा तिर्यंचनो रहेवास छे म-नुष्योत्तर पर्वतनी बहारनी कोरे अरधो पुरकरवर द्वीप रह्यो छे तेना फरतो बत्रीश लाख योजन प्रमाण द्वीपना नामेज

समुद्र छे तेमज ते समुद्रनी पाछळ तेथी बमणो मोटो द्वीप छे, ने ते द्वीपथी बमणो मोटो समुद्र छे एम द्वीपनी पाछळ गाम बमणो समुद्र अने समुद्रथी बमणो द्वीप एम असंख्याता द्वीप छे अने असंख्याता समुद्र छे तेमां छेल्ला द्वीपनु नाम स्वयभूरमणद्वीप छे ते पा राजप्रमाण पहोळो छे तेनी पाछळ छेल्लो स्वयंभूरमण समुद्र छे ते अर्धराज प्रमाण पहोळो छे

ए असख्याता द्वीप समुद्र कह्या. तेनी सख्या सूक्ष्म उद्धार अढी सागरोपमना जेटला समय थाय एटला द्वीप समुद्रछे तेनी साख जीवाभिगम सूत्र तथा भगवती सूत्रना छग सतकमाछे अढी द्वीपमा सूर्य,चद्र,ग्रह,नक्षत्र,ताराछे ते एक ध्रुवना ताराने वर्जीने सर्व फर्या करेछे तेथी दीवस रात्रीनु मान बधायछे माटे तेने समयक्षेत्र कहेवु अढी द्वीपनी बहार जे सूर्य,चद्र,ग्रह नक्षत्र,तारा छे ते सर्व स्थिरछे. ज्या सूर्य छे त्या सदाय दीवस रहे छे ज्यां चंद्र छे त्यां शुक्ल पक्षनी पुर्णिमा सरखी रात्री रहे छे सूर्य अने चंद्रनु श्रेणीबध पचास हजार योजननु अंतर रहे छे, एम असख्याता सूर्य अने असख्याता चद्र छे ए रीते तीर्च्छालोकनो अधिकार जाणवो

ऊर्ध्वलोकनो अधिकार

ऊर्ध्वलोक कडक ऊणो सात राज प्रमाणछे तेमा प्रथम सूधर्म देवलोक दक्षिण दीशामाछे अने तेनी बरोबर लगभी आकारे द्वितीय इशान देवलोक उत्तर दिशामां छे, ए बे

देवलोकमां देवीर्उनुं ञपजवु ठे. त्रीजा देवलोकथी आरजीने देवीर्उनु उपजवुं नथी. ते ञपर त्रीजुं सनत्कुमार देवलोक दक्षीण दिशाए ठे चोथु माहेन्द्र देवलोक ञत्तर दिशाए ठे पांचमुं ब्रह्मदेवलोक पांच राज लांवु पहोलुं ठे. अत्र कृष्ण राजी ठे. त्यां नव लोकांतिक देवनां नव विमान ठे ते उपर ठठुं लांतक नामे देवलोक ठे एम यावत् वार देवलोक ठे. ते वार देवलोकना उपर नव ग्रैवेयकना त्रण त्रीक ठे एक प्रथम त्रीक तेना उपर वीजो त्रीक अने तेना उपर त्रीजो त्रीक एम ठे अने तेना उपर पांच अनुत्तर विमान ठे तेनी विगत चार दिशाए चार विमान ठे अने वचमा सर्वार्थ सिद्ध विमान ठे. वचला विमानना धजाथी वार जोजन उंची सिद्धशिल्ला ठे. ते सिद्धशिल्ला मध्यमां आठ योजननी जाडी ठे अने ठेडे मांखीनी पांख जेवी पातली ठे ते सिद्धशिल्लानी उपर एक योजनना चोवीश जाग करीए तेमां तेवीस जाग मूकीने चोवीसमा जागमां सिद्ध परमात्मा अलोकने अडीने रह्या ठे एम उंचपणे चौद राज प्रमाण लोक ठे. तेमां एक राज प्रमाण लांवा पहोळापणे चौद राज सुधी त्रस नाडी रही ठे ते त्रस नाडीमा त्रस जीवो उपजे विणसे ठे. वाकी सर्व लोकमां पांच थावर जर्या ठे. चौद राज लोकमां पंचास्तिकायनुं अवस्थान परिणमन ठे. पंचास्तिकायनां नाम अनुक्रमे निचे मुजव जाणवा. धर्मास्तिकाय. (२) अधर्मास्तिकाय (३) आकासास्तिकाय. ते त्रण द्रव्य एकेक द्रव्य ठे चोथुं जीवद्रव्य

छे अने जीव अनता छे तेनी विगत कहे छे सज्ञी मनुष्य सख्याता छे असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे नारकी असंख्याता छे, देवता असख्याता छे तीर्यंच पचेद्रि असख्याता छे बेइद्रिय जीव असख्याता छे, ते इद्रियजीव असख्याता छे चौरद्रिय जीव असख्याता छे ते थकी पृथिवीकाय असख्याता छे तेथी अप्पकाय असख्याता छे तेथी तेउकाय असख्याता छे तेथी वायुकाय असंख्याता छे तेथी प्रत्येक वनस्पतिकाय जीव असख्याता छे तेथी सिद्ध परमात्मा अनता छे तेथी बादर निगोद अननगुणा छे तेथी सुक्ष्मनिगोद अनतगुणा छे तेमा एकेक जीवना असख्यात प्रदेश छे ससारी जीवना एकेक प्रदेशे अनती कर्म वर्गणा लागी छे अने एकेक कर्म वर्गणामा अनत पुद्गल परमाणुआ जीव साथे लाग्या छे तेथी अनत पुद्गल परमाणु जीवथी रहित छूटा छे पाचमु पुद्गलास्तिकाय द्रव्य छे ते वर्ण, गंध रस अने स्पर्शगुण युक्त छे पचास्तिकायमा समयेश उत्पाद व्यय अने ध्रुवता व्यापि रही छे दरेकमा षट्गुण हानि वृद्धि व्यापि रही छे द्रव्यगुण अने पर्यायनु अवस्थान द्रव्य क्षेत्र काल भावथी सर्वे द्रव्यमा जाणवुं ए पाच द्रव्यमा ससारी जीव ते पुद्गल द्रव्यमा कर्मयोगे ने उदय सयोगे परिणम्यो छे तेथी परनो कर्ता तथा भोक्ताविभावे वर्ते छे ते थकी पोताना आत्माने न्यारो चिंतवी स्व स्वरूपनु तनमय ध्यान करवु ते सस्थान विचय नामनो चोथो पायो जाणवो धर्म ध्यान चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी छे अने आठमा गुणठाणाथी

शुक्ल ध्यान स्थिति छे शुक्ल ध्यानना चार पाया छे प्रथम प्रथक्त्व वितर्कसप्रविचार (२) एकत्व वितर्कअप्रविचार. (३) सुक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति (४) उछिन्न क्रिया अनुवृति. प्रथम पायानो विचार कहे छे शुक्ल कहेतां निर्मळ आलंवन रहित्त निरालंवनपणे आत्म स्वरुपनुं पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाए तन्मयपणें ध्यान करवुं तेने शुक्ल ध्यान कहे छे. प्रथकत्व पर्यायने कहेतां कर्मभावी पर्यायथी स्वभावी पर्यायनो भेद उपयोगे भिन्नता करी आत्म ध्याननुं चितवन करे कर्मभावी पर्यायनुं स्वरुप कहे छे पूर्वोपार्जित कर्मयोगे मनादिक योग उपार्ज्यो छे तेनो वेपार, करण, वीर्य, वळ अने स्फुरणा सर्व कायानी अंदर स्थापे (परिणमावे वळी कायानी अदर आत्माना गुणपर्याय व्यापकपणे छे तेने सर्वथा प्रकारे पलटावी अंतर्गत स्वरुपे उपयोगीपणे परिणमावे, त्यां स्वभावनो अने विभावनो भेद जूदो पके छे अने भेद जूदो पमतां पोतानो आत्मा पोताने स्वभावेज प्रकाश करे छे आत्माना स्वभावे अनत गुण, अनंत पर्याय, अनत स्वभाव, अनत लक्षण रह्यां छे तेनो भेद ज्ञान योगे प्रथक्त्व एटले जूदो जूदो वितर्क एटले श्रुतज्ञाने स्थित उपयोगे विचारता ज्ञान दर्शन, चारित्र, वीर्य अने उपयोग इत्यादि अनंत गुणना भेदनो भिन्न भिन्नपणे विचार, वळी अकेक गुणना अनंत अविभाग ते पर्याय विचारे, एटले अनत पर्याय मळीने जे जे कार्य करे तेनुं नाम गुण छे, बाकी गुणरुप वस्तु नथी अनता ज्ञानना

पर्याय मळीने जाणवारुप कार्य करे अनंता दर्शनना पर्याय मळीने देखवारुप कार्य करे अनंता चारित्रना पर्याय मळीने स्थिरतारुप कार्य करे. अनंता वीर्यना पर्याय मळीने स्फुरणा शक्ति आपे एम अनत पर्याय भिन्न भिन्न रीते अनत गुणमां अनती प्रवृत्ति करे छे वळी स्वभाव पण अनंता रह्या छे पोताना द्रव्यमां नित्यपणुं, एकत्वपणु, अनेकपणु, भव्यपणु, अभव्यपणु, इत्यादि विचारे, पर्यायमां उत्पाद अने व्ययनि अपेक्षाये, अनित, अनेक, भेद, अने भव्य, एम, द्रव्यगत, परिणमता, स्याद्वादपणुं विचारे एम आठमे गुणठाणेथि अपूर्व वीर्य स्फुरणानो तीक्ष्ण वेग भेद ज्ञान योग प्रवर्त्ते छे नवमा दशमा गुणठाणे भेदाभेद ज्ञान छे त्यां गुणने पर्यायमा संक्रमावे अने पर्यायने गुणमा संक्रमावे, गुण पर्यायने द्रव्यमा संक्रमावे एवी रीते स्वधर्ममां धर्मांतर भेद ते प्रथकत्व कहीए, अने वितर्क ते श्रुतज्ञाने स्थिर उपयोगने विचारे ते एक पछी वीजो, एम ध्याननी तन्मयपणे एकत्र परिणमन धारा ते प्रथकत्व वितर्कसप्रविचार नामनो शुक्ल ध्याननो प्हेलो पायो जाणवो. हवे एकत्व वितर्क अप्रविचार नामनो वीजो पायो कहु छु ते वीजो दसमा गुणठाणाने अते आवे छे ते बारमा क्षीणमोह गुणठाणे वीतराग भावे ध्यावानो छे एकत्व एटले गुणपर्याय मय आत्मा छे आत्माथी गुणपर्याय जूदा नथी अने गुण पर्यायथी आत्मा भिन्न नथी एकत्व छे वळी जेवा सिद्ध परमात्मा छे तेवोज मारो आत्मा छे, वितर्क एटले श्रुतज्ञान अवलंबीपणे अप्रविचार एटले विकल्प रहित, निर्विकल्प

दर्शन ज्ञाननो समयांतरे कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समये कारण कार्यता पणे ध्यान, वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ते बीजों पायो जाणवो. ए पायो ध्यावतां ज्ञानावरणीय दर्शनावर्णीये अने अंतराय ए त्रण कर्मो क्षय करे अने पहेला पायाना ध्यान योगे दशमा गुणठाणाना अते मोह-नीय कर्म क्षय करी यथाख्यात चारित्र पाम्या छे अने बारमाना अंते त्रण कर्मनो नाश होवाथी केवळज्ञान अने केवळदर्शन अने क्षायकभावनी पांच लब्धि पामी तेरमा गुणठाणे अरिहंत पदे ध्यानांतरिकपणे आयुष्यना छेडा सुधी क्षायकभावनी लब्धि भोगवता छता, पूर्वोपार्जीत औ-दयिक भावने खेरवता छता, भव्य जीवने कल्पवृक्षनीपेठे बोधिबीज दान देता छता, वळी कर्मरोग टाळवाने धनवं-तरी वैद्य सदृश मोक्ष नगरे पोहोचाडवा सार्थवाह समान, वळी जघन्यथी अंतर्मूहूर्त अने उत्कृष्टा आठ वर्ष उणी पूर्व कोडी वर्षपर्यंत केवळी तेरमे गुणठाणे स्थिति करे छे

हवे त्रीजा पायानो विचार कहुं छुं

सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाती एटले मनयोग वचनयोग सर्वथा प्रकारे रुंध्या छे अने काययोग बादरथी रुंध्यो छे तेने शैलेशी करण कहीए शैलेश केहेतां पर्वतनो स्वामी मेरुपर्वत तेनी पेठे अकंपावस्था अयोगी केवली शैलेशी करणनी प्राप्तिथी नि:शकंपणे रहे, अयोगी थाय अहीं सत्ताए अघाती कर्मनो ८५ प्रकृति रही हती तमांथी ७२ प्रकृति खपावे ए त्रीजो पायो जाणवो

हवे चोथा पायानु स्वरुप कहे छे —

प्रथम कायजोग सूक्ष्मपणे रह्यो हतो तेने सर्वथा रुधे एटले सर्वथा क्रियानो उच्छेद थयो सत्ताए तेर प्रकृति अघाती कर्मनी रही हती ते खपावे अने कर्म रहित (अकर्मा) आत्मा थाय अवगाहना (देहमान) मांथी त्रीजो भाग पोलाणनो छे ते घटाडे. बे भाग प्रमाण आत्म प्रदेशनो निबिड घन करी समश्रेणीए बीजा आकाश प्रदेशने अण फरसतो एक समयकाळे लोकाग्रभागे सिद्धमां सादि अनत भागे स्थिर रहे, ते सिद्ध परमात्मा कहीए. एवी रीते चोथो शुक्ल ध्याननो पायो कह्यो ए अभ्यतर तपनो ध्यानरुप पाचमो भेद जाणवो

हवे तपनो काउसग्ग रुप छठो भेद कहे छे काउसग्गना बे भेद छे द्रव्य काउसग्ग, अने भाव काउसग्गः मन, वचन अने कायार्थी, नवकार अथवा लोगस्स गणवाते द्रव्य काउसग्ग छे तेना बे भेद छे एक विधिथी अने बीजो अविधिथी त्रिकरण योगे स्थिरपणे मन वचन कायाने परिणमावे, श्वासोच्छ्वास विना अन्य अंग कंपावे नहीं ते द्रव्यथी विधिसहित काउसग्ग जाणवो अविधिथी काउसग्ग करता कायाने हलावे होठ फफडावे, आगळी फेरवे, चक्षुनी द्रष्टी फेरवे, अने मनमा दुर्ध्यान करे ते द्रव्यथी अविधि काउसग्ग जाणवो हवे भाव काउसग्ग कहे छे तेना बे भेद छे एक परिणमन रुप अने बीजो रुधन रुप. रुधवापणे कायानो, मननो, वचननो त्याग तो

केवळी जगवानने शैलेशी करणे थाय छे हवे परिणमन रुप जावथी काउसग्ग कहुं छु तेना बे जेद छे १ कार्त्रिम अने २ अकार्त्रिम अकार्त्रिम ते कर्या विना सहेज जावे करण वीर्य स्फुरणाना अजावे, सहज वीर्य स्फुरणायोगे अचानक कायाना जागनुं परिणमन जुडुं अने आत्माना जागनुं परिणमन जुदुं एम स्वजावे थइ जाय छे तेना बे जेद छे, एक दृढ अने बीजो अति दृढ उपशम समकित वा क्षयोपशम समकित वा वेदक समकित वा क्षायक समकित पामवाना अवसरे आत्माथी मन वचन कायानो त्याग थाय छे ते दृढ नामे प्रथम जेद जाणवो. श्रेणी मांमवाना अवसरे त्रणे योगनुं परिणमन जुडुं छे अने आत्मानुं जुडुं छे ए अतिदृढ काउसग्ग जाणवो. ए जावथी अकर्त्रिम काउसग्गना बे जेद कह्या. हवे जावथी कर्त्रिम काउसग्ग कहे छे चोथाथी सातमा गुणगणा सुधी जे पुरुष वर्ते छे ते पोताना लक्षपूर्वक अंतःकरणे प्रवेश करी उपयोग देइ तत्त्वातत्त्वनो विचार करे, वळी द्रव्य गुण पर्यायनो विचार करे, द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक नयनो विचार करे, वळी द्रव्य क्षेत्र काल जाव विचारे, वळी नांमादिक चार निक्षेपानो विचार करे तेमज उपचरित अने अनुपचरितनो विचार करे, वळी सिद्धांतना वचननो परमार्थ चितवे अने तेउ अंतःकरणमां ऊंमा उतरे छे तेमा पचेंद्रियनो विषय वेदवारुप होतुं नथी. वळी मनयोग पण स्थिर छे अने स्वरुपमा उपयोग परिणमावी चिंतवन करे छे [illegible] म काउसग्ग जावथी जाण-

हेतु छे शुभ व्यवहारे पुण्यरुप शुभ कर्मनु ग्रहण थाय छे अने अशुभ व्यवहारे पापकर्म रुप आश्रव ग्रहण थाय छे, एम सिद्धांतकार स्पष्ट रीते कथे छे शुभ व्यवहार मोक्षनुं कारण जाणी आदरवो, ते सत्य तत्व प्राप्ति करावी आपतुं नथी सत्य तत्वनो अपलाप करवो ते उत्सूत्र भाषण छे वादी कहे छे के प्रभुए स्यादवाद मार्ग कह्यो छे माटे व्यवहारे चालवु जोइए तेना उत्तरमा समजवुं के व्यवहारे चालवु ते सत्य छे पण निश्चय नयनी प्राप्ति करावी आपनार शुद्ध व्यवहार छे अने शुद्ध व्यवहार शब्द नयनी अपेक्षाए भेद ज्ञाननुं नाम छे, अने ते भेद ज्ञाननो संवर भावमां संभव छे अने ते मोक्षनुं कारण छे शुभ अने अशुभ ए बे व्यवहार अशुद्ध व्यवहारनाज भेद छे अने तेनो आश्रवमां अतर्भाव थाय छे, तेने संवरमा कदाग्रहथी गणीए तो असत्य वचने मृषावाद लागे, अने तेम मृषावाद बोलवाथी समकीत सभवे नही माटे तत्व ज्ञाननो खप होय तो निश्चय दृष्टि हृदय धरी व्यवहार मार्गनु आचरण करो तो स्याद्वाद सत्य धर्म पामशो अध्यात्मसार ग्रथना पंच दश योगाधिकारमां कह्यु छे के

आवश्यकादिरागेणं, वात्सल्याद्भगवद्गिरां ॥
प्राप्नोति स्वर्ग सौख्यानि, न याति परमं पद ॥१॥

आवश्यक प्रतिलेखना आदि चरणसित्तरी करण

सित्तरीनी क्रियाना रागे जिन वाणीनुं वात्सल्य छे तेथी स्वर्गना सुखो मळे छे पण उत्कृष्ट एवुं परमात्म पद मळतुं नथी, कारण के जेवा प्रकारनी दृष्टि तेवुं फळ प्राप्त थाय. बाह्य दृष्टिथी बाह्य क्रियाने पुष्ट करी मोक्षनु कारण मानीए अने ध्यानगत स्वभावरमणरूप अंतरक्रियाने अवगणीए तो तेथी कांइ मोक्षपदनी प्राप्ति थाय नही आश्रवनुं कारण तेने संवर मानतां मोक्ष मार्गनो रोध थाय वळी उपाध्यायश्री जसविजयजी श्रीसीमंधरस्वामीना स्तवनमा पंदरमी ढाळे कह्युं छे के—

परपरिणति पोतानी माने, वरते आरत ध्याने ॥
बध मोक्ष कारण न पीछाने, ते पहिले गुणठाणे ॥
धन्य ते मुनिवरारे, जे चाले समभावे ॥२३॥

अर्थः-परपरिणति ते राग द्वेष अशुद्ध परिणति, अशुद्ध निमित्त काया संयोगे इंद्रि द्वारे, विषयने कर्त्तापणे भोक्तापणे, रमणपणे, ग्राहकपणे, व्यापकपणे, परिणमनपणे अनादि संबंधे आत्मा अनुभवे छे तेने पोतानी माने एटले काया ते जीव अने जीव ते काया एम एकता माने पण कायाथी जुदो कायानी माहेली कोरे जाणवावाळो अनुभववावाळो वेदवावाळो छे ते जीव छे अने इंद्रियो छे ते पुद्गल छे, एम जीवनीअने पुद्गलनी भिन्नता छे. वळी जीव अरूपी छे, चेतन छे, ने पुद्गल रूपी छे जड छे, ते अपेक्षा न राखतां एकाते आत्मानी माने; द्रव्य प्राणने जीव समजे इष्टानिष्टपणे आरत ध्याने वर्त्ते एज कर्म बंधनु कारण

अने कर्मनो नाश करवानु कारण रागद्वेषनो अन्नाव एटले समन्नाव ते शुन्नाशुन्नमाअव्यापकपणु अपरिणमनपणु एटले परथी उदासिनतापणु ने अतर्गतगुणवृत्तिए व्यापकपणु परिणमनपणुउपयोगीपणुरूपातितध्याने रमणपणु निर्विकल्पचितकपणु वितराग न्नाव ते मुक्ति एटले कर्मथी मुक्त थवानु ने सिद्धि वरवानु कारण ए रीते बध मोक्ष बन्ने कारणोने न पिछाने एटले जाणे नहीं ने मोह गर्न्नित वैरागे देवादिकरिद्धिना अन्निलाषी थइ कचनकामिनीआदि गृहवास वमी सयति नाम धरावी चरण करणानुयोगनी द्रव्य क्रियाथी चारित्र माने, रजोहरणादि लिंगने दर्शन माने न्नणे तेने ज्ञान माने अने शुद्ध नयपक्ष रत्नत्रयीनी अपेक्षा न राखे, कारण कार्यन्नावने समजे नही ते मनुष्य मिथ्यात्वरूप पहेले गुणठाणे जाणवा, माटे हे न्नवन्निरु न्नाइओ! सिद्धातना वचननो तथा पूर्वाचार्योना वचननो परमार्थ समजी शुन्नाशुन्न व्यवहारथी दूर थइ बाह्यद्रष्टि टाळी जमता निवारी शुद्ध व्यवहारने ग्रहण करो एटले निश्चयनयथी कथित परमात्म पदनी प्राप्ति थशे, ए सातमो सत्य धर्म कथन कर्यो हवे आठमो शौचधर्म कहे छे शौच एटले पवित्रपणु निर्मलपणुं तो न्नेद ज्ञान घटमां आव्या कायानो अने आत्मानो न्नेद जुदो पमे वस्तुगते वस्तुपणु न्नासे, एटले अनादि सबधे आत्मा पुद्गल मिश्रित लोलीन्नूत क्षीरनीर द्रष्टाते मिलीत छे परतु वस्तुगते न्निन्न छे एटले जीवथी पुद्गल जुदो छे अने पुद्गलथी आत्मा त्रिकाळवृत्तिए जुदो छे शुद्ध द्रव्यास्तिक न-

યપક્તે નિર્લેપ અનાદિ સિદ્ધ છે તે આત્માનું સ્વરૂપ શ્રદ્ધા ભાસન રમણમા અનુભવ રીતે આવે, ઉદીક ભાવમાં અ-વ્યાપકપણે વર્તે, ઉદોકભાવને ક્ષય ઉપશમ વળે નિર્જરે, પુનરપિ કર્મ ન બાંધે એવા ઉપયોગી મહાત્માને પવિત્ર કહીયે, વળી જ્ઞાની કહીયે, મુનિ કહીયે પણ જ્યા સુધી ચેતન સત્તાથી અચેતન સત્તા ભિન્ન ભાસી નથી, જાણી નથી, ત્યા સુધી વ્યવહારમા સંયતિ નામ ધરાવે અને યથાર્થ દ્રવ્ય ચારિત્રની ક્રિયા કરે, સાંખીની પાખને ડુહવે નાંઈ તોપણ અસંયતિ છે, એમ ઉત્તરાધ્યનજીમાં કહ્યું છે

નાણેણ ય મુણી હોઇ, ન મુણી અરણ્ણવાસેણ

વળી આનંદઘનજી કૃત ચૌવિશીમાં બારમા વાસુપૂજ્યજીના સ્તવનમાં કહ્યુ છે.

આતમ જ્ઞાની શ્રમણ કહાવે, બીજા તો દ્રવ્ય લિંગી રે॥
વસ્તુગતે જે વસ્તુ પ્રકાશે, આનદઘન મતિ સગીર ॥
વાસુપૂજ્ય જીન ત્રીભુવન સ્વામી ॥ ૬ ॥

વળી યશોવિજય ઉપાધ્યાયજી અધ્યાત્મ સારગ્રંથે યોગાધિકારે કહે છે. ॥

પાપાકરણમાત્રાદ્ધિ, ન મૌનં વિચિકિત્સયા,
અનન્ય પરમાત્મા સ્યાત્, જ્ઞાનયોગી ભવેન્મુનિ ॥૨૬॥

સમાધિશતકે દુહા

કેવલ આતમ બોધ હે, પરમારથ શિવપંથ,
તામેં જીનકૂં મગનતા, સોઇ ભાવ નિર્ગ્રંથ ॥ ૨ ॥
જ્ઞાનવિના વ્યવહારકો, કહા બનાવત નાચ,

रत्न कहोको काचकू, अत काच सो काच ॥ ५ ॥
द्रव्य गुणपर्यायना रासमां पेहेली ढाले
विना द्रव्य अनुयोग विचार,चरण करणनो नहि को सार,
समति ग्रथे जाण्युं इस्यु, तेतो वुद्धजन मनमां वस्युं ॥१॥
शुद्धाहारादिक तनुयोग, मोटो कहीयो द्रव्य अनुयोग,
ए उपदेश पदादिक ग्रथे, साख लही चालो शुद्धपथे ॥२॥
ए योगे जो लागे रग, आधाकर्मादिक नहि जग,
पचकल्प जाण्ये इम जाणु. सद्गुरु पासे इस्युं मे सुणुं॥३॥
वाह्य क्रिया वे वाहिरयोग, अतरक्रिया द्रव्य अनुयोग,
वाह्य हिन पण ज्ञान विशाल,जलो कह्यो मुनि उपदेश मालथ॥
द्रव्यादिक चिंताये सार, शुक्लध्यान पण लहिये पार,
ते माटे एहिज आदरो, सद्गुरु विण मत जूला फिरो॥६॥
एहनो जेणे पाम्यु ताग, छंधे एहनो जेहने राग,
ए वे विण त्रीजो नहि साध,जाण्यो संमति अरथ अगाध॥७॥

ए शौचधर्म कह्यो हवे नवमो अकिंचनता धर्म कहे छे ते किचनना अजावे उपजे तेना वे जेद. एक वाह्य, वीजो अच्यतर वाह्य कींचन ते नव जेदे परिग्रह कचन कामनी आदे तेने तजवाथी ने पच महाव्रत उच्चरवाथी छठु सातमु गुणठाणु व्यवहारे कहेवाय वळी निर्ग्रंथ कहेवाय ए पहेला जेद कह्यो हवे वीजो जेद अच्यतर किंचननो तेना वे जेद एक मूर्छारुप ने वीजो वधनपणारुप, तेमा मूर्छा ते पर वस्तुने विषे पोतापणानो वळी अजिलापा,

पर वस्तुने विषे लागी ठे तेने मूर्छा किंचन कहीये; तेनो संजव सातमा अप्रमत स्थानकथी ठठा प्रमत स्थानके आवे जाय त्यां सुधी संजवे, अने सातमाथी आठमा अपूर्व गुणठाणे जइ श्रेणी माझे त्यां नियमा मूर्छानो अजाव थाय वळी केटलाकने चोथा अविरती समकित गुणठाणाथी पण मूर्छानो अजाव थाय, कारण के क्षायकसमकितनी प्राप्ति चोथा गुणठाणाथी कही ठे, त्या मूर्छा केम संजवे अर्थात् न संजवे ए अज्यतर किंचननो प्रथम नेद कह्यो. हवे बीजो नेद बंधनपणानो ते ज्यां सुधी मोहनीय कर्मनी प्रकृति आत्म सत्ताए रही ठे त्यां सुधी आत्मा संसारमां बंधनपणे रह्यो ठे एटले आठ कर्म ठे तेमां राजा मोह ठे अने जे राजा होय तेज केद करी शके एटले उपशम श्रेणी मांझी अग्यारमे गुणठाणे उपशम जावनुं यथाख्यात चारित्र वितराग जावे पामे तो पण संसारनो अजाव न थयो अने जन्म मरण टळ्यां नहि तेनु कारण एज के मोहनी कर्मनी प्रकृति आत्म सत्ताये साबीत रही ठे, विपाके उदयनो एक अंतर मूहुर्त मात्र अजाव थयो ठे पण सत्ताये अजाव थयो नथी ते कारणे उपशम जावनी अंतर मूहुर्तनी स्थिति ठे तेनी पूर्णताए सत्तामां रहेली प्रकृति उदयागत प्राप्त थइ तेज समे अग्यारमा उपशांतमोह गुणठाणाथी पमे ठे ए मोहनो पराजव जाणवो तेनो अजाव बारमा क्षीणमोह गुणठाणे क्षपकश्रेणीनी अपेक्षाये थाय तिहा निश्चयनयथी आकिंचन संयति धर्मनो नवमो नेद पामे ते कह्यो

हवे यति धर्मनो दसमो भेद ब्रह्मचर्य वर्णवे छे ब्रह्मचर्यना चार भेद तेमा प्रथम भेद विषयभोग सेवे नहीं. बीजो विषय चिन्हनी विकृतिने टाळे त्रीजो वेदने बाधराना स्थानकोने त्यजे चोथो वेदना बंधनी सत्तानी योग्यताना स्थानकने त्यजे ते ब्रह्मचर्य व्रत जाणवु हवे ए चार भेदनु विवेचन करे छे वेद विषय भोग नहीं करे तो पचम गुणठाणा सुधी बार व्रतधारी श्रावकने प्रमाण पूर्वक स्वदारा साथे वेद विषय भोगनो भजन छे परंतु कोइ सोय छेराना आकारे सर्वथी त्याग करे तेने आलाप सलाप स्पर्श आदि रहुं. तेनो त्याग छठा सातमा गुणठाणे संयति पद ग्रहण करता सजवे हवे बीजो भेद वेद चिन्ह विकस्वर पामे तेने टाळवानो यत्न करवो तेना वे भेद एक व्यवहारथी अने बीजो निश्चयथी व्यवहारथी टाळवानो विचार करीए तो नववाडमा रहीए वाडने भागी छींडु पाडीए नहीं छींडु पाडता वळी वाडने उलंघन करता वेद विकस्वर थाय, ते टाळवाने नव वाड कहेछे पहेली वाडे स्त्री, नपुसक पशु ज्या रहे त्या ब्रह्मचारीए रहेवुं नही बीजी वाडे स्त्री साथे कामनी कथा करवी नहीं त्रीजी वाडे स्त्री ज्या बेठी होय त्या पुरुषने बे घडी सुधी बेसवुं नही. स्त्रीने पुरुष बेठो होय तेना पर त्रण पहोर सुधी बेसवुं नहीं चोथी वाडे स्त्रीनु रूप अगनो काति जोवा नजर माडे नही पाचमी वाडे स्त्री पुरुष भींतने अतरे रमता होय त्या ब्रह्मचारीए रहेवु नही छठी वाडे पूर्वना भोग विलासने संभारे नहीं

सातमी वाडे कामोद्दीपक आहार करे नहीं. आठमी वाडे मर्यादा वहार भोजन करे नहीं. नवमी वाडे देहने शणगारे नहीं ए वेदनुं विकस्वरपणुं टाळवाने व्यवहारे प्रथम भेद जाणवो. बीजो भेद तो निश्चयथी वेद विकृति टाळवाने अंतरमां विचार करवानो छे. संयति पदे वेद विकृति पामवानु मूळ कारण जोइए तो समकित मोहनीय छे. वळी चारित्र मोहनीयनी त्रण चोकडीओनो तो क्षयोपशम थएलो छे, परतु उदयतानी अधिकताइ योगे उछाळा करे त पराभव छे वळी सज्वलनना कपायनो पराभव पण प्रमाद प्रसंगे विशेप छे. वळी नोकपाय तेमा हास्यादिक षट् (६)नो अने वेदनो क्षयोपशम तो वहु या थयो नथी तेनो पराभव छे इत्यादि मोहनीय कर्मनी प्रकृतिओनो पराभव प्रमाद गुणठाणे प्रमाद प्रसंगे अधिक होवाथी वेदनी विकृति थाय तेने टाळवाने अर्थे घटमां सहज भावे भेदज्ञान जागृतिपणु पामे अने सहज वीर्यनी स्फुरणा थाय, वळी अप्रमत्त गुणठाण मित्रनी मित्रता दृढता पामे अने तेना योगे उपर कहेलो उपाधि योग तेने निर्जरे अने उदयागत प्राप्त न थयो तेने उपशमावे त्या प्रमाद गुणठाणे आववु वध थाय त्यारे आतमा अपूर्व गुणठाणे प्रयाण करे, त्या वेद विकृतिनो संभव नथी ए निश्चयथी बीजो भेद कह्यो. ज्यारे आत्मा वळीउ थाय त्यारे ते वात बने हवे त्रीजा भेदमा वेद बांधवाना स्थानकने त्यजवां जोइए त्यारे त्रण वेदनो वध प्रथम गुणठाणे कह्यो

छे तेमाथी नपुसक वेदनो बध बीजा सास्वादन गुणठाणे टळे अने स्त्री वेदनो बध त्रिजा मिश्र गुणठाणे टळे समकित चोथा गुणठाणार्नी सावीतीए एक पुरुषवेदनो बध छे ते नवमा अनिवृत्ति गुणठाणाने अंते श्रेणीये टळे दसमा सूक्ष्म सपराय गुणठाण चढीए त्या वेदनु अबधपणु छे.

हवे चोथो भेद वेदना बधनी सत्तानी योग्यताना स्थानकने तजवुं ते अग्यारमा उपशात मोह गुणठाणा सुधी आत्मप्रदेशे वेदना बधना कर्मदल सत्ताए उपशम श्रेणीनी अपेक्षाए होय माटे वेदना बधनी सत्तानो अभाव तो बारमा क्षीणमोह गुणठाणे वितराग भावे सभवे ए दश भेदे यति धर्म कह्यो हवे क्षायक समकित कहे छे, परतु क्षायिक समकित पामवु ते जीवने काइ सहेज नथी पण दुर्लभ छे ते किंचित् वर्णवे छे समकितादि धर्म पामवानी योग्यता शुक्ल पक्षिया जीवने योवन अवस्था प्राये शास्त्रनी मर्यादा व्यवहार पूर्वक ससार अर्ध पुद्गल परावर्त बाकी रहे त्याथी कहीए पण समकित धर्मनी प्राप्ती सज्ञि पचेन्द्रिमा छे अने संज्ञि पचेन्द्रीपणु पामवु पुन पुन. दुर्लभ छे महा पुण्ययोगे सप जे अने तेमा पण मनुष्य पचन्द्रि पणुं श्रेष्ट छे ते पाम्या, तेमां कदाच क्षयोपशम भावनी हानि थइ तो पाच इन्द्रियोनी चेतना हणाइ जाय त्यारे श्रवण चेतनाना अभावे सदगुरुनो उपदेश पमाय नहीं अने चक्षु चेतनना अभावे जिन प्रतिमा तथा मुनिवरना दर्शन थाय नही, अने मन पण अवढ कुवाना

पाणीनी पेठे दुध्यान वासनाए वासित रहे तो समकित धर्म शी रीते पामी शकाय धारो के पांच इंद्रियो पाम्या पण अनार्य क्षेत्रमां जन्म थयो तो त्यां देवगुरुनी जोगवाई मळवी दुर्लभ थई पडे कदाच आर्य क्षेत्र पाम्या पण जन्मथी रोगी थया तो ए रोग टाळवानी चितामा तथा दुःखमां काळ जाय पण धर्म पामवानो वखत आवे नही निरोगीपणुं अने इंद्रियो सपूर्ण पाम्या पण आर्य क्षेत्र अने श्रावकना कुळमां जन्म थयो नही तो केवळी कथित धर्म मळे नही. पूर्वोक्त योगवाइथी श्रावक कुलमां जन्म्या तो पण सद्गुरुनो उपदेश मळवो दुर्लभ कारण के समकित धर्म छे ते तो अरूपी आत्मानो गुण छे अने तेथी वस्तुनो निर्णय करवानो छे अने वस्तु गते वस्तु धर्म रह्यो छे तेनी श्रद्धा करवी छे, अने पुद्गलादि वस्तु आत्माथी भिन्न छे तेने विषे त्याग बुद्धि करवी छे ए तत्त्वनी वात ज्यां त्यां पामी शकाय नहीं. ए तत्वने तो स्वस्वरुप रमणी, सहज भाव विलासी, आत्मज्ञानी जड भावथी उपरांठा थई उजागर दशाने पामेला, नय निक्षेपाना जाण, स्याद्वाद वादी, करुणासागर इत्यादि गुणगण युक्त बहु श्रुत गीतार्थ जे सद्गुरु, तेमनो उपदेश पामीए, त्यारे समकित पामवानो वखत आवे एवा गुरु मळवानो योग चोथे आरे पण सर्व क्षेत्रे सदा होतो नथी, तो दुषम काळे क्यांथी पामीए ए सद्गुरु पुण्योदय जोगे मळ्या ते छतां पण गुरु महाराज पासे जतां आलस्य आवे. आलस्य

काठीओ गुरु पासे जता रोके. संसारनुं काम वगेरे छे ते करीने जजो ते कामनो पार आवे नहीं अने गुरु पासे जवाय नहीं, तो धर्म शी रीते पामे. एम करता जोरावर थाय तो आलस त्यागी संसारना कामने पुठ देइ गुरु पासे आवे त्या बीजो मोह काठीयो आवीने उनो रहे गुरु संसारी जीवने प्रथम वैराग्योपदेश करे कंचन कामिनी विषयादिना त्यागनो उपदेश थाय त्या मोह पामेला प्राणीनी रुची तेना उपरथी न उठे त्यारे मोह काठीओ त्रीजा अवज्ञा काठीआने बोलावे, ते आवीने खमो थाय त्यां गुरु महाराजना दोषो जोतो फरे एक सरसव जेटलो दोष होय तो तेने मेरु समान मोटो करीने कहे अर्थात् निंदा करे, एवो जीव बोध शी रीते पामे, तो-पण करुणाना सागर हित वाछक गुरुराज तेने उपदेश करे त्यारे अवज्ञा काठीओ चोथा मान काठीआने बोलावे. ते आवे त्या पोतानी मोटप आवे तेथी गुरुरायने यथास्थित नम्रता पुर्वक वदन पण करे नहीं वळी गुरुराय उपदेश करता होय अथवा सज्झाय ध्यान करता होय ते वखते गुरुने धर्मलाभ देवानी तथा समजुने मुख्यताए वांदवानी मर्यादा पण नथी कारण के धर्म लाभने इछे तेने ते वखते गुरुराय उपयोग चुकावीने बहुधा तो धर्मलाभ दे नहीं त्या जेने मान काठीयो नड्यो छे ते पुरुष गुरुने अभिमानी ठरावे अवज्ञा काठीआने आगळ करी लोकोने मोके बोलतो फरे के शुं गुरु पासे जइए! गुरुने वादीए तो पण

धर्मलाभ दे नहीं. ते मोटपना लीधे देता नथी, एम गुरुने माथे प्रथम तो अठता दोषनो आरोप कर्यो हतो. वळी बीजो मान मोटपनो आरोप करे, वळी अवज्ञाए पाछळ बोले के हवे तो हु वांदतो पण नथी. एम तेथी ते जीव बोध शी रीते पामे. त्यार पछी मान काठीओ पांचमा क्रोध काठीआने बोलावे. क्रोध आवे त्यारे बीजा जाइओना वार्या छतां पण वळे नही. क्रोधना अजावे तो गुरु महाराजना पाछळ लवरी निंदा करतो हतो, हवे तो गुरु महाराजना सामोज तीखो थइने करूवां वचन कुयुक्तिथी बोले परंतु गुरुराज क्षमाना समुद्र छे तेथी सर्व सहन करे. वली सुबुद्धिना प्रेर्या थका गुरुराज पश्चात् उपदेश करे त्यां क्रोध काठीओ छठा प्रमाद काठीआने बोलावे ते काठीओ आव्यो एटले कांतो उंठींगण लेइने उंघे के एक बीजानी साथे संसार कथनीनी वातो करे, तेथी तेने उपदेश संजळाय नही ए बोध शी रीते पामे. त्यारे गुरुराय तो ज्ञानी छे तेथी विचारे के ए उघे छे अथवा विकथा करे छे ते पोताना घरनुं काम पमयुं मुकी अहीं आव्यो छे अने अहींथी लाज लेइ जशे नहीं माटे ए जीवने वारुं- एम करुणा लावीने गुरु कहे के तमे कां तो उघो छो के कां तो विकथा करो छो माटे प्रमाद छोमी सावधान थइ उपदेश सांजळो. आवो अवसर फरीने नहीं आवे त्यारे प्रमाद काठीआये सातमा कृपण काठीआने बोलाव्यो. ते आव्यो त्यारे ते अवसरे ज्ञान पूजवानो वखत छे ते काम मारे करवु पमे अ-

थवा प्रशस्त मार्गनी टीप चालती होय अने पोतानामां शक्ति छे माटे छती शक्तिवाळाने सौ कहे छे ते अवसरे कृपणताने लीधे वात काढता पहेलां आगळथी उठी जाय अने उपदेश श्रवणनी दरकार न राखे एवो जीव बोध शी रीते पामे

वळी प्रथमथी आलस काठीआने पुठ देइ उपदेश सांजळवानो रागी थयो छे ते बीजा दिवसे आवे त्यारे कृपण काठीओ आठमा जय काठीयाने प्रेरणा करे अने ते आवे गुरुराय उपदेश करे अने त्या जव्य जीवो साजळे के आ ससारना प्रवर्तनमा बहुधा जीवो आर्त्तध्यान अने रौद्र ध्यानना ध्याता छे तेथी केटलाक तिर्यच गति उपार्जे अने केटलाक नरक गति उपार्जे अने नरकना दुःखनो विपाक तो अति कटुक, तेनो जोगदारी ते थाय, माटे विवेकी मनुष्यने ससार त्यजवा योग्य छे. एम साजळता जय काठीओ चितवे छे के गुरुराज तो नरकना दुःख ससार कारणे देखाडे छे अने जीवने जयभ्रांत करे छे माटे मारे अणगार पदमा परिपह उपसर्गादि दुःख देखाडी ससारमा स्थिर करवो वळी गुरुराज उपदेश करे त्या जय काठीओ नवमा शोक काठीआने बोलावे एटले मातपिता, जाइ, जोजाइ, पुत्रादिक मरी गयां होय तेथी देवदर्शन करवा जिनमदिरे तथा उपदेश साजळवा उपाश्रये जता शोक काठीओ आवीने रोके अने बोले के आवो केर थइ गयो माटे त्या तो जवाय नहीं जो जइए तो

[illegible] अने दी-
सारु न कहेवाय. परतु [illegible] गुरु पासे जतां
करो दिकरी परणे ए तो [illegible] नहीं तो बोध शी
अमचण आवे ते शोक [illegible] शोक काठीआने
रीते पामे तेमा वळी [illegible] काठीओ द-
जीती गुरु उपदेश [illegible] क तो पर्युषणनो
समा कुतुहल काठी [illegible] मोटी तिथि होय
मोटो दिवस होय [illegible] नी पंचात आदि
त्यारे सज्जानी मध्ये [illegible] नी वात सांजळी
विकथा करी [illegible] कथा करीने वेराइ
शकाय नही [illegible] उपदेश करे, श्रोता [illegible] म
जाय. वळी [illegible] रमा रमण काठी- [illegible] ओ
सांजळे त्यां [illegible] नी सामी दृष्टि न [illegible], एथी
आने वोलावे [illegible] नो स्त्री वर्गनुं [illegible] अने ए-
करे अने [illegible] जुए एम चो [illegible] छे. तुं हज
जुए अने [illegible] सांजळे नहीं [illegible] अखतो नथी
दृष्टि फेरवे [illegible] जीव बोध [illegible] धर्मनुं जाणपणु
नमां [illegible] त्यां रमण [illegible] दुर्ध्याने करीने
पामे [illegible] त्यारे [illegible] ध्यानरुप घटमां जर
वारमा [illegible] असंख्य [illegible] याक्षेप काठीउं तारी
रुराव [illegible] जशे. तुं एने चपल मन
[illegible] आवे छे. एम गुरुरायनुं
[illegible] काठीआने दूर करी
[illegible] नहीं [illegible]

अमनाग प्रमाणमा अनंता जीव कहे छे, ए वचनमां अ-
ज्ञान काठीउ शंका संदेहने आगळ करे अने ते वचन स-
द्दहे नहीं त्यारे गुरुराज सूक्ष्म युक्ति करी असंख्याताना
असंख्याता भेद छे ते बतावे, अनंताना अनंता भेद छे ते
समजावे तो पण तुच्छ बुद्धिथी समजी शके नहीं. वळी
गुरुराय प्ररुपे के पाप करवाथी जीव नरकनां दुःख भो-
गवे, अने पुण्य करवाथी जीव देवलोकनां सुख भोगवे.
आश्रव पापबंध हेतु अने संवर धर्महेतु वळी
तपश्चर्या योगे संयम पाळता क्षमादि दश प्रकारनो
यति धर्म ग्रहता संवर थाय. पांच इन्द्रियोना विषय
भोगवतां वळी पापस्थानक सेवतां आश्रव थाय, इत्यादि
उपदेश करे पण अज्ञान काठीउ जेने नड्यो छे तेनी श्र-
द्धामां ते वात आवे नहीं, त्यारे बोले के जगतमां उपदेश
कुशळ तो घणा छे, कोण स्वर्ग अने नरक जोइ आव्युं
छे पुण्य अने पाप ते शुं छे? जाणे तेने पाप लागे अजाण्याने
पाप लागतुं नथी एम बोले ए अज्ञान काठीउ महा बळ-
वान अति दुष्ट छे हवे गुरुराय अज्ञानने दशे दिशाथी
नसाडवाने सूर्य सरखा छे ते कहे छे के हे भाइ! तुं स्वर्ग
अने नरक मानतो नथी एटले परभव न मान्यो परंतु आ म-
नुष्यना भवमां एक पालखीए बेसे अने बीजा उपाडे
एक रोगी अने बीजो निरोगी छे कोइ अंध छे, कोइ
मूगो छे कोइ पागलो छे, कोइ बहेरो छे, कोइ बळवान छे
कोइ निरबळ छे, एकना मनोरथ पूर्ण थाय छे अने बीजाना

थता नथी, ए सर्व पुण्य पापनां फळ छे ते तुं विचारी जो. वळी तने शंका छे तो बोल त्यारे ते विचार करवा लाग्यो. अज्ञान काठीआने बोलवाने मार्ग न जड्यो, त्यारे अज्ञान काठीआए तेरमा व्याक्षेप काठीआने बोलाव्यो. हवे गुरुराय अध्यात्मनो उपदेश करे छे आत्मिक ज्ञाननी प्ररुपणा थाय छे. त्यां ज्ञान ते आत्मा दर्शन ते आत्मा, चारित्र ते आत्मा. आत्मा आत्मा थकी ज्ञान, दर्शन, चारित्र पामे. पुद्गलथी करेलो धर्म आत्माने खप लागतो नथी. त्यां व्याक्षेप काठीओ बोले छे के, सामायक, पोसह, पडिकमण आदे क्रिया करीए छीए ते आत्माजे करे छे. तेने गुरु कहे छे के हे भाइ! तें कह्युं ते व्यवहारना न्याये उपचारे आत्मा करे ते एम कहीए; पण आत्मा तो कायाथी जुदो अंतर व्यापकपणे रह्यो तेने ओळखो, जाणपणुं करो, पछी तेमां रमण करो, एथी आत्मिक धर्म पामशो. पुद्गल योगे क्रिया करीए अने एकांते पोते कर्तापणु मानीए तेनुं नाम मिथ्यात्व छे तुं हजु सुधी आत्माने जाणतो नथी अने धर्मने ओळखतो नथी तेथी हुं तने दृष्टांत साथे नयपक्ष युक्त आत्मधर्मनुं जाणपणुं करावुंछुं तारुं मन व्याक्षेपे करी मलीन छे, दुर्ध्याने करीने हणायुं छे ते मनरुप जलने स्थिर चित्त ध्यानरुप घटमां भर एटले निर्मल थशे अने अनादिनो व्याक्षेप काठीओ तारी केडे लाग्यो छे ते एनी मेळे रीसाइ जशे. तुं एने चपल मन करी बोलावे त्यारे ते तारी पासे आवे छे. एम गुरुरायनुं हित वचन सांभळी श्रोताये व्याक्षेप काठीआने दूर करी

स्थिर मने सन्मुख दृष्टिए जेम सोयना नाकामा दोरो परोवे तेम दृष्टी करी गुरुमहाराजनां नय गर्भित वचनो वरसे छे ते वचनरुप मेघवृष्टिने मन, पात्रमा झीले गुरुराय प्रथम दृष्टात पूर्वक सात नये घट गवेषे छे नैगमनय माटीने घट माने एटले माटीमा घटपणानो आरोप करे संग्रहनय माटीनी सत्ताए घट होवानी योग्यता रही छे ते माटीने घट माने, एटले तेणे वेळु आदि ग्रहण करी नही, कारण के वेळुमा घट होवानी योग्यता नथी तेने उवेखी दीधी व्यवहार नय माटीने घट न माने, घट ने घट माने, चित्रना घटने घट माने काचा वा काणा घटने घट माने ऋजुसुत्र नय चित्रना घटने वा काणा घटने तथा काचा घटने घट माने नही. ए नये त्रण घट न मान्या, कारण के चित्रना घटमा पाणी रहेवानु स्थानक नथी, वळी काचो घट ते पाणी भरता गळी जाय अने काणा घटमा पाणी न रहे, माटे ए त्रणने उवेखीने अखण्डित पाको घट मान्यो शब्द नय एवा घटने घट मानतो नथी कारण के तेना धर्मे वर्ततो नथी एटले अंदर जळ नथी माटे जे घटमा जळ भर्युं छे ते घट तेणे ग्रहण कर्यो समभिरुढ नय परिपूर्ण भरेलो किंचित् पण उणो नथी तेने घट माने एवंभूतनय परिपूर्ण जल भरेला घटने घट माने पण स्त्रीना माथे चढेलो जल धारण क्रियाने करतो छतो वर्ते ते घट ए सात नय पक्षे घट गवेष्यो, हवे दृष्टांत पूर्वक सात नय पक्षे जीवनु अने धर्मनुं जाणपणुं कहे छे

चाहे छे. अही नाम मात्र आरोपणे धर्म कह्यु हवे संग्रह-नय कहे छे, जे असख्यात प्रदेशी ते जीव. अहींआं एक आकाशास्तिकायना प्रदेश टळया, बीजा द्रव्य भेगा गणाया अने बोले के जे वडेराए आदर्युं ते धर्म, एणे अनाचार छोड्यो परंतु कुळाचारने धर्म कह्यो व्यवहारनय चर्मचक्षुए देखे तेने माने, एटले चर्मचक्षुए नर नरकादि गति पर्याय ते काया दीठामां आवे तेने जीव मा[illegible], तेमां तिर्यंच गति ए जेने एक स्पर्शेंद्रि छे तेने एकेंद्रि[illegible]ाने, मुख वधे तेने बेइंद्रि माने, नासिका वधे तेने तेइं[illegible] माने, चक्षु वधे तेने चौरिंद्रि माने, कान वधे तेने पंचेद्रि[illegible] माने, मन वधे तेने सन्नि माने, मनुष्यने मनुष्य माने, देवने देव माने, नारकीने नारकी माने, एम चार गति इद्रिक [illegible]ावमां कही छे; तेना भेद भेदांतर करतां जीवना पांचसेंने त्रेसठ भेद गवेषे ते-मां जीवनुं स्वरूप तो हाथमा आवे नहीं, कारण के जीव स्वरूप तो सहज भावे उपयोगादि लब्धियोगे अंतरगत स्वभावे रह्युं, तेनु ग्रहण न थयुं, अने पूर्वोपार्जित शुभा-शुभ कर्मना उदययोगे प्राप्त थया जे गति पर्याय ते जीवे ग्रहण कर्या तेने जीव मान्यो. हवे मन वचन अने काया ए त्रणे योग पाम्या छे तेथी शुभ व्यवहार ग्रहण करी आवश्यक, पडिलेहणादिक क्रिया करे तेने चारित्र माने, उपवासादि करे तेने तप माने, नवकार मंत्रादि भणे तेने ज्ञान माने, देवगुरुने धर्म ए त्रण तत्त्वनी श्रद्धा तेने सम-कित माने. ए व्यवहारनय पक्षे जीव अने जीवनो धर्म कह्यो.

हवे ऋजुसूत्रनय कहे छे तेना बे भेद. एक स्थूल अने बीजो सूक्ष्म स्थूल ऋजुसूत्र ते शुभ क्रिया करे तेनी अदर मन योगनी यथास्थित रमणता छे, ते जीव पुन्यनो ग्राहक थाय यावत् देवगतिए नव ग्रैवेयक सुधीनु पुन्य उपार्जे, परतु संज्वलन कषायनो उदय होय अमायी होय अने प्रथम सघयणनो धणी होय तो बने. एटले कोइक जीवने पेहेला गुणठाणे पण संज्वलन कषायनो उदय होय छे हवे बीजो भेद सूक्ष्म ऋजुसूत्र ते शुभाशुभ क्रियाथी रहित थइ यथाप्रवृत्तिकरण करी बीजु अपूर्वादिकरण करे त्यां तत्वातत्वनी यथास्थित गवेषणा करता सूक्ष्म भावनो ग्राहक आत्मा छे सहजवीर्यनी स्फुरणा थाय छे. उपयोगीक भावछे. उत्तरोत्तर अध्यवसायनां असंख्याता स्थानके चढतो चढतो वर्त्ते छे, ते भावमा स्थिरपणे सूक्ष्म मनयोग सहचारी छे, ते सूक्ष्मऋजुसूत्रनय एम बेउ भेदने पामे तेने जीव माने, अने भाव गवेष्यो तेने धर्म माने हवे शब्दनय पामे एटले सर्वथा प्रकारे मनयोग स्थिर थाय, त्यां ग्रंथिभेद करी समकित पामे, तेनु कारण सूक्ष्मऋजुसूत्रनय छे, त्या आत्माना सहज भावे गुणपर्यायनी प्रवृत्ति उपयोगी भाव सहज वीर्यनी स्फुरणाए शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट कर्यो ग्रंथिभेद अवसरे ए समकित बीजना चन्द्रनी रेखा पूर्वक अशे अविनाशी आत्मा कहीए, गुणठाणु चोथु कहीए, मतिश्रुतज्ञान कहीए हवे चोथा गुणठाणाथी चढवु ते शुद्ध व्यवहारे उद्यम करता चढे ते उपा

सातमा गुणठाणा सुधी चढे, यावत् वृद्धिये अगियारमा सुधी पण उपशम श्रेणीये चढे. हवे आखो भव स्थीतिमां जीव उपशम समकित अने सास्वादन समकित पामे तो पांचवार पामे अने क्षयोपशम समकित तो असंख्यातीवार आवे ने जाय, एटले जेम चंद्र उगीने आथमी जाय तेम समकित पण आवे ने जाय. परंतु आत्म सत्ताये ग्रंथिभेद थयो ते जतो नथी, पण मिथ्यात्वनु दळ फरी वळे छे एम करता करतां ज्यारे संसार स्थीति घटी जाय एटले उत्कृष्ट सात आठ भव संसार छे, अधिक नथी. वळी काळ आश्रीने छासठ सागरोपम झाझेरो संसार बाकी रहे. ने क्षय उपशम समकित पामे तो कोइकने जाय नहीं. वळी क्षायक समकित तो उत्कृष्ट भांगे जेने तेत्रीस सागरोपम झाझेरो संसार स्थीति काळ बाकी रह्यो होय अने भव आश्री त्रण चार भव होय ते पामे, बीजा न पामे अने क्षायक समकित पाम्या ते फरीने जाय नहीं. एटले उपशम अने क्षय उपशम समकित, सादि सांत भांगे छे, अने क्षायक समकित सादि अनंत भांगे छे. हवे क्षायक समकित पामवानो प्रथम समय अने समकित मोहनीना चर्मग्रासने खपाववानो छेल्लो समय तेने वेदक समकित कहीए, ते समकित एक समयनी काळ स्थीतिनुं जीव एकवार पामीने क्षायक समकितवंत थाय तेना बे भेद (१) शुद्ध क्षायक (२) अशुद्धक्षायक, अशुद्ध क्षायकः—ते पामता पेहेलां आवता भवनुं आयुष्य बांधीने क्षायक समकित पामे,

समकितवंत थाय उपशम श्रेणीए प्रथमना त्रण संघयणी जाणवा; एम चोथा गुणठाणाथी अगीआरमा गुणठाणा सुधी जे जीवो वर्तेछे तेने शब्द नय जीव माने अने जीवनो धर्म माने.

हवे समभिरुढनय क्षीणमोह बारमा वीतराग गुणठाणेथी अयोगी चौदमा गुणठाणाना अंत सुधी केवळज्ञान, केवळ दर्शन आदि क्षायक लब्धिवंतने जीव, ने तेना धर्मने धर्म कहे छे, अने एवभूतनय आत्माना असंख्यात प्रदेशनो निबिरूघन एक समय काळे सम श्रेणीए बीजा आकाश प्रदेशने अणस्पर्शते लोकाग्र भागे सिद्ध क्षेत्रे एक योजनना त्रेवीस भाग नीचे मुकीने चोवीसमा भागे उपर अलोकने अडीने सादि अनत भागे स्थिर रहे, ते सिद्ध भगवानने जीव अने धर्मी माने ए सात नय पक्षे जीवनुं अने धर्मनुं स्वरूप कह्युं तेनु नाम जीवने तेजधर्म आत्मा आत्म शक्तिये प्रगट करे, पुद्गलना कृत्रिम बळे गुणठाणे चढातुं नथी; आत्म बळे अने क्षयोपशम योगे जीव गुणठाणे चढे. वळी पुद्गलनुंबळ सहचारी गणीएतो अपेक्षा कारणमा छे ने अपेक्षा कारण ते कांइ साधनमा गणातुं नथी. ए तो पूर्वोपार्जित कर्मना उदययोगे प्राप्त थयुं तेनो विभाग भेद ज्ञाने वहेंची भिन्न भिन्न परिणमावी चेतन पोते पोताना द्रव्य माने, पोताना गुणगत स्वभावमा रमणता करे, त्यां ज्ञान, दर्शन, चारित्र धर्म शब्दनय प्राप्तिथी आत्मिक कहीए. हवे पाच कारण मळ्यां मोक्षरूप कार्य नीपजे, ए पांच कारणने माने,

सर्दहे ते जीव समकितीछे अने पाचमाथी एक पण न माने एटले उथापे ते मिथ्यात्वी जाणवो हवे पाच कारणना नाम कहेछे(१)काळ(२)स्वभाव(३)नियत(४)पूर्वकृत(५)अनेपुरुषाकार, ए पाच भेद कह्या, तेनो अर्थ कहे छे प्रथम काळ कारण छे ते पाच भरतने पांच ऐरवत ए दशक्षेत्रनी अपेक्षाये अवसर्पिणी काळे चोथो आरो अने उत्सर्पिणी काळे त्रीजो आरो ए काळे जीव मोक्षनु साधन करी कार्य करे ते काळने कारण कहीए वळी पाच महाविदेह क्षेत्रेतो सदाकाळ जैन तीर्थ प्रवर्ते छे, शासननो विरह काळ न आवे, माटे त्या सदा सर्वदा काळ कारण छे अही कोइ पूछे के काळ कारण कह्यो तो ए काळे अभवी जीव केम सिद्धता कार्यने पामता नथी ? तेनो उत्तर हे भाइ! काळ तो मळ्यो परंतु अभवी जीवोमा सिद्धता कार्य नीपजाववानो स्वभाव नथी तेथी न पामे, केमके काळ स्वभाव बे कारण मळ्यां जोइए तेवारे फरी पुछे, के भवीजीवोमातो मोक्षे जवानो स्वभाव छे तो सर्व भवी केम मोक्षे जता नथी ? तेनो उत्तर, हे भाइ, काळ स्वभाव ए बे कारण मळ्यां परंतु नियत कहेता निश्चय समकित पामे त्यारे मोक्ष कार्य नीपजे, एटले काळ, स्वभाव अने नियत ए त्रण कारण मळ्या जोइए तेवारे पुछे के समकितादि कारण तो आणद कामदेव आदि श्रावकोने हता, तो मोक्ष कार्य केम न पाम्या ? तेनो उत्तर हे भाइ ! ए श्रावको समकिती छे परंतु पाचमा गुणठाणे बार व्रत धारी श्रावकने रोचक समकित कह्युं छे. वळी छठा

सातमा गुणठाणे संयति पदे नवकोटिनां पच्चक्काण पाळनार साधुने कारक समकित कह्युं छे ए बे भेद क्षयोपशम समकितना छे. ए समकित निश्चयना पक्षनुं छे, परंतु समळ छे, कारणके समकित मोहनीनो उदय तेनुं नाम क्षय उपशमभावनु समकित कहीए छीए अने समकित मोहनी ते मिथ्यात्वनुं शुभदळ पुद्गल छे, परंतु सत्ताए अशुभ छे, दृष्टांत जेम खसखस छे तेम समकित मोहनी छे एटले सत्ताए जोतां खसखसनो एक दाणो ते झेरनो पटारो छे, एटले विषनुं बीज छे, तेम समकित मोहनीनो उदय छे तेमां विपाके भाव मदिरानो छाक नथी, परंतु सत्ताये छे, ते कारणे मोक्ष कार्य न करी शक्या. त्यारे फरी पुछे के श्रेणीक राजा तो क्षायक समकिती छे तेमणे मोक्ष कार्य केम न कर्युं ? तेनो उत्तर हे भाइ श्रेणीक राजा क्षायकसमकिती छे, परंतु चोथुं कारण पूर्वकृत कर्म एटले ज्ञानावरणी आदि आठ कर्म तेमां चार घाती अने चार अघाती छे घातीमां वळीउं मिथ्यात्व अने अघातीमां वळीउं आयुष्य छे मिथ्यात्व ते ते अनंत पुद्गल परावर्त्त संसार स्थीति पर्यंत मोक्ष कार्य करवामां विघ्न कर्त्ता छे, ते विघ्ननो क्षायक समकित पाम्यां अभाव थयो अने आयुष्य कर्म छे ते उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम जाकेरुं मोक्ष कार्य करवामां घात कर्त्ता छे ते घात कर्त्ता आयुष्य कर्म बांधीने श्रेणीक राजा क्षायकसमकित पाम्या, ते कारणे मोक्ष कार्य करी शक्या नहीं, जो क्षायक समकित पाम्या पहेलां आयुष्य कर्म न बांध्युं होत तो

तद्नवे मोक्ष कार्य थात त्यारे पूछे के मरुदेवा माताने चार कारण मल्या पण पाचमो पुरुषाकार उद्यम कांइ कीधो नथी अने मोक्ष कार्य तो कर्युं तेनो उत्तर हे जाइ क्षपकश्रेणीए चढवानो शुक्क ध्यान ध्यावारूप उद्यम कर्यो छे माटे पाच कारण मळे जीव मे क्ष कार्यने पामे ए वात यथार्थ सत्य छे

हवे समकितन जाणवा माटे निरधार करवा माटे छ बोल विवरीने कहे छे तेमा प्रथम भेद तत्वार्थे निर्देश एटले उपदेश जीवादि नव तत्व छे, तेमा तत्व तो वे छे, एक जीव ने वीजो अजीव ए वे वस्तु छे एटले सवर निर्जराने मोक्ष ए त्रण तो जीवना गुण छे, ते जीवथी अभेद छे, ने पुन्य, पाप, आश्रव अने वंध ए चार तो शुभाशुभ प्रकृति वस्तुगते पुद्गल छे पुद्गल पुद्गलने मळे छे, वधाय छे, निखरे छे ए धर्म पुद्गलनुं पुद्गल सवधी छे वळी धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति ने काळ ए चार द्रव्यने अजीव कहीए तो ए कइ सवधी नथी, अनादि सवधे ए चार द्रव्यथी जीव पुदगलनु परिणमन भिन्न छे अने जीव पुद्गलथी ए चार द्रव्यने प्रत्येके प्रत्येके पोतानु पोतामा परिणमन छे माटे ए चार द्रव्य शुद्ध छे, ते कारणे सवधी नथी निमित्त मात्र जीव पुद्गलने गति स्थीति अवकाशादि हेतु छे अने जीव पुद्गळ वे द्रव्यनु [illegible] अनादि सवंधे एकपणु मीलितछे पण वर [illegible]

द्रव्यास्तिक नयपक्षे भिन्न परिणमन पोतानु पोतामां छे, एम वस्तुगते वस्तुने ओळखी विभाग वहेंचण करवारूप निरधार करवो, यथास्थित श्रद्धा करवी, बाह्य दृष्टि टाळी अंतर दृष्टि करवी तेने निर्देश कहीए, ए प्रथम भेद कह्यो हवे बीजो भेद स्वामित्व, ते समकित पामवाने अधिकारी देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक ए चार गतिमां संज्ञि पंचेन्द्रि जीवो छे, तेमा जेनी संसार स्थीति अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनी अंदर रही छे ते जीवो वीर्य फोरवीने समकित गुण प्रगट करे तो थाय, माटे तेमने समकितना स्वामी कहीए ए बीजो भेद कह्यो हवे त्रीजो भेद समकित पामवानुं साधन एटले कारण ते बे प्रकारे छे एक अंतरथी ने बीजुं बाह्यथी अंतरथी तो चारघाती कर्मनी प्रकृतिओनो क्षय उपशम, वळी मोहनीनो उपशमभाव, जाति स्मरण ज्ञाननी प्राप्ति, तेने अंतर कारण कहीए,अने बाह्य कारण तो उदिक भावनी अपेक्षाए शाता अशाता, मान अपमान ऋद्धिनी हानी वृद्धि गुरु आदि सत समागमनु मळवु इत्यादि अनेक कारण चारे गतिमा रह्या छे, ते कारण योग अंतर कारणनी प्राप्तिना अभावे तो जीवो मिथ्यात्व मोहनीआदि कर्म बंधना कर्त्ता थाय छे अने अतर करणनी प्राप्ति थइ त्या जीव बाह्य कारणनो अपेक्षाए समकितादि गुण निष्पन्न करे छे ते उपशम क्षयउपशमादि भेदे चारे गतिमा समकित पामवानो संभव छे, ए त्रीजो भेद कह्यो हवे चोथो भेद अधिकरण एटले आत्मिक शक्तिए समकित गुण प्र-

गट थयो, अने प्रगट थइने आत्मामा अन्नेद संबंधे रह्यो छे, जेम साकरमां मीठाश अन्नेदपणे छे, तद्वत्, परतु आत्मा ते द्रव्य छे अने समकित ते गुण छे, ए चोथो नेद कह्यो हवे पाचमो नेद उपशम, क्षयउपशम अने क्षायक ए त्रण नेदे समकित प्राप्त थयुं, तेनी जघन्य उत्कृष्टी स्थीति एटले काळनुं प्रमाण ते उपशम समकितनी समकित नावे जघन्य उत्कृष्टी अतर मुहूर्त्तनी अने ससार नावे अर्द्धपुदगळ परावर्त्तनी अने क्षयोपशम समकितनी समकित नावे जघन्य अतर मुहूर्त्तनी ने उत्कृष्ट छासठ सागरोपम जाझेरी अने संसार नावे नव आश्रीने सात आठ भवनी, परतु पाछा न पमे तो, अने पमे तो अर्द्ध पुद्गल परावर्तनी ससार स्थीति जाणवी. हवे क्षायक समकितनी समकित नावे सादि अनत नागे, अने ससार नावे बद्धायु क्षायक समकितीनी जघन्य त्रीजो नव अने उत्कृष्ट चार नवनी अने काळ आश्रीने तेत्रीस सागरोपम जाझेरी जाणवी अबद्धायु क्षायक समकितीनी ससार स्थीति तद्नवनी ने काळ आश्रीने जघन्य अतर मुहूर्त्तनी ने उत्कृष्टी देशे उणां पूर्व क्रोडनी स्थीति जाणवी, ए पाचमो नेद कह्यो हवे छठो नेद ते विधान, तेना बे नेद, एक निसर्ग एटले पोते पोताथी समकित गुण प्रगट करे, गुरु उपदेश विना, अने बीजो गुरु उपदेशथी समकित पामे, तेने विधान कहीए ए छठो नेद कह्यो

हवे पुनरपि प्रथि नेद पूर्वक जीवो चौदे गुणठाणे

लाधे, सिद्धि उपार्जन अते करे ते आश्रीने आठ बोल कहे छे, तेमा प्रथम भेद ते सत्यजीवमिथ्यादृष्टि एटले ग्रथि भेद करी समकित पामीने पाछा पडी मिथ्यात्व गुणठाणे यावत् निगोद सुधी गया तो पण ए जीव आतम सत्ताए द्रव्यसमकिती छे माटे ते जीवने सत्य कहीए कारण के ज्यारे त्यारे ए जलदीथी उंचा आवशे अने समकित भावे अप्रमत्तादि गुणस्थानक पामीने सिद्धि वरशे. माटे ग्रंथिभेदी मिथ्यात्वीने पण सत्य कहीए, ए पेहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो भेद ग्रंथिभेदी समकिती जीवोनी संख्या ते देवगतिअने नरकगति ए बे गतिमां चोथुं गुणठाणुं अने तिर्यंच पंचेंद्रि संन्नीमां पांचमा गुणठाणा सुधी अने मनुष्य गतिमां चौदमा सुधी ते ग्रंथिभेद पूर्वक पेहेला गुणठाणेथी ते चौदमा गुणठाणा पर्यंत चौदे गुणठाणाना मलीने असंख्याता जीवो जाणवा, अने प्रत्येक गुणठाणानी अपेक्षाए चोथा पांचमा गुणठाणाना जीवो असंख्याता. ए उपरांत छठा गुणठाणाथी चौदमा सुधी संख्याता कहीए, परंतु कोइ आचार्य पडवाइ मिथ्यात्व गुणठाणे गणता अनता पण कहे छे तत्व केवलि गम्य ए बीजो भेद कह्यो. हवे त्रीजो भेद ग्रंथिभेदी जीवोने वसवानुं उपजवानुं क्षेत्र ते मिथ्यात्व गुणठाणे चौद राज्य लोक प्रमाण क्षेत्र छे, एटले सूक्ष्म पांचे स्थावर चौद राज्य लोकमां भर्या छे, अने सास्वादन गुणठाणाना जीवो विकलेंद्रियी नीची गतिमा नथी अने समकित गुणठाणाना जीवो संन्निपंचेंद्रि ते चारे गतिमां

लाधे, अने पाचमा गुणठाणाना जीवो मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गतिमां लाधे अने छठा गुणठाणाथी चौदमा गुणठाणा पर्यंत जीवो एक मनुष्यगतिमां लाधे, एटले सास्वादन बीजा गुणठाणाथी चौदमा पर्यंत सर्वे जीवो पृथ्वीना आधारे रह्या ते क्षेत्र लोकना असंख्यातमा भागे कहेवाय, ए त्रीजो भेद कह्यो हवे चोथो भेद ग्रथि भेदी जीवोए क्षेत्रनी स्पर्शना करवामा आवे ते मिथ्यात्व गुणठाणे रहेला तेमणे आखो चौद राज्यलोक सर्वे स्पर्श्यो छे, ने उपरना गुणठाणावाळाए पोताना उपजवाना स्थानको कह्यां एटलो लोकना असख्यातमे भागे स्पर्श्यो छे, परतु केवली भगवान समुद्घात करे त्यारे, चौद राज्य प्रमाण सर्वलोक स्पर्शेछे एटलु विशेष, ए चोथो भेद कह्यो हवे पाचमो भेद ग्रंथि भेदी जीवोने चौदे गुणठाणे वसवानो काळ ते सादि सानभागे छे एटले मिथ्यात्व गुणठाणे जघन्यथी अतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट भागे अनती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी लगे अनता काळचक्र, अने सास्वादन गुणठाणे जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ आवलीनो काळ अने समकित चोथा गुणठाणेजघन्यथी अतर्मुहूर्तने उत्कृष्ट छासठ सागरोपम काझेरो काळ जाणवो हवे एक पाचमा गुणठाणानो, बीजो छठा सातमा बे गुणठाणानो भेगो अपेक्षामा लेता अने त्रीजो तेरमा गुणठाणानो जघन्यथी अंतर मुहूर्त अने उत्कृष्ट देशे ऊणा पूर्वक्रोडनो स्थीति काल छे, बाकीनां सर्व गुणठाणे अतर अतर मूहूर्तनो काळ जाणवो ए पाचमो

भेद कह्यो हवे छठो भेद ते चोथा गुणठाणाथी मांमीने जे जीवो वर्ते छे तेमने उपरना गुणठाणे चमवानो आतुरता एटले कामना छे यावत् दशमा गुणठाणा लगे तो सरागता माटे अभिलापानो संभव पण कहीए अने उपरांत अभिलापाना अभावे अयोगी गुणठाणा पर्यंत सहज प्रयोजन जाणवु ए छठो भेद कह्यो

हवे सातमो भेद गुणठाणा आश्रीने भाव कहे छे. त्यां मिथ्यात्व गुणठाणे उदयिक भावना एकवीश भेद परिपूर्ण लाधे छे, उपरना गुणठाणे ओछा वत्ता लाधे. उपशम भाव ते जीवने उपशम समकित अवसरे चोथा गुणठाणे अने उपशम श्रेणी अवसरे अगीआरमे गुणठाणे लाधे क्षयोपशम भाव समकित आश्री चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी अने ज्ञान आश्री वा लब्धि आश्री बारमा गुणठाणा सुधी अने चारित्र आश्री दशमा गुणठाणा सुधी लाधे, क्षायकभाव समकित आश्री चोथा गुणठाणे अथवा सातमा आठमा गुणठाणेथी लाधे चारित्र आश्री बारमा गुणठाणेथी लाधे. बाकी तेरमा गुणठाणे परिपूर्ण क्षायक भाव लाधे, अने वळी उपशमने क्षयोपशम भाव किंचित् बीजा सास्वादन गुणठाणे लाधे. अने परिणामिक भाव तो सर्व जीवने लाधे, परंतु चोथा गुणठाणेथी भव्यत्वपणानी प्रवृत्ति छे बाकी योग्यता छे. ए पाच भावनो सातमो भेद कह्यो हवे आठमो भेद अल्प बहुत्व कहे छे ते सर्वथी थोमा जीव बीजा गुणठाणाना सास्वादन समकिती छे, ते

थी विशेष उपशम भावना छे तेथी असंख्यातगणा क्षयोपशम भावना छे, तेथी असंख्यातगणा ग्रथिभेदी मिथ्यात्वी छे, तेथी अनंतगणा सिद्धने भेगा गणता क्षायक भावना छे अने सर्वथी अनतगणा अग्रंथि भेदी मिथ्यात्वी छे, ए आगमो भेद कह्यो ए बोल कह्या ते जाणी वस्तुगते वस्तु उलखीने श्रद्धा करवी ए समकित पामवानुं लक्षण छे. वळी पामेलाने निर्मळ करवानु वा उपरना गुणठाणे चढवानुं कारण छे ते कह्यु

हवे नयज्ञान अधिकार कहे छे. त्या मूळ नयना बे भेद छे, एक द्रव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक. तेमां उत्पाद्व्यय पर्याय गौणपणे अने प्रधानपणे द्रव्यनी सत्ताना गुणने ग्रहे तेने द्रव्यार्थिक नय कहीए. तेना दस भेद छे ते नीचे प्रमाणे

(१) सर्व द्रव्य नित्य छे, ध्रुवपणानी मुख्यताए सदा सर्वदा अनादि अनत भागे अविनाशी छे ते नित्य द्रव्यार्थिक नामे पहेलो भेद, (२) अगुरु लघु पर्यायनी स्वक्षेत्र अपेक्षा न करे, एक मूळ गुणने पिंडपणे ग्रहे ते एकद्रव्यार्थिक नामे बीजो भेद, (३) जीव अजीवादि द्रव्यना समुदायनी पृथकत्व द्रव्य द्रव्य प्रत्ये स्वद्रव्यादि चतुष्टयीने ग्रहे ते सत्य द्रव्यार्थिक नामे त्रीजो भेद, (४) द्रव्यना अनता गुण छे तेमा जे गुणनी वक्तव्यता वचनयोगे ग्रहवामा आवे ते वक्तव्यद्रव्यार्थिक नामे चोथो भेद, (५) आत्माने अज्ञानी कहेवो, समोही, सकषायी कहेवो ते अशुद्ध द्रव्या-

र्थिक नामे पाचमो भेद, (६) सर्व वस्तु जीव अजीवादि पोतपोताना गुण पर्याये सहित छे, परगुणने न ग्रहे एम कहेवुं ते अन्वय द्रव्यार्थिक नामे छठो भेद,(७)सर्व जीवनी मूळ सत्ता एक छे, सिद्धनी वा संसारीनी सरखी छे, ते परम द्रव्यार्थिक नामे सातमो भेद; (८) सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निरावर्ण निर्लिप्त स्थिर भावे अनादि अनंत भांगे छे, ते शुद्ध द्रव्यार्थिक नामे आठमो भेद, (९) सर्व जीवना असंख्याता प्रदेश, वळी ज्ञानादि अनंता गुण, अव्याबाधादि अनंता पर्याय सत्ताए एक सरखा छे ते सत्ताद्रव्यार्थिक नामे नवमो भेद, (१०) गुणगुणी द्रव्य ते एक छे, भिन्न नथी अभिन्न छे, ते परमभावग्राहकद्रव्यार्थिक नामे दसमो भेद, ए द्रव्यार्थिकना दस भेद कह्या·

हवे पर्यायार्थिक नयना छ भेद कहे छे (१) द्रव्य पर्याय ते संसारी मिथ्यात्वी जीवने भव्यपणुं कहेवुं· सिद्धपणुं कहेवुं ते द्रव्य पर्याय, वळी द्रव्य पयार्य ते जीवादि द्रव्यमां एकत्वपणे रह्यो जे प्रदेशनो समुदाय, ते जीवना असख्याता, धर्मास्तिकायना असंख्याता, अधर्मास्तिकायना असख्याता अने आकाशास्तिकायना अनंता, ते द्रव्यपर्यायनामे प्रथमभेद, (२) बीजो भेद द्रव्य व्यंजन पर्याय ते जीवनो चेतना लक्षण, धर्मास्तिकायनो चलण सहायी, अधर्मास्तिकायनो स्थिरसहायी, आकाशास्तिकायनो अवगाहना दान पुद्गलनो पूर्णगलनरूप, काळनो वर्त्तना एम सर्व द्रव्य पोतपोताना विशेष गुणे करीने पोताना द्रव्यनी

भिन्नताने प्रगट करे छे ते माटे ए धर्मने द्रव्य व्यंजन पर्याय नामे बीजो भेद कहीए, (३) हवे त्रीजो गुणपर्याय ते एक जीवना ज्ञानादि अनंता गुण तेमां वळी एक एक गुणना अविभाग अनंता तेनु पिरूपणु ते गुण पर्याय कहीए (४) हवे चोथो भेद गुण व्यजन पर्याय ते जीवमा ज्ञाननु जाणपणु, दर्शननु देखवापणु, चारित्रनु स्थिरतापणु, वीर्यनी स्फुरता इत्यादि अथवा ज्ञान गुणना भेद जे मति, श्रुत, अवधि मन पर्यव अने केवळ तेमा वळी भेद भेदान्तर करता मति आदि ज्ञानना घणा भेद थाय वळी दर्शन गुणना चक्षु अचक्षुआदि, चारित्रना क्षमा, मार्दव, आर्यवादि, वळी पुद्गलनो रूपी गुण तेना वर्ण, गध, रस, स्पर्श, संस्थानादि, अरूपी गुणना अवन्ने, अरसे, अगधे, अफासे इत्यादि गुण पर्याय जाणवा, तेने गुण व्यंजन पर्याय कहीए, (५) हवे पाचमो स्वभाव पर्याय ते जीवअजीवादि सर्व वस्तुनो धर्म एवो छे के पोतपोताना स्वभावे अगुरु लघुपणे छ प्रकारनी वृद्धि तथा छ प्रकारनी हानि एवी रीते वार भेदे परिणमे छे अहींआ कोइ प्रेरकनो प्रयोग नथी वस्तुने मूळ धर्मनो हेतु छे ते स्वभाव पर्याय कहीए ए पाच पर्याय कह्या ते जीव अजीवादि सर्व द्रव्य मध्ये छे हवे छट्ठो विभाव पर्याय ते ससारी जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्यना मिलितपणे अनादि सबधे छे ते जीवने कर्मबध प्रयोगे नर, नरकादि गतिनु पामवु जन्म, जरा ने मरण पुनरपि पुनरपि करवु ते विभाव अने पुद्गलने *द्व्यणुक त्र्यणुकादि

* बे परमाणु तथा त्रण परमाणुवाळु

अनंताणु पर्यंत अनंत पुद्गल परमाणुं स्कंधरूप मळवुं विखरवुं तेने विभावपर्याय कहीए, ए पर्याय जीव अने पुद्गल बे द्रव्यमां लाधे ते कह्यो. पुनरपि पर्यायार्थिकना ठ भेद कहे ठे, पुद्गलनुं मेरु प्रमुख ते अनादि नित्य पर्याय ठे (१), जीवनी सिद्धावस्था, सिद्ध अवगाहनादि ते सादि नित्य पर्याय ठे (२), भाव, शरीर अने अध्यवसाय ए त्रण प्रकारना योग स्थान जे वीर्यना क्षयोपशमथी उपन्या तेमा कषाय स्थान जे चेतनानो क्षयोपशम कषायना उदयथी मळ्या अने संयम स्थान ते चारित्रनो क्षयोपशम परिणामी जे चेतनादि गुण ए सर्व अध्यवसाय स्थान ते सादि सांत पर्याय ठे (३), सिद्धि गमन योग्यता धर्म ते भव्यपणुं अनादि संबंधे जीवमा ठे, परतु सिद्धत्वपणुं पूर्ण प्रगटे भव्यत्वपर्यायनो विनाश ते माटे भव्य स्वभाव त अनादि सात पर्याय ठे (४), उपाधि पर्याय ते अनादि संबंधे जीवने कर्म संबंध ठे, ते भवीने ज्यारे त्यारे ठुटशे माटे अनादि सात, अने अभवीने तो सदा सर्वदा आत्मप्रदेशे कर्मबंधनो अभाव थवानो नथी, निर्लेप न थाय, सदा उपाधि सहित माटे अनादि अनंत भागो लागे (५), अवगाहना पर्याय ते आकाशनो लोकालोक प्रमाण, धर्मास्ति अधर्मास्तिनो लोक प्रमाण, ते अनादि अनत पर्याय अने संसारी जीवनी आत्म प्रदेशनी अवगाहना कर्म संबंधे भवभव प्रत्ये गतिना अनुसारे संकोच, विकस्वरपणुं अनेक भेदे पामे ते सादि सात पर्याय कहीए (६), ए पर्यायार्थिक नयना ठ भेद कह्या.

हवे जीवादि एक द्रव्यमा अनता धर्म छे तेमाथी एक धर्म गवेरयो तो पण बीजा अनता धर्म ते वस्तुमां रह्या, तेनो उच्छेद नहीं अने ग्रहण पण नहीं, एक धर्मनी मुख्यता करवी तेने नय कहीए, ते द्रव्यार्थिकना नैगमादि चार भेद अने पर्यायार्थिकना शब्दादि त्रण भेद ते बे मळीने सामान्ये सात भेद थाय ते कहे छे. नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजु सूत्र, शब्द, समभिरुढ अने एवभूत, ए सात नयना नाम कह्या तेमा प्रथम नैगमनय ते, नथी एक गमो अभिप्राय ते जेनो तेने नैगमनय कहीए, एटले अनेक आशयी छे, तेना त्रण भेद कहे छे आरोप, अंश अने सकल्प. हवे आरोपना चार भेद द्रव्यारोप, गुणारोप, काळारोप, अने कारणारोप ए चार भेद कह्या तेनो अर्थ कहे छे द्रव्यारोप ते काळ द्रव्य रूप भिन्न वस्तु नथी, पचास्तिकायनो परिणमन धर्म छे, ते पचास्ति कायमा परिणमीने रह्यो छे, परतु छनो काळ द्रव्य उपचारे कहीए छोए, ते अछतानो छतापणे आरोप थयो ते द्रव्यारोप, हवे गुणारोप ते ज्ञान गुण छे, परतु ज्ञान ते आत्मा ए स्व अपेक्षाए गुणनो द्रव्यपणे आरोप थयो वळी लायकी, चतुराइ, यशकीर्त्ति, बळ आदि पुन्य योगे पामीए, अने मूर्खता, अपयश, निंदा, निर्बळपणु आदि पाप जोगे पामीए ए दुर्गुणो सदगुणो पुद्गल द्रव्यना वस्तुगते नामादि कर्मनी प्रकृतिओ छे, ए गुणो जीवना नथी, तेनु जड दृष्टिए जीवमा आरोपण करी,

जीवना गुण कहीए ते पर अपेक्षाए गुणोनो द्रव्यपणे आरोप थयो, ए गुणारोप कह्यो. हवे काळारोप, तेना त्रण भेद अतित, अनागत अने वर्त्तमान, अतित ते गया काळे ऋषभदेव स्वामीने निर्वाण थयां घणो काळ वीत्यो परंतु आज मेर तेरसे ऋषभदेव स्वामीनुं निर्वाण कल्याणक छे, अने आज दिवाळीने दिवसे वीरस्वामीनुं निर्वाण कल्याणक छे. एम कहीए ते अतित काळनुं आरोपण वर्त्तमान काळे थयुं वळी अनागत काळ ते आवते काळे तीर्थंकरोनां कल्याणक थशे तेनो आरोप वर्त्तमानमां करीए वळी एज प्रमाणे वर्त्तमाननो आरोप अतितमां तथा अनागतमां थाय, तेने काळारोप कहीए हवे कारणाध्यारोप ते बाह्यद्रव्य क्रिया साध्य सापेक्षवालाने धर्मनुं निमित्त कारण छे तेने धर्म करणी कहीए छीए. वळी तीर्थंकर देव मोक्षनुं कारण छे तेमने तारयाणं कह्या ते कारणने विषे कर्त्तापणानो आरोप थयो एम अनेक प्रकारे आरोपण थाय ते कारणाध्यारोप ए आरोप नैगमना चार भेद कह्या. हवे अंश नैगमना बे भेद कहे छे एक भिन्नांश ते जूदो अंश स्कंधादिकनो अने बीजो अभिन्नांश ते आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविभाग ए बे भेद कह्या. वळी अश एटले निगोदीआ आदि संसारी जीवोना आठ रुचक प्रदेश निर्मळ, निर्लेप, अचळ सिद्धरूप छे तेथी एक अंशे सिद्ध छे तेने सिद्ध कहीए छीए. वळी अयोगी केवली चौदमा गुणठाणे वर्त्ते छे, ते सिद्धथी अंशे ऊणा छे. तेमने संसारी कहीए छीए, ए अंशनैगम कह्यो. हवे संक-

ल्प नैगमना वे भेद कहे छे संकल्प जे स्वपरिणामरूप वीर्य चेतनानो जे नवो नवो क्षयोपशम ते लेवो, अने वीजो कार्यांतरे नवे नवे कार्ये नवो नवो उपयोग थाय ते, ए वे भेद कह्या एटले नैगमनय कह्यो हवे संग्रह नय कहे छे. सामान्ये मूळ सर्व द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्या जे धर्म तेनो जे संग्रह करे तेने संग्रहनय कहीए, तेना वे भेद, एक सामान्य संग्रह बीजो विशेष संग्रह सामान्य संग्रह ते द्रव्य कहेता छ द्रव्यनो समुदाय ग्रहण थाय, एक वचने सर्वनुं ग्रहण थयु ए पेहेलो भेद, अने जीवद्रव्य अजीवद्रव्य एम कही अजीवने जीवथी जुदो पाडवो तेने विशेष संग्रह कहीए वळी रूपीथी अरूपीने जूदो पाडवो ए पण विशेषसंग्रह कहीए वळी सामान्य संग्रहना वे भेद. मूळ सामान्य अने उत्तर सामान्य मूळ सामान्यना छ भेद अस्तित्वादिक छे ते आगळ कहीशु. उत्तर सामान्यना वे भेद जाति सामान्य अने समुदाय सामान्य जाति सामान्य ते "एगे आया एगे पुग्गले" इत्यादि वस्तु अनंती छे पण एक वचनमा ग्रहेवाय छे ते जाति सामान्यना चार भेद, मनुष्य, तिर्यंच, देवता, अने नारकी ए जाति सामान्य कहीए हवे बीजो भेद समुदाय सामान्य ते गायना समुदायमा गोत्वरूप जाति छे तथा घट समुदायमा घटत्वपणु अने वनस्पतिने विषे वनस्पतिपणुं ते जाति सामान्य कह्यो अने आंबाना समूहने आम्रवन कहे तथा मनुष्यना समूहमा मनुष्य ग्रहण थाय एम एक वचनमा अनेकनु ग्रहण थाय, तेने समुदाय

सामान्य कहीए एटले त्रण भुवनमां एवी वस्तु कोइ नथी जे सग्रहनयना ग्रहणमां न आवे. जे जे वस्तु छे ते सर्व सग्रहनयमां ग्रहेवाणी छे, तेने समजवा दृष्टांत कहेछे. जेम कोइ मनुष्य प्रभाते चाकरने कहे छे के दातण लाव एम कहेवाथी चाकर पाणीनो लोटो, दातण, रुमाल, मसी आदि सर्व वस्तु लइने आवे, जुउ के चाकर पासे तो एक दातण नाम लइने माग्युं हतु पण सर्वनो संग्रह करी लइने आव्यो तेम द्रव्य एवुं नाम कह्यु एटले द्रव्यनां गुण, पर्याय, स्वभाव लक्षण सर्वे भेगा आव्या. ए उत्तर सामान्य, ते चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शनने ग्राह्य छे, अने मूळ सामान्य ते अवधिदर्शन तथा केवलदर्शनथी ग्रहेवाय छे ए संग्रह नय कह्यो. हवे व्यवहार नय कहे छे, तेना बे भेद, एक वहेंचणरूप व्यवहार अने बीजो प्रवर्त्तन व्यवहार वहेचणरूप व्यवहार ते संग्रह नय ग्रहीत वस्तु तेने भेद भेदांतरे वहेंचवुं एटले जीवना बे भेद. एक सिद्ध अने बीजा संसारी सिद्धना बे भेद. एक आदि सिद्ध अने बीजा अनादि सिद्ध. अनादि सिद्ध ते सिद्ध गतिनीआदि खोळीए तो केवळीना वचने ते नहीं, कारण के काळनी आदि नथी तो सिद्धगतिनो आदि क्यांथी आवे ? अनादि अपेक्षाए सिद्धगति छे, माटे अनादि सिद्ध हवे आदि सिद्ध ते आ अवसर्प्पिणी काळे दिवाळीना दिवसे स्वाति नक्षत्रे वीरस्वामीनु निर्वाण थयुं एटले सिद्धि वर्या, इत्यादि प्रत्येक अपेक्षाए आदि सिद्ध कहीए. अनतर सिद्ध ते समय मात्र आंतरा रहित

सिद्ध थया तेने अनतर सिद्ध कहीए परंपर सिद्ध ते वच्चे विरह काळ सिद्ध गतिए आवी पमे त्यारे मोक्षनो मार्ग व मास आदि वध रहे ठे अने पठी सिद्धि वरे ते परपर सिद्ध कहीए, एक सिद्ध ते एक समये एक सिद्धि वरे ते एक सिद्ध कहीए, अनेक सिद्ध ते एक समये जघन्यथी वे अने उत्कृष्ट एकसोने आठ सिद्धि वरे ते अनेक सिद्ध कहीए लघु अवगाहना सिद्ध ते वत्रीश आंगळनी अवगाहना सिद्धमां ठे तेने लघु अवगाहना सिद्ध कहीए गुरु अवगाहना सिद्ध ते मोटी अवगाहना त्रणसोने तेत्रीस धनुष्य अने वत्रीस आंगळनी सिद्धमा ठे तेने गुरु अवगाहना सिद्ध कहीए मध्यस्थ अवगाहना सिद्ध ते जघन्य वत्रीश आगळथी अधिक अने गुरु त्रणसेने तेत्रीस धनुष्य अने वत्रीस आंगळथी न्यून अवगाहनाउ असंख्यात भेदे सिद्धमा ठे, ते मध्यस्थ अवगाहना सिद्ध कहीए, तेमां कोइ अवगाहना सिद्धमां उन्नी ठे कोइ आमी ठे, कोइ तिर्छि ठे, कोइ पासान्नर ठे, कोइ पद्मासने ठे इत्यादि अवगाहनाउ उपर अलोकने अमीने पीस्तालीसलाख योजन प्रमाण सिद्धक्षेत्रमा सिद्धपणे स्थिर रही ठे नीचेना भागमा कोइनी ओठी ठे, कोइनी अधिक ठे सूक्ष्म वादर पुद्गल रहित अरूपी आत्माना असख्यात प्रदेशना घनरूप अवगाहनाओ एकमा अनेक अने अनेकमा एक एम रही ठे ए सिद्ध परमात्माना भेद कह्या हवे ससारी जीवना कहे ठे ससारी जीवना वे भेद अयोगी अने सयोगी अयोगी ते मनयोग, वचनयोग, अने

कायायोग रुंध्या छे जेमणे एवा अयोगी केवली ते चौदमा गुणठाणाना, बाकीना सयोगी. ते सयोगीना बे भेद, एक सयोगी केवळी ते तेरमा गुणठाणाना अनंत चतुष्टयीवंत अने बीजा सयोगी छद्मस्थ. हवे सयोगी छद्मस्थना बे भेद क्षीणमोही अने समोही क्षीणमोही ते वीतराग यथाख्यातसंयमी बारमा गुणठाणाना मोहनी कर्मनो क्षयकर्यो छे जेणे ते क्षीणमोही बाकीना समोही, समोहीना बे भेद अकषायी अने सकषायी, अकषायी ते कषायना उदयनो पराभव नथी जेने एवा अगिआरमा उपशांतमोह वीतराग गुणठाणाना, बाकीना सकषायी. सकषायीना बे भेद सूक्ष्म कषायी अने बादर कषायी सूक्ष्मकषायी ते लोभनो अणु उदयमां छे जेने ते सूक्ष्म संपराय चारित्रवंत दशमा गुणठाणाना, बाकीना बादर कषायी बादर कषायीना बे भेद, अवेदी अने सवेदी अवेदी ते नवमा गुणठाणाना, बाकीना सवेदी सवेदीना बे भेद, श्रेणिवंत अने श्रेणि रहित, श्रेणिवंत ते आठमा गुणठाणाना, बाकीना श्रेणी रहित श्रेणी रहितना बे भेद, अप्रमत्त अने प्रमत, अप्रमत ते स्वरूपोपयोगी सातमा गुणठाणाना, बाकीना प्रमत, प्रमत्तना बे भेद, विरति अने अविरति, विरतिना बे भेद, सर्व विरति अने देश विरति, सर्व विरति ते सर्व थकी संसार त्याग कर्यो छे जेणे एवा छठा गुणठाणे साधु जाणवा बाकीना देश विरति ते पांचमा गुणठाणे श्रावक जाणवा. हवे अविरतिना बे भेद अविरति समकि-

तो अने अविरति मिथ्यात्वी अविरति समकिती ते चोथा गुणठाणाना वाकीना मिथ्यात्वी मिथ्यात्वीना वे नेद नवि अने अनवी नविना, वे नेद, एक ग्रथि नेदी अने वीजा ग्रथि अनेदि ग्रथि नेदी ते समकित पामीने मिथ्यात्व गुणठाणे पाठा आव्या तेमणे ग्रथिनेद करेलो ठे, ते ग्रथिनेदी वीजा ग्रथि अनेदी तेना वे नेद, शुक्ल पक्षीया अने कृष्ण पक्षीया शुक्ल पक्षीया ते जेने एक पुद्गल परावर्त्त ससार स्थिति वाकी ठे अधिक नथी तेने शुक्ल पक्षीया कहीए वाकीना कृष्ण पक्षीया, ए संसारी जीवना नेद कह्या हवे अजीवना नेद कहे ठे एक रूपी अने वीजो अरूपी अरूपीना चार नेद धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने काळ ए चार नेदमां धर्मास्ति अने अधर्मास्ति ए वे द्रव्य चौद राज्य लोक प्रमाण असख्यात प्रदेशी एक एक द्रव्य ठे, आकाशास्तिकाय लोकालोक प्रमाण अनत प्रदेशी एक द्रव्य ठे, अने काळ समय मात्र वर्त्ते ठे, वर्त्तमान समय अतित थाय ठे अने अनागत वर्त्तमान थाय ठे, एम काळनी परपरा चाले ठे एक समय वीजा समयने मळतो नथी तेथी काळनु ठतापणु नथी, माटे काळने नपचारे द्रव्य मान्यो ठे, ए अरूपी अजीवना नेद कह्या. हवे रूपी अजीवतो पुद्गल द्रव्य ठे तेना वे नेद, एक परमाणु अने वीजो खध खंधना वे नेद, एक तो जीवने लाग्या ते जीव सहित अने वीजा जीव रहित ठुटा ठे, पर्यायना वे नेद, कर्मनावी अने स्वनावी इत्यादि वहेचण रूप व्यवहारनो

पहेलो भेद कह्यो हवे बीजो प्रवर्त्तन व्यवहार तेना बे भेद, एक शुद्ध प्रवर्त्तन अने बीजो अशुद्ध प्रवर्त्तन. शुद्ध प्रवर्त्तनना बे भेद, एक वस्तुगत शुद्ध प्रवर्त्तन अने बीजो साधन शुद्ध प्रवर्त्तन, वस्तुगत शुद्ध प्रवर्त्तन ते धर्मास्तिकायनो चलण सहायता, अधर्मास्तिकायनो स्थिर सहायता तथा आकाशास्तिकायनो अवगाहकता, काळनो वर्त्तना, पुद्गलनो मिलण विखरणता अने जीवनो ज्ञायकता, वस्तुगत कहेतां ए छ द्रव्यमा पोतपोतानी प्रवृत्ति पोतानामां रही छे, तेने वस्तुगत शुद्ध प्रवर्त्तन व्यवहार कहीए. हवे साधन शुद्ध प्रवर्त्तन व्यवहार ते चोथा समकित गुणठाणाथी भेद ज्ञाननी अपेक्षाए उपादान कारणने कार्यपणे करतां, हेय, ज्ञेय अने उपादेय आज्ञाए वर्त्तता अशुद्धताने छेदी विशुद्धतारूप उपरनुं गुणठाणुं ग्रहता ग्रहता यावत् अप्रमत्त गुणठाणाने दृढपणे ग्रही गुणश्रेणी आरोहण करी मोहनो, वळी रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनो दशमा गुणठाणाने अंते ध्वंस करी वीतराग थइ ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रण कर्मनो वीतराग भावे बारमा गुणठाणाने अते क्षय करी केवळज्ञान, केवळ दर्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामी तेरमा गुणठाणे अरिहत परमात्मा थाय त्यां सुधी साधन शुद्ध पवर्त्तन व्यवहार कहीए, ए शुद्ध व्यवहारना बे भेद कह्या. हवे अशुद्ध प्रवर्त्तन व्यवहार ते जीवमां राग, द्वेष, कषाय नोकषाय अने मोह लाग्या छे तेना उदय योगे जीवने पराभवता बाधकता छे तेटलो कर्म-

वध थाय ठे अने जीव चोथु गुणठाणुं पाम्यो त्याथी शुद्ध व्यवहारनी सहाय मली ते जोगे पोतानी वाधकता टाळी पराजवताने ठेदे ठे, एटली सकाम निर्जरा ठे ते सकाम निर्जरानो कर्त्ता शुद्ध व्यवहार ठे अने वधनो कर्त्ता अशुद्ध व्यवहार ठे, शुद्ध व्यवहार तेरमा गुणठाणा सुधी वळावो ठे अने दशमा गुणठाणाना अत सुधी अशुद्ध व्यवहार लुटारानो सजव ठे, उपरात नथी तेमा ठठा सा तमा गुणठाणा सुधी अशुद्ध व्यवहार लुटारा मोह चोरनो पराजव घणो ठे उपरात योग्यता ठे पण क्षपक श्रेणीवालाने जय नथी ते अशुद्ध व्यवहारना वे जेद कहे ठे एक शुज अने बीजो अशुज अशुज व्यवहार ते सत्तर अढार पापस्था नकनु सेववुं, पन्नर कर्मादाननु आचरवु, रात्री जोजननुं क रवुं, अजक्ष अनतकायनुं आरोगवु इत्यादि पापवधनो हेतु तेने अशुज व्यवहार कहीए हवे बीजो शुज व्यवहार ते पाच आश्रवनु तजवु ने सामायक पोसह प्रतिक्रमण आदे देवदर्शन, गुरुवदन विनय युक्त अने बहुमानयुक्त करवुं, देश विरतिपणु अने सर्व विरतिपणुं ग्रहवु, गुरु कुळवासे वसवु, अष्ट प्रवचन मातानु पाळवुं इत्यादि साध्य सापेक्ष दृष्टिए शुज व्यवहार कहीए, ए पुन्यवधनो हेतु ठे, ते कह्यो हवे उपचरित अने अनुपचरित व्यवहार कहे ठे उपचरित व्यवहार ते धन, धान्य आदि घर कुटुंब परिवार एक पोतानी काया विना जे बीजु, ते प्रत्यक्ष आपणाथी जुदु ठे, तेने अज्ञानपणे मोहित थइने जीव पोतानु माने

तेने उपचरित व्यवहार कहीए. हवे अनुपचरित व्यवहार ते, जे पोतानी काया मन वचन आदि परवस्तु यद्यपि जीवथी जूदी छे, अने जीव छे ते पांच इंद्रि, त्रण बळ. अने श्वासोश्वासथी जूदो छे तोपण परिणामिक भावे खोळी पणे एकठा मळी रह्या छे, भवपर्यंत छोड्युं छुटे नही तेने पोतानी कहीए, पण पोतानी नथी एम अपेक्षा समजीने बोलीए ते अनुपचरित व्यवहार कहीए. हवे सद्भूत व्यवहार कहे छे, तेना बे भेद, एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध, शुद्ध सद्भूत ते केवळज्ञानने आत्मानुं कहीए, ते आत्माथीज प्रगट थयुं छे माटे सद्भूत, अने आवरण उपाधि नथी माटे शुद्ध. ए पेहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो भेद अशुद्ध सद्भूत ते मतिश्रुत ज्ञानने आत्मानु कहीए एटले ज्ञान छे ए तो आत्मानो सद्भाव छे, माटे सद्भूत, परंतु इंद्रि नोइंद्रिथी प्रगट थयुं छे तेथी अशुद्ध, ए बीजो भेद कह्यो. हवे असद्भूत व्यवहार कहे छे एटले हु क्रोधी, हुं मानी, हुं मायी, हुं लोभी वळी हुं मनुष्य, हुं तिर्यंच, हुं देवता, हुं नारकी इत्यादि हुं शब्दे जीव छुं एम कहेवुं ते विकळता छे कारण के मनुष्य तिर्यंचनी काया ते पेहेली औदारिक वर्गणा छे, वळी देवता नारकीनी काया ते बीजी वैक्रिय वर्गणा छे, वळी कायानी अंदर आहारने पाचन करवानो हेतु तथा सजीवनपणानो हेतु ते चोथी तेजस वर्गणा छे वळी भाषा श्वासोश्वास अने मन ए पांचमी, छठी, अने सातमी पोतपोतानी वर्गणा छे, अने क्रोधादि

कषायनी प्रकृतिओ कही ते, आठमी कार्मण वर्गणा छे, ए सर्वे पुद्गळ दळ छे तेने जरुजाति कहीए, ते जीव नथी, जीवनी वस्तु पण नथी, तेनो मालिक जीव पोते थाय छे तेने मिथ्यात्वी कहीए ए परवस्तुने पोतानी कहेवी ते असद्भूत. तेना बे भेद, एक संश्लेषित अने बीजो असश्लेषित ए बे भेद कह्या, तेनो अर्थ कहे छे पांच इंद्रि, त्रण बळ, श्वासोश्वास अने आयुष्य ए दश द्रव्यप्राण जीवना छे, अने तेमा अतर व्यापकपणे भाव प्राणधारी चेतन रह्यो छे, तेने भेद ज्ञाने शुन्य जीव जाणतो नथी, ओळखतो नथी, पोतानी काया एज जीव एम बोले छे, जाणे छे, तेने संश्लेषित असद्भूत व्यवहार कहीए अने पुत्र, माता. पीता, भाइ, बेन आदि मारां छे वळी धन कंचनादि देश, नगर, खेत्र मारुं छे एम कहे छे, जाणे छे, तेने असश्लेषित असद्भूत व्यवहार कहीए, ए व्यवहार नय कह्यो, हवे ऋजु सूत्र नय कहे छे ऋजु कहेता सरळ एटले अवक्र वा पांसरो अने सूत्र कहेता बोध एटले ज्ञान ते ऋजुसूत्र कहीए, एटले वर्त्तमानपणे उपन्यो जे तद्गत् परिणाम तेने ग्रहण कर्त्ता ते ऋजुसूत्र, अने जे अतित अनागत ते ऋजुसूत्रनी अपेक्षाए अछतो छे केमके अतित तो विणसी गयो अने अनागत आव्यो नथी, तेवारे अतित अनागत ए बे वस्तु वर्त्तमान पर्याये अवस्तु छे, अने वर्त्तमान पर्याये वर्ते ते वस्तुपणे छे पूर्वकाळ पश्चात् काळनी अपेक्षाए वस्तु कहेवी ते आरोपरूप नैगमनय छे, अने तात्कालिक तद्गत वस्तु-

पणुं तेने ऋजुसूत्र कहीए, तेना बे जेद, सूक्ष्म ऋजूसूत्र अने स्थूल ऋजुसूत्र जे वर्त्तमानकाळनो एक समय तेने सूक्ष्म ऋजुसूत्र कहीए अने जे बहुकाळी तेने स्थूल ऋजुसूत्र कहीए, ए चोथो नय कह्यो- हवे शब्द नय कहे छे शब्द ते वस्तुपणे बोलावीए ते शब्दे जे वाच्य अर्थ ग्रहे एवु छे प्रधानपणु जे नयमा, तेने शब्द नय कहीए जेम कृतक नाम जे कर्यो तेनो हेतु जे धर्म ते जे वस्तुमां होय ते बोलाय एटले शब्दनुं कारण तो वस्तुनो धर्म थयो. जेम जळाहरण धर्म जेमां छे, तेने घट कहीए छीए एम अहीं पण शब्दे वाच्य अर्थ ग्रहे तेनु नाम पण शब्दनय कहेवाय. जेम ऋजुसूत्र नयने वर्त्तमान काळना धर्म इष्ट छे तेम शब्दादिक नयने वर्त्तमानताना धर्म इष्ट छे एटले ऋजु सूत्रनय चार निक्षेपा सयुक्तने सामान्यपणे ग्रही वस्तु माने अने शब्दनय जाव निक्षेपाने मुख्य करी सहजना चार निक्षेपाने ग्रही वस्तु माने एटले सद्भाव जे अस्ति धर्म तथा असद् भाव जे नास्ति धर्म सर्व संयुक्त वस्तुने वस्तुपणे उपयोगे ग्रहे एटले वस्तुने शब्दे बोलावतां सात जांगे बोलाववी माटे ए सतजंगी जेटला शब्दनयना जेद जाणवा ते सतभंगीनी व्याख्या कहे छे (१) स्यात् अस्ति, (२) स्यात् नास्ति, (३) स्यात् अस्ति नास्ति, (४) स्यात् अवक्तव्य (५) स्यात् अस्ति अवक्तव्य, (६) स्यात् नास्ति अवक्तव्य (७) स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य, ए सात जागा कह्या हवे अर्थ कहे छे. आ सात जांगानो जाण

जे आत्मा एम चितवे छे के मारो आत्मा छे, तेना घरमां वस्तुगते वती शी छे ? जे वती छे तेने अस्ति कहीए ते स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वभावपणे चितवीए त्या स्वद्रव्यपिंड ते ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्य आदि अनता गुण, अने पर्याय ते एक एक गुणना अनंता अविभाग, वळी अरूपी, अमूर्त्ति, अव्याबाध, अनवगाह आदि अनंता पर्यायनो समुदाय तेनु आधारपणुं ते स्वद्रव्य, असंख्यात प्रदेशे ज्ञानादि गुणनु अवस्थान, अगुरु लघुतानी हानी वृद्धिनु मान ते स्वक्षेत्र, अनतगुणनी अनती वर्त्तनामा उत्पाद अने व्ययनी परिणमनतानुं समये समये अभिनवपणे परिणमवुं ते स्वकाळ, अने अनत ज्ञेयनुं ज्ञायकपणु, विवेचनपणु, देखवापणु, निजगुणनी स्थिरतापणुं, दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्यनुं अनंता गुणमां अनंत भेदे दानादि लब्धिनो स्फुरता भाव ते स्वभाव, वळी त्रणे काळे अविनाशीपणु माटे नित्य, वळी समये समये अभिनवपणे उत्पाद व्यय परिणमे तेथी अनित्य, वळी अनता गुणपर्यायनु असख्यात प्रदेशे दृढ ऐक्यतापणुं. अभिन्नतापणु, सदा सर्वदा छे माटे एक अने वळी अभेद, अनता गुण अनंता पर्याय ते पोतपोतानुज कार्य करे, एक गुण बीजा गुणे न प्रवर्त्ते, नीज नीज गुणेज प्रवर्त्ते ते अनेक, अने वळी भेद त्रणकाळमां एक गुण एक पर्याय वा एक प्रदेश द्रव्यथी अळगो न थाय माटे अभव्य, वळी पोताना गुणनी आविर्भावे व्यक्तिनो कर्त्ता ते भव्य, एम स्यादवाद लक्षणो-

पेत द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावे करीने आत्मा छ, वळी नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव ए चार निक्षेपा संयुक्त जीव द्रव्य छतो छे, परंतु अन्य छ भागा पण छे, ए सापेक्ष पणाए करीने स्यात् पद दइने बोलाववो, ते स्यात् अस्ति, ए प्रथम भांगो कह्यो. हवे स्यात् नास्ति नामे बीजो भांगो कहे छे, जे मारा आत्माथी अन्य ते अनता पुद्गल परमाणुं छूटा छे, वळी द्व्यणुकादि संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी, अनंत प्रदेशी, ते सर्व उपचलित स्कंध, औदारिक, वैक्रिय, आहारक अने तेजस ए चार बादर वर्गणाना, वळी भाषा, श्वासोश्वास, मन अने कार्मण ए चार सूक्ष्म वर्गणाना, इत्यादि प्रत्येके प्रत्येके अनंता अनंता पुद्गलना खंध चौद राजलोकमा रह्या छे, वळी धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्यना बे खध असंख्यात प्रदेशी चौदराजप्रमाण लोकमा रह्या छे, वळी आकाशास्तिकायनो एक खंध अनत प्रदेशी लोकालोकमा रह्यो छे, काळ तो समय मात्र वर्त्ते छे वळी अढीद्वीपमा ज्योतिष चक्रना आकारे दिवस रात्रीनुं मान छे एम उपर कह्या ते रूपी अने अरूपी मळी पाचे अजीव अने मारा आत्माथी बीजा एटले नोखा अनंता सिद्ध परमात्मा लोकाग्र भागे रह्या छे, वळी चारगतिना अनता संसारी जीवो चौदराज्यलोकमां रह्या छे, ते सिद्ध अने संसारी जीवोमा अस्तिपणु तो सौमां सरखुं छे परंतु तेमनुं अस्तिपणुं तेमनामां छे अने मारुं अस्तिपणुं मारामां छे. माटे भिन्न छे, ए उपर कह्यां ते छ द्रव्य मारा विवक्षित

आत्म द्रव्यमा नास्तिन्नावे छे वळी पाच अजीवना जड तादि गुण ते, गतिनो हेतु, स्थितिनो हेतु, अवगाहक हेतु, वर्त्तनानो हेतु, मळवा वीखरवानो हेतु, वर्ण, रस, गध स्पर्शनो परावर्त्तन धर्म, बार न्नेदे हानि वृद्धिरूप, ए प्रमाणे सर्वे द्रव्यमा द्रव्य द्रव्य प्रत्ये, प्रत्येके प्रत्येके विना कारणे पोताना स्वन्नावे समये समये अन्निनवपणे परिणमी रह्यु छे, वळी मारा जीवात्माथी अन्य सिद्ध ससारी जीवोमा चेतनताना अस्तित्वादि गुणपर्याय, स्वन्नाव लक्षण ते परिपूर्ण सिद्धना व्यक्तिरूप छे, अने ससारीना शक्तिरूप छे तेमा समकित चोथा गुणगणाथी अशे व्यक्तिरूप छे, बारमा आदिमा अशे व्यक्ति ओछी छे, एम पाच अजीव द्रव्यना अने अन्य सिद्ध अने संसारी जीवोना जे गुण, पर्याय, स्वन्नाव अने लक्षण ते मारा विवक्षित आत्माना गुण, पर्याय स्वन्नाव लक्षणमा नास्ति न्नावे छे, एटले मारा आत्माना द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने न्नावमा परद्रव्यनो परक्षेत्रनो, परकाळनो, अने परन्नावनो नास्तिन्नाव छे, परतु नास्तिन्नाव छे ते पोतानामा अस्तिन्नावे छे तेनी सापेक्षता माटे स्यात् पदे बोलता सर्व धर्मनु न्नासन थयु माटे स्यात्नास्ति ए बीजो न्नागो कह्यो हवे स्यात् अस्ति नास्ति नामे त्रीजो न्नागो कहे छे. जे विवक्षित आत्मा द्रव्यमा अन्य जीव स्वजाति अने पाच अजीव परजाति तेना द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने न्नावनी नास्ति छतीरूपे बीजा न्नागामा कही तेनी अछती रूपे पोतानामा अस्ति रही छे तेने जणाववा माटे

समकाले भागा ग्रह्या छे परतु शब्दे बोलतां अनुक्रमे बोलाय छे एटले पोताना विवक्षित आत्माना द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावे पेहेला भांगामां अस्तिपणे कह्यो, ते पोतामां छतापणे रह्यो छे, अने बीजा भांगामां परनो नास्तिभाव कह्यो ते पोतामां अछतापणे रह्यो छे एम छता अछतापणे बे भांगा पोतामां समकाले अस्तिपणे रह्या छे अहीं कोइ कहेशे के जे वस्तु पोतामां नथी,तेने अछतापणे पोतामा छती कहेवानी शी जरुर छे?तेनो उत्तर हेभाइ!एम न कहीए तो ससारमा चतुर्गति भ्रमण करतां अनतां पुद्गल परावर्त्त ससारी जीवोए कर्या अने वळी करशे, परंतु जीवनु यथास्तित ध्रुवपणु त्रणे काळे भासे छे, ते परपणानो पोतामा छतापणे अभाव छे, तेथी जो एम न होय तो जीव अजीवपणु पामे अने अजीव जीवपणु पामे, वस्तुपणे वस्तु रहे नहीं, माटे पोतपोतानुं छतापणुं पोतानामा रह्यु छे, तेथी त्रणे काळे अचळ अविनाशीपणे वर्त्ते छे, अने परनुं अछतापणुं छे तेथी कोइ काळे परपणुं पामे नही, पोतानुं अवस्थितपणु सदासर्वदा पोतापणे रहे एवो जीव अजीव सर्वे द्रव्यनो धर्म छे वळी जे छतापणे होय तेज स्फुरणा पामे, एटले जीवनु मोक्षरूप कार्य ते पोताना छतापणाने स्फुरता नोपजे, माटे पोतानुं छता पणु अने परनु अछतापणु अस्ति छे परतु नास्तिनी अपेक्षाए. वळी बीजा भांगानी सापेक्षता माटे स्यात्पद युक्त बोलवो. ए स्यात् अस्तिनास्ति नामे त्रीजो भांगो कह्यो. हवे स्यात् अवक्तव्यनामे चोथो भांगो कहे छे अवक्तव्य

एटले केवळज्ञानीने जाणवामा तो एक समयकाळे सर्व वक्तव्य छे, परतु वचने बोलता अनुक्रमे बोलाय ने, अने वस्तुमा तो अस्ति नास्ति (छता अछता) पणे समकाळे जागा रह्या छे माटे केवळज्ञानीने शब्दे बोलता अवक्तव्य छे वळी समकितीने जाणवामा समकाळे छे, परतु छद्मस्थनो उपयोग असख्यात समयी छे माटे अवक्तव्य, वळी समकाळनी अपेक्षा न कराए, तो पण वस्तुमा अनंता धर्म रह्या छे, तेमा अभिलाप्य स्वभाव धर्म तो वचनगोचर बोलवामा आवे, अने अनभिलाप्य स्वभाव न आवे, माटे स्यात् पद अपेक्षाए बोलीए ते स्यात् अवक्तव्यनामे चोथो भागो कह्यो हवे स्यात् अस्ति अवक्तव्य नामे पाचमो भांगो कहे छे एटले अस्ति धर्म छे तेमा पण अनतो धर्म तो अनभिलाप्य स्वभाव छे, ते तो केवळी भगवान्‌ना वचन गोचर पण थतो नथी बोलवामा आवे नहीं ते अवक्तव्य कहेवाय, परतु अभिलाप्य स्वभाव वचने बोलवामा आवे छे, ते पण क्रोड पूर्वना आयुष्यवाळा पुरुषो होय अने आठ वर्षनी उमरे केवळज्ञान पाम्या होय अने आउखाना छेडा सुधी अस्ति धर्मनी प्ररुपणा करे तो पण अभिलाप्य स्वभाव धर्मनो अनतमो भाग कहेवामा आवे, अधिक न आवे ते माटे अस्ति अवक्तव्य, परतु नास्तिभाव कहेवो छे ते अपेक्षाए स्यात्पदे युक्त बोलीये, ते स्यात् अस्ति अवक्तव्य ए पाचमो भागो कह्यो एज प्रमाणे नास्ति भागानी गवेषणा करीने स्यात् नास्ति अवक्तव्य छट्ठो भागो कहीए

हवे स्यात् अस्तिनास्ति युगपत् अव्यक्तव्य नामे सातमो भागो कहे छे, एटले अस्ति भाव पण वक्तव्य छे तेम नास्ति भाव पण वक्तव्य छे, अने बेमां अवक्तव्य पण छे ए सर्व धर्म एक वस्तु मध्ये एक एक गुणमा अने दरेक पर्यायमा समकाळे परिणमे छे, माटे अस्तिनास्ति वक्तव्य अने अवक्तव्य, अही अस्ति ते नास्ति न थाय अने नास्ति ते अस्ति न थाय, वळी वक्तव्य ते अवक्तव्य न थाय अने अवक्तव्य ते वक्तव्य न थाय, ते जणाववा माटे स्यात्पद कह्यो छे ए स्यात् अस्तिनास्ति युगपत् अवक्तव्य नामे सातमो भागो कह्यो ए सप्तभंगी कही तेनुज नाम स्याद्वाद धर्म छे, अने स्याद्वाद धर्मनुं ज्ञान ते समकित छे अने समकित छे त्यां शब्द नय छे, एटले शब्दादिक नय वस्तुना पर्यायने अवलंबी वस्तुना भाव धर्मना ग्राहक छे ते माटे वस्तुना भाव निक्षेपा छे ते शब्द नये मुख्य छे, अने प्रथमना चार नयमा नामादिक त्रण निक्षेपा मुख्य छे. ए शब्द नयनुं स्वरूप कह्यु, हवे समभिरूढ नयनी व्याख्या करे छे, जे शब्द नय कह्यो तेथी समभिरूढ नयमां घणो अतर छे, आत्माना अनंता गुणपर्याय छे तेमा एक समकित गुण प्रगट थवाथी चोथा गुणठाणे शब्द नय प्राप्त थाय छे अने समभिरूढ नय तो वीतराग गुणठाणे अंशे ओछी स्थितिए प्राप्त थाय छे, माटे घणो अंतर छे, एटले एक पर्यायने प्रगटवे अने शेप पर्यायने तिरोभाविपणे एटले अणप्रगटवे शब्दनय बोलावे, पण समभिरूढ नय न बोलावे. हवे जे बो

लाववुं कह्यु तेनो परमार्थ कहे छे समकित गुण प्रकट करी हेय उपादेय बुद्धि पामी सर्वविरति थइने साध्य सापेक्ष दृष्टिए वर्ते, तेने शब्दनय सयति कहीने बोलावे, पण समभिरूढ नय सयति न कहे समभिरूढ नय तो क्षपक श्रेणी मांडी दशमा गुणठाणा अंते मोहनी कर्म क्षय करी अशुद्ध परिणति छेदी शुद्ध परिणतिवंत थइ बारमा क्षीण मोह गुणठाणे यथाख्यात चारित्रवंतने संयति कही बोलावे, वळी वीतरागभावे ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रण कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान, केवलदर्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामे तेमने ज्ञानी कही बोलावे ए शब्द नय अने समभिरूढ नयनो अंतर कह्यो हवे एवंभूत नय कहे छे. समभिरूढ नय पक्षे तेरमा गुणठाणे अरिहंत परमात्माने स्नातक कहीए छीए ते एवंभूतनय स्नातक न कहे एवंभूत नय तो लोकाग्र भागे सादि अनंत भागे स्थितिवंत सिद्ध परमात्माने स्नातक कहे छे,कारण के तेरमा गुणठाणे घाति कर्मनो मळ आत्म प्रदेशथी अळगो थयो छे, पण अघाति कर्मनो मळ रह्यो छे ते मळ अयोगी गुणठाणाने अंते उतरशे एटले एक समये लोकाग्र भागे सिद्ध क्षेत्रमां सिद्धपणे बिराजमान थशे, तेमने एवंभूत नय स्नातक कहे छे

ए स्नातकमां नयपक्ष कह्यो हवे अरिहंत पदमां कहे छे क्षायक लब्धिए तो तेरमे गुणठाणे अरिहंतपदे जे जे वर्ते छे, ते सौ सरखा छे कोइ अधिक न्यून नथी समभिरूढ नय तो सौने अरिहंत कहे, परंतु एवंभूत नय तो जेने इंद्रादिक

पूजे ठे एटले तीर्थंकरने समोसमरणनी रचना थाय ठे अष्टप्रातिहार्यादि ऋद्धिए पूजनीक ठे, वळी असंख्यात कोमी देवो सेवे ठे तथा सामान्य केवळीमा केटलाएक केवळी ज्ञगवानने कमळनी रचना थाय ठे देवदेवेंद्र जेमने पूजे ठे तेमनेज एवज्रूत नय अरिहत कहे ठे बीजाने न कहे अहीं वाह्य ऋद्धिनी अधिकता ठे अतर ऋद्धिए तो सौ सरखा ठे. परतु एवंज्रूत नय ते नामे न वोलावे एटलो अंतर ठे, ए एवंज्रूत नय कह्यो. ए रीते साते नय कह्या ए सात नयमां पेहेला चार नय ठे, ते अविशुद्ध ठे, केमके ड्व्यने सामान्यपणे कहेवाना अधिकारी ठे, अने शब्दादिक त्रण नय ते शुद्ध नय ठे, केमके तेमा शब्दना अर्थनी मुख्यता ठे माटे ए नयो शब्द तथा अर्थने अज्ञेदपणु माने ठे अने अर्थथी शुन्य शब्द ते ए नये प्रमाण नथी वळी शब्दादिक नय ते पेहेला (नाम, थापना, अने ड्व्य ए) त्रण निक्षेपाने अवस्तु माने ठे. अने चोथा ज्ञाव निक्षेपा संयुक्त वस्तुने वस्तु माने ठे ए सात नयमा पेहेलो नैगमनय ते सामान्य विशेप वेने माने ठे, सग्रहनय ते सामान्यने माने ठे, व्यवहार नय विशेपने माने ठे अने ड्व्यार्थावलंवी ठे ते इहां ड्व्य शब्दे क्रिया लेवी तथा ऋजुसूत्र तो विशेपनो ग्राहक ठे ए चार नय ते ड्व्य नय ठे अने पाठला शब्दादि त्रण नय ते पर्यायार्थिक विशेपावलंवी ज्ञाव नय ठे, ए सात नयमां सामान्य विशेप पक्षनुं मानवुं कह्युं वळी ड्व्य अने ज्ञावनु ग्राहकपणु या अवलवनपणु कह्यु, तेने वि-

स्तारीने कहे छे सामान्य ते शक्ति, तेना बे भेद ओघ शक्ति अने समुचित शक्ति, विशेष ते व्यक्ति, शक्तियीज व्यक्ति पामीए, ओघ शक्ति ते घासना तरणामा घृतनी शक्ति रही छे, एम कहीए तेनु नाम ओघ शक्ति हवे प्रथमना त्रण नयमा द्रव्यार्थावलंबीपणु कह्यु, ते जिनपूजादि तथा सामायक पोसह प्रतिक्रमणादि श्रावकनी करणी छे, यतिने चरणकरणानुयोगनी क्रिया करवी तेने द्रव्यार्थावलंबीपणुं कहीए ते श्रावक, साधु पोतपोतानी क्रिया करे तेमा जेने समकितनी स्पर्शना निश्चय पक्षथी ग्रंथिभेद पूर्वक थइ छे, अने क्रिया उपर कही ते मुजब करे तेने तो दूधरूप व्यक्ति ते अप्रमत्तादि गुणस्थानके भाव, संवर अने सकाम निर्जरायोगे, क्षयोपशम भावनी लब्धि प्राप्त थाय, बीजाने थाय नही, कारण के जे भक्षण गाय भेंस, बकरा घेटा घास तरणानु भक्षण करे, ते तो दूध आपे छे हराया प्रमुख बीजा अनेक जातिना जानवरो छे ते घास भक्षण करे छे तेथी दूध मळतु नथी, तेम वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धाना अभावे साध्य शून्य एवा अज्ञानी मिथ्यात्वीने श्रावक साधुनी क्रिया करता समकितादि गुणस्थानकनो दूधरूप धर्म ते न मळे, भाव संवर अने सकाम निर्जराना अभावे क्षयोपशम भावनी लब्धि न मळे, समकितनी स्पर्शना थया मळे हवे ओघ शक्तिनी अपेक्षाए दूधने व्यक्तिपणु कह्यु तेनुज नाम समुचित शक्ति कहीए हवे दूधमाथी घी काढवु छे, ते दूधने जमाववु त्यारे घी

नीकळे, जमाववु ते अप्रमत्त गुणठाणुं न ठोरे त्यारे दूध जाम्युं कहीए, ते क्यारे न ठोरे के वेदक समकितरूप मेळवण परे ता ए दूध तरत जामी जाय एटले प्रमत्त गुणठाणे आववुं बहुधा तो आंतरारहित अनतर टळे, कारण के समकित मोहनीनो पराभव हतो ते वेदक समकिते टाळ्यो, त्यां अप्रमत्त राजधानी निर्भय थइ, वळी अपरुआयु अखंम श्रेणी क्षायक समकितनी ठापनो चाद मळ्यो ठे, तेना ज्ञानगनुं तेज वृद्धि पाम्यु त्यारे आत्म गुणनी अखम श्रेणीनुं तेमुं आव्युं, ते कहे ठे के, अपूर्व गुणठाणुं तमने परोणा तेमे ठे, त्या जवानी तैयारी करीने तेज वखते गया, जइने क्षपक श्रेणी मांमी. दहीनी गोरशीमा अप्रमत्त स्तंन्न ते वांस नन्नो कर्यो, परंतु वांसे गोरसने मथवा माटे फूलमां होय ठे, ते अही अप्रमत्तादि गुणठाणाए ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार ए पंचाचाररूप तो अप्रमत्तस्तंन्ने फूलमा जाणवां. हवे वलोणु वलोववाना दृष्टांते नेद ज्ञान अने नेदानेद ज्ञाने शुक्ल ध्यानगत शुद्धोपयोग ते अनोपम दोरीए शुद्धात्मानुं नित्यानित्यादि स्याद्वाद अनेकांत स्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाण अनुन्नवरमणे शुद्ध परिणामिक नावमा उत्पाद व्ययनी शक्तिए समये समये अन्निनवपणे विशुद्धिए परिणमता, परिणमता यावत् मूळ स्वरूपमां क्षायकन्नावे अति शुद्ध परिणामीक न्नाव परिणमे, त्या मांखणना पिंमरूप क्षायकन्नावनी अनंत लब्धि केवळज्ञान, केवळदर्शनादि ... ...ाविरन्नावे प्रगटे, ते लब्धिनुं

वर्णन आगळ करीशु तेने तावे घी नीकळे, ते कोइक तो तरतज तावे ठे अने कोइक वेहेलुं मोरु तावे जे तरत तावे ठे ते अतगम केवळी ठे अने मोरु तावे ते आयुष्यनो ठेडो आवे तावे तावबु ते शु ठे? तो योग निरुधन. शुक्ल ध्याननो त्रीजो अने चोथो पायो ध्याववो शैलेशीकरण अवस्था तेनुं नाम तावणी कहीए तेथी घी रूप परिपूर्ण सिद्धता कार्य नीपजे. तेनु मूळ बाह्य कारण घणी ठेटे रहेलो स्थीतिए उंघशक्ति रूप द्रव्यथी व्यवहारे शुभ क्रिया ठे अने अंतरथी शब्दनयनी मुख्यताए क्षयोपशमभाव उपयोग लब्धिरूप विशेषावलवीपणु ठे ज्या कार्यनी नजीकता देखीए तेने समुचित शक्ति कहीए, ए परिपुर्ण सिद्धताकार्यनुं साधन करवानो नयपक्षदृष्टांते अनुसरीने उपनय विचार कह्यो ए सात नय गवेख्या. हवे निक्षेपानुं स्वरूप कहे ठे तेना चार भेद, नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव तेमां प्रथम नाम निक्षेपो कहे ठे तेना वे भेद, सहज नाम अने सांकेतिक नाम, सहज नाम ते गुण निष्पन्न नाम अनादि अनंत भागे सदा सर्वदा ए वस्तुनु एनुं एज नाम चाल्युं अखण्डितपणे वर्त्ते, तेने सहज नाम कहीए, ते जीवने जीव कहीए, चेतन कहीए, आत्मा कहीए वळी अजीवने अजीव कहीए, पुद्गळने पुद्गल कहीए, रूपीने रूपी कहीए, अरूपीने अरूपी कहीए, चतुर्गति भ्रमणने संसार कहीए, तेना अभावे मुक्ति कहीए, ज्या एक आकाश द्रव्य ठे, तेने अलोक कहीए, वाकी लोक कहीए, समकित चोथा गुण-

ठाणाथी अयोगी चौदमा गुणठाणा पर्यंत आत्म गुणनी व्यक्तिरूप साधना तेने धर्म कहीए, बाकी मिथ्यात्व कहीए, इत्यादि सहज नाम जाणवां. हवे सांकेतिक नामना बे ज्ञेद कहे छे. एक कृत्रिम अने बीजुं अकृत्रिम, कृत्रिम सांकेतिक नाम ते पाडेलुं नाम कर्मचंद, धर्मचंद, आदि, ते नाम पाडवावाळानो संकेत अने संज्ञा बाधी ते कृत्रिम, ए पहेलो ज्ञेद कह्यो, ते सादि सांत ज्ञांगे छे हवे बीजो ज्ञेद अकृत्रिम सांकेतिक नामनो, ते मनुष्य गतिने मनुष्य कहीए, तिर्यंच गतिए एकेंद्रिथी पंचेंद्रि सुधी तिर्यंच कहीए, देवगतिए देव कहीए, नरकगतिने नारकी कहीए सिद्ध गतिने सिद्ध कहीए, ए पांच गतियो कही तेनां नाम कोइना पाडवाथी थया नथी अनादि संबधे चाल्यां आवे छे माटे अकृत्रिम अने ए गतिउमां उपजवानो संकेत ते संसार गतिउए पूर्वकृत कर्म बंधनो छे वळी पांचमी सिद्ध गतिनुं सांकेतिक. कार्मण वर्गणाथी छुटवा पणुं अयोगी केवळी नामे चौदमुं गुणठाणु तेनो अत कहेतां छेल्ला समये कर्मनो अज्ञाव थयो ते संकेत जाणवो. वळी शाश्वति प्रतिमाना नाम ऋषज्ञानन, चंद्रानन, वारिषेण अने वर्द्धमान ए नाम पण कोइए पाड्युं नथी एटले प्रतिमा अकृत्रिम छे तो नाम पण अकृत्रिम छे अने संकेत ते ए नाम जिनेंद्र तीर्थंकर देवनां अनादि अनंत ज्ञांगे छे. हवे चार गतिओ संसार स्थितिए उपर कही ते गति आश्रीने अनादि अनत ज्ञांगो लागे, अने प्रवर्त्तन

आश्री ते गतिओनो संबध जवीने अनादि सात जागो लागे अने अजवीने अनादि अनंत जागो लागे सिद्ध गतिनो सबध गति आश्रीने अनादि अनत जागो लागे, अने प्रवर्त्तन आश्रीने सादि अनत जागो लागे सूक्ष्म निगोद गतिनो सबध जव्याजव्यी जीवने अनादि अनत जागो लागे अने जवी अजवीने अनादि अनंत, अने अनादि सात वली सादिसांत ए त्रणे जागा लागे बाकी ससार गतिओनु त्रमण पुनरपि पुनरपि सादि सांत जागे ठे ए साकेतिक नामना वे जेद कह्या एटले नाम निक्षेपो कह्यो हवे स्थापना निक्षेपो नाम सहित होय ते कहे ठे, तेना वे जेद एक सहज स्थापना, बीजी साकेतिक स्थापना सहज स्थापना ते जेने, अनादि अनत जागो लागे तेने सहज स्थापना कहीए ते आत्मानी असख्यात प्रदेश रूप, पुद्गलनी परमाणु रूप, धर्मास्तिकायनी तथा अधर्मास्तिकायनी असख्यात प्रदेश रूप चौद राज्य लोक प्रमाण, अने आकाशास्तिकायनी अनत प्रदेश रूप लोकालोक प्रमाण ते सहज स्थापना कहीए हवे बीजी साकेतिक स्थापना तेना वे जेद, एक कृत्रिम अने बीजी अकृत्रिम कृत्रिम ते जींत वगेरेमा चित्रामण काढे ठे, अथवा काष्ट पाषाणमा कोरीने घोमा हाथी वगेरेनो आकार करे ठे वळी जिन प्रतिमा करवामा आवे ठे, तेने दीठे जिनेंद्र देवना केवल ज्ञानादि गुण, अव्याबाधादि पर्याय, नित्यत्वादि स्वजाव अने स्व स्वरूप लक्षण ए सर्वे यादीमा लावीने जवी जीवने ध्यान

करवानु निमित्त कारण थाय छे वळी जैन मुनि महाराजानी स्थापना जे छबी अथवा पगला तेने दीठे ए मुनि महाराजा स्मरणमा आवे छे अने तेमना महाव्रतीपणाना गुण यादिमां आवे छे. वळी तेमना उपदेशनी वाणी ग्रंथ प्रकरणमां रचना करेली होय ते शंका अने अज्ञान रूप अंधकार टाळवाने सूर्य समान, मिथ्यात्व रूप मोटा पर्वतने छेदवाने वज्र समान, भव्य जीवने ससार सागरथी तारवाने नाव समान, मनोवांछित पूरवाने कल्पवृक्ष समान, बोधि बीज रूप धर्म दाननी देनारी थाय छे माटे तेमना गुणनुं स्मरण करवाने गीतारथ गुरुरायनी स्थापना ते निमित्त कारण छे. ए कृत्रिम स्थापनाओ कही, ते करवाथी थइ माटे कृत्रिम, अने सांकेतिक ते कर्त्तानो संकेत. हवे अकृत्रिम सांकेतिक स्थापना ते चार गतिए जीवो चोवीस दंडकमा मिश्र भावे उपजे छे त्यां गतिना अनुसारे कायानी अवगाहनाओ अनेक भेदे पामे छे, ते कायानो कर्त्ता कोइ नथी, कोइनी करी थइ नथी माटे अकृत्रिम अने सांकेत ते, पूर्व भवना कृत्य कर्म बधनो छे, माटे तेने सांकेतिक अकृत्रिम स्थापनाओ कहीए, ते ते काया प्रमाणे पुद्गल खंधनो चय उपचय छे, ते पुद्गलनी स्थापनाउ अने काया प्रमाण क्षेत्रे अंतरव्यापकपणे आत्माना प्रदेशनुं कर्म संयोगथी सकोच विकस्वरपणुं छे, ते आत्मानी स्थापनाउ. एम जीवनुं अने पुदगळनुं एक परिणमन छे तथापी वस्तु भिन्न छे, एक द्रव्य बीजा द्रव्यथी मिले नही ए सि-

करवानु निमित्त कारण थाय छे. वळी जैन मुनि महाराजानी स्थापना जे छत्री अथवा पगला तेने दीठे ए मुनि महाराजा स्मरणमा आवे छे अने तेमना महाव्रतीपणाना गुण यादिमां आवे छे. वळी तेमना उपदेशनी वाणी ग्रंथ प्रकरणमां रचना करेली होय ते शंका अने अज्ञान रूप अंधकार टाळवाने सूर्य समान, मिथ्यात्व रूप मोटा पर्वतने छेदवाने वज्र समान, भव्य जीवने संसार सागरथी तारवाने नाव समान, मनोवांछित पूरवाने कल्पवृक्ष समान, बोधि बीज रूप धर्म दाननी देनारी थाय छे माटे तेमना गुणनुं स्मरण करवाने गीतारथ गुरुरायनी स्थापना ते निमित्त कारण छे ए कृत्रिम स्थापनाओ कही, ते करवाथी थइ माटे कृत्रिम, अने साकेतिक ते कर्त्तानो संकेत हवे अकृत्रिम सांकेतिक स्थापना ते चार गतिए जीवो चोवीस दंडकमा मिश्र भावे उपजे छे त्या गतिना अनुसारे कायानी अवगाहनाओ अनेक भेदे पामे छे, ते कायानो कर्त्ता कोइ नथी, कोइनी करी थइ नथी माटे अकृत्रिम अने साकेत ते, पूर्व भवना कृत्य कर्म वचनो छे, माटे तेने सांकेतिक अकृत्रिम स्थापनाओ कहीए, ते ते काया प्रमाणे पुद्गल खंधनो चय उपचय छे, ते पुद्गलनी स्थापनाउं अने काया प्रमाण क्षेत्रे अंतरव्यापकपणे आत्माना प्रदेशनुं कर्म सयोगथी संकोच विकस्वरपणुं छे, ते आत्मानी स्थापनाउं. एम जीवनुं अने पु[illegible] परिणमन छे त[illegible] वस्तु भिन्न छे, एक द्रव्य [illegible]थी मिले नही

द्धांत वचन छे ते अपेक्षाये जीवनी अने पुद्गलनी भेद भाने विभाग वहेंचण छुफारा करीने जूदी जूदी अकृत्रिम स्थापनाउं कही ते तथा उपर कृत्रिम स्थापनाउं कही ते सर्वे सादि सांत भांगे छे तेमा जे मनुष्यना भवमा अयोगी केवळी चौदमा गुणठाणा अते वर्त्ते छे तेमनी कायानी अवगाहना जे छे तेमा त्रीजो भाग पोलाणनो छे, तेनुं संकोचन करीने बे भाग प्रमाण अवगाहना माने आत्माना असंख्यात प्रदेशनो निबिड घन थयो, ते लोकाग्र भागे रह्यो छे, ते निरंजन सिद्धनी स्थापना सादि अनत भांगे कहीए ए अकृत्रिम स्थापनानुं सांकेतिक पूर्व कर्म बंधनो अयोगी चौदमा गुणठाणा अते अभाव थयो ते छे, ए अकृत्रिम सांकेतिक स्थापनाज कही एटले स्थापना निक्षेपो कह्यो हवे द्रव्य निक्षेपो कहे छे द्रव्य निक्षेपो नाम आकार अने गुण सहित होय, पण आत्मोपयोग न मळे ते द्रव्य निक्षेपो कहीए एटले द्रव्य निक्षेपो जीव अने पुद्गलना मिश्र भावनुं नाम छे, अने ज्या मिश्र भाव होय त्यां अज्ञान कहीए, एटले चेतन सत्ता अने अचेतन सत्ता भिन्न भासी नथी, वस्तुगते वस्तु ओळखी नथी, अने सिद्धांत आचारागादि गुरु वाचे छे तेना अर्थनी पृच्छा श्रोता करे छे. गुरुराय पद अक्षर मात्रा शुद्ध अर्थ करी समजावे छे, गुरुमुखे श्रोता सद्दहे छे तोपण द्रव्य निक्षेपामां छे, एटले अनुयोग द्धार सूत्रनुं ए वचन छे के अणुवउगोदव्वो एटले स्वस्वरूपे उपयोग रहित ते द्रव्य निक्षेपो जाणवो अने भाव

निक्षेपा विना जे द्रव्यपणुं छे ते पुन्य बंधनुं कारण छे पण मोक्षनुं कारण नथी एटले जे करणी रूप कष्ट तपस्या करे छे, अने जीव अजीवनी सत्ता ओळखी नथी तेने भगवतीजीमां अव्रती अने अपच्चखाणी कह्या छे, वळी जे एकली बाह्य करणी करे छे तेने चारित्र माने छे ते मृषावादी छे, एम उत्तराध्ययन कहे छे, न मुणी रन्नवासेणं त्यां तो ज्ञानीनेज मुनि कह्या छे, नाणेण य मुणी होई ए वचनथी जे ज्ञानवान ते मुनि छे अने जे अज्ञानी ते मिथ्यात्वी छे. वळी कोइक नरक देवलोकादिना ज्ञाता थाय अथवा यतिनो श्रावकनो आचार जाणे अने कहे के अमे ज्ञानी छीए ते पण ज्ञानी नथी, ज्ञानीतो जे द्रव्य गुण पर्यायने जाणे ते छे, एम उत्तराध्ययन सूत्रना मोक्ष मार्ग अध्ययने कह्युं छे. ते गाथाः

एयं पंचविह णानां, दव्वाण य गुणाण य ॥
पज्जवाण य सव्वेसिं, नाणं नाणीहि दंसियं ॥ १ ॥

माटे वस्तु सत्ता जाण्या विना ज्ञानी समजवो नहीं, वळी नव तत्वने जाणे, तेमां अजीव, आश्रव, पुन्य, पाप, अने बंध तेने हेय एटले तजवा योग्य जाणे अने जीव, संवर, निर्जरा अने मोक्ष तेने उपादेय कहेतां आदरवा योग्य जाणे छे एम ज्ञान पूर्वक श्रद्धा छे जेने, तेने समकिती जाणवा एवा ज्ञान दर्शन विना आज बाह्य क्रियानो आडंबर देखाडे छे ते ठग छे, तेनो संग करवो नहीं.बाह्य करणी उपर

राचवुं नहीं, कारण के श्री उत्तराध्ययन सूत्रे कह्यु छे के,

नाणं दंसणनाण नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा

ए वचन छे माटे आत्मानु स्वरूप ओळख्या विना सामायक, प्रतिक्रमण, व्रत, पच्चख्काण, दान, शीयळ, तप, पूजा आदि शुभ क्रिया करवी ते सर्व द्रव्य निक्षेपामा छे, ते पुन्यबंध हेतु शुभ आश्रव छे पण संवर नथी, एटले देवताना भवनु कारण छे एम श्री भगवतीजीमा कहेलुं छे.

पुव्वत्तवेणं पुव्वसंयमेण देवा देवलोए।

उववज्जंति नो चेवणं आयत्ताभाववत्तवयाए

माटे शुभ आश्रवनु कारण कहीए वळी संवरनु कारण तो एज भगवती सूत्रे कह्यु छे आयाखलु सामाइय अर्थ आया कहेता आत्मा भेद ज्ञानयोगे अनात्म सत्तानो विभाग वहेंचण करीने उपाधिथी अलगो थाय, स्वस्वरूप रमण करे, ऋद्धिनोऋद्धि विकार न पामे एवो समाधि योग ते खलु कहेता निश्चयथी सामाइय कहेता सामायक कहीए, तेने संवर कहीए, अने करणीरूप सामायक करवुं ते शुभ आश्रवनु कारण जाणवु वळी जेओ क्रिया अने ज्ञानथी हीण छे अने मूळ पंच महाव्रत पण अखंडित नथी अने पोते गछनी लाजे सिद्धांत भणे छे वाचे छे, व्रत पच्चख्काण करे छे तेथी आचार्य, उपाध्याय अने साधु कहेवरावे छे, ते तो परमात्मानी आज्ञाथी बहार छे, तेमां जे ज्योतिष जुए छे, वैदक करे छे तेने उत्तराध्ययनजी पापश्रमण कहे छे,

घणा जव ज्ञमशे माटे अवंदनीक ठे. वळी नय, निक्षेप, पक्ष अने प्रमाण जाएथा विना निश्चयथी आत्मानुं स्वरूप ओळख्या विना जे उपदेश करे ठे, ते पोते तो ससारमां रुव्या ठे अने तेमनी पासे जे सांज्ञळे ठे तेमने रुत्रावे ठे एम सिद्धांत कहे ठे, माटे वहुश्रुत गीतार्थ पासे उपदेश सांज्ञळवो एज वोधी वीज पामवानुं अथवा मोक्षनुं कारण कहीए ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो ते सादिसात ज्ञांगे ठे अने जे पद् द्रव्य ठे ते जीव अजीवादि सर्वमा अस्तित्वादिक ठ ज्ञेदे मूळ सामान्य स्वज्ञाव रह्यो ठे, तेमां द्रव्य द्रव्य प्रत्ये पोतपोताना गुणपर्यायनो अस्तित्वादिक धर्म रह्यो ठे अजीवमां अचेतनपणानो ठे, अने जीवमां केवळज्ञानादि अनंता गुण, अव्यावाधादि अनंता पर्याय, नित्यत्वादि अनता स्वज्ञाव, उत्पाद व्यय, ध्रुव आदि अनता लक्षण रह्यां ठे, परंतु संसारी जीवनां कर्मे आवरित ठे, तेथी ज्ञाव निक्षेपे शून्य निश्चे समकितना अज्ञावे द्रव्य निक्षेपो तादृश वर्त्ते ठे, अने चोथा समकित गुणठाणाथी चौदमा अयोगी गुणठाणा पर्यंत जे जीवो वर्त्ते ठे, तेमनो साधक दशा ज्ञाव निक्षेपा युक्त कहेवाय, तेमा जेटलुं आवरण आत्म सत्ताथी गयु एटलो ज्ञाव निक्षेपो ठे वाकीनो द्रव्य निक्षेपो ठे, सिद्ध परमात्मा तो निरावरण ज्ञाव निक्षेपेज विशेष स्वज्ञाव धर्म मयी ठे परतु ते विशेषमा सामान्य स्वज्ञाव पिंडपणे तथा आधारपणे अस्तित्वरूप द्रव्य पर्यायनी ऐक्यताए अनादि संवधे रहेलो ते द्रव्य निक्षेपो ठे पण अप्रगट ज्ञावे, एम

सिद्धमां नथी, ए द्रव्य निक्षेपो वस्तुगते कह्यो तेने अनादि अनत भांगो लागे. हवे भाव निक्षेपो ते नाम, आकार अने उपयोगादि गुणे करीने सहित होय ते कहे छे, भाव निक्षेपो प्रथि भेद थता चोथा गुणठाणानी साखितीए कहेवाय छे अहीं कोइ कहेशे के दान, शियळ, तप, पूजा, क्रिया ज्ञान आदि दृढ चित्ते त्रिकरणयोगे करीए तेने भाव कहीए, तो ते भाव नथी, भाव तो सूत्रनी साखे अने वीतरागनी आज्ञाए हेय उपादेयनी परीक्षा करी मनवचन कायादिने हेय जाणी तेनो वेपार अहंपणे तजीने अने आत्मानी उपयोग चेतना जाणवा देखवा रूपछे तेने उपादेय जाणी स्वस्वरूपे प्रणमावी अनुभव रमण करीए तेने भाव निक्षेपो कहीए एटले रूपी गुण ते द्रव्य निक्षेपो अने अरूपी गुण ते भाव निक्षेपो छे. मन, वचन, काया, लेश्या आदि द्रव्य निक्षेपामा छे एटले उवरंगो भावो ए अनुयोग द्वार सूत्रनु वचन छे, अने ज्या पुद्गल सगे इन्द्रि द्वारे उपयोग छे त्या स्वस्वरूपे उपयोग नथी एम जाणवुं, ए भाव निक्षेपो कह्यो तेमां जे उपशम, क्षयोपशम भाव छे ते सादि सात भागे छे, अने क्षायक भाव छे ते सादि अनंत भागे छे ए भाव निक्षेपो जीवमां कह्यो. हवे अजीवमा कहे छे धर्मास्तिकाय जीव पुद्गलने गतिनो हेतु, अधर्मास्तिकाय स्थीतिनो हेतु, आकाश अवकाश आपवानो हेतु, काळ वर्त्तनानो हेतु, पुद्गल मळवा विखरवानो वा वर्णादि पर्यायना परावर्त्तन धर्मनो हेतु ए भाव निक्षेपो अजीवमां कह्यो एटले नाम, स्थापना,

द्रव्य अने भाव ए रीते चार निक्षेपा कह्या, ते वस्तुना स्वपर्याय छे. विशेषावश्यकनी भाष्य मध्ये कह्युं छे "चत्वारो वत्थु पज्जाया" माटे वस्तुना जे सहज भावे चार निक्षेपा छे, ते वस्तुमां अभिन्न रूपे वर्त्ते छे तेने स्वपर्याय कहीये, ते अनादि अनत भांगे छे, अने भिन्न वस्तुमां उपचारे निक्षेपा कल्पीए ते नैगमादिक नयनो पक्ष छे, ते मध्ये प्रथमना त्रण निक्षेपा ते कारण रूप छे अने चोथो भाव निक्षेपो छे ते कार्यरूप छे, भावनिक्षेपाने अणनीपजते प्रथमना त्रण निक्षेपा निष्फळ छे, जेम चक्र, दंड, दोरो अने कुंभकार छे पण माटीना पिंड विना घट थाय नहीं, तेम शुभ क्रियाने निमित्त कारण कहीए. तेना दृष्टांते मृत्तिका पिंडरूप उपादान कारण ते आत्मानु तथा अनात्मानुं जाणपणु थयुं होय, जड चेतननो विभाग करता ज्ञान घटमां प्रगटयुं होय, तेने तो समकितादि गुण निष्पन्न करवानुं कारण कहीए ते विना तो शुभ क्रिया ते निमित्त कारण कहेवाय नहीं जेम मृत्तिका पिंड चाक उपर नथी त्या सुधी चक्रादि कारण वृथा छे, तद्वत् जाणवुं.

हवे मूळ सामान्य स्वभावना छ भेद कहे छे (१) अस्तित्व, (२) वस्तुत्व, (३) द्रव्यत्व, (४) प्रमेयत्व, (५) सतत्व अने (६) अगुरुलघुत्व ए छ मूल स्वभाव छे, ते सर्व द्रव्य मध्ये परिणामिकपणे परिणमे छे, ए धर्मने कोइनो सहाय नथी ते षट् द्रव्यने विषे उत्तर सामान्य स्वभाव, नित्यत्व, अनित्यत्वादिक, तथा विशेष स्वभाव ते परिणा-

भिकत्वादिक, तेनो आधार भूत धर्म, ते धर्मने तीर्थंकर देवे सामान्य स्वभाव अस्तित्वरूप कह्यो छे, ए पेहेलो भेद तथा गुण पर्यायनो आधारवंत पदार्थ तेने वस्तुत्व कहीए ए बीजो भेद, अने अर्थ जे द्रव्य तेनी जे क्रिया, जेम धर्मास्तिकायनी चलणसहाय क्रिया, अधर्मास्तिकायनी स्थिर सहाय क्रिया, आकाशास्तिकायनी अवगाहक रूप क्रिया, जीवनी उपयोग लक्षण क्रिया, अने पुद्गलनी मळवा विखरवारूप क्रिया तेनुं करवापणु एटले जे पचास्तिकायमा पर्यायनी प्रवृत्ति ते अर्थ क्रिया, अने ते अर्थ क्रियानो आधारभूत धर्म तेने सर्वज्ञ देवे द्रव्यत्वपणु कह्यु छे, वळी द्रव्यत्वपणानु बीजु लक्षण कहे छे उत्पादपर्यायनी जे प्रसवशक्ति एटले आविर्भाव लक्षण जे शक्ति तेना व्ययीभूत पर्यायनो तिरोभाव थयो, अथवा अभाव थवारूप शक्तिनो जे आधारभूत धर्म तेने द्रव्यत्व कहीए, ए त्रीजो भेद कह्यो हवे स्व केहेता पोते आत्मा अने पर केहेता अन्य जीवाजीवादि सर्व द्रव्यने यथार्थपणे जेथी जाणवामा आवे तेने ज्ञान कहीए, तेना पाच भेद छे, ते ज्ञानना उपयोगमा आवे एवी जे शक्ति तेने प्रमेयत्वपणु कहीए ते प्रमेयपणु सर्व द्रव्यनो मूळ धर्म छे प्रमाणमा बतावी जे वस्तु तेने प्रमेयपणु कहीए, ते सर्व द्रव्य, सर्व गुणपर्याय प्रमेय छे अने आत्मानो ज्ञान गुण तेमा प्रमाण तथा प्रमेयपणु ए बे धर्म छे. पोतानु प्रमाण ते पोतेज करे छे, दर्शन गुणनु प्रमाण ज्ञान गुण करे छे, एटले दर्शन गुण ते सा-

मान्य धर्मनो ग्राहक छे, ते पण प्रमाण कहेवाय, पण प्रमा-
णना भेद कह्या छे त्या ज्ञानज ग्रह्यु छे तेनुं कारण जे दर्शनो
पयोग ते स्फुट पमतो नथी, ते माटे प्रमाणमां गवेख्यो-
नथी, ते प्रमाणना मूल वे भेद छे एक प्रत्यक्ष अने वीजो
परोक्षस्पष्ट ज्ञान ते प्रत्यक्ष अने अस्पष्ट ज्ञान ते परोक्ष,
अथवा आत्माना उपयोगथी, इंद्रि नोइंद्रिनी प्रवृत्ति विना
जे ज्ञान ते प्रत्यक्ष कहीए तेना वे भेद एक देश प्रत्यक्ष
वीजो सर्व प्रत्यक्ष, तेमां अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान
ते देश प्रत्यक्ष छे, अने केवलज्ञान ते सर्व प्रत्यक्ष छे ए प्र-
त्यक्ष प्रमाणनो पेहेलो भेद कह्यो. हवे वीजो भेद परोक्ष
प्रमाण, ते मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञान ए वे ज्ञान ते अस्पष्ट
ज्ञान छे तेने परोक्ष कहीए, ते परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद
कहे छे, आगम प्रमाण, अनुमान प्रमाण, अने उपमान
प्रमाण आगम प्रमाण ते यथार्थ भावना उपदेशक सर्वज्ञ
तीर्थंकर देव, वळी द्वादशागीना रचवावाळा गणधरदेव
तेमना प्रकाशेला अर्थ तथा सूत्र ते आगम प्रमाण कहीए,
ते सिद्धांतनी निश्राए पूर्वापर अविरोधीपणे भ्रांति विना
स्याद्वादे युक्त जे वचन, साधक ते साधक, वाधक ते वा-
धक, हेय ते हेय, उपादेय ते उपादेय, इत्यादि वहेचण स-
हित जे वचन होय तेने पण प्रमाण करवुं, ए आगमनी
अनुयायीए मतिश्रुत ज्ञानना उपयोगे नरकनुं, स्वर्गनुं, नि-
गोदादि, तिर्यचनुं, मनुष्यनु, गतिनुं, आगतिनुं, द्वीपनुं,
समुद्रनु, धर्मास्तिकाय आदि षट् द्रव्यनुं, नयोनुं, निक्षे-

पानुं, गुणनुं, पर्यायनुं, स्वन्नावनुं, विन्नावनुं, अपवादनुं अने उत्सर्गादिनु जाणपणु करीए, आगमथी उपरांग न थइए, पोताना क्षयोपशम पूर्वक सिद्धातनुं वा पूर्वाचार्यकृत ग्रथोनु अनुयायीपणु ग्रही हठवाद ममत्व, कदाग्रह दूर करीने मतिकल्पना सकोची चालीए, अहंपणुं मूकीने लघुता करीए ए रीते जाणपणु करवानो हेतु आगम ठे, अने आगमने रचवावाळा गणधरदेव ठे, अने गणधर देवने उपदेश करवावाळा तीर्थकर देव सर्वज्ञ ठे, तेमना उपकारीपणानु बहुमान करवु, ध्यान स्मरण करवु, क्षणवार पण विसारवा नहीं, तेमना गुणनी स्तुति करवी, ए आगम प्रमाण कह्यु. हवे अनुमान प्रमाण कहे ठे, अनुमान ते लिंग अथवा चिह्नथी यथार्थ वस्तु जाणवामां आवे, जेम दूर थका धूमाडानी रेखा उची जती आकाशे पहोचती जोइने विचारीए के अग्नि प्रज्वलित ठे ए अनुमान प्रमाण कह्यु. हवे उपमान प्रमाण ते जेम कोइ पुरुषनु मुख गोळाश पकडतुं होय तेने कहीए के पूनमना चन्द्र समान गोळ मुख ठे, इत्यादि घटती उपमा लागु करवी तेने उपमान प्रमाण कहीए, ए परोक्ष प्रमाणना त्रण न्नेद थया ए प्रमाणनु स्वरूप कह्युं, एटले मूळ सामान्य स्वन्नावनो चोथो न्नेद कह्यो. हवे पाचमो न्नेद सत्यपणु ते उत्पाद् कहेता उपजवु, व्यय कहेता वीणसवु अने ध्रुव कहेता नित्यपणु वा अचळपणु वस्तुना एक एक गुणमा समये समये त्रणे परिणमने सदा परिणमे ठे, एवो जे परिणमन धर्म ते सत्वपणु कहीए तेमा

जेनुं उत्पाद् व्ययरूप सत्यपणुं एक छे, ते द्रव्य एक छे, अने जेनु उत्पाद् व्ययपणुं जूदु छे ते द्रव्य पण जूदो छे ए पांचमो भेद कह्यो हवे छठ्ठो अगुरु लघु तेमां छ प्रकारनी हानि तथा छ प्रकारनी वृद्धि ते अनत भाग हानि, असंख्यात भाग हानि, सख्यात भाग हानि, संख्यात गुणहानि, असंख्यात गुणहानि, अने अनंत गुणहानि ए छ भेदे हानि कही अनंत भागवृद्धि, असंख्यात भागवृद्धि संख्यात भागवृद्धि, सख्यात गुणवृद्धि, असंख्यात गुणवृद्धि, अने अनंत गुणवृद्धि एम छ छ भेदे हानिवृद्धि मलीने बार भेदे अगुरुलघु पर्यायनी सर्व द्रव्यने सर्व प्रदेशे परिणमे छे, तेमां कोइक प्रदेशे कोइक समये अनंत भाग हानिपणे परिणमे अने कोइ समये कोइ प्रदेशे अनंत भाग वृद्धिपणे परिणमे एम बार भेदे परिणमे छे, ते अगुरु लघु-पर्यायनी परिणमन शक्ति ते अगुरुलघुत्व नामनो छठ्ठो भेद कह्यो एम ए छ स्वभाव सर्व द्रव्यमां परिणमे ए षट् द्रव्यनो मूळ स्वभाव छे द्रव्यनुं भिन्नपणु प्रदेशनुं भिन्नपणुं ते अगुरु लघुना भेदपणे थाय छे, ते माटे ए छ मूळ सामान्य स्वभाव ए द्रव्यास्तिक धर्म छे, तेमां पर्यायनुं परिणमन पिंडपणे अभेद स्वभावे अवक्तव्य द्रव्य द्रव्यने विषे तिरोभावीपणे रह्युं, ते धर्मने आवरण लागतुं नथी; वळी आत्मा मध्ये जे अगुरु लघु गुण छे ते क्षायकभाव थये आत्माना सर्व प्रदेशे सर्व गुणमा सामान्यपणे परिणमे पण अधिका ओछापणे परिणमे नही. अही कोइ शंका करे के

अगुरुलघु पर्याय आत्माना प्रदेश प्रदेश प्रत्ये भिन्नपणे वर्त्ते छे, ते सर्व प्रदेशे सरखापणुं संभवे नहीं तेनो उत्तर, हे भाइ! आत्माना असख्यात प्रदेशथी घातिकर्मना आवरण दूर थया त्या आत्माना प्रदेश तथा प्रदेशे प्रदेशे रहेला अनता ज्ञानादि गुण अने एकएक गुणना अनता पर्याय सर्व निरावरण थया ते निरावरण गुणमा अधिका ओछापणु संभवे नही आत्माना असख्यात प्रदेश छे अने प्रदेशे प्रदेशे अनता गुणपर्याय छे तेमां सर्व प्रदेशे रहेला ज्ञान गुणना पर्यायनी जाणवापणे एकत्र सरखी प्रकाश शक्ति आविर्भावे प्रगटे तेनु नाम केवळज्ञान छे, अने सर्व प्रदेशे रहेला दर्शनगुणना पर्यायनी एकत्र शक्तिए देखवापणे प्रकाश शक्ति आविर्भावे प्रगटे तेनु नाम केवळ दर्शन छे, तथा सर्व प्रदेशे रहेला चारित्रगुणना पर्यायनी अनती अनती स्थिरता आविर्भावे प्रगटे तेनु नाम यथाख्यात चारित्र छे, वळी सर्व प्रदेशे रहेला वीर्य गुणना पर्यायनी एकत्र शक्तिए आत्माना अनता गुणमा प्रत्येके प्रत्येके गुणगुणगत भिन्न भिन्न स्वभावमा स्फुरणा आपवानु सामर्थ्य आविर्भावे प्रगटे तेनुं नाम अनंत वीर्य छे आ चार गुणो कह्या ते आदि अनता गुणपर्याय छे ते सर्व प्रदेशथी पोतपोताना गुण पर्यायनु एकत्र सरखी रीते परिणमनपणुं करे, पण कोइ प्रदेशे कोइ गुणना पर्यायमा ओछा वत्तापणे परिणमनपणुं करे नहीं वळी अणप्रवर्त्यो पण रहे नहीं ए क्षायकभावनु लक्षण छे ते कह्यु, अहीं वळी बोले के अगुरु लघु पर्यायनी परि-

णमन शक्तिए एक द्रव्यना अनता गुणमां समये समये अभिनवपणे उत्पाद् व्यय प्रवर्त्ते छे ते सरखापणे परिणमतां केम संजवे? तेनो उत्तर, हे ज्ञाइ! अभिनवपणे समये समये एक द्रव्यना अनंता गुणमा उत्पाद्व्यय प्रवर्त्ते एतो जिनेंद्र देवनी देशना छे ते वचन तो अमारे प्रमाण छे, ते वातनी काइ अमे ना पाकता नथी अही तो कहेवानुं एटलुं छे के, सर्व प्रदेशे रहेला जाणवा देखवादिक गुणोना पर्यायनी गुण गुण प्रत्ये एकत्र सरखी प्रवृत्ति थवी जोइए एटले प्रदेश प्रदेश प्रत्ये ज्निन्नता क्षायकजाव थयां सजवे नह्, तेनी साक्षी जोइए तो देवचंदजी कृत आगमसार ग्रंथे द्रव्यना अस्तित्वादिक ७ सामान्य गुणनुं वर्णन कर्युं छे त्याथी जोइ लेजो ए अगुरुलघुगुणनु प्रवर्त्तन कह्युं, ते अगुरुलघु गुणने गोत्र कर्म रोके छे, ए अगुरु लघु स्वजाव ते सर्व द्रव्यमा पोतपोतानो छे अहीं केटलाक वादी एम कहे छे जे पर्यायनो पिंक ते द्रव्य छे पण द्रव्यपणु जिन्न नथी, जेम धरी, पइमां, कागमो, काागळी, धुसरी प्रमुख समुदायने गाकु कहीए पण सर्व अवयवथी जिन्न गाकापणुं देखातु नथी, तेमज ज्ञानादि गुणथी ज्निन्नपणे आत्मा देखातो नथी तेने कहीए जे, ज्ञानादि अनंता गुणने विषे छतीपणे रहेली एक पिंक समुदायता तेनुं सदासर्वदा अवस्थितपणुं अने अनता गुणपर्याय द्रव्यथी निरपेक्षपणे मळी न जाय तथा स्वक्रियावंतपणुं इत्यादि सामान्य धर्म छे, एटले छतोपणु ते अस्तित्व, एक पिंकपणु ते वस्तुत्व, अर्थ क्रियावंतपणुं ते द्रव्यत्व, इ-

त्यादिक ते सर्व द्रव्यपणु छे एटले द्रव्यास्तिक अने पर्याया स्तिक ए बे नय मळीने द्रव्यपणु छे ए मूळ सामान्य स्वभावना छ भेद कह्या

हवे त्रिभंगी अने तेनी व्याख्या कहे छे बाधक, साधक अने सिद्ध बाधक तो समकित चोथा गुणठाणानी प्राप्ति न थइ, ग्रंथिभेदना अभावे वा ग्रंथिभेद करीने श्रद्धा विपर्यासने लीधे पाछा मिथ्यात्व पेहेले गुणठाणे गया ते बेहुने मिथ्यात्व छते, च्हाय तो शुभ करणी करो अने च्हाय तो अशुभ करणी करो पण बाधकभाव छे ए पेहेलो भागो, अने चोथा समकित गुणठाणाथी चौदमा अयोगी गुणठाणा पर्यंत जे जीवो वर्ते छे तेमने साधक भाव कहीए, ए बीजो भांगो, अने आठ कर्म रहित थइ अनत अष्टगुण निष्पन्न लोकाग्रभागे सिद्ध क्षेत्रमा सादि अनत भागे स्थिर रह्या तेमने सिद्ध कहीए ए त्रीजो भागो पेहेली त्रिभगीनो कह्यो हवे कर्मबध चेतन, कर्मफळ चेतन, अने ज्ञान चेतन, ए त्रिभंगीनो अर्थ कहे छे कर्मबध चेतन तो ए छे के, जे शुभाशुभ क्रिया करे छे अने अहकर्त्तापणुं पोते माने छे, ते जीव कर्मबधनो कर्त्ता छे ए पेहेलो भागो अने बीजो भागो कर्मफळ चेतन ते जे शुभाशुभ कर्म पोताना पूर्वे बांधेला ते कर्मनो उदय प्राप्त थयो एटले अशुभ ते पापनो अने शुभ ते पुन्यनो, पापनो ते अशातारूप अने पुन्यनो ते शातारूप प्राप्त थये छते अशातानो उद्वेग नथी अने शातानी रीझ नथी बनेने सरखां जाएयां छे जेणे, ए पूर्वकृत कर्मनां फळ

छे, एम जाणी समता न्नावे अंतर व्यापक उपयोगी थइ उदासिनवृत्तिये न्नोगवीने खरवे तेने कर्मफळ चेतन बीजो न्नांगो कहीए, अने त्रीजो न्नांगो ज्ञान चेतन, ते स्वरूपे चेतनानो उपयोग स्थिरन्नावे परिणमावी अनुन्नव रमण करे समन्नावे वर्त्ते एटले शुन्नाशुन्नमां प्रवेश न करे ते ज्ञान चेतन, ए त्रीजो न्नांगो बीजी त्रिन्नंगीनो कह्यो हवे वहिरात्मा, अंतर आत्मा अने परमात्मा ए त्रिन्नंगी, तेमां प्रथम वहिरात्मानु स्वरूप कहे छे जे जीव अज्ञानी मिथ्यात्वी छे, तेने पोतानी काया तेमां पांच इंद्रि,त्रण योग वळ आदि दस ड्रव्य प्राण छे, ते यद्यपि पर वस्तु छे, तेने पोतापणु जीवपणुं एकाते माने अने जीवनु अतींद्रिय स्वरूप जाणे नही, ते बहिरात्मा, ए पेहेलो न्नागो,अने बीजो न्नांगो अतरआत्मा ते काया सहित छे परंतु आत्माने कायाथी न्निन्न माने छे, घटमां ज्ञान ज्योति ऊगमगे छे,ड़ुफारा ज्ञान छे, परवस्तुनी विन्नाग वहेचण करीने पोताना आत्माने सर्व देवनो देव करी परमात्मपदे स्थापी तेना गुणनुं ध्यान स्मरण करतां कर्मने निर्जरे छे, यावत् श्रेणी मांमी वीतराग थइ क्षीणमोह बारमुं गुणगणुं पामे त्यां सुधी अतरआत्मा कहीए, ए बीजो न्नागो, अने त्रीजो न्नांगो परमात्मा ते तेरमा गुणगणे अरिहंतपदे अनंत चतुष्टयीवत ते सजोगी परमात्मा अने योगनो रोध करी अयोगी थइ अघाति कर्म हणीने सिद्धि वरे ते सिद्ध परमात्मा; ए त्रीजो न्नांगो त्रीजी त्रिन्नंगीनो कह्यो. हवे गुण, ज्ञाता अने ज्ञेय, ए त्रिन्नंगीनो अर्थ कहे छे. गु-

ण तो षट् द्रव्य छे तेमा आत्मा एज चेतनपणाना अनता गुणनी खाण छे, ते गुणे गुणीपणु होय तो, तेने गुण कहीए ए पेहेलो भागो, अने बीजो भागो ज्ञाता ते, जे आत्माने जाणे ते ज्ञाता, बाकी सर्व जाणे पण एक पोताना आत्माने न जाणे ते अज्ञाता एटले अज्ञानी, अने पोताना आत्माने जाणे ते ज्ञानी, तेने ज्ञाता कहीए, ए बीजो भागो, अने त्रीजो भागो ज्ञेय ते पोताना आत्मा सिवाय बीजा सिद्ध, ससारी सर्व जीवो वा पुद्गळ रूपी, अने धर्मास्तिकायआदि अरूपी ए पांचे अजीव, अने अन्य जीव मली षट् द्रव्य ते ज्ञेय कहेता पोताना आत्माने जाणवा योग्य छे, अने पोताना आत्मानु अतींद्रिय स्वरूप छे ते अनुभववा योग्य, स्पर्श करवा योग्य, आस्वादन करवा योग्य छे, ए चोथी त्रिभंगी कही हवे ध्याता, ध्येय अने ध्यान ए त्रिभगी, तेमा प्रथम भग ते ध्याता एटले उपयोगीक तरंगनी श्रेणीये आत्मा पोते ध्यानना कर्ता, ए पेहेलो भांगो; अने ध्येय ते ध्यानगत पोताना आत्मानु परमात्म स्वरूप ते ध्येय, ए बीजो भागो, अने ध्यान ते धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान गत प्रवृत्ति ए त्रीजो भागो जाणवो, ए पाचमी त्रिभगी कही हवे करुणा, तिटस्थता अने उदासिनता ए त्रिभगी, तेमा प्रथम भग ते करुणा छे, ते परजीवनी दया चिंतववी, तेना बे भेद एक द्रव्य दया अने बीजी भावदया, द्रव्यदया ते जीवना द्रव्य प्राणनु रखोपुं करवु, अने भाव दया ते संज्ञि पचेंद्रि योग्य जीवने उपदेश करी बोधी बीज पमाडवु, शका सदेहनु

टाळवु तेने भावदया कहीए. ए बे भेद कह्या. तेनुं नाम करुणा छे, ए पेहेलो भागो, अने बीजो भांगो तिक्ष्णता ते पोताना आत्मानी दया करवा माटे पोताना सहज वीर्यने फोरवी तिक्ष्ण ज्ञान वाणे ग्रंथिभेद करीने समकित गुण प्रगट करे तेने पण तिक्ष्णता कहीए, वळी मोहनी कर्म आदि घातीकर्मने श्रेणीगते ध्यानगत उपयोगे ज्ञाननी, वीर्यनी ऐक्यता करी हणीने वीतराग परमात्मा थइये ते सहज वीर्य शक्तिने तिक्ष्णता कहीए, ए बीजो भांगो, अने त्रीजो भांगो उदासिनता छे, ते ज्या पोते पोताना स्वरूपे थइए त्यां उदासिनता कहीए, एटले परने तजवुं, ग्रहवुं नथी, सवधज नथी पोतानुं नथी ए दशाने उदासिनता कहीए, ए छठी त्रिभंगी कही एम प्रत्येक त्रिभंगीना त्रणे भांगा केटलाएक तो समकाळे लागे छे अने केटलाएक पूर्व पश्चात् लागे इत्यादि अनेक त्रिभंगीना स्वरूपने विचारी जोवु हवे परिणतिए समकित भाव गवेखे छे, ते आत्मानी रागद्वेषरूप अशुद्ध परिणति अनादि सबंधे चाली आवे छे, तेने अपूर्व करणे, अपूर्व वीर्य योगे, अपूर्व मोगर प्रहारे भेदी अने अंशे छेदी, तेथी शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट थयो त्यांथी परिणतिए चोथा गुणठाणानी हदने न छोके त्यां बे धारा चाले छे, एक कर्मधारा अने बीजी ज्ञानधारा, कर्मधारा तो परिणतिए राग छे ते कहीए, अने ज्ञानधारा तो जेटलो समभाव एटलुं ज्ञान एम भेदज्ञाने अंतर स्थान वृत्ति करी इन्द्रि नोइंद्रि सगे उपयोग छे, तेने पलटावी

स्वस्वरूपे जोईए एटले परिणमावीए, त्या जोइए तो स्वस्वरूपनो यथार्थ भेद समजाय छे, तेने व्यक्तिमां लाववु अने ए भावे सदा रहेवु एज वल्लभ लागे, तेथी तेनो आदर करे, अनुभव करे अने निश्चय करे के एज मारुं स्वरूप छे तेनुं नाम प्रशस्त राग छे, तेने कर्मधारा कहीए छीए, अने पोताना स्वरूपथी जे अन्य छे ते पण ज्ञानरूप आरिसामां प्रतिबिंबित ज्ञेयरूपे भेदपणे शुभाशुभ सर्वे थाय छे, तेनो राग तूटी जाय छे, छोडवायोग्य समजाय छे, तेना उपर इष्टताए नथी अने अनिष्टताए नथी, मारु नथी, पर छे, ए दशाने समभाव कहीए छीए तेनुं नाम ज्ञानधारा छे परवस्तु उपर समभाव अने स्वस्वरूपनो राग एम परिणतिए बे धारा कही, ए गुण ग्रथीभेद कर्या विना कोइ जीव पामे नहि, तेनु नाम समकित छे अहीं कोइ कहेशे के स्वस्वरूपनो राग तेने तमे कर्मधारा केम कहो छो? तेनो उत्तर, हे भाइ! प्रश्न तो घणुं रुडु कर्युं छे पण स्वस्वरूपनो राग छे ते शुभ प्रकृतिओने आश्रवरूपे खेंचीने आत्म प्रदेशे एकत्वपणे बांधे छे, तेनुं विवरण नीचे मुजब, एक जिननाम कर्म, बीजुं आहारक शरीर अने त्रीजु आहारक अंगोपांग ए त्रण प्रकृतिओ सर्वोत्तम छे, ते नामकर्मनी प्रकृतिओ चोथा गुणठाणाथी ते सातमा गुणठाणा सुधी स्वस्वरूपे वर्तता कदाच सरागताए पोते परिणमि जाय त्या बंधाय छे; वळी बीजी ओगणचालीस प्रकृतिओ पुन्यनी रही तेमा तरतमता घणी छे परतु ते कहेवा बेसीए तो ग्रंथ

मोटो थइ जाय पण परमार्थ ए छे के देवगतिमां वैमानिकथी नीचे नहीं अने मनुष्यमा निर्धन नहीं, यावत् चक्रवर्ति पण थाय, वेदनीमां शाता बांधे, गोत्रमां उंच गोत्र बांधे अने वज्रऋषभनाराच संघयण तथा समचतुरस्त्र संस्थान, शुभवर्णादि चतुष्क, सुस्वर, पुरुषवेद अने आदेय नामकर्म इत्यादि नामकर्मनी प्रकृतिओ, एम अघातिकर्मनी जे शुभ प्रकृतिओ छे ते स्वस्वरूपना राग योगे, विना प्रयत्ने बंधाय छे कारण के कर्मने ग्रहवानो स्वभाव रागमा छे अने स्वस्वरूप विना अन्य कोइ पण वस्तु प्रशस्त नथी. शुद्ध व्यवहार नय पक्षे तो स्वस्वरूपनो राग तेज प्रशस्त छे, अने स्वस्वरूपना राग योगे शुभ आश्रव आवे छे, बंधाय छे, तेनु नाम पुन्यानुबंधि पुन्य छे, माटे अमे प्रशस्त रागने कर्मधारा कहीए छीए, अने शुभाशुभ उपर इष्टानिष्टपणाना अभाव योगे समभाव कहीए छीए. जेटलो समभाव एटलुं ज्ञान, अने जेटलो राग एटलुं कर्म, एम बे धारा भेगी चाले छे दृष्टांत–जेम छाशमां पराशनी धारा जूदी पडे छे अने पराशमां छाशनी धारा जूदी पडे छे, पराशनो भाग वधारे होय त्यां छाश धारा कृष छे, अने छाशनो भाग वधारे होय त्यां पराशधारा कृष छे, जेनो भाग वधारे तेनी धारा पुष्ट छे, एम अहीं पण चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी ज्ञानधारा कृष छे, अने कर्मधारा पुष्ट छे; वळी आठमा गुणठाणाथी क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए, दशमा गुणठाणाना अंत सुधी ज्ञानधारा वृद्धि पामती पा-

मती छेवटे कर्मधारानो अन्नाव थाय छे, उपरात क्षीणमोह वारमा गुणगणे परिपूर्ण ज्ञानधारा एकज छे, तेनु नाम शुद्ध परिणति कहीए छीए, तेने एवंनूत नये समकित कहीए, अने चोथे गुणगणे ग्रंथिन्नेद अवसरे अंशे शुद्ध परिणति थइ, ते शब्दनये समकित छे, ए चोथा गुणगणानु समकित, प्रकृति मिथ्यात्वना नाशथी पामीए, अने शुद्ध परिणतिए समकित गवेखीने कह्युं ते, परिणती मिथ्यात्वना नाशथी पामीए प्रकृति मिथ्यात्वनी स्थीति उत्कृष्टी सितेर कोमाकोमी सागरोपमनी छे, अने परिणति मिथ्यात्वनी स्थीति अनादि सात नागे नवि जीवने छे, वळी शुद्ध परिणतिए समकित क्षीणमोह वारमा गुणगणे कह्यु तेने सादि अनत नागो लागे छे, ते अति शुद्ध क्षायक समकित, वळी यथाख्यात चारित्र, अने वीतराग नाव ए त्रणेनी प्राप्ति समकाळे साथे छे, ते मोहपल्लीनो ध्वस थयां पामीए क्षीणमोह वारमा गुणगणेथी जे जे गुणनी प्रगटता थाय तेनुं नाम आविरनाव छे जे गुणो क्षीणमोह गुणगणेथी प्राप्त थया तेने हवे पलटाववा नथी सिद्धमा एज गुण रूप लागशे, माटे क्षीणमोह गुणगणेथी निश्चय नयनी मुख्यता छे, अने चोथा गुणगणाथी दशमा गुणगणाना अत सुधी शुद्ध व्यवहार नयनी मुख्यता छे शुद्ध व्यवहारना अनावे मिथ्यात्व कहीए, ए परिणतिए नाव समकित कह्यु.

हवे दानादि पाच लब्धि कहे छे. एटले आत्मिक नावनी गुणनिष्पन्नलब्धि चेतनने वे नेदे प्राप्त थाय छे एक

क्षयोपशम भावनी लब्धि, अने बीजी क्षायक भावनी लब्धि, तेमां प्रथम क्षयोपशम भावनी कहे छे' क्षयोपशम भावनी सम्यक् ज्ञानादि गुणलब्धि अधि भेद थयां चोथा गुणठाणाथी वृद्धिये बारमा गुणठाणाना अंत पर्यंत प्राप्ति छे, तेमा चोथा गुणठाणाथी सातमा सुधी किंचित् छे, अने आठमा गुणठाणाथी विशेष छे, परंतु उपशम श्रेणीए जे लब्धि छे ते प्रतिपाति छे, अने क्षपक श्रेणीए जे लब्धि छे ते अप्रतिपाति छे, परंतु अगियारमे बारमे गुणठाणे अति विशेष छे. अहीं कोइ कहेशे के तमे क्षयोपशम भावनी लब्धि अप्रतिपाति कही, अने क्षयोपशम भावने तो हणीने क्षायक भावनी लब्धि प्रगट करे छे, माटे क्षयोपशम भावे तेज प्रतिपाति छे, तेने अप्रतिपाति केम कहो छो? एम पूछे तेनो उत्तर, हे भाइ तमे कह्युं ते वात खरी छे, पण अपेक्षा समजवी जोइए, प्रतिपातिपणु शेनुं नाम छे? के जे गुण निष्पन्न थयो, तेनो नाश थाय अने चेतन जडताने अनुभवे ते प्रतिपाति कहेवाय, परंतु अहींया तो आत्माना गुण सावरण हता ते निरावरण थया, वळी अस्पष्ट परोक्ष भावे हता ते स्पष्ट प्रत्यक्ष भावे थया विनाशी विघ्नसंभवयुक्त हता ते निरविघ्नपणे अविनाशी रूपे थया, माटे अधिकताइ देखीए. न्यूनतानो ज्या संभव नथी तेने अप्रतिपाति कहीए, माटे क्षपकश्रेणीयोगे आठमा गुणठाणाथी आत्मिकभावनो गुण निष्पन्न लब्धि वर्द्धमानपणे अप्रतिपाति छे, परंतु क्षयोपशम भावनी लब्धि प्राये आत्माना सर्व प्रदेशे

नथी, केटलाक प्रदेशे छे अने केटलाक प्रदेशे नथी, अने सर्व प्रदेशे कहीए तो क्षायकसमकितीने कहीये, अथवा क्षपक श्रेणीए कहीए पछी तो बहुश्रुत कहे ते सत्य, अने क्षायक भावनी लब्धि तो आत्माना सर्व प्रदेशे सरखी होय, एटले क्षयोपशम भावनी गुण निष्पन्न लब्धिनो घात कर्त्ता चउघाति कर्मनो उदय छे, तेमा आत्माना सर्व प्रदेशथी मोहनी कर्मनो अभाव क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए दशमा गुणठाणाना अंते सर्वथी उच्छेद रूपे थाय छे, तथा ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अने अतराय ए त्रण कर्मनो अभाव बारमा गुणठाणाना अते सर्वथी समकाळे उछेद थाय छे, अने चारे कर्मनो देशथी अभाव तो चोथा गुणठाणाथी छे. जेटलो घातिकर्मनो अभाव आत्म प्रदेशे छे, एटलुं गुण निष्पन्नपणुं आत्म प्रदेशे छे, ए गुण निष्पन्नपणानो जे समुदाय तेने लब्धि कहीए, तेमा सर्व प्रदेशे घातिकर्मना आवरणनो अभाव थाय तेने क्षायकभावनी लब्धि कहीए, अने आत्माना संपूर्ण प्रदेशथी आवरणनो अभाव न थयो त्या सुधी तेने क्षयोपशम भावनी लब्धि कहीए तेमा जे प्रदेशथी आवरण टळ्युं ते प्रदेशे पाछुं आवरण न लागे, अने ते आत्म प्रदेश निरावरणपणे वर्त्ते वळी जे प्रदेशे आवरण रह्यु छे ते अळगु थतु जाय, एम करतां करता सर्व प्रदेशथी आवरण टळी निरावरणता थाय तेने अप्रतिपाति कहीए अने आवरण अळगु गयु ते प्रदेशे पाछुं आवरण लागे तेने प्रतिपाति कहीए, ए प्रतिपातिपणानो

अभाव थाय तेने अप्रतिपाति कहीए, वळी गुण निष्पन्न-पणा माटे उपर घाती चउकर्मनो अभाव कह्यो. पण जे लब्धिनुं पामवुं ते तो अंतरायकर्मना अभावथी छे, अंतराय कर्मजोगे लब्धिनो अभाव छे, अने क्षयोपशम योगे सभव छे. विघ्ननो संभव छे त्यां सुधी प्रतिपाति कहीए व्याघात विघ्नना अभावे अप्रतिपाति कहीए परिपूर्ण जोगे क्षायक भावनी लब्धि तेरमे गुणठाणे कहीए, ते लब्धि पाच भेदे किंचित् गवेखेछे. अनंतदानलब्धि, अनतलाभलब्धि, अनंत-भोगलब्धि,अनतउपभोगलब्धि अने अनतवीर्यलब्धि ए पाच भेदकह्या, ते अंतराय कर्मनी पाचे प्रकृतिना परमाणु दळनो नाश वीतराग भावे आत्माना असंख्यात प्रदेशथी समकाळे थतां, अनादि संबंधे शक्तिभावे एक एक प्रदेशे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य आदि अनतागुणो तिरोभावीपणे रहेला हता, ते घाती कर्मनो अभाव थतां, सर्व प्रदेश स्वच्छ निरावरण थया, त्यां तिरोभावीपणानो अभाव थयो, अने आविर्भाव प्रगट थयो; एटले जे अनता गुण एक एक प्रदेशे रह्या हता ते सर्व प्रदेशथी समकाळे प्रगट थया, ते गुणरूपदान आ-त्माए ग्रहण कर्युं, अने ते गुणनो दातार पण आत्मा पोते अभेद संबंधे छे, कारण के केवळज्ञान, केवळदर्शन आदि अनंता गुणो शक्तिभावे आत्मामां कारणरूपे हता ते व्य-क्तिभावे आत्माथी कार्यरूपे प्रगट थया, वळी कदाच आ-वरणना क्षयथी प्रगटया एम कहीए तो आवरणनो क्षय करवावाळो पण आत्मा पोते छे, माटे गुणनिष्पन्न दाननो

देवावाळो ग्रहवावाळो अनेद संबंधे आत्मा स्वस्वरूपजत त-द्गत छे, तेने अनंतदानलब्धि कहीए, अने ए अनत चतुष्टयी गुण व्यक्तिजावे न हता, ते स्पष्ट प्रगट जावे कार्य रूपे थया ते लाज आत्माने संप्राप्त थयो, तेने अनंत लाज लब्धि कहीए, वळी केवळज्ञान, केवळदर्शन आदि अनंता गुण जे समये प्रगट थया तेज समये जाणवा देखवा आदि अनंता गुणनो गुण गुण गत जिन्न जिन्न स्वजाव वृत्तिये परमानदपणे पोतेज जोगवे छे, आस्वादे छे, तेमा किंचित् मात्र पण वियोगनु, व्याघातनु अने ठंठाशनु कारण आवरणनो अजाव थता रह्यु नथी परिपूर्णता छे माटे अनत जोग लब्धि कहीए, वळी केवळज्ञान केवळदर्शन आदि अनता-गुणनो वारवार चीरकाळपर्यंत सादि अनंत जागे पोताना गुण समुदायनो अनतो जोग पोतेज जोगवशे आस्वादन करशे, तेमा वच्चे एक समय मात्र पण अंतर पडे नहीं, जोगनो विरहकाळ आवे नहीं, उपसर्ग आदि विघ्न नडे नहीं, निज गुण जोगपणु रोकाय नही, सदा सर्वदा चिरकाल लगे जोग उपजोग परमानंदपणे अनुजवे तेने अनत उपजोग लब्धि कहीए वली-केवळज्ञान केवळ दर्शनआदि अनंता गुणनी अनतो प्रवृत्ति समये समये अजिन्नपणे परिणमवारूप परमानंदपणे अव्याबाधपणे थवारूप चिरकाळपर्यंतगुणगुणगतजेगुणगुणनो जिन्नवृत्तितेमास्फुरणा शक्तिआपवानो तिक्षण वेग विघ्नना अजावेनिरविघ्नपणेसादि अनत जागे जे सामर्थ्य तेने अनत वीर्य लब्धि कहीए, ए

क्षायक भावनी पांच लब्धि कही, ते लब्धि तेरमे गुणठाणे अरिहंतपदे तीर्थंकरकेवळीतथा सामान्यकेवळीबंनेनेसरखी स्थीतिए सरखा भावेछे, कोइने अधिक नथी अने कोइने न्यून पण नथी, वळी ए क्षायकभावनीलब्धि कही ते अमूल्य छे वली अविनाशी भावनीछे, ते पामीने तीर्थंकर केवली तथा सामान्य केवली बहु भव्य जीव प्रत्ये उपदेश करीने बोधिबीज पमाडे छे तेमां तीर्थंकरनुं उपकारीपणुं विशेष छे पोते तर्या छे अने बीजाने तारे छे, मोक्ष नगरे पहोंचाडे छे, कर्म रोगने टाले छे, आधि व्याधि रहित करे छे, ते यथार्थ वात छे; परंतु पोते जे, क्षायकभावनी लब्धि प्रगट करी छे तेने तो पोतेज भोगवे छे, अने, पूर्वकृत कर्म योगे जे भाषावर्गणाना पुद्गल खेरववाना होय ते पूर्वक आत्म सत्ताए अघाति कर्मदल रह्यां छे, ते दळने वचन भाषा प्रयुंजीने खेरवे छे, पोते कर्मदळेना भारथी मुक्त थाय छे, अने पोताना वचनना अनुयायीपणे भव्य जीवने बोधिबीज पमाडी केटलाकने श्रावक श्रावीका करे छे, केटलाकने साधु साध्वी करे छे, अनुक्रमे पोताना बराबरीआ करी मोक्षनगरे पहोचाडे छे, तेमां केवळ ज्ञानीते पोतानी लब्धिरूप निधानमाथी किंचित पण व्यय करवो पडतो नथी परंतु अनतो उपकार करता थका वर्त्ते छे, तेउ आयुष्यने अंते योगरोध करी अयोगी थइ सिद्धि वरे, ते सिद्धनु भाव लिग तो एक छे परंतु द्रव्यलिगे पंदर भेद छे, ते वर्णवे छे. (१) तीर्थ सिद्ध, (२) अतीर्थ सिद्ध,

(३) तीर्थंकर सिद्ध, (४) अतीर्थंकर सिद्ध, (५) स्वयंबुद्ध सिद्ध, (६) प्रत्येकबुद्ध सिद्ध, (७) बुद्धबोधित सिद्ध, (८) स्त्रीलिंग सिद्ध, (९) पुरूषलिंग सिद्ध, (१०) नपुंसकलिंग सिद्ध, (११) स्वलिंग सिद्ध, (१२) अन्यलिंग सिद्ध, (१३) गृहस्थलिंग सिद्ध, (१४) एक सिद्ध अने (१५) अनेक सिद्ध ए पंदर भेद कह्या हवे तेनो अर्थ अनुक्रमे कहे छे. तीर्थ सिद्ध ते चतुर्विध संघ साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका ए चारनु नाम संघ कहीए, तथा गणधरादि व्यवहार प्रवर्त्तन उत्पाद, व्यय, ध्रुव, देशना निरुपण, द्वादशांगी सिद्धांतनी रचना इत्यादि तीर्थनु स्थापन थया पछी जे सिद्धि वरे तेने तीर्थ सिद्ध कहीए, ए पहेलो भेद कह्यो हवे बीजो भेद अतीर्थ सिद्ध कहेता चतुर्विध संघरूप तीर्थनी स्थापना थया पहेला जे सिद्धि वर्या तेने अतीर्थ सिद्ध कहीए, ते मरुदेवा प्रमुख जाणवा, ए बीजो भेद कह्यो हवे त्रीजो भेद तीर्थंकर सिद्ध ते जे तीर्थंकरनी पदवी पामीने एटले तीर्थंकरने घाति कर्मनो क्षय थवाथी अतिशयना खेंच्या चोसठ इन्द्र तथा चार निकायना देवोनो समुदाय ज्या केवळ उपन्यु होय त्या आवीने समवसरणनी रचना अशोक वृक्ष आदि अष्ट प्रातिहार्यादि ऋद्धिये युक्त करे, तेमने असंख्यात कोडी देवो तथा मनुष्यो तिर्यंचो सर्वे सेवे बार पर्षदाना समुदाय पूर्वक चोत्रीस अतिशय अने पात्रीस वाणीना गुणे युक्त, बार गुणे विराजमान अने अढार दूषणोये रहित थका त्रिपदी देशना देइ अनेक भव्य जीवोने बोधिबीज पमाडी

चतुर्विध संघनु स्थापन करी आज्ञाए प्रवर्त्तावी अनेक जीवने संसार निस्तार करी मोक्ष गतिए पहोचाडीने पोते सिद्धि वरे तेमने तीर्थंकर सिद्ध कहीए, ए त्रीजो भेद कह्यो. हवे अतीर्थंकर सिद्ध ते तीर्थंकरनी पदवी पाम्या विना सामान्य केवळी थइने सिद्धि वरे तेमने अतीर्थंकर सिद्ध कहीए ए चोथो भेद कह्यो हवे पाचमो भेद स्वयंबुद्ध सिद्ध ते स्वयंबुद्धना बे भेद एक तो तीर्थंकर जे थया थायछे अने थशे ते सर्व स्वयंबुद्ध जाणवा,अने बीजा तीर्थंकर विनाना,स्वयंबुद्ध तेना बे भेद एक तो पूर्व भवनु बोधिबीज लइने आवे छे एटले कोइ अप्रतिपाति क्षयोपशम भावनुं समकित लइने आवे अने कोइ क्षायक भावनुं समकित लइने पण आवे, ते बेउने मतिश्रुत ज्ञान तो नियमा होय अने कोइ अवधि ज्ञान पण पूर्व भवनु लइने आवे छे वळी तेओ पूर्वना त्रीजा भवे अगिआर अंग सूत्र आदि भणेला होय तो तेनु स्मरण आ वर्त्तमान भवे पण कोइने होय, ए पहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो भेद पूर्व भवनुं बोधिबीज लइने आव्या नथी, वळी आ वर्त्तमान भवे आचार्य उपाध्याय अने साधु आदि ज्ञाता पुरुषनो उपदेश पामीने पण बोध पाम्या नथी, वळी कोइ पर प्रत्यय कारणथी पण बोध पाम्या नथी. स्वप्रत्ययथी जेओ बोध पाम्या ते कपिल ब्राह्मण लाभना कारणथी,अने अनाथि मुनि रोगना कारणथी वळी कोइ जाति स्मरण ज्ञान पामवाथी, इत्यादी कारणे पोताना स्वभावने प्रगट करे, ए बीजो भेद. एम पोते पोताथी

बोध पामीने सिद्धि वरे तेने स्वयंबुद्ध सिद्ध कहीए, ए पांचमो भेद कह्यो हवे छठो भेद प्रत्येक बुद्ध सिद्ध ते कोइ प्रत्यय देखीने बोध पाम्या. जेम करकंडु मुनि वृषभने जराकुळ देखीने तथा नमीराजा चुडीना खळभळाटथी इत्यादि कारणे बोध पामीने सिद्धि वर्या, तेमने प्रत्येक बुद्ध सिद्ध कहीए, ए छठो भेद कह्यो हवे बुद्ध बोधित सिद्ध ते सर्वज्ञनो, वळी गणधरादि गीतार्थ, आचार्य, उपाध्याय अने साधु आदि बुद्ध कहेता पण्डित पुरुषोना मुखथी उपदेश सांभळीने बोध पामी सिद्धि वर्या तेमने बुद्धबोधित सिद्ध कहीए, ए सातमो भेद कह्यो हवे स्त्रीलिंगसिद्ध ते स्त्रीना वेदनुं चिन्ह जे आकार, तेने लिंग कहीए, तेना वेद विषयनो क्षपकश्रेणीए नवमा गुणठाणे क्षय करी आकाररूप लिंग छते केवळ पामी सिद्धि वरे अहीं कोइ दिगम्बर मति एम कहे छे के स्त्री केवळज्ञान पामे नहीं अने सिद्धि वरे नहि, कारण के स्त्रीनी जाति अशुद्ध छे तेथी शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र न साधे, तेनो उत्तर हे भाइ ! स्त्री पुरुष अने नपुंसक ए त्रणे वेद मोटे जता नथी वेदना विषयनो नाश करी अवेदी थइ आकार मात्र रह्यो, तेमां अशुद्धपणुं कहेवाय नहि, परंतु अशुद्धपणुं गणीए तो त्रणे वेदमा रह्युं छे, कारण के पूर्वकृत कर्मजनित त्रणे वेद छे, अने कर्मना बळे विषयरूप अशुद्धता छे, ते विषयनो मूळथी उच्छेद नवमा गुणठाणे करी यावत् सर्वज्ञ थइने सिद्धि वरे. त्यारे दिगम्बर कहे छे के स्त्री ज्ञान दर्शन पामे, पण शुद्ध चारित्र न पामे

कारण के एने वस्त्रनो परिग्रह होय छे माटे निर्ग्रंथ पद न लाधे. तेनो उत्तर, हे भाइ, परिग्रह तो मूर्छाने कहीए छीए ज्या मूर्छा नथी त्या परिग्रह मान्यो नथी अने जो आपणे वस्त्रने परिग्रह मानीए तो सिद्धातथी विरुद्धता थाय,अने गृहस्थ लिंग सिद्ध आदि भेद जुठा पडे, कारण के भरत-राय चक्रवर्तिपणानी ऋद्धिना आरंभमा रह्या थका आरिसा भुवनमां केवळज्ञान पाम्या मूर्छानो अभाव थयो त्यां चक्र-वर्तिपणानी ऋद्धिनो महा परिग्रह ते पण केवळज्ञान पा मतां नडयो नहि तो शु वस्त्रनो परिग्रह चारित्र पामता वा केवळज्ञान पामता आडो पडदो करशे ? माटे विचारी जुओ के मूर्छा एज परिग्रह छे वळी तमारा मतनो भगवती सार नामे ग्रंथ छे, तेने विषे साधुने वस्त्र राखवानी हा पाडी छे, माटे जे वस्त्र छे, ते तो चारित्रना उपगरण छे ते परिग्रह कहेवाय नहि एम करता जो वस्त्रने परिग्रह मानशो तो तमो चमरी गायना केशनो पीछी वा मोरपीछी आदि राखो छो तेने परिग्रह मानवो पडशे दिगम्बर उवाच-पुरुष सातमी नरके जाय छे पण स्त्री जती नथी, एटलुं स्त्रीनुं वीर्य ओछुं छे,तो ओछुं वीर्य छतां मोक्ष शीरीते जशे? तेनो उत्तर हे भाइ। स्त्री सातमी नरके जाय नहि एम तमे कह्यु ए वात खरी छे पण तेनुं कारण समजो के तेने संग्राममा युद्धादि विपरित काम करवानुं नथी, वळी खेती कर्म, जमीन फोडवानुं नथी, इत्यादि अति आकरुं विपरीत कर्त्तव्य स्त्रीने नथी, ए विपरीतनो कर्त्ता तो पुरुष छे, तेथी पुरुष सातमी नरके

जाय अने स्त्री जाय नहि, पण छठी नरक सुधी तो जाय छे, परतु कइ एवो नियम नथी के जे सातमी नरके जाय एज सिद्धि वरे जो एम होय तो जळचर मच्छ सातमी नरके जाय छे तेनी मुक्ति थवी जोइए, पण आ काळमा मच्छ जातिनी मुक्ति थती नथी, वळी काइ एवो नियम नथी के अधोगतिए जे अधिक छे ते उर्द्ध गतिए अधिक होय, अने अधोगतिए न्यून होय ते उर्द्ध गतिए न्यून होय. एम अधोगतिनु अने उर्द्ध गतिनुं सरखापणुं शी रीते मेळवी आपशो ? जुओ के भुजपरिसर्प घो नोळीआ आदि बीजी नरक सुधी जाय छे, अने खेचर पंखी, सींचाणा समळी आदि मासाहारी त्रीजी नरक सुधी जाय छे अने थलचर जे चोपगा वाघ, सिंह, चित्रा, कुतरां, बिलाडां आदि चोथी नरक सुधी जाय छे,अने उरपरि सर्प ते काळा, धोळा अने कावरा नाग अने वळी अजगर आदि पाचमी नरक सुधी जाय छे,अने जळचर मच्छादि सातमी नरक सुधी जाय छे एम अधोगतिए तिर्यंच पचेन्द्रिनी पाचे जातिमां अधिक न्यूनपणे भिन्नता छे अने उर्द्ध गतिए तो ए पाचे जातिवाळा आठमा सहसार देवलोक सुधी जाय छे ते वातने विचारी जूओ के भूजपरिसर्प आदिने अधोगतिए जवानु वीर्य थोडु छे तो उर्द्धगतिए जवानो अधिकनाइ तेनामां क्याथी आवी? वळी जळचर मच्छादिमा अधोगतिए जवानुं वीर्य अधिक छे तो उर्द्धगतिए जता तेनामा न्यूनता क्याथी आवी अधोगतिए जवानु विपरीत कृत्य अने उर्द्धगति-

ए जवानुं सुकृत कृत्य करवावाळा तो एना एज जीवनी जाति अने तेमनुं वीर्य पण एनुं एज ठे ते विचारी जुत्र, अने हठ कदाग्रह ठोमी दो के अधोगतिए जवानी शक्ति उंठी होय तेनामा उर्द्ध गतिए जवानी शक्ति अधिक पण होय ठे, ए अपेक्षाये स्त्री सातमी नरके जाय नहीं पण मोक्षे तो जाय ठे दिगम्बर उवाच--जुत्र के स्त्रीने वासुदेवनी, प्रतिवासुदेवनी, वळदेवनी चक्रवर्तिनी इत्यादि पदवी नथी; वळी पूर्वधरपणानु श्रुत पण होतु नथी, वळी जंघाचारण विद्याचारणपणानी लब्धि पण पामे नहीं, इत्यादि कारणे स्त्री हीण ठे ते ठतां यथाख्यात चारित्र, वळी केवळज्ञान, केवळ दर्शन आदि क्षायकजावनी लब्धि ए हीणने केम प्राप्त थशे के ते सिद्धि वरे? माटे स्त्रीनी मुक्ति थाय नही.तेनो उत्तर- -हे जाइ वासुदेवादिक पदवीनु पामवु स्त्रीने नथी, तमे कह्यु ते वात खरी ठे तेथी काइ सिद्धि वरवुं वंध थाय नही, कारण के ए पदवीनु पामवु ते तो पूर्वकृत कर्मनां फळ ठे, जेणे उपार्ज्युं होय ते पामे ठे, अने मुक्तिनु पामवु ते कर्म वंधमां नथी मुक्ति तो कर्मनो नाश करवाथी मळे ठे अने कर्मनो नाश तो अकरण वीर्य जे आत्मानी सहज शक्ति, तेने फोरववा थाय ठे ए शक्ति तो मनुष्यना जवमां स्त्रीने होय तेथी सिद्धि वरे ए वात सत्य ठे वळी तमे पूर्वधरपणाना श्रुतनुं कह्युं ते स्त्रीने होतु नथी ते वात खरी ठे, तेथी कंइ सिद्धि वरवुं वध थाय नहीं कारण के चौद पूर्वधरपणानुं श्रुत ठे तेनु नाम द्रव्य ज्ञान ठे, वळी

पूर्वना ज्ञाननो उपयोग पण सातमा गुणठाणा सुधी खप लागे छे पूर्वधरपणाना श्रुत वळे त्रण काळमां कोइए श्रेणी मांडी नथी, तो आगळ ए पूर्वधरपणाना बळथी अपूर्वादि गुणठाणे शी रीते जशे? श्रेणीगते तो अतरगत सहज जावनो उपयोग खप लागे छे मोहपल्लीनो ध्वस करवा माटे पूर्वना श्रुतनो पाठ खपमां आवतो नथी, अने द्रव्यश्रुत पण खप लागतु नथी, त्यां तो अरूपी आत्माने तादृश देखाम्वा वाळी एकत्व जावनी तीक्ष्ण उपयोगरूप अनुजव रुरूप धारा खप लागे छे, ए वीर्य तो स्त्रीमां होय छे, माटे सिद्धि वरे वळी तमे कह्यु के चारणादि लब्धि स्त्रीने होती नथी, ए वात खरी छे तेथी काइ स्त्री मोक्षे न जाय एम कहेवाय नही, कारण के ए शक्ति तोतेमना करता देवगतिए बारमा देवलोक पर्यंत देवताउने सर्व वाते घणी अधिक छे, माटे तेमनी मुक्ति थवी जोइए, पण ए देवताउ तो अधिक शक्ति छता त्रण काळमां पाचमु गुणठाणुं पामी शकता नथी, परंतु बिचारा वगमामां रहेनारा घास तरणा आदिनुं जक्षण करवावाळा पशु तिर्यंच सन्नि पचेंद्रि ते पाचमु गुणठाणु पामे छे तेमने अगिआर व्रत सुधी विरति परिणामी कह्या छे, तेउ आयुष्य खुटे काळ करीने हीण शक्ति छता पण स्वर्गे आठमा देवलोक सुधी जइ शके छे अने अधिक शक्ति छता देव देवेंद्रने काळ करवाथी स्वर्ग गति बीजा जवे मळती नथी वळी तमे जंघाचारण विद्याचारण कह्या, ते मुनि लब्धिने फोरवता छता तो छठुं गुणठाणु उळगीने सातमा गुणठाणे

जइ शकता नथी. एटले लब्धि फोरवे छे ते वखते अप्रमत्त सातमुं गुणठाणुं ए मुनिराजना सामी पुंठ करे छे, अने सन्मुख दृष्टि करी आदर सत्कारे बोलावतुं पण नथी. ज्यारे ए मुनिराज ए लब्धिने पुंठ आपे छे एटले फोरवता नथी त्यारे अप्रमत्त स्थानक, आदरथी तेडुं मोकली ए मुनिराजने बोलावी ले छे, तो ए लब्धि फोरवता छता उपर शी रीते जशे ? कारण के उपरनां तो जे जे गुणठाणां छे ते सर्वे अप्रमत्त छे, माटे सिद्धि वरवामां ए लब्धिनी अपेक्षा कामनां आवती नथी एक आत्मिक शक्ति काम लागे छे. ए शक्ति तो स्त्रीमां होय माटे स्त्री मोक्षे जाय ए सत्य वचन छे, ते कबुल करो एम करतां जो अमारुं कह्युं न मानो तो तमारा मतनो गोमटसार नामे ग्रंथ छे तेमां स्त्रीने सिद्धि वरवानुं कह्युं छे ते गाथा.

अठ्याल पुवेया, इत्थि वेयाय हुंति चालीसा
वीस नपुंसग वेया, समयेगेण सिझंति ॥ १ ॥

ए स्त्री लिंग सिद्धनो आठमो भेद कह्यो हवे पुरुष लिंग सिद्ध ते पुरुषवेदना विषयने छेदी उच्छेदी लिंग आकारे सर्वज्ञ थइ सिद्धि वरे, तेने पुरुष लिंग सिद्ध कहीए.ए नवमो भेद कह्यो हवे नपुसकलिंग सिद्ध ते नपुंसकना बे भेद, एक जन्म नपुंसक अने बीजो कृत्रिम नपुंसक, तेमां जन्मनपुंसकनी सिद्धि थाय नहीं अने कृत्रिम नपुंसक सिद्धि वरे तेने नपुसकलिंग सिद्ध कहीए, [illegible] प्रमुख सिद्धि वर्या.

ए दशमो भेद कह्यो हवे स्वलिंग सिद्ध ते जैनलिंग ग्रहीने क्षायक लब्धि पामी सिद्धि वरया ते जैन लिंगने स्वलिंग सिद्ध कहीए, ए अगियारमो भेद कह्यो हवे अन्य लिंग सिद्ध ते जैन लिंग वर्जिने बाकी अनेक दर्शनवाळा पोतपोताना लिंग छते पोतीका स्वभावने प्रगट करी विभावने उछेदी सिद्ध थया तेने अन्य लिंग सिद्ध कहीए ए वल्कल चिरि- आदि आर्य अनार्य क्षेत्रथी सिद्ध थया ए बारमो भेद कह्यो हवे गृहस्थलिंग सिद्ध ते गृहवासमां रह्या थका सं- सार त्याग नाम नहीं धरावता पोतानु तत्व प्रगट करीने सिद्ध थया, ते मरुदेवा प्रमुखने गृहस्थलिंग सिद्ध कहीए. ए तेरमो भेद कह्यो. हवे एक सिद्ध ते एक समये एक सिद्धि वरे तेने एक सिद्ध कहीए ते गजसुकमाल आदि जाणवा ए चौदमो भेद कह्यो हवे अनेक सिद्ध ते एक समये जघन्यथी एकसो ने त्रण अने उत्कृष्टा एकसो ने आठ सिद्धि वरे, त्या सिद्धि वरवानो सिद्धगति आश्रीने छ मासनो विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी सत्ताणु अने उ- त्कृष्टा एकसो ने बे एम बे समय लागट सिद्ध वरे तो छ मासनो विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी पच्यासी अने उत्कृष्टा छन्नु एम त्रण समय लागट सिद्ध वरे तो छ मा- सनो विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी त्होतेर अने उत्कृष्टा चोरासी एम चार समय लागट सिद्धि वरे तो छ मासनो विरहकाळ पडे, वळी जघन्यथी एकसठ अने उत्कृष्टी बोतेर एम पाच समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो छ मासनो

विरह काळ पके. वळी जघन्यथी ठंगणपचास अने उत्कृ-ष्टा साठ एम ठ समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो ठमासनो विरह काळ पके, वळी जघन्यथी तेत्रीस अने उत्कृष्टा अरुताळीस एम सात समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो ठ मासनो विरह काळ पके, वळी जघन्यथी वे अने उत्कृष्टा बत्रीस एम आठ समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो ठ मासनो विरह काळ पके. एम सिद्ध गति आश्रीने ठ मासना विरह काळनो अधिकार कह्यो, वळी तेथी ओठो अधिको विरह काळ सिद्ध गतिये सिद्धि वरवानो पके ठे, ते अधिकार घणा प्रकारे ठे, ते सिद्धांतथी वा बहुश्रुत गीतारथना मुखथी निर्णय करजो. ए अनेक सिद्धनो पंदरमो ज्ञेद कह्यो. हवे सिद्धपदनी साधना करवा माटे खेतरमां वृक्षनो दृष्टांत कहे ठे जेम जमीन ठे तेम ससारी जीवो ठे, ते जमीनमां जेम खारो पाट ठे तेमां बीज वावीए ते वृथा जाय अंकुरो फुटे नहीं; तेम अन्नवी जीवो ठे, ते धर्म करणी तो करे परंतु समकित पामे नहीं, बोधिबीजरूप अंकुरो न फुटे, तेनुं धर्म साधन, समकितादि गुण निष्पन्न करवानी अपेक्षाए वृथा ठे हवे खारा पाटना अन्नावे बीजी पृथ्वी घणी ठे तेम न्नवी जीवो पण घणा ठे, त्यां सत्य नपदेश रूप बीज वावीए तो अंकुरो फुटे, परंतु ते क्षेत्रनी जमीनने अवश्य वारु करवी जोइए, ते अहींआ न्नवी जीवने कायादियोगथी अशुन्न कृत्यनुं संकोचन करी शुन्न प्रवृत्ति करवी, एटले अविरति परिणामने ‵‵ विरति परिणामनुं आदरवुं;

तेने वाम समजवी. हवे क्षेत्रमा वीज वाववुं छे ते वीज तो जे सद्गुरुनो सप्त नयाश्रित स्याद्वाद गर्भित द्रव्य पर्याय नी ठगनारूप उपदेश वाणी तेनु श्रवण करवाथी मननकरवाथी अने परिणाम पामवाथी, जो हेय उपादेय बुद्धि घटमां प्रगट थाय, तो त्यां निजपरनो भेद पमे छे, घटमां ज्ञान आवे छे, कायाथी आत्मा जूदो जासे छे, अने आत्माथी काया जूदी जासे छे मन वचन अने कायाने हेय एटले तजवा योग्य ठोमवा योग्य जाणे छे, अने ए त्रण योगना वेपारमां अहकर्त्तापणु पोते माने नहीं जमनो कर्त्ता जम छे अने आत्मा तो जाणवा देखवा रूप चेतन कार्यनो कर्त्ता छे, एम बीजा अपूर्वकरणने जावतो थको वर्त्ते, त्यां बाह्यदृष्टि टळी जाय अने अतर दृष्टिये प्रवृति करे, स्वस्वरूप रमण करे, अनुजव करे त्या वस्तुगते वस्तुपणुं समजे, विजाग वहेंचण करी जाणे, तेथी जीव बीज फाटीने बे फाम पोताना सहज वीर्यनी स्फुर्णाये ऋजुसूत्रनये वर्तता थाय, तेने जेद ज्ञान कहीए ठीए त्यां हवे अकुरो फुटवानो संजव छे, परतु अकुरो फुटवामा यथास्थित मनजोगनी स्थिर वृत्ति जोइए, त्यारे परिणतिए अकुरो फुटे, परतु ठोम थयो नथी, तेम पत्र पण आव्या नथी ए तो क्यारे आवे ? के ग्रंथि जेद शब्द नयप्राप्तिये करे त्या शुद्ध परिणतिनो अश प्रगट थाय, तेनुं नाम समकितनो ठोमछे, तेने सम्यक्ज्ञानअने सम्यक्दर्शन रूप तो बे पत्र आवे, ते ठोमने वृद्धि करवी त्या दृढ वामनी मजबुती जोइए, नहीं तो व्याघात लागवाथी ए वृक्षनी हानि थवानो-

संज्ञव श्रावे, तेम करतां अनुक्रमे वृक्ष वृद्धि पामतुं पामतुं व्याघातना अज्ञावे वाम्रीथ्रा वहार नीकळी जाय त्यारे विघ्ननो अज्ञाव थाय, ते क्षायक समकित ज्यारे आत्मा पामे, त्यारे वृक्ष वाम्रीथ्रा वहार नीकल्युं एम कहीए, परतु हजी फल्युं नथी, ते फळ तो क्यारे आवे? के ज्या सुधी ए वृक्ष क्षयोपशम ज्ञावरूप पृथ्वीनो रस खेंचीने पोताना थम्रपणे, शाखापणे, प्रतिशाखापणे, पत्रपणे इत्यादि पणे परिणमावे ठे त्यां सुधी तो फळ श्राववानुं नथी, परंतु फळनी योग्यतापणे ए रस परिणमे ठे, ते परिणमन श्रोतु करीने प्रथम तो फूलरूपे परिणमावे एटले श्राठमा गुणठाणे जइने श्रेणी मांमे तेने फूल समजवुं, ते श्रेणी वे प्रकारनी ठे, एक उपशम श्रेणी अने वीजी क्षपक श्रेणी, ए वन्ने श्रेणीए परिपूर्ण पुष्पनी घटा फुली विकस्वरपणाने पामे ठे, परंतु उपशम श्रेणीवाळाने मोहनीय कर्मनी सर्व प्रकृति श्रात्मसत्ताए साबित रही ठे, ते प्रकृतिश्रोनो, उपशम ज्ञावनी स्थितिनी पूर्णताए उदय थाय, ते जोगे कवानो पवन लागे ठे, तेथी फूलमां मगीश्रो थइने खरी पमे ठे, ए फळ वेठुं पण वृद्धि पामतुं नथी, अने क्षपक श्रेणीवाळाने तो व्याघात विघ्ननो संज्ञव नथी, माटे फळ वेसे ठे अने वृद्धि पामे ठे, ते फळ वेठुं एम क्यारे जाणीए के दसमा गुणठाणा अंते मोहनीयकर्मनो ध्वंस करी श्रात्मप्रदेशथी मोहनीय कर्मनी प्रकृतिना परमाणुदलनो घेरो उठे त्यां फळ वेठुं एम कहीए. ते फळ ए शु ठे तो व . व क्षीणमोह वारमु गुणठाणुं·

निष्पन्न थयु त्यां मोक्षफळ वेढुं, ए वात यथास्थित छे, अने तेरमे गुणठाणे अरिहंतपदे अनत चतुष्टयी निष्पन्न थाय एटले फळनी शाख थइ फळ परिपक्क थयुं एम कहीए, अने ते फळ अयोगी चौदमा गुणठाणा अंते वृक्षथी तूटी वींटथी अळगु थयु, एटले आत्माने सर्वथा प्रकारे कायानो अने कर्मनो सग तुटयो त्यां मुक्ति थइ चुकी एम जाणीए ए दृष्टात पूर्वक जे पुरुषो साधन करे छे, ते परिपूर्ण सिद्धता रूप कार्य प्रत्ये पामे हवे समकित पामवा आश्रीने मगनु दृष्टात कहे छे जेम मग धान्यने जळमा नांखीने भीजावीए, ते मगमां केटलाएक भीजे अने केटलाएक भीजता नथी, कोरडु रहे छे, ते दृष्टांते जीवने उपदेश करीए तेमा कोइ वीरला उपदेश पामे छे वीजा पामता नथी, ते मगना दृष्टाते कोराने कोरा रहे छे, एटले जळ छे ते मगनी अंदर परिणमतुं नथी, तेनु कारण ए छे के कोरडु मगमां जळने चूसवानो स्वभाव नथी जे मग जळने चूसे छे तेज भीजे छे, न चूसे ते भीजता नथी, तेम गुरु रायनो उपदेश श्रवण करीने मनन करे चिंतवन करे अतर्गत भावार्थने परमार्थपणे परिणमावे, अनुभव करे, एम अत करणे उपदेश रूप जळ परिणाम पामे तो ग्रथि भेद करी बोधि बीज रूप समकित पामे, नहीं तो साभळी साभळीने थाके, गुरुराय उपदेश करीने थाके पण कोरडु मगवत् बोध न पामे. हवे जे उपदेश नथी पामता ते कोरडु मगना दृष्टाते अभवी जीव छे, ते अभवीना बे भेद, एक स्थीति अभव्य अने

बीजा स्वन्नाव अन्नव्य हवे स्थीति अन्नव्य ते कोने क-
हीए?के जे न्नवी जीवो ठे परंतु कृष्णपक्षीया बहुल संसारी
होय तेने स्थीति अन्नव्य कहीए जेम कोररु मग न होय
तो पण नवा मग होय ते कोररु रहे अने जुना थाय
एटले न्नीजाव्या न्नीजे, ए दृष्टांते जे न्नवी जीवो ठे तो
पण ससार स्थीति घणो काळ बाकी ठे, अर्द्ध पुद्गल प-
रावर्त्तनी माहेली कोरे आव्या नथी ते जीवो समकित पा-
मवाने अयोग्य ठे, माटे नपदेश कर्त्तानो श्रम लेखे शी रीते
आवे? अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनी योग्यतामा जे पुरुषो ठे, ते
गुरुरायनो नपदेश श्रवण करी मनन करीने बोधिबीज पामे,
बीजा न पामे, पण न्नवी ठे, माटे काळ आवे पामशे, तेने
स्थीति अन्नव्य कहीए, अने जे स्वन्नाव अन्नव्य ठे तेने
तो त्रण कालमा नपदेश तद्गत नज परिणमे, एटले सम-
कितनी प्राप्ति न थाय एम अन्नव्यना बे न्नेद कोररु म-
गना दृष्टांते कह्या हवे द्रव्यन्नाव न्नेदे जीव तत्वनी ळंळखाण
संक्षेपे कहे ठे ग्रंथि न्नेदना अन्नावे द्रव्य जीव कहीए, अने
ग्रंथि न्नेद कीधो त्याथी न्नाव जीव कहीए ते ग्रंथि न्नेदी
जीवना बे न्नेद, एक समकित पामीने पाठा मिथ्यात्व गु-
णठाणे गया तेने आरोपित न्नाव जीव कहीए, एटले नपर
मिथ्यात्वनुं दळ ठवराइ गयुं तेथी वस्तुगत जे यथार्थ न्ना-
वनी तत्व अतत्व न्नेदे श्रद्धा हती ते गइ, कारण के जे
श्रद्धा ठे ते तो तद्गत स्वस्वरूपना नपयोग जोगे ठे, ते न-
पयोगनो अन्नाव थयो एटले तेनी साथे श्रद्धानुं विपर्यास-

[illegible] [illegible] उत्तराऊमां कह्यु ठे के

[illegible] नये निज सत्ता जोतो इहतो धर्म,

शुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नव कर्म ॥ ८ ॥

अर्थ-[illegible] नर जीव पामे त्यारे सम्रविजाग वहेंचे, [illegible] [illegible] स्व शुं ठे अने पर शुं ठे? तो प्रथम मन [illegible] अने [illegible] ए त्रण जोग, वळी कायाने विषे पांच इंद्रि [illegible] ठे, अने तेमां व्यापकपणे जाणग गुण [illegible] चेतना परिणाम पामीने रही ठे, ते स्व ठे, एटले जाणग चेतना गुण ते जीव पोते ठे परंतु संगागीपणे परने जजे ठे, ते विजाग वहेंचण थतां परने जजवुं वंध थाय, अने त्रणे जोगथी, वळी पाच इंद्रिथी पोतानी चेतनाने पलटावी तद्गत परिणमावता स्व स्वरूपने जजे अने समाधि पासे त्या उपाधि अळगी थाय निज सत्ता जोतो कहेता त्यां पोतानी आत्म सत्ताने जोतो एटले वस्तुगत जावनो उपयोग करे त्या वस्तुगते ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्यादि लब्धि अनती अनती अनादि सवंधे सत्तागत कारणरूपे विरूपणे रहेली, ते नजरे आवी, उपयोगे निहाळी, दृष्टि प्रत्यक्ष करी, त्यारे इहतो कहेता ए वीर्यादि लब्धिने व्यक्तिजावे प्रगट करी दान, लाज, जोग, उपजोग करवाने रमीक थयो थको चाहता करे ठे, इच्छे ठे ए लब्धिनुं पामवु एज धर्म कहेता मारो धर्म ठे, वळी हु केवो ठु तो शुद्ध कहेता निर्मळ, एटले कर्मरूप मळ थकी रहित, वळी अरुपी कहेतां वर्णादि पुद्गलदशाना रुप थकी रहित, अने चेतन कहेता ज्ञानादि

चेतनारूप लक्षणे करीने सहित, एम अतींद्रिय स्वरूपने अनुभवतो थको, समभावे वर्त्ते त्यां अणग्रहतो नवकर्म कहेतां चेतन कर्मदळ परमाणुने लेवापणे अणग्रहतो कहेतां शुभाशुभ आश्रवरूपे पण ग्रहे नही, एम कह्युं त्यां कर्मबंध केम संभवे, अर्थात् न संभवे, पण अनंती निर्जरा थाय, ए वात सत्य छे. गाथा ॥ ८ ॥

इण परें शुद्ध सिद्धात्मरूपी, मुक्त परशक्त
व्यक्तअरूपी ॥ समकिती देशविरति
सर्वविरति, धरे साध्यरूपे सदातत्व प्रीति ॥ ए ॥

अर्थः— इण परे कहेता पूर्वे गवेख्यो तेवो, वळी केवो छे तो शुद्ध कहेतां कर्म आवरण लेपथकी रहित, वळी केवो छे तो सिद्धात्मरूपी कहेता द्रव्यास्तिक नय पक्षे जीव, सत्ताए सिद्ध समान अरूपी छे ते पर्यायास्तिक नये उपयोग करता अनुभवरूप भासनमां आवे छे, स्वस्वरूप रमणीपणे अनुभवाय छे अनुभव भूवने भावसूर्य ज्ञानभानु उदय पाम्यो छे, अनतो प्रकाश तेजोमय खुल्लो आकाश, प्रयुल सपाट वगीचो छे, आडो पडदो पण नथी, समाधि स्थान छे, अहीं पोतानो आत्मा शिव स्वरूप छे. मुक्तपर कहेतां पर एटले अनंतो कर्मनी वर्गणाओ आत्म प्रदेशे लागेली, तेथी मुक्त कहेता आत्मा मुकाय छे, एटले छुटे छे, निर्जरे छे त्या शक्तव्यक्त अरूपी कहेतां अनंता गुणपर्याय पोतानी आत्म सत्ताने विषे अनादि संबंधे शक्तिभावे तिरोभावि-

पणे रहेला ते, व्यक्त कहेता व्यक्ति जावे अरुपीपणे प्रगट थता जाय छे, एम ज्ञासन रमण कोण करे छे ? तो समकिती ते चोथा गुणठाणाना जीवो ने देशविरति ते पाचमा गुणठाणाना जीवो, अने सर्व विरति ते छठा गुणठाणाथी मांमीने उपरना स्थानके वर्त्तवावाळा ते महात्मा सर्वे. धरे साध्यरुपे कहेता शब्द नयना ग्राहक थइने छती पर्याये रहेलो धर्म तेने साध्यरुपे एटले उपयोगे करीने ध्यानगत सदा कहेता आतरा रहितपणे चितवे, अनुजवे, तत्वप्रीति कहेतां शुद्धात्म तत्वने जेद अजेदरुपे चितवी अनुजवीने सामर्थ्य पर्यायरुपे अजेदता करे त्या कर्मबध न सजवे. वळी जसविजयजी उपाध्याय कृत अध्यात्म सार ग्रंथे वीजा अधिकारे श्लोक

अपुनर्बंधकाद्याव, गुणस्थान चतुर्दशं ॥
क्रमशुध्दि मति स्तावत्, क्रियाऽध्यात्म मयी मता॥४॥

ए श्लोकमा पण चोथा गुणठाणाथी अपुनर्बंध कह्यो छे परतु शब्द नयनी प्राप्तिना अजावे मिथ्यात्वी थको जीव कर्म प्रत्ये बाधे, ते अधिकार हवे अध्यात्म गीतानी साक्षीये कहे छे

काळ अनादि अतित अनते जे पररक्त ॥
संगागि परिणामे वर्त्ते मोहाशक्त ॥
पुद्गल जोगे रिझ्यो धारे पुद्गल खघ ।
परकर्त्ता परिणामे वांधे कर्मना वध ॥ १२ ॥

अर्थ.—"काळ अनादि अतित अनंते जे पररक्त" कहेतां, अतित एटले गयो काळ, तेपण ठेमारहित ठे केवळीना वचने काळनी आदि नथी, माटे अनादि सवधे जीवने पर पुद्गलादि विजाव दशाने विषे रक्त परिणाम वर्त्ते ठे, ते अनादि संबंधे जीवने निगोद गति जाणवी. त्यां जीवे अनंतां पुद्गल परावर्त्त कर्यां, अनंतां डुख.सह्यां, ते शेणे करीने ? तो कहे ठे के संगागी परिणामे वर्त्ते, मोहासक्त कहेता संगांगी एटले जीवे कर्यो अन्य सग, त्यां मोहे आप्युं निज अग तेथी करीने जीव पोतानुं अंग अतींड्रिय स्वरूप तेने चूल्यो अने पर वस्तु ते उदारिकादि काया तेने मोह वशे आसक्तिये पोतानी मानी अने तेना स्पर्शआदि जोगमां रीऊयो, एटले जेम जेम पुद्गलना विषय जोग मिले तेम तेम जीवने अधिक रीऊ उपजे, वल्लच लागे एज परिणतिए सरागता ठे, तेने अशुद्ध परिणति कहीए ठीए, तेथी एटले रागद्वेषनी चीकाशे करीने; "धारे पुद्गल खंध" कहेता पुद्गलना खंध ते कार्मण वर्गणाना, अनंत प्रदेशी खंध प्रत्ये आकर्षिने एटले आश्रवरूपे खेंचीने मेळववा मारुया, अने तेनी वांच्छारूप परिणाम वृत्तिए चेतन परनो कर्त्ता थयो थको ज्ञानावर्णादि आठे कर्मनी वर्गणाउ ते आत्माना प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, ऐक्यतापणे बांधे. एम निगोदादि स्थावर गतिमा अव्यक्तपणे जाणवुं ॥१४॥

बंधक वीर्यकरणे उदेरे
विपाकी प्रकृति जोगवे दल विखेरे ॥

कर्म उदयागता स्वगुण रोके
गुण विना जीव भवोभव ढोके ॥१३॥

अर्थ–"बधक वीर्य करणे उदेरे" कहेता जे वळ वीर्य शक्तिये नवा नवा कर्मनो बध करवापणे प्रवर्त्ते,ते वीर्यने बधक वीर्य कहीए, अने करणे कहेता स्थावर गतिमा एक स्पर्श इंद्रि अने विकल त्रिकमां बीजी रस, त्रीजी गध अने चोथी चक्षु साथे चार इंद्रि, अने पंचेंद्रि असन्निमा श्रोत इंद्रि साथे पाचे इंद्रि, अने सन्नि पचेंद्रिमा नोइंद्रि जे मन तेना साथे इंद्रि नोइंद्रि मळी ए बने करण कहीए अने उदेरे एटले ते इंद्रि नोइंद्रिनी प्रेरणाए करीने "विपाकी प्रकृति भोगवे दळ विखेरे," कहेता शुभाशुभ विपाकने आपनारी पूर्व बधनी कर्म प्रकृति आत्म सत्ताए रहेली उदय काळ पामीने वा उदिरणा करवे करीने उदय आवे तेने भोगवीने, 'विखेरे' एटले ते कर्मप्रकृति दळने आत्म सत्ताथी खेरवे, अने भोगववु कह्यु तेमा जे इष्टानिष्टपणु अनुकुळ प्रति-कुळपणे रागद्वेषनु परिणमवुं होय, ते रसे करीने पुनरपि नवा नवा कर्मनो बध करे एम समये समये चेतन सात आठ कर्म बाधे छे अने ए, "कर्म उदयागता स्वगुण रोके," कहेता उदयमा आवे,एटले ज्ञानावरणीना उदय थकी ज्ञान गुण रोकाय, दर्शनावरणीना उदय थकी दर्शन गुण रोकाय, वेदनी कर्मना उदय थकी अव्याबाध सुख रोकाय, मोहनी कर्मना उदय थकी समकित तथा चारित्र ए बे गुण रोकाय, आयुष्य कर्मना उदय थकी अक्षय स्थिति रोकाय, नाम

कर्मना उदय थकी अरूपी गुण रोकाय, गोत्र कर्मना उदय थकी अगुरुलघुगुण रोकाय, अने अंतराय कर्मना उदय थकी व्यवहारे क्षयोपशम जावनी तथा घातिकर्म प्रकृतिनी सत्ताथी निश्चय क्षायकजावनी दानादि पाच लब्धि गुण रोकाय एटले आत्माना उपर कह्या ते अष्ट गुण ढकाय, त्यारे व्यक्तिजावनी अपक्षाए, "गुण विना जीव जवोजव ढोके" केहेतां गुण विनानो जीव एटले वस्तुगत जावना बोधने अजावे जम जेवो, अने समकितना अजावे अहं ममत्वी, वळी चारित्रना अजावे चपळ चित्तवाळो, दुर्मतिनो प्रेर्यो थको आहट्ट दोहट्ट चित वृत्तिये आर्त्त रौद्र ध्याननो कर्त्ता एम दुर्गुणग्राही अने सद्गुण रहित थयो, ते जीव 'जवोजव ढोके' एटले चार गतिरूप अघोर वनमां जन्म मरणनी अटुट परपरा पामे, तेनुं कारण आगली गाथाए कहे छे ॥ १३ ॥

आतम गुण आवर्यो न ग्रहे आतम धर्म,
ग्राहक शक्ति प्रयोगे जोमे पुद्गल सर्म्म ॥
परलान्ने परभोगने योगे थाये परकर्त्तार,
एह अनादि प्रवर्त्ते वाधे पर विस्तार ॥ १४ ॥

अर्थ--"आतम गुण आवर्यो न ग्रहे आतमधर्म" कहेतां आत्माना रत्नत्रयादि अनता गुण छे, ते गुणो कर्म आवरणे करीने आच्छादित थया, गुण गुण प्रत्ये आवरण लाग्यां, ए आवरणनु ज्यां सुधी आत्म प्रदेशे अस्तिपणु छे, त्यां सुधी गुण प्रगट करवामां विघ्न छे, तेथी आत्मानी ग्राहक शक्तिए

पोताना ज्ञान दर्शनआदि गुणरूप धर्मने पोते महो शकतो नथी, निज'गुणे गुणी थतो नथी त्यारे आत्मा पोतानी ग्राहकता शक्ति प्रयोगे शु करे छे? तो "जोमे पुद्गलसर्म्मे" कहेतां सुखनुं कारण धन धान्यादि पुद्गलिक ऋद्धिने उद्यमे करीने उदय प्रमाणे जोमे एटले मेळवे, "परलान्ने" कहेतां एम धन धान्यादि पर वस्तुना लाभे, एटले मळवाथी लाभ मान्यो, 'पर न्नोगने योगे" कहेता ए परवस्तु धन धान्यादि, तेना न्नोग सयोगे निजपरने शुन्ना शुन्न दान देइने दान मान्यु, वळी काया संयोगे पांच इंद्रिना उदय प्रमाणे अनुकुळ वा प्रतिकुळ जे विषय सेववामा आवे तेने न्नोग मान्यो अने उपन्नोग ते जे विषयने वारवार न्नोगवीए तेने उपन्नोग मान्यो, अने ए दानादि चार लब्धि कही तेने विषे बळवीर्य जे आत्मानी उपयोगादि शक्ति तेने वापरी एटले फोरवी, ते कारणे ए दानादि पाचे लब्धिनुं वस्तुगते स्वस्वरूप अनुयायीपणु तेथीजकतापणेजीव भुल्यो, एटले पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थयो त्यारे पर अनुयायीपणे अवळी रीते उपर कही तेम पाचे लब्धिने फोरवतो थको, "थाये परकत्तार"कहेतां जीव पोते परनो कर्त्ता थायछे अहींआं कोइ पूछे के जीव परनु कर्त्तापणु कये काळे पाम्यो? तेना उत्तरमा कहे छे के, "एह अनादि प्रवर्ते" कहेता जीवने परनु कर्त्तापणु अनादि संबधे प्रवर्त्ते छे, एवी रीते अवळी प्रवृत्ति थइ तेथी, "वाधे पर विस्तार" कहेता आत्माना असख्याता प्रदेशछे, अने एक एक प्रदेश प्रत्ये अनंती अनती ज्ञानावर-

णादि आठे कर्मनी विस्तारे वर्गणाउं लागी छे तेथी करीने संसार खुटतो नथी उंछो थतो नथी. ॥ १४ ॥

एम उपयोग वीर्यादि लब्धि ।
परजाव रंगी करे कर्म वृध्दि ॥
परदयादिक यदा सुह विकल्पे ।
तदा पुन्यकर्म्म तणो बंध कल्पे ॥ १५ ॥

अर्थ--"एम उपयोग वीर्यादि लब्धि कहेतां," उपर पांच लब्धि अवळी प्रवृत्तिये कुक्षयोपशम योगे जमजावमां विजाव प्रवृत्तिये कही, तेवी रीते प्रवृत्ति करतां, 'परजाव रंगी" कहेतां आत्माने पुद्गल परवस्तु छे, तेने विषे रागद्वेष परिणमवारूप विजाव रग दृढपणे बेठो ते कारणे, "करे कर्म वृध्दि" कहेता एक शुज कर्मनो बंध करे, अने बीजो अशुज कर्मनो बंध करे, एम शुजाशुज बे जेदे कर्मबंध करवानो कह्यो हवे तेना हेतु देखाडे छे "परदयादिक यदासुह विकल्पे" कहेतां जे समये जीवोने त्रस अने स्थावर परजीवनी दयाना परिणाम उपजे, वळी आदि शब्दे सत्य वचन बोले, चोरी करे नहीं, स्त्रीनो त्याग करे, परिग्रहनो त्याग करे, अने रात्रिजोजन न करे, एम पांचे द्रव्य आश्रवने तजी अने द्रव्य संवरने जजी विरक्त चित्ते वर्त्ते, तदा कहेतां ते समये, पुन्य कर्म तणो कहेता अघाति कर्मनी शुज प्रकृति तणो, बंध कल्पे कहेता कर्मबंध करवो कल्पे, ॥ १५ ॥

तेहीज हिंसादिक द्रव्याश्रव करतो चंचल चित्त ॥
कटुक विपाकी चेतन मेले कर्म विचित्त ॥

आतम गुणने हणतो हिंसक भावे थाय ॥
आतम धर्मनो रक्षक भाव अहिंस कहाय ॥ १६ ॥

अर्थ.--"तेहीज हिंसादिक द्रव्याश्रव करतो चचळ चित्त" कहेता, उपरनी गाथाए कह्यु तेथी आगळी रीतें एटले मननी चळाचळ वृत्तिये, दुर्ध्यानगत माठा अध्यवसाये मिथ्यात्वभावे, अनानुपयोगे, हिंसादि कारणे वर्त्ततो ज्ञानावरणादि द्रव्य आश्रवने मेळवतो थको अने रागद्वेष भाव आश्रव वृत्तिये कर्म बांधतो थको, कटुक विपाकी कहेता जे कर्मबंध कीधो, ते स्वयकाळ पामीने चेतन कहेता आत्माने केवा विपाक आपशे ? तो कहे छे के अति कटुक दुःखे परवशपणे भोगव्या जाय, पण स्ववश वृत्तिये व्यक्तपणे तो भोगवाय नहीं तेवा, वळी केवा ? "के मेळे कर्म विचित्त" कहेता विचित्र प्रकारनी वेदनानो हेतु जे कर्मप्रकृति दळ ते प्रत्ये आत्म सत्ताये वृद्धिपणे मेळवे, त्या, "आत्मगुणने हणतो हिंसक भावे थाय" कहेता एम अशुभ कर्म प्रकृतिनी आत्म सत्ताये वृद्धि थाय त्या नियमा आत्माना क्षयोपशम भावे चक्षु अचक्षु दर्शन, उपयोग वीर्यादि लब्धि गुण चेतना, ते हणाइ जाय, अने चेतन स्थावर गतिए यावत् साधारण पणुं पामीने अव्यक्तपणे जडताने अनुभवे, तेने भाव हिंसा कहीए माटे हे भवभीरु भाइओ ! तमारे जो मोक्षना सुखनी अभिलाषा होय, अने संसारथी भय पाम्या हो, तो सद्गुरुनो विनय करी वस्तुगते वस्तुपणाना बोधनी तेमनी पासे याचना करो. ए गुरु महाराजा कृपाळु

होय, ते दया लावीने आपणने बोधि बीजरूप समकित रत्न पमाम्शे, अने हेय उपादेय बुद्धि प्रगट करावी आपशे पछी तमारे हेय वस्तु ते योग प्रवृत्तिथी अळगा थतां एटले पांच इन्द्रिना विषयनु तथा चपळ मनोवृत्तिनु अवलंबन पणुं तजी देइने अतर्वृत्तिये स्थिरपणे वर्त्तता स्वस्वरूप उपयोग भावे उपादेय जाणी तेमा रमण करो, अनुभव करो, आस्वादन करो, समभावे वर्त्तो त्या आत्म गुण रक्षण योगे अनती निर्जरा थाय. ए गुणरूप धर्म आत्मानो छे, एम आत्म धर्मनो रक्षक तेज " भाव अहिंसकहाय " कहेतां तेने भाव दयावंत कहीए ॥१६॥

आत्मगुण रक्षणा तेह धर्म ।
स्वगुण विध्वंसणा ते अधर्म ॥
भाव अध्यातम अनुगत प्रवृत्ति ।
तेहथी होय संसार छिति ॥१७॥

अर्थ--"आत्म गुण रक्षणा तेह धर्म" कहेतां, धर्म ते शेने कहीए ? तो के उपरनी गाथाना छेला पदना अर्थमां हेय उपादेय बुद्धि कही, तेने पाम्यां आत्म गुणनु रखोपुं थाय, एटले आत्माना ज्ञानादि गुणनी घात कर्ता अशुद्ध निमित्त पुद्गल सयोग छे, अने अशुद्ध उपादान, अशुद्ध चेतना, परपुद्गलनी ग्राहकता शक्तिये ममत्त्व भावनो कर्त्ता आत्मा, तेज पोताना गुणनो घात कर्त्ता थाय; तेने तजावनार तो ज्यारे सद्गुरु पुन्योदय जोगे मळे अने तेमने करु-

णा आवे, तो ए निमित्त कारणमा गणीए, अने तेमनो जे स्याद्वाद गर्भित द्रव्य पर्यायनी ठवणारूप उपदेश आपणे श्रोताजनो श्रवण करी, मनन करीने परमार्थपणे परिणमावी शकीए, एटली क्षयोपशम भावनी सहायता भव्यत्वता योगे पोतानामां बनेलो होय तो, तेने उपादान कारणमा गणीए, तेथी अंतर्गत गुण पर्यायादि आत्म सत्ताये शक्ति भावे कारणरूपे अनादि संबंधे पिरूपणे रहेली जे गुण संपदा तेने सहज वीर्य शक्तिनी स्फुर्णाए शुभाशुभ क्रिया आश्रव बंधनु कारण जाणी तेने तजी, अने सहज संवरने भजी व्यक्ति भावे शुद्ध परिणामिक भावनी परिणमन शक्तिये कार्यरूपे परिणमावी शकीए तेना बे भेद, एक देशथी अने बीजो सर्वथी देशथीकार्य ते ग्रंथिभेद करीने समकित पामे, अने सर्वथीकार्य ते मोहनी आदि घाति कर्मने हणीने केवळ ज्ञान पामे, तेमा जे देशथी कार्य करे तेने स्वानुभव वळे घटअंतर वृत्तिये यथास्थित वस्तुनुं स्वरूप उपयोग गोचर अशंकितपणे थाय श्रद्धा स्थिर थाय अने त्या हेय उपादेय बुद्धि प्रगट थाय उपादेय स्वरूप ते पोताना आत्मानुं परमात्म स्वरुप तेज अनुभववा आदरवा योग्य, बाकी सर्व वस्तु हेय केहेता छाडवा योग्य एम जाणी पोते पोताना गुणगत उपयोग भावे लीनथको वर्ते, त्या पोताना गुणनु रक्षण थाय, तेनु नाम स्वदया अने तेज सम्यक्त्व धर्म छे. हवे "स्वगुण विध्वंसणाते अधर्म" केहेता आत्माना सम्यक्त्व ज्ञानादि गुणोनुं घात कर्त्ता एक मिथ्यात्व छे ए-

टले अनंत पुद्गल परावर्त्त संसार स्थितिनो हेतु, वळी उत्कृष्ट स्थितिए कर्मबंध करवानुं कारण, वळी अजाणपणे पर वस्तुनुं ग्रहण थयुं होय तेने रोके नहीं, खराखोटानी परीक्षा नहीं, जाणीने खोटानु खरुं करवानो हठ ममत्व, जिन वचनमां शंका, अने अजाणपणे विपरीत श्रद्धा, पर वस्तुने विषे पोतापणानी बुद्धिये अहंममत्वनो कर्त्ता, निध्वंस परिणाम वृत्ति, कूडकपटनुं स्थान, सम्यकत्व रत्नादि गुणोनो चोर, विषय भोगमां आसक्त, परिग्रहमा अतृप्त, संसार मंडणनो स्थंभ, चारित्ररायनो महा शत्रु, इत्यादि दुर्गुणोनो पटारो, ते अनादि मिथ्यात्व छे तेना छतां धर्म कर्यो धर्म थाय नहीं एटले कचन कामनी आदिनो त्याग करीने दिक्षा ले, तो पण सयम गुण न आवे सम्यक्त्व गुणना अभावे असंयमी थको ससारनी अतिवृद्धि कर्त्ता थाय कदाच नव पूर्व भणे तो पण मिथ्यात्व छतां अज्ञानी कहेवाय आत्माना सर्व गुणोनो घाती एक मिथ्यात्वशल्य छे, तेने अधर्म कहीए हवे "भाव अध्यातम अनुगत प्रवृत्ति" केहेता शब्द नय पक्षे चोथा समकित गुण स्थानक नी प्राप्ति थइ त्याथी आत्मा विषम भावने विषे समदृष्टिये जोनारो ज्ञानी थयो. उदयिक भावे जे वस्तुनी प्राप्ति थइ होय, तेने एकाते वस्तुपणुं माने नही, वस्तुना स्वभावने वस्तु माने, विषयथी विरक्तपणे उदासी भावे वर्त्ते, पर वस्तु परपणे भासे, पर वस्तुने विषे अहकर्त्तापणुं जीवनुं न माने, जीव पोताना स्वभावे जाणवा देखवादिक स्वगु-

णनो कर्त्ता एम समजे, वळी आत्मा केवो छे ? तो स्फटिक रत्न समान निर्मळ, कर्म लेप थकी रहित निर्लिप्त शक्ति ज्ञावने आवरण न लागे ते अपेक्षाए पोतानो आत्मा अनादि सिद्ध छे, वळी केवो छे तो अरूपी छे, एटले रातो, धोळो, लीलो, पीळो अने श्याम ए पाच वर्ण, कडवो, कषायलो, तीखो, खाटो, अने मधुरो ए पाच रस, सुरजी अने डुरजी ए बेगध, सुकोमळ, वरसट स्निग्ध, रुक्ष, हळवो, ज्ञारे, शीत, अने उष्ण ए आठ स्पर्श एम ए वीश गुणे करीने रहित छे, माटे आत्माने अरूपी कहीए वळी केवो छे ? तो सामान्य विशेष उपयोग लब्धिए करीने सहित, घटनी अतर वृत्तिये प्रकाशनो कर्त्ता, ज्ञानानंदी, स्वस्वरूप रमणी, स्वानुज्ञवी, सहज विलासी, पोतानी ऋद्धियेज तृप्त, धर्म ध्यान शुक्ल ध्याननो ध्याता, इत्यादि "ज्ञाव अध्यात्म" कहेता अद्वैतज्ञाव एटले द्वैत जे शुज्ञाशुज्ञ पुद्गलिक ज्ञाव ते थकी रहित, एक शुद्धात्म ज्ञाव तेज "ज्ञाव, अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति" कहेता शुद्धात्म ज्ञाव तद्‌गत सहज वीर्य शक्ति स्फुर्णाये प्रवृत्ति एटले शुद्धात्म ज्ञावमा रमण करवुं, अनुज्ञववु आस्वादन करवु, परिणाम पामवु "तेहथी होय ससारछित्ति" कहेता शुद्धात्म स्वरूप ते संग्रह नय पक्षे कारण रूपे अनादि संबधे गुण पर्यायादिना पिंडरूप आत्म सत्ताये रहेलू परतु ते स्वरूपने चेतन मिथ्यात्व ज्ञावे परिणमता जूदयो अने पुद्गल परमाणुथी बनेली उदयिक ज्ञावे इंद्रिय स्थानरूप जे काया तेने जीव मा

न्यो, ए जूल पण अनादि चाली आवे ठे, ते काळ लब्धि पामीने जव्यत्वता योगे क्षयोपशम जावनी सहायता मळ्वा थकी अने उदयिक जावनी अपेक्षाये सद्गुरु आदि हरकोइ कारणनी मुख्यताए जीव शब्द नये पोतिका शुद्धात्म स्वरूपने पाम्यो, त्या ए जूल टळतां बाह्य दृष्टि टळी गइ तेनी साथे अज्ञान दशा रीसाणी थकी नाठी, अने अंतर दृष्टिए ज्ञान लोचन प्रगट थयां, त्यां सद्बोध मित्रनो समागम थयो, तेणे करीने आत्मा उपयोग जावे अनुजव मंदिरमां पेठो. पोतानु शुद्ध स्वरूप अनिवृत्तिये प्रमुदितपणे अनुजवे परमानंद पामे, तल्लीन थाय, त्या रमणिक जूमी, खुल्लो आकाश, प्रथुल सपाट वगीचो, उद्योतमय, जाणेअनेक सूर्य साथे उदय पाम्या होय अने तेथी जेम ज्योतनो पुंज प्रगटे ते दृष्टांते अनुजव जुवन प्रकाशित ठे, हाथमां चौधारु खड्ग ठे, अपूर्व खेल खेले, तेनुं नाम स्वस्वरूप रमण, ते अनुपचरित व्यवहार नयथी परिणामिक जावनी प्रसव शक्तिये उपयोगनी विशुद्धिपणे परिणमतां परिणमतां यावत् ते क्षायक जावे परिणाम पामे, त्यां आत्माना प्रदेश प्रदेश प्रत्ये अनती अनती घातिकर्म आदिनी वर्गणाउ रहेली तेनो क्षय थइ जाय दृष्टांत जेम काष्टने उधेइ लागे, तेम जीवने कर्म लाग्यां ठे, ते काष्टमां काष्ट सत्ताए रहेली दाहक स्वजावमयी अग्नि ते ज्यारे प्रगट थाय त्यारे उधेइनो अजाव थाय, तेम आत्म सत्ताये रहेली क्षायक जावे ज्ञानादि गुण ऋद्धि ज्यारे प्रगट थाय त्यारे मोहनी

आदि कर्मनो अभाव थाय अने कर्मनो अभाव थयो ए-टले "संसारस्थिति" कहेता ससार जे चार गतिनुं भ्रमण तेनो अत ऐमो मनुष्यभवे भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति ज्ञान क्रिया योगे सवर निर्जरा करता यावत् अयोगि चउदमा गुणठाणाना छेला समये कर्म पुद्गल परमाणुदलनो आत्म सत्ताये अभाव थता आव्यो त्या मुक्ति थइ चुकी ए वात यथास्थित छे ॥ १७ ॥

इत्यादि अध्यात्मना अनेक ग्रथो छे, तेमां जोजो सर्व पंक्तिओनी एज बोली छे के चोथा गुणठाणाथी अध्यात्म शैलिये कर्म बध न करे अने अनती निर्जरा करता करता क्षायक भावनी लब्धीने पामी अयोगी गुणठाणाना अते कार्मण वर्गणा आदिना बंधनथी छुटे, एटले सिद्धिवरे, त्या निर्जरानी पूर्णता कहीए सवर, निर्जरा अने मोक्ष ए त्रणे जीवना गुण छे, ते जीवथी अभिन्न छे, जुदा नथी, तेम कृत्रिम रीते प्रगटता पण नथी स्वभावे प्रगट थाय माटे स्वभावनी खप करवी बाह्य दृष्टिने टाळवी, अंतर दृष्टि करवी, चळाचळने टाळी स्थिर थइ जवु घटनी अतर वृत्तिये जागृति करवी, अनुभव करवो, ए स्वभावने प्रगट करवानु कारण ते जोगे मोक्ष कार्यने पामीए, एटले चोथा अ-थवा सातमा गुणठाणाथी तेरमा गुणठाणा सुधी जता एक अतमुहूर्त थाय अने आयुष्य जेनु अधिक नथी तेतो एक अंतमुहूर्तमा अंतगरू केवली थइने सिद्धिवरे ते कर्मबधतो न करे, अने अनती निर्जरा करे, अथवा चोथा गुणठाणेथी

समभाव वृत्तिये शुभाशुभमां नहीं प्रवेश करतां चेतन, चेतन भावमां लीन थइ स्वस्वरूपने भजे, एटले स्वस्वरूप रमणमां अने परस्वरूप अरमणमा वर्त्ते, तोहां कर्मबंध न संभवे, पण अनती निर्जरा करे ए वचन निश्चयनयनु यथास्थित छे पण एम चढता भावे चोथा गुणठाणाथी सातमे आठीने आठमा गुणठाणे जइ क्षपक श्रेणीमाण्डी घाति अघाति कर्म हणीने एक अतर्मुहूर्त्तमां सिद्धिवरे एवा तीक्ष्ण उपयोगी जीवो कोइ वीरला होय सर्वने एवो भाव आवे नही एवो अपलटण भाव तो जे चरम शरीरी होय तेने आवे, नही तो अंतर्अंतमुहूर्त्ते अध्यवसाय पलटाय, ते व्यवहार नयनी अपेक्षाए कर्मबंध संभवे, एटले समभाव वृत्तिए चेतन वर्त्ते, ते अवसरे कर्मबंध न मान्यो, अने सरागताये वर्त्ते त्यां कर्म बंध संभवे, ए अपेक्षाए कर्मनो बध ज्या सुधी रागद्वेष अने मोहने हण्यो नथो, अने शुद्ध परिणति पूर्ण थइ नथी, एटले वोतराग परिणतिनी पूर्णता पाम्या नथी, त्यां सुधी कर्मबध व्यवहार नय पक्षे मान्यो, ते रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनुं अने मोहनु उन्मूलन क्षपक श्रेणोनी अपेक्षाए आत्म सत्ताथी दशमा गुणठाणाना अंते थाय त्याथी सिद्धांतना मते कर्मबधनो अभाव थयो कहीए, एम नय नय पक्षे भिन्न भिन्न अपेक्षा समजवी, हठ कदाग्रहने तजवो, सरळ वृत्ति राखीने अत करणमा शोध करवी, तदगत परिणाम पामवु, उपयोग भावे साध्य साधननी अभेदता करवी, त्या साधननी पूर्णता कहीए, ए हित उपदेश कह्यो.

ग्रथनी पूर्णताना दोहरा.

आतम सो परमातमा, परमातम सो सिद्ध;
बीचकी द्विधा जब टळे, प्रगट लहे निज ऋद्ध ॥१॥
द्विधा जमता जब टळे, टळे मिथ्या दुखदाइ,
समकित गुण प्रगटे तीहा, लहे ते सुख सवाइ ॥२॥
निज परभेद जिहां तिहां, कहीए ज्ञान विज्ञान,
चेतनता वृद्धि जिहां, क्षय उपशम परधान ॥३॥
किंचित् क्षय उपशम थकी, ग्रंथ रच्यो गुणखाण,
जैन तीरथ निर्णय भलो, ज्ञान पचमी जाण ॥४॥
जिन आज्ञा रुचि आदर्यो, बहु विध नही एकांत,
नय ज्ञाने सवि सपजे, स्यादवाद नही भ्रात ॥५॥
स्याद्वाद वस्तु धर्ममा, नहीं शुभाशुभ माहि;
हित अर्थे भवि खप करो, सेवो ज्ञानि उछाहि ॥६॥
जाणो द्रव्य पर्यायने, जाणो जीव अजीव,
उपाधि अलगी करी, निरुपाधि ग्रहो शीव ॥७॥
बाळबोधने कारणे, गुर्जर भाषारूप,
सहज समाधि हेतुए, ग्रहो ज्ञान अनुप ॥८॥
अनुपम अनुभव ज्ञान छे, अरूपि विषय प्रकाश,
स्वरूप रमण घट अतरे, स्थिर उपयोगे खास ॥९॥
तत्त्व ज्ञानमय ग्रथ यह, स्थिर थइ भणशे जेह,
निजपर सत्ता ओळखी, समकित लहशे तेह ॥१०॥

ओगणीसत अठावने, त्रयोदशी शनिवार,
फागुण शुक्ल पक्षमा, पूर्ण मनोरथ सार ॥११॥
चार मास दिन आठमे, पूर्ण ग्रंथ परमाण;
अल्प बुद्धि रचना करी, तजशो दोष सुजाण ॥१२॥
मीले जाणने जाण ज्यां, तिहां अधिक प्रमोद,
ज्ञान शीतळ भावे रमे, सहज स्वरूप विनोद ॥१३॥

श्लोक संख्या ३६००,

॥ इति श्री जैनतीर्थ निर्णय ॥

ग्रंथ समाप्त.



श्री

अथ श्री उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल माहात्म्य ग्रंथ लिख्यते.

दुहा.

प्रणमुं पार्श्व जिणंदने, शुद्धातम पद मांहि,
प्रणमता घट अंतरे, लहो भवि ज्ञान उगाहि ॥१॥
भागे तिमिर पटल तीहां, अनुभव भुवन प्रकाश
स्वरूप रमण स्थिर भावमां, परमानद विलास ॥२॥
ग्रंथि भेद करे इहां, लहे समकित महंत,
ए सम अवर दुजो नही. इम भाखे सवि संत ॥३॥
ए गुण आवे जीहा तीहां, स्थिर श्रद्धा कहेवाय,
भाव यथारथ जाणवा, मळ्यो अवसर सुखदाय ॥४॥
मीलीने क्षेत्र समासनो, बाळ बोध विस्तार,
जोतां अनुभव उल्लस्यो, काल माहात्म्य सार ॥५॥
उत्सर्पिणि अवसर्पिणि, काल माहात्म्य नाम,
ग्रंथ रचु व्यवहारमां, बाळ बोध हित काम ॥६॥
आत्मज्ञान ते बोध छे, जाणे वस्तु स्वभाव,
त्याग कदाग्रह ते करे, हठमतनो नहीं दाव ॥७॥
हठमत ते मिथ्यात्व छे, जड दृष्टि शठ भाव;
ज्ञानी एह ग्रहे नहि, ग्रहे वस्तुगत भाव ॥८॥
तद्‌गत आतम ध्यावता, परमातम सम थाय;
शुक्ल ध्यान ध्यातां थका, अष्ट करम क्षय जाय ॥९॥

अहीं उत्सर्पिणि अवसर्पिणि काळ माहात्म्यने किंचित् गवेखे छे. उत्सर्पिणि काळे शरीरमान, आयुष्यमान, तथा शाता वेदनी सुखादि वृद्धिपणे चढती स्थितिए होय, अने अवसर्पिणि काळे तेनी हानि एटले पडती स्थितिए होय. ए बेउना प्रत्येके छ छ आरा छे अने तेनुं दश दश कोडाकोडी सागरोपमना काळनुं प्रमाण छे. ते दरेकमां एक एक मळी बे चोवीसीउ थाय छे ए बे चोवीसीउना काळने उत्सर्पिणि अवसर्पिणि कहीए तेना काळ आश्रीने वीस कोडाकोडी सागरोपम थयां तेने काळचक्र पण कहीए. काळचक्र एटले वखतनुं पैडुं, ते हानि वृद्धि पणे बार आराए करीने अनादि अनंत उांगे फर्या करे छे, ते कारणे तेनुं काळचक्र नाम छे, तेमा प्रथम आ वर्त्तमान अवसर्पिणि काळ गयो अने वळी जाय छे, तेना छ आरानी स्थिती वर्णवे छे पेहेलो आरो सुषम सुषम नामे चार कोडाकोडी सागरोपमनो, बीजो आरो सुषम नामे त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, त्रीजो आरो सुषम दुषम नामे बे कोडाकोडी सागरोपमनो, चोथो आरो, दुषम सुषम नामे एक कोडाकोडी सागरोपममा बेतालीस हजार वर्ष उणानो, पाचमो आरो दुषम नामे एकवीस हजार वर्षनो, अने छठो आरो दुषम दुषम नामे एकवीस हजार वर्षनो, ए छ आरा मळी दसकोडाकोडी सागरोपम थाय ते कह्या हवे तेनो चार कहे छे पेहेलो बीजो अने त्रीजो ए त्रणे आरा मनुष्य अने तिर्यंचपंचेंद्रि ए बे-

ज्ञना समुदायने पाच जरत अने पाच औरवन ए दश क्षेत्रमां जुगलीआपणे जाय ठे. एटले सदाकाळ त्रीस क्षेत्र अकर्मनूमिनां अने ठप्पन क्षेत्र अंतरद्वीपनां मळी ठाशी क्षेत्र, तेमां तो जुगलीया ठे परंतु श्रेष्ट काळे ठन्नु क्षेत्र जुगलीयानां थाय ठे

सदासर्वदा पांच महाविदेह क्षेत्रनी एकसोने साठ विजयमां जुगलीया पणानो अजाव ठे. हवे पेहेलो आरो चार कोमा कोमी सागरोपमनो सुपम सुपम नामे कह्यो, ते काळे मनुष्य अने तिर्यंच पचेंद्रिनी आजीविका (निर्वाह) विनाउद्यमे अने विना प्रयत्ने सुखमा ने सुखमां थाय ठे, कल्पवृक्ष मनोरथ पूर्वक इच्छा पूर्ण करे ठे, वळी इच्छा करतां अधिक पण आपे ठे, ते कल्पवृक्ष दश प्रकारना खेत्र समास प्रकरणमां नीचे प्रमाणे कह्या ठे—

तेसिं मत्तंग जिंगा ॥ तुमियंगा जोइदीव चित्तंगा ॥
चित्तरसा मणियंगा ॥ गेहागारा अणियग्का ॥एद॥
पाणं जायण पिढण ॥ रविपह दीवपह कुसुम माहारो
जुसण गिह वत्थासण ॥ कप्पडमा दसविहा दिंति॥एउ॥

जावार्थ.—तेसि कहेता ते कल्पवृक्षोमां मत्तंग के० मत्तरसाग नामे पेहेलो, जिंगा के० भृगार नामे वीजो, तुमियंगा के० तुर्यांग नामे त्रीजो, जोई के० ज्योतिरंग नामे चोथो, दीव के० दीपाग नामे पांचमो, चित्तंगा के० चित्रांग अथवा कुसुमाग नामे ठठो, चित्तरसा के० चित्ररसा नामे

सातमो. मणियंगा के० मणिताग नामे आठमो, गेहागारा के० गेहाकार नामे नवमो, अणियग्रका के० अणिताग नामे दशमो ए कल्पवृक्षना नाम कह्या ॥ ९६ ॥

हवे ए प्रत्येक कल्पवृक्ष युगलिया प्रत्ये शातावेदनी सुखनी हेतु वस्तु आपे ते कहे छे पहेलो मत्तरमाग नामे कल्पवृक्ष ते पाण के० डाक्ष, खारेक, साकर प्रमुखना मीठा रसे युक्त जळ आपे बीजो भृंगार नामे कल्पवृक्ष ते चा-यण के० वासणो आपे त्रीजो तुर्यांग नामे कल्पवृक्ष ते पीच्छण के० प्रेक्षण एटले वाजित्र अने वाजित्रोउं सहित नाटक आपे चोथो ज्योतिरग नामे कल्पवृक्ष ते रविपह के० ग्रीष्मकाळे वादळ रहित सूर्य तेजे तपे तेथी अधिक प्र-काश आपे, पाचमो दीपाग नामे कल्पवृक्ष ते दीवपह के० चंद्र अने सूर्य करता अधिक तेजे प्रकाशितपणे झगझ-गायमान ज्योतिए करी अंधकारने टाळे छट्ठो कुसुमांग अथवा चित्राग नामे कल्पवृक्ष ते कुसुम केहेता पच वर्णना ताजा सुगधीमय पुष्प तथा पुष्पनी माळाउं अने गुच्छाउं आपे सातमो चित्ररसा नामे कल्पवृक्ष ते आहारो के० मिष्ट जोजन स्वादिष्ट खटरस युक्त आहार आपे आठमो म-णिताग नामे कल्पवृक्ष ते जूसण के० जमित घरेणा एटले दागीना आपे, नवमो गेहागारा नामे कल्पवृक्ष ते गिह के० रहेवाना घर आपे दसमो वस्त्राग अथवा अनितांग नामे कल्पवृक्ष ते वत्थासण के० देवडुष्यादि अमुल्य वस्त्र आपे, कप्पडुमा दसविहा दिंति के० उपर कह्या प्रमाणे दश प्र-

कारना कल्पवृक्ष ते पोतपोतानामा उत्पन्न थती वस्तु युगलिया मनुष्यादि प्रत्ये आपे ते संक्षेपे कह्युं हवे ते वस्तुनुं विशेष प्रकारे स्वरूप दश गाथाए करीने कहे छे ॥ ९७ ॥

सरस सुगंघ मनोहर, विसिठ वलवीरिय कंतिचयहेउ
मत्तरसंग डुमेसु, उपज्जइ विविह मज्जारसो ॥१॥

भावार्थः—मत्तरसाग नामे पहेला कल्पवृक्षोमां सरस सुगंधीदार मनोहर एवो अने विशिष्ट, बळ, वीर्य अने कान्तिना समूहने उपजावनारो विविध प्रकारनो मादक रस उत्पन्न थाय छे ॥ १ ॥

भिंगाल थाल वट्टय । कच्चोलय वध्धमाण माईणि ॥
कंचणरयण मयाइं । जायंति य भायणंगेसु ॥ २ ॥

भावार्थ.—भाजनाग नामे बीजा कल्पवृक्षोने विषे भृगार, (कळश) थाळ, वाटका, कचोळा अने चरु वगेरे रत्न जडित सुवर्णना वासणो उत्पन्न थाय छे. ॥ २ ॥

सजल घण गुहिर कलरव । चउभेय विभत्त पवर आउज । जुयदं मिय नराणं तुडियंग नरा पमाणंति।३।

भावार्थ.—तुर्यांग नामे त्रीजा कल्पवृक्षोमांथी युगलिया माणसोने रंजन करवाने अर्थे सजळ मेघना गम्भीर गर्जारव जेवो प्रियकारी शब्द अने चार प्रकारनां जुदा जुदा सुंदर वाजित्रो सहित बत्रीस बद्ध नाटक उत्पन्न थाय छे ॥ ३ ॥

विषे दीर्घ काळ सुधी विषय सुखने भोगवे छे ते पूर्वकृत दाननुं फळ जाणवु ॥ १५ ॥

युगलीयां मनुष्यनुं ते काळे उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनु आयुष्य छे, अने त्रण गाउनी उची एटले ६ हजार धनुष्यनी तो काया छे, वळी ते काळे पृथ्वी पण बहुधा सपाट रळियामणी होय छे पृथ्वीमां रसपण मधुरो होय छे, वळी ए युगलीया मनुष्यने प्रथम आराना काळे तुवरीना दाणा माय आहारनी इच्छा त्रीजे चोथे दीवसे थाय, एवा तो संतोषी छे. वळी जोडले जन्मे छे, अने जोडलानु अपत्तपालणा एटले युगलने प्रसव्या पछी ओगणपचास दिवस सुधी गेरु युगलनुं प्रतिपालन करीने माता पिता साथे मरण पामी पोताना आयुष्य पूर्वक वा ओछा आयुष्ये बीजा देवलोक सुधी देवगतिये जाय छे, तेना उपर युगलियां जाय नहीं. वळी ते काळे तिर्यंच (गर्भज अने समूर्छिम पर्याप्ता) सर्वे युगलिया छे ते तिर्यंच पंचेंद्रि गर्भजनु ते काळे एटले सुषम सुषम काळे जे आयुष्य छे ते उत्कृष्ट स्थीतिए कहे छे

थलचर तिर्यंच चतुष्पद जे गाय, भेंस, उंट, हाथी, घोडा, सिंह प्रमुखनु मनुष्यना प्रमाणे त्रण पल्योपमनु होय खेचर तिर्यंच जे चकली, चास, सारस, मोर प्रमुखनुं एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग होय

उरपरि सर्प ते सर्प, अने भुजपरि सर्प ते घो नोळियादिकनुं अने जळचर ते मत्स्यादिक ए त्रणनुं क्रोड पूर्वनुं

आयुष्य होय ए संज्ञि तिर्यंच पंचेंद्रिना आयुष्यनी स्थिति कही.

हवे समूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिनुं आयुष्य कहे छे.

जळचरनुं पूर्व क्रोडनुं, अने थळचरनुं चोरासी हजार वर्षनु, खेचर पंखीनुं बोतेर हजार वरसनुं, उरपरि सर्पनुं त्रेपन हजार वरसनुं अने नूजपरि सर्पनुं बेतालीस हजार वर्षनु, ए समूर्छिम तिर्यंचना आयुष्यनी उत्कृष्टपणे स्थिति कही.

ए समूर्छिम तिर्यंच युगलियां:सर्वे पोताना आयुष्य प्रमाणे वा ओछा आयुष्ये देवगतिए जुवनपति अने व्यंतर ए बे निकायमा जाय, तेथी उपर जाय नहीं, अने गर्जज तिर्यंच युगलियां तो उत्कृष्ट जांगे बीजा देवलोक सुधी जाय. युगलियां देवगति सिवाय बीजी गतिये जाय नहीं ए तिर्यंच पंचेंद्रि युगलियांनी आजीविका पण कल्पवृक्ष-थीज चाले छे, ए श्रेष्ठ काळे एटलो मोहपल्लीने पाछो हठा-व्यो छे तेथी जीवने अल्प इछाए वळी अल्प कषायनी योग्यताए, लांबे आयुष्ये, मनुष्यना जवमां अने तिर्यंच पंचेंद्रिना जवमा शाता वेदनीये देवताइ सुख जोगवीने पुनर्पि पुन्य उपार्जी देवगतिये जाय छे, ते त्यां पण लांबे आयुष्ये अनुकुळ जोग जोगवशे ए अवसर्पिणी काळे सुषम सुषम नामे पेहेला आरानो जाव संक्षेपे कह्यो, एज प्रमाणे उत्सार्प्पिणि काळे छहा आरानो जाव जाणवो.

हवे बीजो आरो सुषम नामे छे तेना जाव कहे छे.

बीजा आराना प्रथम काळे घटतुं घटतुं आवेलु युगलिया मनुष्यनुं आयुष्य उत्कृष्टुं बे पल्योपमनुं रह्यु छे, ए प्रमाणे तिर्यंचनुं पण पहेला आरामा कह्यु तेथी न्नतु जाणवु, देवगतिए जवानुं पण ए प्रमाणे उंचा आयुष्यनी स्थितिए उतरतु उतरतुं समजवुं, एटले उत्कृष्टु पेहेला सुधर्म देवलोक सुधी वा बीजा देवलोके जाय तो बे पल्योपमथी अधिक स्थितिए जाय नहीं वळी बीजा आराना काळ महात्म्ये मोहपल्लीए किंचित् श्रेष्ट काळने पाछो हठावी युगलिया जीवने किंचित् इच्छानी अधिकताई करी छे तेथी आहारनी इच्छा बीजा त्रीजा दिवसे बोरना ठळीया प्राय थाय छे एटली इच्छानी वृद्धि थता पुन्यनी पण आत्मसत्ताये पूर्वनी अपेक्षाये उंछाश थई छे, तेथी कल्पवृक्ष पासे पेहेला आरामा मननी अल्प इच्छाए थोडु मागे अधिक पुन्योदये अधिक मळतु हतुं, ते हवे मुखथी मागे एटलुं पांच माळना महेल आदि द्रव्य प्रमाणे सर्व वस्तु मळे, वळी पोतानी काया ते घटती घटती आवेली बीजा आराना प्रथम काळे बे गाउनी एटले चार हजार धनुष्यनी उंची होय छे वळी पोताना बाळक युगल जोडीनी अपत्तपालणा युगलने प्रसव्या पछी चोसठ दिवस सुधी करी युगलीआ बाळकना मातापिता साथे मरण पामी पोताना आयुष्य पूर्वक वा उंचा आयुष्ये देवगतिये जाय ए बीजा आरानो भाव अवसर्प्पिणि काळे कह्यो एज प्रमाणे उत्सर्प्पिणि काळे पाचमा आरानो भाव जाणवो हवे त्रीजो आरो

सुषम दुषमनामे छे तेनो भाव कहे छे.

त्रीजा आराना प्रथम काले घटतुं घटतुं आवेलुं युगलिया मनुष्यनु आयुष्य उत्कृष्टु एक पल्योपमनुं रहे छे, ए प्रमाणे पूर्वनी अपेक्षाए तिर्यंचनुं पण ओछुं जाणवु. वळी त्रीजा आराना काळमहात्म्ये युगलिया मनुष्यने आहारनी इच्छा बीजा दीवसे आमला प्राय थाय छे, ते कारणे पूर्वनी अपेक्षाए पुन्यनी सत्ता आत्म प्रदेशे ओछी थई अने उदय तो सत्तानी योग्यताएज थाय. त्यारे अधिक शेनुं मले! माटे कल्पवृक्ष पासे माग्या त्रण मालनी मेहेलात आदि सर्व वस्तु मले छे वली युगलिया मनुष्यनी काया ते घटती घटती आवेली त्रीजा आराना प्रथमकाले एक गाउनी एटले बे हजार धनुष्यनी उंची छे, वली पोतानां वालक युगल जोडीनी अपत्तपालणा युगलने प्रसव्या पछी अगन्याशी दिवस सुधी करी युगलिया वालकनां मातापिता साथे मरण पामी पोताना आयुष्य प्रमाणे वा ओछा आयुष्ये ज्योतिषी पर्यंत देवगतिये जाय, एम त्रीजा आरानो घणो काल जाय अने एक पल्योपमनो आठमो भाग बाकी रहे, ते अवसरे श्रेष्ट कालने पाछो हठावी मोहपल्लीए युगलीया मनुष्योने मांहो मांहे एक बीजानी साथे किंचित् कुसंप कदाग्रह प्रगट करवाने हेतु पणे सहाय आपी ते योगे वाद विवाद थवा लाग्यो, एक बीजाने फरियाद करवा मांडी त्यारे युगलियानो समुदाय भेगो मलीने विमलवाहन नामे कुलगरने राजापणे स्थाप्या.

तेमनी कायानु मान नवसो धनुपनुं ऊंचपणे छे, अने आयुष्य एक पल्योपमनो दसमो भाग सुदर्शना चरित्रमा कह्यु छे तेमणे अपराधीना दन्ड माटे हकार कहेवानी नीति स्थापी, ए नीति तेमना पुत्र बीजा कुलगर चक्षुमत थया त्या सुधी चाली· तेमनी कायानुं मान आठसो धनुष उचपणे हतुं, अने आयुष्य असंख्यातापूर्वनुं त्यारपछी तेमना पुत्र त्रीजा कुलगर यशस्वी थया, तेमनी कायानु मान सातसो धनुष उचपणे, अने आयुष्य असख्यतापूर्व न्यून हतु तेमणे अल्प अपराधे हकार अने मोटे अपराधे मकार कहेवानी दन्डनीति स्थापी, ते नीति तेमना पुत्र चोथा कुलगर अभिचंद्र थया त्या सुधी चाली तेमनी कायानु मान साडा छसें धनुष्य अने आयुष्य संख्याता पूर्वनुं हतुं त्यार पछी पाचमा कुलगर तेमना पुत्र प्रसन्नजित थया, तेमनी कायानु मान छसें धनुष्य अने आयुष्य सख्याता पूर्व न्यून हतु तेमणे जघन्य अपराधे हकार ने मध्यम अपराधे मकार अने उत्कृष्ट अपराधे धिक्कार कहेवु एम दन्डनीति स्थापी, ते नीति छठा मरुदेव तेमना पुत्र थया तेमनी काया साडा पांचसें धनुष्य अने आयुष्य अति न्यून सख्याता पूर्वनुं हतु, तेमना पुत्र सातमा नाभी कुलगर थया त्या सुधी ए नीति चाली आवी· तेमनी कायानुं मान सवा पांचसें धनुष्य अने आयुष्य अनुमाने चोरासी लाख पूर्वनु हतु ए नाभी कुलगरनी भार्या मरुदेवा, तेमनी कायानु मान सवा पाचसें ध-

नुष्य अने आयुष्य कोरू पुर्वनुं हतुं, तेमनी कुखे सर्वार्थ सिद्ध विमानथी चवीने त्रीजा आराना ठेरू चोरासी लाख पूर्व अने उपर नव्याशी पखवाममीआंनो काल वाकी रहे बते असारू वदी ४ तिथिये त्रण ज्ञाने सहित आवीने ऋषन्नदेव स्वामी उपन्या, अने सवा नव मासे पूर्ण थये चैत्र वदी आठमे जन्म्या. ते वारे ठप्पन दिग् कुमरी अने सुर असुर देव देवेंडोए मळी प्रन्नुनो जन्म महोत्सव कर्यो प्रन्नु अनुक्रमे वृद्धि पामे ठे, त्यार पठी अकाळे मृत्यु थवानां विघ्ननो असन्नव हतो ते संन्नव थवा लाग्यो. सुमंगलाना साथे जोरूले जन्मेला, तेमना मस्तक उपर ताळ वृक्षनुं फळ परूवाथी वाळ वये मरण पाम्या, अने जोमी खंमित थइ, सुमंगळा एकला रह्या, तेमने युगलीए लावीने नान्नी कुलगरने सोंप्यां, नान्नी कुलगरे कह्यु के सुनंदानी साथे सुमंगला पण ऋषन्ननी स्त्री थशे, एम करतां काळ महात्म्ये युगलीआंना पुन्यनी उंगाश थई, तेमनु आयुष्य पण काळे काळे घटतुं घटतु कोरू पूर्वनुं रह्युं ठे, ते अवसरे कल्पवृक्षे दातारपणानो गुण संकोची लीधो, कल्पवृक्ष पासे हाथ धरीने मागे ठे पण मलतुं नथी, डुख परूवा मारूयुं प्रथम तो सुखे काळ जतो हतो, किंचित् डुःख नहोतुं, ते त्रीजा आराना ठेरू डुःखनो वखत आव्यो, ए काळ महात्म्य ठे. एटले सुकृत उपार्जवामा कषायनी अधिकताइ थता उंगाश थइ गई, ए काळे धक्को आप्यो, तेथी डुःख प्राप्त थयुं ए सुषम डुःखम नामे त्रीजा आराना

काळनो स्वभाव जाणवो. युगलीया मनुष्यो भूखे पीडाता थका नाभी कुलगरने पोकार करतां कहे छे के अमारी आजीविकानो उपाय बतावो, त्यारे नाभी कुलगरे युगलीयाना समुदायने कह्यु के ते उपाय तमने ऋषभ बतावशे, तमे ऋषभने राजापणे स्थापो ए युगलीयाये ऋषभदेव स्वामीना पासे जइने नाभी कुलगरनी कहेली वात करी, ते अवसरे त्या ऋषभदेव स्वामी पासे सुधर्म इन्द्र आवेला छे, तेमणे युगलीयाने कह्यु के तमे ऋषभदेव स्वामीने जळ लावी राज्याभिषेक करो युगलीया कमळपत्रना संपुटमां जळ लइ आवी, जुए तो सुधर्मइन्द्रे ऋषभदेव स्वामीने जळ अभिषेक करी वस्त्र आभरणे भूषित करी राज्य तख्ते बिराजमान कर्या छे, तेमने जोइने युगलीया विचार करवा लाग्या प्रभुनु सर्व अंग पूजित जोइने अंगुठे उघाडो दीठो, त्या जमणे अगुठे युगलीयाना समुदाये मळी जळ अभिषेक कर्यो, ते अवसरे ऋषभदेव स्वामीनी वीश लाख पूर्वनी वय थइ हे. त्यारपछी केटलोक काळ गये नाभी कुलगर काळ करीने भुवनपतिमा गया मरुदेवा विद्यमान हता, ए जोडी पण काळ महात्म्ये खंडित थइ हवे अवसरे अवसरे ऋषभदेव स्वामीने भूखे पीडाता थका युगलीया पोकार करता कहे छे दीनदयाळ ऋषभदेवस्वामीए करुणा लावीने दया चितवीने युगलीया पासे मृतिका (माटी) मगावीने पोताना हाथे प्रथम हाथीना कुंभस्थळ उपर स्थापीने भाजन करी दीधुं वळी

पकावीने खावानी विधि शीखवी, त्यार पछी लुहारनुं, वणकरनुं, नाइनुं, चित्रकारनुं एम कुंभकार आदि पाच कर्मना प्रत्येके प्रत्येके वीस वीस विज्ञान प्रवर्त्ताव्यां, त्यार पछी पुरुषनी बोतेर कळा अने स्त्रीनी चोसठ कळा शीखवी वळी पोतानी पुत्री ब्राह्मीने अढार प्रकारनी लिपि शीखवी ते लिपि ब्राह्मीथी दुनियामा विस्तार पामी. वळी उग्रकुळ, भोगकुळ, राजकुळ, अने क्षत्रीय कुळ ए चार कुळ स्थाप्या एम त्रेसठ लाख पूर्व पर्यंत दुनियाने सांसारिक सुखना हेतु थया, रुडी रीते प्रजाने पाळी दुःखथी रहित करी समजमा लावी उद्यमे वळगाड्या सुखे निर्वाह करे छे वळी छेवटे पोताना सो पुत्र भरत बाहुबळ आदिने यथायोग्य राज्य वहेंची दीधा. पोते उदासी भावने भजे छे, ते अवसरे लोकांतिक देवो आवी प्रभुने विनंति करी कहे छे के हे प्रभु ! धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावो, बुझो. प्रभु तो बुझेलाज छे परतु ए देवोनो आचार छे माटे आवे. प्रभु संसारने असार जाणी वरसीदान देइने त्र्याशी लाख पूर्वनो वय थये छते भरत आदि राजेंद्रना, वळी देव देवेंद्रना मोटा उछव पूर्वक चार हजार राजपुत्रनी साथे संसार छोडी कंचन कामिनी रहित थइ अणगार थया

निग्रथरायनी अप्रमत्त राजधानीए राज करवा माड्यु. ज्ञान जोगने दिवान पदे स्थाप्या, समकित महतने न्यायाधीश पणे स्थाप्या, तप तेजस्वीने सुभटोना अग्रेसरपणे सेनापति करी स्थाप्या, असख्याता शुभ प्रशस्त अ-

ध्यवसायने सुजटो करी स्थाप्या, घातिकर्मनो घेरो चेतनराय निर्ग्रंथनी अप्रमत्त राजधानीना उपरना माळे अनादि संबधे मोहपल्लीए पोताना वळे अधिपति अग्रेसर थइने शत्रुभावे करेलो छे, ते राज्य निर्ग्रंथरायने पोतानु छे, ते अरिनो एटले वेरीनो हत एटले नाश करीए, त्यारे वीतराग तरत पोताना स्वाधीन थाय एम जाणी घाति कर्मनो घेरो उठाववाना कारणे निर्ग्रंथराये ज्ञान दिवानने हुकम कर्यो के लडाइ शरु करो हवे लडाइनी शरुआत करवानु हाल ज्ञान दिवान विशेष उपयोगे विचार करीने निग्रथरायने ना पाडे छे, कहे छे के ए वात मारी समजमा छे परतु अप्रमत्त भावनो दृढपणे जमावट थवा दो हजी सुधी जमावट थयो नथी, तमने क्षण क्षण प्रत्ये प्रमत्त गुणस्थानक खेंचे छे, ताणीने बोलावी ले छे, त्यारे मारे तमारी साथे अनुजाइपणे त्या आववु पडे छे, अने त्या जता तो तमारु अने मारु तेज ओछु थइ जाय छे त्या जइने आपणु चित्त ठरतुं नथी, तेथी तमो अने हुं बे जण पाछा अप्रमत्त स्थानके आवीए छीए, परतु ज्ञान दीवान कहे छे के तमो अप्रमत्त गुणस्थानकने न छोडो, एटले प्रमत्त गुणठाणु छठ्ठ छे त्या न जाउ तो हुं अनंत चक्षुनो धणी छुं, अने तमे प्रमत्त गुणठाणे जवा आववानुं करो छो त्यारे तो मारा चर्म चक्षु ज उघाडा रहे छे, बीजा चक्षु मीचाइ जाय छे, माटे मोहपल्ली साथे युद्ध करतां तो अनंता चक्षुनु अनंतु तेज, अनतो प्रकाश जोइए, त्यारे आपणे एनो एटले मोहपल्लीनो घेरो

नगमीने आपणी वीतराग राजधानी पोताना कवजामां लइ शकीए, माटे तमे अप्रमत्त स्थानकनो दृढपणे जमावट करो अने प्रमत्त गुणठाणाने पुंठ आपो ए वात निर्ग्रंथराये कवुल करी हवे ऋषभदेव स्वामी प्रमत्त ठहुं गुणठाणु तेने पुंठ आपवाना विचारमां प्रवर्त्ते ठे, ते अवसरे मोहपल्ली काया कोटमीना आतरे ठुपीने रहेलो हतो ते आ वात सांजळीने चित्तमां राखी चितवे ठे के मारा संसार नाटकनुं उच्छेदन करवानो मनसुबो करे ठे, तेने कवजे करुं. एज अवसरे चार हजार राजपुत्रे निर्ग्रंथपद ऋषभदेव स्वामीना आलवने ग्रह्युं ठे, ते जगवानने विनय पूर्वक सेवक थइने पूठे ठे, हे स्वामी ! अमने कुधा पीमे ठे, शी रीते निर्वाह करीए? अमे जाणता नथी. तमारा आलंवने घर ठोमीने नीकळ्या ठीए, माटे निर्वाह करवानो मार्ग वतावो. ते अवसरे मोहपल्लीए नामकर्म सामंतने वोलाव्यो एणे वचन जोगने रुंध्यो, ते कारणे ऋषभदेव स्वामीए पोताना आलंवने निर्ग्रंथ थएला तेमने दूषण टाळीने सूझतो आहार लेइ निर्वाह करवानो मार्ग न वताव्यो, त्यार पठी मोहपल्लीए अंतराय कर्मने वोलाव्यो, तेणे अशनादि चारे आहारनो अमेळावमो कर्यो, तेथी जठराग्नि पीमे ठे, त्यार पठी वेदनी कर्मने वोलाव्यो, एणे कुधा वेदनीपणे निर्ग्रंथरायने पीमा करी पासे आयुकर्म वेठेलो ठे ते मोहपल्लीने कहे ठे के हुं तो समये समये आयुष्यने ठेदतोज जाउ ठु, ए अवसरे ऋषभदेव स्वामी अप्रमत्त राजधानी

निर्नय करवाने माटे प्रमत्त गुणठाणे आववानु वध करवाना उपायमां धर्म ध्यान ध्याताथका वर्त्ते छे, परतु प्रमादनी सनस तुटती नथी, ते कारणे प्रमादे जइने अल्पकाळ रहे छे, अप्रमत्ते जादे रहे छे, एम जवा आववानु चाले छे ऋषभदेव स्वामी निग्रथे अतरायने वार मासे पाछो हठाव्यो, त्यां श्रेयासने घेर शेलडीना रसनुं पारणु कर्युं त्याथी सुपात्र दाननी प्रवृत्ति चाली आवे छे, त्यार पछी वेदनी कर्मने पाछो हठावी क्षुधाने टाळी अप्रमत्त स्थानकने निश्चल करवाना सकामी छे अहीं कोइ कहेशे के अप्रमत्तने निश्चल कर्युं ते सातमा स्थानक उपर शी रीते जशे ? तेने कहीए के उपरनां जे जे गुणठाणा छे, ते सर्वे अप्रमत्त छे, माटे हेठळ ना आवे ते उपर जाय छे, ए प्रमत्त गुणठाणु रोकवाना उपायमा निग्रथरायने एक हजार वर्ष धर्म ध्यान ध्याता गया, त्यारे प्रमादनो संग सर्वथा प्रकारे तुटयो, एज वखते श्रूआअष्टापदनी स्वारी करी आठमा गुणठाणे प्रवेश कर्यो ज्ञान दिवान ज्ञारमपक्षीसम सावचेतपणाये करीने आगळ अग्रेसरी थको सर्व ऋद्धिये सयुक्तपणे शुक्लध्यान जोगे क्षपकश्रेणी मांडी श्रेणीगत प्रथम युद्ध मोहपल्लीथी शरु थाय छे, मोहपल्ली पण द्वेष गजेंद्रनी स्वारी करी राग केशरी पुत्रने साथे लइने पोताना सहकुटुवे परिवर्यो थको चढीने सामो आव्यो छे, रणस्थम्भ आठमा गुणठाणे रोप्यो छे, सामसामी शस्त्रोनो वरसाद वरसी रह्यो छे, आठमा गुणठाणे मोहपल्लीना आशादि छ सामत मराणा, त्या मोह

पाछो हठयो एटले त्याथी मुकाम उगावीने निर्ग्रंथराये नवमा गुणठाणाने घेरी युद्ध करवा मांड्युं, त्या त्रण वेद अने त्रण संज्वलनादि कषायनी नोकर्मी आदिनो सत्ताथी उछेद कर्यो, वळी लोभने पण जरजरीत कर्यो अने मोहने पाछो हठाव्यो त्याथी दशमा गुणठाणे गया, त्या युद्ध चाले छे, ए स्थानके लोभ आदि चोथी चोकडीनो सत्ताथी उछेद लोभनो अणु उदयागत छे तेनुं, वळी मिथ्यात्वनी सत्तानो उछेद करी मोहनी कर्मनी प्रकृत्ति परमाणुदळनो घेरो पोतानी, आत्माना असंख्याता प्रदेशरूप क्षेत्रथी उगावी द्वेष गजेंद्र अने राग केशरीसिंह ए बेनुं नाम अशुद्ध परिणति छे, तेने दशमा गुणठाणाने अंते हणी शुद्ध परिणतिवंत पोते बारमा गुणठाणे वीतराग राजधानीए बीजो पायो एकत्व वितर्क अप्र विचार ध्याता थका बिराजमान थया अहीं ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रणे कर्म सामां लडवा आव्यां ए त्रणने वीतराग निग्रंथे पोताना पराक्रमे एके हारे समकाळे, ज्ञान, ध्यान, तप तीक्ष्ण धाराए हण्या, अहीं घाति कर्मनो अभाव थयो एटले आत्माना असंख्यात प्रदेश क्षेत्रथी घाति कर्म प्रकृत्ति परमाणु दळनो घेरो उठयो, निग्रंथ राय सर्वज्ञपणानी ऋद्धिए परिपूर्ण थई अरिहंत पदे वेरीना समुदायथी अने विघ्न सभवनी योग्यताथी रहित थका निर्विघ्नपणे निर्भय दशाने एक अंतर्मुहूर्त्तमा अव्याबाधपणे पाम्या, त्या पूर्वोपार्जित नामकर्मनो जिन बंधनो उदय प्राप्त थयो ते उदयना खेंच्या चोसठ

ते पण समकितादि गुणनो लाभ लइ जाय छे, तो रागी थइने विनय करतो आवे तेनु तो भवभ्रमण रहेज शेनु ! परतु एक अभवी अने वीजो दुर्भवी ए वेउनुं दारिद्र जे भवभ्रमणनुं बीज मिथ्यात्वशल्य ते दुर थतुं नथी, कारण के अभवीमा समकितादि गुण निष्पन्न करवानो स्वभाव नथी अने दुर्भवी ते अर्द्धपुद्गल परावर्त्त ससार स्थीतिनी मर्यादामा आव्यो नथी, ते कारणे ए वेने समकितादि गुण निष्पन्न करवारूप लोकोत्तर लाभ मळतो नथी, परतु पुन्य उपार्जवाथी लोकिक शुभनो लाभ ए वेने मले छे ते लाभ पामीने आवता भवनु दारिद्र जे दुर्गति तेने दुर करे छे, ए अनतो उपकार करता छता पुन पुन. शत्रुजय तीर्थे प्रभु फागण शुदी आठमे नवाणु पूर्व पर्यंत समोसर्या छे अने एम महातीर्थनो अनतो महिमा प्रकाश्यो छे वळी शत्रुंजय तीर्थनी यात्रानो मोटो लाभ ते मोक्षना सुखनी प्राप्ति एम उपदेश कर्यो छे, ए महातीर्थनी यात्राना वे भेद एक द्रव्यशत्रुजय तीर्थयात्रा अने बीजो भाव शत्रुंजय तीर्थयात्रा द्रव्यशत्रुजय तीर्थयात्रा ते घर छोडीने छरि पाळता शत्रुंजय तीर्थना सन्मुख विधिपूर्वक यतनाए डगला भरतो भरतो अनुक्रमे पंथ कापतो कापतो गुरुनिश्राए पालीताणा नगरे रुडा अध्यवसाये चडता परिणामे जइने डुगरना समीपे तळेटीए प्रभुना पगलाने वंदन नमन करी डुगरने मोतीए वधावी स्तुति करी डुगर उपर चढी जिन मदिरोमा प्रभुने नीरखे, पूजे जळ, चदन, पुष्पादिक, धूप,

नैवेद्य, फळे, वळी हरखे तीर्थने स्पर्शी प्रदक्षणा फरे, टुंके टुंके बिंब नीरखी स्तुति करे, अखंड अक्षते स्वस्तिक आळेखे. एम पुन पुन. छठ अठमादि तपस्या करता डुंगरे चढे उतरे. एम नवाणु यात्रा पण करे. चोमासुं त्यां रहे गुरु आदिकने भक्तिये दान आपे, वळी वांदे, विनय साचवे, स्वामी भाइनी भक्ति करे, द्रव्य खर्चे, परंतु घटमां ज्ञान लावी जीव अजीवनी विभाग व्हेचण करी वस्तुगते वस्तुने उळखी, हेय उपादेय बुद्धि, निर्मळ स्थानकने पामी जे पुरुष प्रगट न करे तेने द्रव्य शत्रुंजय तीर्थ यात्रा कहीए

॥श्लोक॥ इदं तीर्थमिदं तीर्थं ॥ ये भ्रमन्ति तमोवृताः ॥
आत्म तीर्थं न जानन्ति॥तेषां तीर्थं निरर्थकम्॥१॥

अने घरने छोडीने नीकळ्या छे ते घरना कामनी चिंतवना दूर थका नहीं करता मनने समाधिमां राखी अपूर्व करणे चढता डफारा ज्ञान पामे, भावशत्रु मिथ्यात्वादि दुष्ट हेतुने हणी हेय उपादेय बुद्धिने पामी वस्तुगते वस्तुने उळखी यथार्थ श्रद्धा करी डुंगर चढतो थको अनिवृत्ति गुणठाणे चढे, त्यां समकितादि गुण प्रगट करी बहिरात्म भावने छोडी अंतर आत्माना भावने पामी पोताना आत्माने परमात्माकरी ध्यावता सकाम निर्जरा योगे कार्य सिद्धिने पामे. तेना बे भेद, कोई देशथी पामे अने कोइ सर्वथी पामे, जे देशथी पामे तेने चोथा समकित

गुणठाणानी प्राप्ति थाय अने सर्वथी पामे तेने मोक्ष गतिये अव्याबाध सुख मले, तेने भावशत्रुंजय तीर्थयात्रा कहीए, तेनो मनुष्य जन्म सफळ कहीए. इत्यादि उपदेश करी विहार करता छता, भव्य जीवोने संसार समुद्रमाथी तारता छता, नाभीरायाना पुत्र विनिता नगरीए मरुदेवा मातानी कुखे कचन वर्णे वृषभ लंछने जन्मपामी वृद्धि पामतां पामता पाचसे धनुष उंची कायानुं प्रमाण छे, वळी ते चार हजार राजपुत्र साथे ससार छोडी त्यागी वैरागी निग्रथ पदे एक हजार वरस छद्मस्थ पर्याये रह्या, अने एक लाख पूर्वमा एक हजार वरस उणां केवळपर्याय पाळी चोरासी गणधर आदि चोरासीसहस्र साधु त्रण लाख ने पाच हजार श्रावक, पाच लाख चोपन हजार श्राविकानी सपदा पामी चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी अष्टापद गिरीए दश हजार मुनि साथे छ दिवसनी सलेषणा अणसण करीने समश्रेणीए त्रीजा आराना नव्याशी पखवाडीआ रहे छते मेर तेरसे अघाति कर्म हणी प्रथम तीर्थंकर सिद्धिवर्या तेमना अधिष्टायक गोमुख यक्ष अने चक्रेश्वरी देवी छे ए प्रथम तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो, अने त्रेवीस तीर्थंकरतो चोथा आरामा थया छे अहीं त्रीजा आरानो अधिकार समाप्त थयो, हवे चोथा आरानो भाव गवेखे छे

चोथा आरानुं एक कोडाकोडी सागरोपम तेमां बेतालीस हजार वर्ष उणा एटलु प्रमाण छे. ते चोथो आरो

दुःषम सुषमनामे छे, एटले प्रथम दुःख अने पछी सुख, ते सुखनो हेतु अधिकमां अधिकतो जेनुं मुख जोतां पाप अळगां थई जाय, एवा तीर्थंकर देव तेमनो त्रीजा आरामां संयोगे हतो ते चोथा आरामां नव्याशी पखवामीआं आगळथी विरह पमी गयो, ते पचास लाख कोमी सागरोपमनो कल्पसूत्रे कह्यो छे, ए अपेक्षाए चोथाआराना अरधा जागना अनुमाने अंतर पड्यो, परंतु केवळी तथा आचार्य, उपाध्याय, साधु सर्व छे, पण उपकार करवामां तीर्थंकर अने गणधर अधिक अधिक मोटा जाक रूपे छे, अने तेमना आगळ बीजा सर्व न्यूनाधिक नावमानां दृष्टाते छे, परंतु तारक पणानो गुणतो सर्वमा छे, पण जेटलुं अधिक एटलुं अधिक गणीए नावमाछे तेमां वेसीने समुद्र तरीए तो ते नावमा समुद्रना मोजाने सहन करे नहीं, ए तो खामी सुधी पहोंचामे, तेम व्यवहार समकितादि गुण निष्पन्न जे आचार्यादि छे, ते उपदेश करीने मार्गानुसारी पणामां लावे, वळी त्रण तत्त्वनी श्रद्धारूप समकित पमामे, इत्यादि उपकार करे, अने जे केवळी तथा श्रुत केवळी छे ते तो तीर्थंकरना बराबरीआ तारक, जवभ्रमण निवारक, शीवसुखदाता छे अंतर पमे न्यूनाधिक पण नथी,पण तेमणे शुभ कर्म तीर्थंकर अने गणधर जेटलुं पूर्वे उपार्ज्युं नथी, तेथी उपकार ओछो करी शके. परंने उपकार करतां पूर्वोपार्जित शुभ कर्म खप लागे छे नहीं तो असुच्चा केवळीने उपकार करवो जोइए, ते तेमनाथी यतो नथी

माटे उपकारी गुणे अधिक अधिकतो तीर्थंकर देव अने गणधर देव छे, तेमनो विरह पड्यो एज प्रथम दु ख जाणवु. ऋषभदेव स्वामीए त्रीजा आराना छेडे युगलियापणुं निवारीने अति जडक प्राणी विचार करवाने, वळी चितवना करवाने, अने हेय उपादेयनी व्हेंचण करवाने अयोग्य जेवा मनुष्यो तेमने समकितादि धर्म पमामी मोक्षनगरे वहोळा समुदाये पहोचाड्या, ए उपकारीपणानो गुण तीर्थंकर अने गणधरदेवनी बरोबरीमा बीजा कोइमा पण नथी, जेम सूर्यनी बरोबरीमा प्रकाश करवाने ग्रह, नक्षत्र, तारा, चद्रमा, कोइ पण नथी तद्वत जाणवु वळी चोथा आराना प्रथम भागमां जडकपणा माटे मूर्खपणु अधिक छे, अने जे मूर्खपणुं छे एज दु ख छे, ते मूर्खपणुं अनुक्रमे काळे काळे ओछु थतु गयुं, तेम तेम डाहापण काळे काळे वृद्धि पाम्युं अने जे डाहापण छे तेनेज सुख कहीए, माटे प्रथम दु.ख अने पछी सुख ए मूर्खपणुं अने डाहापण तेनो सहचारी काळ छे, बीजो कोइ नथी माटे काळ महात्म्य कहीए छीए वळी व्यवहारमा मूर्खपणु ते अति जडकपणुं अने वक्रपणु ते कुतर्कपणु ते बन्नेनो कर्त्ता मोह छे, अने तेनो एटले मूर्खपणानो अने वक्रपणानो अभाव कर्त्ता निर्मोह छे निर्मोह एटले ज्ञानवृत्तिनु नामज डाह्यापणु, अने डाह्यापणानो वहोळो समुदाय प्रवाह तो कर्मभूमिना पदरक्षेत्रमा अजितनाथ बीजा तीर्थंकरना वारे छे, तेनो कर्त्ता व्यवहारमा कोइ नथी, केवळ काळ स

हचारी छे काळे जद्रक युगलिया थाय, काळे प्राज्ञ साह्या थाय, काळे वक्र थाय, काळे अतिवक्र थाय, ए प्रवाह आश्रीने समुदाये वात कही, परंतु प्रत्येक अपेक्षाये विचारीए तो जे विज्ञाव दशा एज मोह छे अने स्वज्ञाव दशा एज निर्मोह ते ज्ञान छे. मोह छे ते कर्मबंध हेतु छे, अने निर्मोहवृत्ति ए ज्ञान छे, ते मोक्षनो हेतु छे ए कर्मबंधनो कर्त्ता अने कर्मनो क्षय कर्त्ता सदाकाळ पोते चेतन छे, बीजो कोइ नथी, परंतु पाच जरत अने पाच ऐरवत ए दश क्षेत्रमां तो काळ प्रमाणेज जीव यथाशक्ति पामे छे, माटे काळज सहचारी छे, ए काळ महात्म्य जाणवुं हवे चोथा आराना काळनां बेतालीश हजार वरसे उणां पचाश लाख कोडी सागरोपम गयां अने पचास लाख कोडी सागरोपम रह्या छे, ते अवसरे अजितनाथ तीर्थंकरनुं निर्वाण थयुं, तेमनो अधिकार कहे छे अयोध्यानगरीए जितशत्रुराय पिता, विजयाराणी माता, कंचनसम पितवर्ण, गजनुं लंछन, साडाचारसो धनुपनु देहमान, एकहजार राजपुत्र साथे दिक्षा, एकलाख साधु, तेमां पंचाणुं गणधर, अने त्रणलाख त्रीस हजार साधवी, बेलाख अठाणुंहजार श्रावक, अने पांच लाख पीस्तालीसहजार श्राविका सपदा, बहोतेरलाख पूर्वनुं आयुप समेतशिखरे समश्रेणीए मुक्ति गया. महायक्ष, अने अजितबलादेवी अधिष्ठायक, ए बीजा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो ते काळे पाच जरत अने पाच ऐरवत मळी दश, अने पाच महाविदेहनी एकसोने साठ वि-

जय मळी एकसोने सित्तेर क्षेत्र तेमा एकसोने सित्तेर तीर्थंकर विचरता हता

वर कनक शंख विद्रुम, मरकत घन सन्निभं विगतमोहं॥
सप्ततिशतं जिनाना, सर्वामर पूजित वंदे ॥ १ ॥

ए बीजा तीर्थंकरना निर्वाणथी त्रीसलाख कोडी सागरोपमनो काळ गये थके त्रीजा सम्भवनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे सावथ्थी नगरीए सेनाराणी माता, जितारीराय पिता, कचनसम पितवर्ण, अश्वनुं लंछन, चारसो धनुष उंची काया, एकहजार पुरुष साथे दिक्षा, बेलाख साधु, तेमा एकसोने बे गणधर, त्रणलाख छत्रीस हजार साधवी, बेलाख त्राणुंहजार श्रावक, अने छलाख छत्रीसहजार श्रावीकानी सम्प्रदा, साठलाख पुर्वनुं आयु, समेतशिखरे समश्रेणि ए सिद्धि वर्या त्रिमुख यक्ष अने दुरितारिदेवी अधिष्टायक, ए त्रीजा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो, तेमना निर्वाणथी दश लाख कोडी सागरोपमनो काळ गये थके चोथा अभिनदन स्वामी निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे अयोध्या नगरीए संवरराय पिता, सिद्धार्था माता, कंचनसम पितवर्ण, वानरनुं लंछन, साडा त्रणसो धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रण लाख साधु तेमा एकसोने सोल गणधर, अने छ लाख त्रीस हजार साधवी, बे लाख अठयासी हजार श्रावक अने पांच लाख सत्तावीस हजार श्राविकानी सपदा, पचास

लाख पूर्वनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रेणि ए मुक्ति, इश्वर यक्ष, अने काली देवी अधिष्टायक, ए चोथा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो तेमना निर्वाणथी नव लाख कोडी सागरोपमनो काळ गये थके पांचमा सुमतिनाथ भगवान निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे अयोध्या नगरीए मंगलाराणी माता, मेघरथराय पिता, कंचनसम पितवर्ण, क्रौंच लंछन, त्रणसो धनुष ऊंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रण लाख वीस हजार साधु तेमा सो गणधर, पाच लाख त्रीज हजार साधवी, बे लाख एकाशी हजार श्रावक अने पांच लाख सोळ हजार श्राविकानी सपदा, चालीस लाख पूर्वनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रेणि ए मुक्ति, तुंबरु यक्ष अने महाकाली देवी अधिष्टायक, ए पाचमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो अहीं चोथा आरानां नवाणु लाख कोडी सागरोपम तेमां बेतालीस हजार वरस उणा पाचमा तीर्थंकरनु निर्वाण थये वही गया, अने एक लाख कोडी सागरोपम चोथा आराना काळना बाकी रह्या छे. तेमाथी नेवुं हजार कोडी सागरोपमनो काळ गये थके छठा पद्मप्रभु निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे

कौसंबी नगरीए श्रीधर रायपिता, सुशीमा राणी-माता, उगता सूर्यसम रक्तवर्ण, कमळनु लछन, अढीसो धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रण लाख त्रीस हजार साधु, तेमा एकसोने सातगणधर, अने चार लाख वीस हजार साधवी, बे लाख छोतेर हजार

श्रावक, अने पाच लाख पाच हजार श्राविकानी संपदा, त्रीस लाख पूर्वनु आयुष, समेतशिखरे समश्रेणिए मुक्ति, कुसुम यक्ष अने अच्युता देवी अधिष्टायिक, ए छठा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आराना काळनां दस हजार कोडी सागरोपम बाकी रह्या छे तेमांथी नव हजार कोडी सागरोपमनो काळ गये थके सातमा सुपार्श्वनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे

वणारसी नगरीए प्रतिष्टराय पिता, पृथ्वी राणी माता कंचन सम पित वर्ण, स्वस्तिक लंछन, बसो धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रण लाख साधु तेमा पचाणु गणधर, चार लाख त्रीस हजार साधवी, बे लाख सत्तावन हजार श्रावक, अने चार लाख त्राणु हजार श्राविकानो सपदा, वीस लाख पूर्वनु आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिए मुक्ति, मातंगसुर देव अने शातादेवी अधिष्टायक ए सातमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

हवे चोथा आराना एक हजार कोडी सागरोपम बाकी रह्या छे, तेमांथी नवसो कोडी सागरोपमनो काळ गये थके आठमा चंद्रप्रभु निर्वाण थया तेमनो अधिकार कहे छे, चंद्रपुरी नगरीए महसेनराय पिता, लक्ष्मणाराणी माता, चंद्रसम उज्ज्वलवर्णि दोढसो धनुष उंची काया, चंद्रनुं लछन, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, अढीलाख साधु तेमां त्राणुं गणधर, त्रण लाख एंसी हजार साधवी,

अढी लाख श्रावक अने चार लाख एकाणुं हजार श्राविकानी सपदा, दश लाख पूर्वनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, विजयसुरदेव अने भृकुटीसुरि देवी अधिष्टायक, ए आठमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आराना सो कोमी सागरोपम बाकी रह्यां छे तेमांथी नेवुं कोमी सागरोपमनो काळ गये थके नवमा सुविधिनाथ निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे काकंदी नगरीए सुग्रीवराय पिता, रामाराणी माता, चंद्रसम उज्ज्वलवर्ण, मछनुं लछन, सो धनुप उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दीक्षा, बे लाख साधु तेमां अठयासी गणधर, अने एक लाख वीस हजार साधवी, बे लाख उगणत्रीस हजार श्रावक, अने चार लाख इकोतेर हजार श्राविकानी सपदा, बे लाख पूर्वनु आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, अजितसुर देव अने तारासुरी देवी अधिष्टायक, ए नवमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आराना दश कोमी सागरोपम बाकी रह्यां छे, तेमांथी नवकोमी सागरोपमनो काळ गये थके दशमा शितळनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे. भद्दिलपुरी नगरीए दृढरथराय पिता, नंदाराणी माता कंचनसम पितवर्ण, श्रीवत्स लंछन, नेवुं धनुप उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, एक लाख साधु तेमा एक्यासी गणधरं अने एक लाख छ हजार साधवी, बे लाख नव्यासी हजार श्रावक, अने चार लाख अठावन हजार श्राविकानी संपदा, एक लाख पूर्वनुं आयुप, समेतशिखरे समश्रे-

णिये मुक्ति, अशोका देवी अने ब्रह्मा यक्ष अधिष्टायक, ए दशमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

हवे चोथा आरानो एक कोम्ड सागरोपम काल रह्यो छे, तेमाथी शेष सो सागरोपम अने पासठ लाख चोरासी हजार वर्ष एटलो काळ बाकी रह्यो, अने बीजो वधोए गयो, त्यारे अगियारमा श्रेयांस जिनजी निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे, सिंहपुरी नगरीए विष्णु नृपति पिता, विष्णुराणी माता, कचनसम पितवर्ण, खड्गीनुं लंछन एंशी धनुष्यनी काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, चोराशी हजार साधु तेमा छोतेर गणधर अने एक लाख त्रण हजार साधवी, बे लाख एकउण एंशी हजार श्रावक अने चार लाख अमताळीश हजार श्राविकानी संपदा, चोर्यासी लाख वरसनु आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणीये मुक्ति, मनुएसुर देव अने श्रीवत्सा देवी अधिष्टायक, ए अगियारमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

हवे तेमना निर्वाणथी चोपन सागरोपमनो काळ गये थके बारमा वासुपूज्य निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे चपापुरी नगरीए वसुपूज्य पिता, जयाराणी माता, परवाळा सम रक्तवर्ण महिषनु लछन, सित्तेर धनुष्यनी ऊंची काया छसो पुरुष साथे दिक्षा, बहोतेर हजार साधु तेमा छासठ गणधर अने एक लाख साधवी, बे लाख पंदर हजार श्रावक, चार लाख छत्रीस हजार श्राविकानी संपदा, बहोतेर लाख वर्षनु आयुष्य, चंपा नगरीए समश्रेणिये मुक्ति, कुमार यक्ष अने चन्दा देवी अधिष्टायक, ए बारमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

तेमना निर्वाणथी त्रीस सागरोपमनो काळ गये थके तेरमा विमळनाथजी निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे. कंपिलपुरी नगरीए कृतवर्मरायपिता, श्यामाराणी माता, कंचनसम पितवर्ण, वराहनुं लंछन, साठ धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, अरसठ हजार साधु, तेमां सत्तावन गणधर, एक लाख अने आठसो साधवी, बे लाख आठ हजार श्रावक, चार लाख चोवीस हजार श्राविकानी सपदा, साठ लाख वर्षनु आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणीये मुक्ति, षण्मुख यक्ष अने विदितादेवी अधिष्टायक ए तेरमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

हवे तेमना निर्वाणथी नव सागरोपमनो काळ गये थके चौदमा अनंतनाथ तीर्थंकर निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. अयोध्या नगरीए सिंहसेन राय पिता, सुयशाराणी माता, कंचनसम पित वर्ण सिचाणानुं लंछन, पचास धनुष्यनी उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, छासठ हजार साधु तेमां पचास गणधर अने बासठ हजार साधवी, बे लाख छ हजार श्रावक अने चार लाख चौद हजार श्राविकानी संपदा, त्रीस लाख वरसनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, पाताळसुर देव अने अंकुसरी देवी अधिष्टायक ए चौदमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो तेमना निर्वाणथी चार सागरोपमनो काळ गये थके पदरमा धर्मनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे

रत्नपूरी नगरीए भानु नृपति पिता, सुव्रताराणी माता, कंचन सम पितवर्ण, वज्रनु लंछन, पीस्तालीस धनुष्य उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, चोसठ

हजार साधु तेमा त्रेतालीस गणधर, बासठ हजार चारसो साध्वी, बे लाख चार हजार श्रावक, अने चार लाख तेर हजार श्राविकानी सपदा, दश लाख वरसनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, किन्नरसुर देव अने कंदर्पासुरीदेवी अधिष्टायक, ए पदरमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. हवे तेमना निर्वाणथी पोणो पल्योपमे न्यून त्रण सागरोपमनो काळ गये थके सोळमा शातिनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे

गजपुरी नगरीए विश्वसेन रायपिता, अचिराराणीमाता, कंचन समपितवर्ण, मृगनु लंछन, चालीस धनुष ऊंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा बासठ हजार साधु तेमां छत्रीस गणधर, एकसठ हजार छसो साध्वी, एकलाख नेवु हजार श्रावक, त्रणलाख त्राणु हजार श्राविकानी सपदा, एक लाख वर्षनुं आयुष्य, तेमा पचोतेर हजार वर्ष गृहवासे रह्या, एक वर्ष छद्मस्थ पर्याय, चोवीस हजार नवसें नवाणुं वर्ष केवळ पर्याय, एक मासनो संथारो नवसो मुनि साथे, समेतशिखरे समश्रेणीए मुक्ति गरुड यक्ष, निर्वाणी देवी, अधिष्टायक, ए सोळमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो, हवे तेमना निर्वाणथी अर्द्धा पल्योपमनो काळ गये थके सतरमा श्री कुथुंनाथ निर्वाण पद पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे

गजपुरी नगरीये सुरनृपति पिता, श्रीराणीमाता कचन समपीतवर्ण, अजनुं लछन, पात्रीस धनुष्य ऊची काया एक हजार पुरुष साथे दिक्षा साठ हजार साधु तेमा पात्रीस गणधर, साठ हजार छसो साधवी, एक लाखएकवण

एंशी हजार श्रावक अने त्रण लाख एक्यासी हजार श्राविकानी संपदा, पंचाणुं हजार वर्षनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति गंधर्व यक्ष, अने वलादेवी अधिष्ठायक ए सत्तरमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

हवे ए प्रभुना निर्वाणथी कोटी सहस्र वर्षे न्यूणुं पा पल्योपमनो काळ गये थके अढारमा अरनाथ निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. गजपुरी नगरीए सुदर्शन रायपिता, देवी माता, कचन सम पित वर्ण, नंदावर्त्तनु लंछन, त्रीस धनुष ऊंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, पचास हजार साधु तेमा तेत्रीस गणधर, साठ हजार साधवी, एक लाख चोरासी हजार श्रावक, अने त्रण लाख बोतेर हजार श्राविकानी संपदा, चोरासी हजार वर्षनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणियेमुक्ति यक्षेंद्र यक्ष अने धारिणी देवी अधिष्टायक, ए अढारमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

हवे तेमना निर्वाणथी कोटी सहस्र वर्षे ओगणीसमा मल्लिनाथ निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. मिथिला नगरीए कुंभराय पिता, प्रभावती राणी माता, नीलवर्ण, घटनुं लंछन, पचीस धनुष ऊंची काया, त्रणसो पुरुष साथे दिक्षा, छद्मस्थपणुं एक दिवस, चालीस हजार साधु तेमा अठावीश गणधर, पंचावन हजार साधवी एक लाख त्रासी हजार श्रावक अने त्रण लाख सित्तेर हजार श्राविकानी संपदा, पचावन हजार वर्षनु आयुष्य, समेतशिखरे स-श्रेणियेमुक्ति कुबेर यक्ष अने वैरुटया देवी अधिष्टायक, ए मा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आराना पासठ लाख अने चोराशी हजार वर्ष रह्या छे तेमाथी चोपन लाख वरस गये थके वीसमा मुनिसुव्रत स्वामी निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे, राजगृही नगरीए सुमित्रराय पिता पद्मावती राणी माता, आखनी कीकोसम श्यामवर्ण, काचवानु लछन, वीसधनुष उंचो काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रीस हजार साधु तेमा अढार गणधर, पचास हजार साधवी, एक लाख बहोतेर हजार श्रावक अने साडा त्रण लाख श्राविकानी सपदा, त्रीस हजार वरसनु आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, वरुण यक्ष अने नरदत्तादेवी अधिष्टायक ए वीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो तेमना निर्वाणथी छ लाख वर्ष गये थके एकवीसमा नमिनाथनु निर्वाण थयु तेमनो अधिकार कहे छे

मिथिला नगरीये विजयराय पिता, वप्रादेवी माता, कचन सम पित वर्ण, नीला कमळनुं लछन, पंदर धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, वीस हजार साधु तेमा सत्तर गणधर, एकतालीस हजार साधवी, एक लाख सीत्तेर हजार श्रावक, त्रण लाख अडतालीस हजार श्राविकानी सपदा, दश हजार वर्षनु आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति भ्रकुटीसुर देव अने गंधारी देवी अधिष्टायक, ए एकवीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. तेमना निर्वाणथी पाच लाख वर्षे बावीसमा नेमिनाथनु निर्वाण थयुं तेमनो अधिकार कहे छे

सूर्यपुरी नगरीए समुद्रविजयराय पिता, शिवादेवी माता, आखनी कीकीसम श्यामवर्ण, शखनुं लछन, दश

धनुप ऊंची काया, एक हजार पुरुप साथे दिक्षा, अगियार वा अढार गणधर आदि अढार हजार साधु, चालीस हजार साधवी, एक लाख एकउण सित्तेर हजार श्रावक अने त्रण लाख ने छत्रीस हजार श्राविकानी संपदा, एक हजार वरसनुं आयुष्य. तेमा त्रणसो वरस गृहवासे बाळ, ब्रह्मचारी अने चोपन दिवस छद्मस्थ पर्याय, बाकी सातसो वर्ष देशेऊणां केवळ पर्याय, रैवतगिरि पर्वते शुक्ल अष्टमीए समश्रेणिये मुक्त गोमेध यक्ष अने अंबिका देवी अधिष्ठायक. ए बावीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आराना चोराशी हजार वर्ष रह्या छे, ते माथी त्यासी हजार सातसोने पचास वरस गये थके त्रेवीशमा पार्श्वनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे. वणारसी नगरीए अश्वसेनराय पिता, वामाराणी मात नीलवर्ण, नागनुं लंछन, नव हाथ ऊंची काया, त्रणसो पुरुप साथे दिक्षा, दस वा आठ गणधर आदि सोळ हजार साधु अने अडत्रीस हजार साधवी, एक लाख चोसठ हजार श्रावक अने त्रण लाख ओगणचालीस हजार श्राविकानी संपदा, सो वरसनुं आयुष्य तेमा त्रीस वरसना अनुमाने गृहवासे अने चोराशी दिवस छद्मस्थ पर्याय, सित्तेरवरस देशे ऊणां केवळ पर्याय, समेतशिखरे शुक्ल अष्टमीए समश्रेणिये मुक्ति, पार्श्वयक्ष अने पद्मावती देवी अधिष्ठायक ए तेवीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. तेमना निर्वाणथी अढीसो वरस गये थके चोवीसमा वर्द्धमान स्वामी निर्वाण पाम्या तेमनो [illegible] रे छे.

क्षत्रीयकुंड नगरीए सिद्धारथराय पिता, त्रिसलाराणी माता, कचनसम पितवर्ण सिंहनुं लंछन, सात हाथ उंची काया, एकाकीपणे दिक्षा, चौद हजार साधु तेमा अगियार गणधर, छत्रीस हजार साधवी, एक लाख ओगणसाठ हजार श्रावक, त्रण लाख अढार हजार श्राविकानी संपदा, त्रीस वरस गृहवास, बार वरसने साडा छ मास छद्मस्थ पर्याय, त्रीस वरस देशे उणा केवळ पर्याय, एम बहोतेर वरसनुं आयुष पूर्ण करी अमावास्यानी पाछली बे घडी रात्री रहे थके स्वाति नक्षत्रे पावापुरी नगरीए समश्रेणिये मुक्ति, मातंग यक्ष अने सिद्धायिका देवी अधिष्ठायक ए चोवीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो

अहींआ चोथा आराना नव्याशी पखवाडीआ काळ बाकी रह्यो छे तेनुं कारण ऋषभदेव स्वामीनुं निर्वाण त्रीजा आराना नव्याशी पखवाडीआ रहे छते थएलुं, ते कारणे अहीं चोथा आरानो काळ गवेष्यो, तेमा प्रत्येक तीर्थंकरना वारे नव्याशी पखवाडीआ निर्वाण अवसरे पाछळ करीए एटले चोथा आराना नव्याशी पखवाडीआ बाकी रह्यानुं प्रमाण मळशे, अने चोथो आरो एक कोडाकोडी सागरोपममा बेतालीस हजार वरस उणानो पूर्ण थशे ए वीरप्रभुना अगीआर गणधर तेमा भगवान विद्यमान छता नव गणधर तो सिद्धि वर्या छे, एक पेहेला अने बीजा पाचमा ए बे गणधर छद्मस्थ पर्याये छे, तेमा भगवानना निर्वाण अवसरे आयुष्यने अंते पाचमा गणधर सुधर्मा स्वामी भगवाननी पासे छे तेमने पाट भगवाने

सोंप्यो. गौतम स्वामीने भगवाने पोताना उपर अतिराग जाणीने उपदेश करवाना कारणे गामांतरे जवानी आज्ञा करीने मोकलेला छे, त्यांथी आवतां रस्तामां तेज प्रभाते भगवान वीरप्रभुनु निर्वाण थयुं, एम देवताना मुखथी सांभळीने एकदम मूर्छागत थइ हेठा पड्या, वज्रघात सरखुं दुःख प्राप्त थयुं, रागना कारणे घणा विलाप कर्या, कणेक अंतरे समज्या के मारी भूल छे, ए वीतराग निरागी निःस्नेही उपर मे राग कीधो, धिक्कार छे एक पखारागने कोना गुरु अने कोना शिष्य एक वस्तुगते पोतानी आत्मसत्तानुं अवलंबन करवुं एज श्रेय छे, कल्याणकारी छे. बाकी सर्व मिथ्या एम कारणनो अभाव थता सरागता अटकी, त्यां तदाश्रुतनो अंतरभावे उपयोग करी परिणाम पामतां सरागतापणे मोहित दशानुं बंधन हतुं ते त्रूटयुं अने वीतरागता प्रगट थइ, शुक्ल ध्यानना ध्याता थया, क्षपकश्रेणी मांडी घातिकर्म हणी, भवभ्रमणानुं बीज जे घातिकर्म तेने ध्यान अग्निए बाळी जाळीने केळवज्ञान केवळदर्शन आदि क्षायकभावनी अनंती लब्धि पाम्या, देवदेवेंद्र मळीने जातिवंत कंचनना कमळनी रचना करी मोटो उत्सव कर्यो, गौतमस्वामी महाराजे केवलज्ञानी थका उपदेश कर्यो, चतुर्विध संघे सांभळ्यो, त्यां अनंतो लाभ थयो, भाव संवर अने सकाम निर्जरा घणा जनो पाम्या. अहीं चोथा आरानो अधिकार समाप्त थयो.

આ અવસર્પિણિકાળે વર્ત્તમાન ચોવીશીનો ત્રેવીસ બોલનો યંત્ર.

૯	૧૦	૧૧	૧૨	૧૩	૧૪	૧૫
ચ્યવન તિથિ	જન્મતિથિ	દિક્ષા તિથિ	કેવળજ્ઞાન તિથિ	નિર્વાણતિથિ	કેટલાસાથે દિક્ષા	ગણુ ધર
અસાડ વદી ૪	ચૈત્ર વદી ૮	ચૈત્રવદ ૮	ફાગણુવદ ૧૧	માહાવદ ૧૩	૪૦૦૦	૮૪
વૈશાખ શુદ ૧૩	માહા શુ ૮	માહાવ૦ ૯	પોસવ૦ ૧૧	ચૈત્રશુદ ૫	૧૦૦૦	૯૫
ફાગણુ શુ૦ ૮	માહા શુ૦ ૧૪	માગશરશુદ ૧૫	કારતકવદ ૫	ચૈત્રશુ૦ ૫	૧૦૦૦	૧૦૨
વૈશાખ શુદી ૪	માહા શુ૦ ૨	માહાશુદ ૧૨	પોષવદ ૧૪	વૈશાખશુ૦ ૮	૧૦૦૦	૧૧૬
શ્રાવણુ શુ૦ ૨	વૈશાખ શુદ ૮	વૈશાખશુ૦ ૯	ચૈત્રશુદ ૧૧	ચૈત્રશુદ ૯	૧૦૦૦	૧૦૦
માહા વ૦ ૬	કારતક વ૦ ૧૨	કારતકવ૦ ૧૩	ચૈત્રશુદ ૧૫	માગશરવ૦ ૧૧	૧૦૦૦	૧૦૭
ભા૦રવા વદી ૮	જેઠ શુ ૧૨	જેઠશુ૦ ૧૩	ફાગણુવદ ૬	ફાગણુવદ ૭	૧૦૦૦	૯૫
ચૈત્ર વદી ૫	પોસ વ૦ ૧૨	પોષવદ ૧૩	ફાગણુવદ ૭	ભાદરવાવ૦ ૭	૧૦૦૦	૯૩
ફાગણુવદ ૯	માગશર વ૦ ૫	માગશરવદ ૬	કારતકશુ૦ ૩	ભા૦રવાશુદી ૯	૧૦૦૦	૮૮
વૈશાખ વદી ૬	માહા વ૦ ૧૨	માહાવદી ૧૨	પોષવદ ૧૪	વૈશાખવ૦ ૨	૧૦૦૦	૮૧
જેઠ વદ ૬	ફાગણુવ૦ ૧૨	ફાગણુવ૦ ૧૩	મહાવદી ૧૩	શ્રાવણુવદ ૩	૧૦૦૦	૭૬
જેઠ શુદ ૯	ફાગણુવ૦ ૧૪	ફાગણુશુદ ૧૫	મહાશુ૦ ૨	અસાડશુદ ૧૪	૬૦૦	૬૬
વૈશાખ શુદ ૧૨	માહાશુ ૩	માહાશુદ ૪	પોષશુ૦ ૬	અસાડવદ ૭	૧૦૦૦	૫૭
શ્રાવણુ વ૦ ૭	વૈશાખવ ૧૩	વૈશાખવદ ૧૪	વૈશાખવ૦ ૧૪	ચૈત્રશુદ ૫	૧૦૦૦	૫૦
વૈશાખ શુદી ૭	માહાશુદ ૩	મહાશુ૦ ૧૩	પોષશુદ ૧૫	જેઠશુદ ૫	૧૦૦૦	૪૩
ભા૦રવા વ ૭	જેઠવ૦ ૧૩	જે૦વ૦ ૧૪	પોષશુ૦ ૯	જેઠવદ ૧૩	૧૦૦૦	૩૬
શ્રાવણુ વદી ૯	વૈશાખવદ ૧૪	ચૈત્રવ૦ ૫	ચૈત્રશુ૦ ૩	વૈશાખવ૦ ૧	૧૦૦૦	૩૫
ફાગણુ શુદી ૨	માગશરશુ૦ ૧૦	માગશરશુ૦ ૧૧	કારતકશુ૦ ૧૨	માગશરશુદ ૧૦	૧૦૦૦	૩૩
ફાગણુ શુદી ૪	માગશરશુ૦ ૧૧	માગશરશુ૦ ૧૧	માગશરશુ૦ ૧૧	ફાગણુશુદ ૧૨	૩૦૦	૨૮
શ્રાવણુ શુદ ૧૫	જેઠવદ ૮	ફાગણુશુદ ૧૨	ફાગણુવ૦ ૧૨	જેઠવ૦ ૯	૧૦૦૦	૧૮
આસો શુદ ૧૫	શ્રાવણુવ૦ ૮	અસાડવદ ૯	માગશરશુ૦ ૧૧	વૈશાખવદ ૧૦	૧૦૦૦	૧૭
કારતક વ૦ ૧૨	શ્રાવણુશુ૦ ૫	શ્રાવણુશુ૦ ૬	આસોવ૦ ૦))	અસાડશુદ ૮	૧૦૦૦	૧૧
ચૈત્ર વ૦ ૪	પોષવ૦ ૧૦	પોષવ૦ ૧૧	ચૈત્રવ૦ ૪	શ્રાવણુશુ૦ ૮	૩૦૦	૧૦
અસાડ શુદ ૬	ચૈત્રશુ ૧૩	માગશરવદ ૧૦	વૈશાખશુ૦ ૧૦	કારતકવ૦ ૦))	૧	૧૧

આ અવસર્પિણિ કાળે વર્તમાન ચોવીશીનો ત્રેવીશ બોલનો યંત્ર

૧૬	૧૭	૧૮	૧૯	૨૦	૨૧	૨૨	૨૩
સાધુ સંપદા	સાધ્વી સંપદા	શ્રાવકસંપદા	શ્રાવિકા સંપદા	આયુષ્ય	નિર્વાણ ભૂમિ	યક્ષ	યક્ષણી
૮૪૦૦૦	૩૦૦૦૦૦	૩૫૦૦૦૦	૫૫૪૦૦૦	૮૪ લાખપૂર્વ	અષ્ટાપદગિરિ	ગોમુખ	ચક્રેશ્વરી
૧૦૦૦૦૦	૩૩૦૦૦૦	૨૯૮૦૦૦	૫૪૫૦૦૦	૭૨ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	મહા	અજિતબાલા
૨૦૦૦૦૦	૩૩૬૦૦૦	૨૯૩૦૦૦	૬૩૬૦૦૦	૬૦ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	ત્રિમુખ	દુરિતારી
૩૦૦૦૦૦	૬૩૦૦૦૦	૨૮૮૦૦૦	૫૨૭૦૦૦	૫૦ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	ઇશ્વર	કાલિકા
૩૨૦૦૦૦	૫૩૦૦૦૦	૨૮૧૦૦૦	૫૧૬૦૦૦	૪૦ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	તુંબરૂ	મહાકાલી
૩૩૦૦૦૦	૪૨૦૦૦૦	૨૭૬૦૦૦	૫૦૫૦૦૦	૩૦ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	કુસુમય	સ્યામા
૩૦૦૦૦૦	૪૩૦૦૦૦	૨૫૭૦૦૦	૪૯૩૦૦૦	૨૦ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	માતંગ	શાતા
૨૫૦૦૦૦	૩૮૦૦૦૦	૨૫૦૦૦૦	૪૭૯૦૦૦	૧૦ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	વિજય	ભૃકુટી
૨૦૦૦૦૦	૧૨૦૦૦૦	૨૨૯૦૦૦	૪૭૧૦૦૦	૨ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	અજિતા	સુતારિકા
૧૦૦૦૦૦	૧૦૬૦૦૦	૨૮૯૦૦૦	૪૫૮૦૦૦	૧ લાખપૂર્વ	સમેતશિખર	બ્રહ્મા	અશોકા
૮૪૦૦૦	૧૦૩૦૦૦	૨૭૯૦૦૦	૪૪૮૦૦૦	૮૪ લાખવર્ષ	સમેતશિખર	મણુસુર	માનવી
૭૨૦૦૦	૧૦૦૦૦૦	૨૧૫૦૦૦	૪૩૬૦૦૦	૭૨ લાખવર્ષ	ચંપાપુરી	કુમાર	ચંડા
૬૮૦૦૦	૧૦૦૮૦૦	૨૦૮૦૦૦	૪૨૪૦૦૦	૬૦ લાખવર્ષ	સમેતશિખર	ષણ્મુખ	વિદિતા
૬૬૦૦૦	૬૨૦૦૦	૨૦૬૦૦૦	૪૧૪૦૦૦	૩૦ લાખવર્ષ	સમેતશિખર	પાતાલ	અંકુશરી
૬૪૦૦૦	૬૨૪૦૦	૨૦૪૦૦૦	૪૧૩૦૦૦	૧૦ લાખવર્ષ	સમેતશિખર	કિન્નર	કંદર્પાસુરી
૬૨૦૦૦	૬૧૬૦૦	૧૯૦૦૦૦	૩૯૩૦૦૦	૧ લાખવર્ષ	સમેતશિખર	ગરૂડ	નિર્વાણી
૬૦૦૦૦	૬૦૬૦૦	૧૭૯૦૦૦	૩૮૧૦૦૦	૯૫ હજારવર્ષ	સમેતશિખર	ગંધર્વ	બલા
૫૦૦૦૦	૬૦૦૦૦	૧૮૪૦૦૦	૩૭૨૦૦૦	૮૪ હજારવર્ષ	સમેતશિખર	યક્ષેંદ્ર	ધારણી
૪૦૦૦૦	૫૫૦૦૦	૧૮૩૦૦૦	૩૭૦૦૦૦	૫૫ હજારવર્ષ	સમેતશિખર	કુબેર	વૈરૂટયા
૩૦૦૦૦	૫૦૦૦૦	૧૭૨૦૦૦	૩૫૦૦૦૦	૩૦ હજાર વર્ષ	સમેતશિખર	વરૂણ	નરદત્તા
૨૦૦૦૦	૪૧૦૦૦	૧૭૦૦૦૦	૩૪૮૦૦૦	૧૦ હજારવર્ષ	સમેતશિખર	ભૃકુટી	ગંધારિ
૧૮૦૦૦	૪૦૦૦૦	૧૬૯૦૦૦	૩૩૬૦૦૦	૧ હજારવર્ષ	રૈવતગીરિ	ગોમેધ	અંબિકા
૧૬૦૦૦	૩૮૦૦૦	૧૬૪૦૦૦	૩૩૯૦૦૦	૧૦૦ વર્ષ	સમેતશિખર	પાર્શ્વ	પદ્માવતી
૧૪૦૦૦	૩૬૦૦૦	૧૫૯૦૦૦	૩૧૮૦૦૦	૭૨ વર્ષ	પાવાપુરી	માતંગ	સિદ્ધાયિકા

આ વર્તમાન અવસર્પિણિકાલે ત્રેસઠ સલાકા પુરૂષ થઇ ગયા તેમનો યંત્ર

ક્રમ	તીર્થંકર	ચક્રવર્તિ	વાસુદેવ	બળદેવ	પ્રતિવાસુદેવ	દેહ પ્રમાણ	આયુષ્ય
૧	ઋષભદેવ	ભરત ૧	૦	૦	૦	૫૦૦ ધનુષ્ય	ચોરાસીલાખપૂર્વ
૨	અજિતનાથ	સગર ૨	૦	૦	૦	૪૫૦ ધનુષ્ય	બોતેરલાખપૂર્વ
૩	સંભવનાથ	૦	૦	૦	૦	૪૦૦ ધનુષ્ય	સાઠલાખપૂર્વ
૪	અભિનંદન	૦	૦	૦	૦	૩૫૦ ધનુષ્ય	પચાસલાખપૂર્વ
૫	સુમતિનાથ	૦	૦	૦	૦	૩૦૦ ધનુષ્ય	ચાલીસલાખપૂર્વ
૬	પદ્મપ્રભ	૦	૦	૦	૦	૨૫૦ ધનુષ્ય	ત્રીસલાખપૂર્વ
૭	સુપાર્શ્વનાથ	૦	૦	૦	૦	૨૦૦ ધનુષ્ય	વીસલાખપૂર્વ
૮	ચંદ્રપ્રભ	૦	૦	૦	૦	૧૫૦ ધનુષ્ય	દશલાખપૂર્વ
૯	સુવિધિનાથ	૦	૦	૦	૦	૧૦૦ ધનુષ્ય	બેલાખપૂર્વ
૧૦	શિતળનાથ	૦	૦	૦	૦	૯૦ ધનુષ્ય	એકલાખપૂર્વ
૧૧	શ્રેયાંસનાથ	૦	ત્રિપૃષ્ટ ૧	અચળ ૧	અશ્વગ્રીવ ૧	૮૦ ધનુષ્ય	ચોરાસીલાખવર્ષ
૧૨	વાસુપૂજ્ય	૦	દ્વીપૃષ્ટ ૨	વિજય ૨	તારક ૨	૭૦ ધનુષ્ય	બોતેરલાખવર્ષ
૧૩	વિમળનાથ	૦	સ્વયંભુ ૩	ભદ્ર ૩	મેરક ૩	૬૦ ધનુષ્ય	સાઠલાખવર્ષ
૧૪	અનંતનાથ	૦	પુરૂષોત્તમ ૪	સુપ્રભ ૪	મેધકે ૪	૫૦ ધનુષ્ય	ત્રીસલાખવર્ષ
૧૫	ધર્મનાથ	૦	પુરૂષસિંહ ૫	સુદર્શણ ૫	નીસંભ ૫	૪૫ ધનુષ્ય	દશલાખવર્ષ
	૦	મઘવા ૩	૦	૦	૦	૪૨॥ ધનુષ્ય	પાંચલાખ વર્ષ
	૦	સનતકુમાર ૪	૦	૦	૦	૪૧॥ ધનુષ્ય	ત્રણલાખવર્ષ
૧	શાંતિનાથ	શાંતિનાથ ૫	૦	૦	૦	૪૦ ધનુષ્ય	એકલાખવર્ષ
૭	કુંથુનાથ	કુંથુનાથ ૬	૦	૦	૦	૩૫ ધનુષ્ય	પંચાણુંહજારવર્ષ
૮	અરનાથ	અરનાથ ૭	૦	૦	૦	૩૦ ધનુષ્ય	ચોરાસીહજારવર્ષ

આ વર્તમાન અવસર્પિણિ કાળે ત્રેસઠ શલાકા પુરૂષ થઈ ગયા તેમનો યંત્ર

અ.	તીર્થંકર	ચક્રવર્તિ	વાસુદેવ	બળદેવ	પ્રતિવાસુદેવ	દેહ પ્રમાણ	આયુષ્ય
૦	૦	૦	પુરૂષપુંડરિક ૬	આણંદ ૬	બળી ૬	૨૯ ધનુષ્ય	પાંસઠહજારવર્ષ
૦	૦	સુભૂમ ૮	૦	૦	૦	૨૮ ધનુષ્ય	સાઠહજારવર્ષ
૦	૦	૦	દત્ત ૭	નંદન ૭	પ્રહરાદ ૭	૨૬ ધનુષ્ય	છપનહજારવર્ષ
૧૯	મલ્લિનાથ	૦	૦	૦	૦	૨૫ ધનુષ્ય	પંચાવનહજારવર્ષ
૨૦	મુનિસુવ્રત	મહાપદ્મ ૯	૦	૦	૦	૨૦ ધનુષ્ય	ત્રીસહજારવર્ષ
૦	૦	૦	લક્ષ્મણ ૮	રામચંદ્ર ૮	રાવણ ૮	૧૬ ધનુષ્ય	બારહજારવર્ષ
૨૧	નમિનાથ	હરિષેણ ૧૦	૦	૦	૦	૧૫ ધનુષ્ય	દશહજારવર્ષ
૦	૦	જય ૧૧	૦	૦	૦	૧૨ ધનુષ્ય	ત્રણહજારવર્ષ
૨૨	નેમિનાથ	૦	કૃષ્ણ ૯	બળભદ્ર ૯	જરાસંધ ૯	૧૦ ધનુષ્ય	એકહજારવર્ષ
૦	૦	બ્રહ્મદત્ત ૧૨	૦	૦	૦	૭ ધનુષ્ય	સાતસોવર્ષ
૨૩	પાર્શ્વનાથ	૦	૦	૦	૦	૯ હાથ	સોવર્ષ
૨૪	વર્દ્ધમાનસ્વામી	૦	૦	૦	૦	૭ હાથ	બોતેરવર્ષ

आ वर्त्तमान अवसर्प्पिणि काळे पांच भरत अने पांच ऐरव्रत ए दश क्षेत्रमां प्रत्येक क्षेत्रे एक एक चोवीसी थाय अने तीर्थंकरोना वचमां काळ-नां आंतरां पडे तेनो यंत्र.

१ आ भरतक्षेत्रमां प्रथम ऋषभदेव स्वामी थया तेमना निर्वाणने अने गत चोवीसना छेल्ला तीर्थंकरना निर्वाणने अढार कोडाकोडी सागरोपमनो आतरो.

२ पेहेला तीर्थंकर अने बीजा तीर्थंकर वच्चे बेतालीस हजार वर्ष उणां पचास लाख कोडी सागरोपमनो आतरो.

३ बीजा तीर्थंकर अने त्रीजा तीर्थंकर वच्चे त्रीस लाख कोडी सागरोपमनो आंतरो.

४ त्रीजा तीर्थंकर अने चोथा तीर्थंकर वच्चे दश लाख कोडी सागरोपमनो आंतरो.

५ चोथा तीर्थंकर अने पांचमा तीर्थंकर वच्चे नव लाख कोडी सागरोपमनो आंतरो.

६ पांचमा तीर्थंकर अने छठ्ठा तीर्थंकर वच्चे नेवुं हजार कोडी सागरोपमनो आंतरो.

७ छठ्ठा तीर्थंकर अने सातमा तीर्थंकर वच्चे नव हजार कोडी सागरोपमनो आंतरो.

८ सातमा तीर्थंकर अने आठमा तीर्थंकर वच्चे नवसो कोडी सागरोपमनो

९ आठमा तीर्थंकर अने नवमा तीर्थंकर वच्चे नेवु कोडी सागरोपमनो आंतरो.

१० नवमा तीर्थंकर अने दशमा तीर्थंकर वच्चे नव कोडी सागरोपमनो आंतरो

११ दशमा तीर्थंकर अने अगियारमा तीर्थंकर वच्चे सो सागरोपम अने पासठ लाख चोराशी हजार वर्ष न्यून एक कोडी सागरोपमनो आतरो

१२ अगीआरमा तीर्थंकर अने बारमा तीर्थंकर वच्चे चोपन सागरोपमनो आतरो

१३ बारमा तीर्थंकर अने तेरमा तीर्थंकर वच्चे त्रीस सागरोपमनो आतरो

१४ तेरमा तीर्थंकर अने चौदमा तीर्थंकर वच्चे नव सागरोपमनो आतरो

१५ चौदमा तीर्थंकर अने पंदरमा तीर्थंकर वच्चे चार सागरोपमनो आतरो

१६ पंदरमा तीर्थंकर अने सोळमा तीर्थंकर वच्चे पोणोपल्यापमे न्यून त्रण सागरोपमनो आतरो.

१७ सोळमा तीर्थंकर अने सत्तरमा तीर्थंकर वच्चे अरधा पल्योपमनो आतरो

१८ सत्तरमा तीर्थंकर अने अढारमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वर्ष ऊणा पा पल्योपमनो आतरो

१९ अढारमा तीर्थंकर अने ओगणीसमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वर्षनो आतरो

२० उंगणीसमा तीर्थंकर अने वीसमा तीर्थंकर वच्चे चोपन लाख वरसनो आंतरो.

२१ वीसमा तीर्थंकर अने एकवीसमा तीर्थंकर वच्चे ६ लाख वर्षनो आंतरो.

२२ एकवीसमा तीर्थंकर अने बावीसमा तीर्थंकर वच्चे पांच लाख वरसनो आतरो

२३ बावीसमा तीर्थंकर अने त्रेवीसमा तीर्थंकर वच्चे त्यासी हजार सातसोने पचास वर्षनो आंतरो.

२४ तेवीसमा तीर्थंकर अने चोवीसमा तीर्थंकर वच्चे अढीसें वर्षनो आतरो.



आवती नावी चोवीसीए पांच नरत अने पांच ऐरव्रत ए दस क्षेत्रमां क्षेत्र क्षेत्र प्रत्ये एक एक चोवीसी उत्सार्प्पिणि काळे थशे तेमां तीर्थंकरोना वचमां काळनां आंतरां पडे तेनो यंत्र.

१ आ नरत क्षेत्रमा प्रथम तीर्थंकर पद्मनान स्वामी थशे तेमना निर्वाणने अने महावीर स्वामीना निर्वाणने चोरासी हजार वरसनो आंतरो.

२ पेहेला अने बीजा तीर्थंकर वच्चे अढीसो वरसनो आतरो

३ बीजा अने त्रीजा तीर्थंकर वच्चे त्यासी हजार सातसोने पचास वर्षनो आंतरो.

४ त्रीजा अने चोथा तीर्थंकर वच्चे पांच लाख वरसनो आंतरो

५ चोथा अने पाचमा तीर्थंकर वच्चे ढ लाख वरसनो आतरो

६ पाचमा अने छठा तीर्थंकर वच्चे चोपन लाख वरसनो आतरो

७ छठा अने सातमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वरसनो आतरो

८ सातमा अने आठमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वरसे त्रण पा पल्योपमनो आतरो

९ आठमा अने नवमा तीर्थंकर वच्चे अरधा पल्योपमनो आतरो

१० नवमा अने दशमा तीर्थंकर वच्चे पोणा पल्योपमे न्यून त्रण सागरोपमनो आतरो

११ दशमा अने अगीआरमा तीर्थंकर वच्चे चार सागरोपमनो आतरो.

१२ अगीआरमा अने वारमा तीर्थंकर वच्चे नव सागरोमनो आंतरो

१३ वारमा अने तेरमा तीर्थंकर वच्चे त्रीस सागरोपमनो

१४ तेरमा अने चोदमा तीर्थंकर वच्चे चोपन सागरोपमनो.

१५ चौदमा अने पंदरमा तीर्थंकर वच्चे पासठ लाख चोराशी हजार वर्ष अने सो सागरोपम न्यून एक कोडी सागरोपमनो आतरो

१६ पंदरमा अने सोळमा तीर्थंकर वच्चे नव कोमी सागरोपमनो आंतरो.
१७ सोळमा अने सत्तरमा तीर्थंकर वच्चे नेवु कोमी सागरोपमनो आतरो.
१८ सत्तरमा अने अढारमा तीर्थंकर वच्चे नवसो कोमी सागरोपमनो आंतरो.
१९ अढारमा अने जुगणीसमा तीर्थंकर वच्चे नव हजार कोमी सागरोपमनो आंतरो.
२० उंगणीसमा अने वीसमा तीर्थंकर वच्चे नेवुं हजार कोमी सागरोपमनो आंतरो.
२१ वीसमा अने एकवीसमा तीर्थंकर वच्चे नव लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.
२२ एकवीसमा अने बावीसमा तीर्थंकर वच्चे दस लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.
२३ बावीसमा अने त्रेवीसमा तीर्थंकर वच्चे त्रीस लाख कोमी सागरोपमनो आतरो.
२४ त्रेवीसमा अने चोवीसमा तीर्थंकर वच्चे बेतालीस हजार वर्षे न्यून पचास लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.



अहीआं चोथा आराना अधिकारनी समाप्ति करी. हवे पांचमा आरानो जाव कहे छे. पांचमो आरो एकवीस हजार वरसनो दुःषम नामे छे, एटले आ काळे दुःख

ज छे, सुख नथी तेनु कारण ए छे के चोथा आराना श्रेष्ट कालने मोहपल्लीए धक्को मारी पाछो हगावी मनुष्य अने तिर्यंच पचेंद्रि सर्वने मदिरानो प्यालो पायो छे, तेथी निर्दयपणु, असत्य मृपापणु, चोरीपणुं, विपयरक्तपणुं, अति तृष्णापणु, कपायनी वहोळता, अप्रशस्तनुं रागीपणुं, प्रशस्तनुद्वेपीपणुं, कुसपपणु, अछता कलंकनुं देवुं, एकनी चाडी वीजाने करवी, मोटप नहीं छते मोटप मानवी, छोटप नहीं छते कृपण थइने छोटप करवी, पारकी निंदा करवी, कपट केळववु, प्रपच करवो, फंदो रचवो, इत्यादि पापस्थाननुं सेवन, वहुधा तो धनाढ्य अने निर्धन सर्व जीवोए आ काले ग्रहण कर्युं छे, तेथी पापनुज वाधवुं, तेमा किंचित् नाम मात्र सुकृत व्यवहारे कोइक जीवो ग्रहण करे तेथी अल्प ऋद्धि पामे, ते ऋद्धिमा मूर्छित थइने पाछा पाप उपार्जे, ते पापनो उदय थाय तेथी सुखनो संभव क्यांथी आवे ? वळी कोइ वीरला जीवो मोहना छाकथी नोखा पडेला हशे, आश्रवथी अळगा थयेला, ते सुकृत जोगे पुन्य उपार्जे, गुण निष्पन्न जोगे सकाम निर्जरा करे तेथी मिथ्यात्व कपायादि अशुभ कर्मने निर्जरे, एम पाचमा आरामा शासन थाय छे, कारण के सातमा गुणठाणा सुधीना जीवोनी योग्यता आ काळे जोवामा आवे छे, वळी प्रथादिसिद्धातमा पण पाचमा आराना छेडा सुधी चारित्र धर्म, वे चारित्रनी अपेक्षाए अखंडपणे वीरनु शासन जयवंतु चालशे एम लखे छे, परंतु गुणग्राही तो अल्प देखाय छे

घणो न्नाग तो पहेला गुणगणाना धणी, परमात्मानी आज्ञाना अग्राहक एम न्नासे ठे, कारण के वस्तुगत न्नावना अजाण, जरु न्नावमां रच्या पच्या, बाह्य करणीना रागी, अध्यात्मना द्वेषी, एवा समुदाय घणा जोवामां आवे ठे, अने न्नेद ज्ञाननी अपेक्षाए बोलनारा नपयोगी पुरुषो कोइ वीरला आ क्षेत्रे देखाय ठे, तेथी बहुधा तो निर्गुणी, समकित आदि गुण रहित, तेमा पण शुन्न आश्रवना नपार्जवा वाळा थोमा अने पापना बाधवावाळा घणा, एम न्नासे ठे, तेमा जे जीवो समकितादि गुणने पामेला ठे, तेने तो आ न्नव सुधर्यो अने आवतो न्नव पण गुण जोगें पुन्य ग्रहण करवाथी सुधर्यो, परतु ते न्नाग अल्प ठे अने गुण निष्पन्न विनाना जीवो पुन्य, कष्ट क्रिया जोगे किंचित् नपार्जे, तो ते बहुधा तो अशुन्न आचरण जोगे शुन्न दळ विखरी जाय, अने कदाच न विखरे तो शुन्न बध बाधवाथी आवतो न्नव सुधर्यो एम व्यवहारे कहीए ते गुण निष्पन्नपणाना अन्नावे पुन्य तो करीए त्यारे थाय, अने गुण-निष्पन्न जोगे तो विना कर्ये पण अधिक अधिक पुन्य चाल्यु आवे ठे. प्रशस्त रागे श्रेणीक महाराजे अविरति थका जिननामकर्म बाध्यु तद्वत्, परंतु ए बे विना-त्रीजाने तो पाप बाधवाथी आ न्नव बगड्यो अने आवतो पण बगड्यो, कारण के पाप जोगे माठी गति प्राप्त थशे. एवा जीवो आ पाचमा आरामां बहुधा आ क्षेत्रे घणा होय अने चोथा आरामा गुण निष्पन्न जीवो घणा हता, तेथी

परमात्माए पाचमा आराना काळने दुषम कह्यो छे, ते दुषम काळना जीवोने समुदाये गवेषे छे पुन्य हीण जी वोने इच्छा, मनोरथ, मूर्छा घणी होय छे अने पापना उदय जोगे उद्यम करता पण वस्तु मळती नथी, मनोरथ पूरा थता नथी, एज मोटु दुःख कदाच पुन्य जोगे प्रयत्न एटले उद्यम करता मळी, ते उद्यम करवानुं पण आ काळे घणु दुःख छे, लोभने माटे भूख, तरस, टाढ, ताप, रात, दिवस, काटा, कादव, भाठा, अधारीउं, अजवाळीउं, वृष्टि, अनावृष्टि, वाट, उवाट, इत्यादि कारण जोगे लोभना अर्थे उद्यम करता जीव भवपर्यंत दुःख भोगवे छे शेठनी नोकरी सारी पण लोभनी नोकरी अति बुरी छे, शेठनी नोकरी दिवसनी छे अने लोभनी नोकरी रात दिवसनी छे, वळी शेठ तो वार पर्वे अवसरे रजा आपे, अने लोभनी रजा तो एक क्षणवार पण जीवने मळती नथी घणु ज दुःख भोगवे छे, ते दुःखने लोभ सागरमा तणातो थको जीव गणतो नथी लाभने देखे अने माचे के मारा जेवो कोण होशिआर अकलवाज छे, हु करुं ते बीजाथी न बने, एम दुःख भोगवीने राजीपणु माने लाभ जोइने मन राजी थाय पण काया कष्टीए करीने पीभाणी थकी राजीपणुं मानती नथी कायाने कष्ट न पडे अने सहेजे सहेजे लाभ मळे तो उपचारे सुख मानीए ए वस्तु मेळववानु दुःख संक्षेपे कही देखाड्यु हवे वस्तु मळी छे ते खाइए तो खुटी जाय अने वापरीए तो हानि थाय,

त्यारे रखोपु करीने मरतां सुधी जीवो राजीपणुं माने के मारी पासे वस्तु छे, ए जीवोने सुख क्यांथी आवे? आ जव दुःखे काढे, अने आवतो जव सर्पनो वा नोळीआनो, उदरनो, गीरोळीनो, कूतरानो इत्यादि करीने उपर पूर्वजवनी मूर्छाए रखोपुं करतो छतो फर्या करे. एटले बे जव बगड्या माटे दुःख छे. अने सुख नथी. वळी कोइ पुरुष स्त्री, खाय, खवरावे, वापरे तेने गवेषे छे ते पोते खाय, खवरावे, ते स्त्रीने पुत्र, पुत्रीने, जमाइने इत्यादि सगां वाहालांने खवरावे, वापरे, ते विवाह वाजनमा मृतकार्यमा ज्ञाति व्यवहारमा संसार मार्गे वापरे, तेथी मोटप माने. ए पैसो पाप जोगे मेळव्यो अने संसारमां तेनो व्यय कर्यो ते पाप बंध हेतु छे, एम करतां कोइ ते पैसानो व्यय करी शुभ मारग जाणे एटले अनुकंपाए धर्महीण दीन दुःखीआने आपे, वळी पात्र जाणी ब्राह्मणादिकने आपे अथवा सदाव्रत आपे, सरोवर खोदावे, पाणीनी परबो मंडावे, कूवा वावो खोदावे, कूतराने खवरावे, न्याणेजने, जमाइने, छोडीने आपे, अने पुन्य माने ते पुन्य कहीए तो पापानु बधी पुन्यमा छे, अने पापमा पण छे, वळी ए लौकिक पक्ष छे ते गवेखीने कह्यो हवे लोकोत्तर पक्षे पैसानो व्यय करवो ते व्यवहारने अनुसरीने गवेषे छे, मुनिरायने सत्य भाषा (बोली) ए भक्ति पूर्वक सूझतुं अढळक धन आग्रह करीने देवु. ज्ञान पुस्तक लखाववुं, भणताने सहाय आपवी दिक्षा उत्सव करवो, तीर्थयात्रानुं सामैयुं करवु, उजमणु

करवुं, देरासर करावचा, जीर्ण देहेरा समरावचा, प्रतिमाउं जरावची, पूजा प्रज्ञावना करवी, आगी रचवी, रचाववी, स्वामीज्ञाइनी ज्ञक्ति करवी स्वामो वत्सल इत्यादि लोकोत्तर पक्षे व्यय करवानो कह्यो ते घणा जनो धन पामीने करे तेमा घणी तरमता ठे, एक तो मोटप माटे खरचे तेने लोकोत्तर फळ मळतु नथी, बीजा आकाङ्क्षाए एटले परज्ञवे ज्ञोग संयोग पामवाना अज्ञिलाषे खरचे, तेने लोकोत्तर लाज्ञ होय नहीं त्रीजा कृपणताये खरचे, तेने फळ मळवामा उंगाश थाय चोथा खरचीने पस्तावो करे के घणु खरच थइ गयु, फलाणे खरचाव्यु, आटलुं खरच करवुं नहोतु, तेनु खरचेलु धने गयुं अने मेळवेलुं पुन्य पण पस्तावो करवाथी घणु विखरी गयु, अल्प रह्यु एम थाय त्यारे लोकोत्तर मार्गे पैसो वापर्यो, परतु लोकोत्तर फळ न मळ्युं एटले प्रथमतो लौकिक लोकोत्तर फळने समजवु जोइए फळ तो व्यवहारे पुन्य बध करवो तेने फळ कहीए निश्चयमा समिकतादि गुण निष्पन्न करवो तेने फळ कहीए, परतु अहीआ तो व्यवहार नयनी मुख्यता ठे ते प्रशस्त अध्यवसाये वर्त्तता कारण जोगे शुज्ञ आश्रव एटले अघाति कर्म प्रकृतिना शुज्ञदळ ग्रहीने आत्म प्रदेशे एकत्वपणे बंध पाडवो तेने फळ कहीए, तेना वे ज्ञेद, एक लौकिक अने बीजो लोकोत्तर लौकिक ते ए बंध करेलो तेनो उदय थये पुन्य ज्ञोगवता पाठु पाप वधाय तेने लौकिक कहीए, अने पुन्य ज्ञोगवता समकितादि गुण प्रगट करवानो, वळी

मूर्छा उतारवानो अने फरीने पुन्य उपार्जवानो हेतु थाय तेने लोकोत्तर कहीए ते लोकोत्तर फळने कोण उपार्जे छे? तो जे पूर्वे दूषणो कह्यां इत्यादि दूषणोए वर्जित थइने उदार चित्ते पैसा उपरथी मूर्छा उतारीने निराशी जावे मोकळा मने पैसानो व्यय करे अने राजीपणुं माने पैसो खर्च्यो ते सारु कर्युं एम पोताना आत्माने धन्य माने वळी व्यय करावववामा जे सहचारी पुरुष हेतु होय तेनो गुण लइने व्यय कर्यानी, वळी व्यय करावववा वाळानी अनुमोदना करे ते लोकोत्तर फळने उपार्जे बीजा न उपार्जे एवा जीवो तो आ काळे आ क्षेत्रे कोइ वीरला जोवामा आवे छे अने लौकिक पुन्य बाधवा उपार्जवा वाळा घणा आवे छे, माटे दुःखे जव पुरो थाय, अने सुख गणीए तो मदोन्मत्त पणे दुःखने सुख मान्यु छे, पण परमार्थे सुख नथी विचारी जुओ के दुःख शुं छे अने सुख शुं छे. तो असंतोषीपणुं एज दुःख अने संतोषपणुं एज सुख छती वस्तुए असंतोषीने सुख नथी, अने नही छता संतोषीने सुख छे, नहीं छते संतोष करवावाळा पुरुषो आ क्षेत्रे आ काले कोइ वीरला जोवामा आवे छे, अने छती वस्तुए असंतोषी पुरुषो घणा जोवामा आवे छे, माटे आ पाचमा आराना काळने सर्वज्ञ देवे दुषम कह्यो छे. आ दुषमकाळे सूर्य समान केवळी भगवाननो विरह पडवाथी रात्री थइ केवळज्ञान रूप सूर्यनो अस्त थयो त्या अंधकार व्यापक आ भरतक्षेत्र रात्रिसम थयुं ते अंधकारने टाळवा माटे

गीतार्थ निर्ग्रंथ रात्रीने विषे पूर्ण चंद्र समान प्रकाशना करवावाळा आ क्षेत्रे थया, जेना आधारे जैनतीर्थ प्रवर्त्ते छे अज्ञान, मोह,आदि तिमिराधकार जव्य जीवना अंत:करणथी विलय पामे छे, अने शुद्ध चिदानंद स्वरूप प्रतिजासे छे, अरूपी आत्मा, अनुजव चक्षुए प्रत्यक्ष करे छे तद्रूप उपकारना कर्त्ता बहु श्रुत गीतार्थों घणा थया, तेमना गुणनी स्तुति करुछु, छेल्ला केवळी जंबुस्वामी आ पांचमा आरामा थया ते सोल वरस गृहवासे रह्या, अने वीस वरस छद्मस्थ पर्याये अने चुम्मालीस वरस केवळ पर्याय पाळी एंशी वरस आयुष पूरण करी सिद्धि वर्या, तेमना पाटे चौद पूर्वधर प्रजवा स्वामी थया, तेमना पाटे सीजंजव सूरि चौद पूर्वधर दश वैकालिक सूत्रना रचवावाळा थया, तेमना पाटे यशोजद्र सूरि चौद पूर्वधर थया तेमना पाटे सन्नूतिविजयजीतथा जद्रबाहु स्वामी चौद पूर्वधर महा प्रज्ञाविक थया कल्पसूत्र आदि सिद्धांतना रचवावाळा, तेमना पाटे थूलीजद्र चौद पूर्वधर महा प्रजावीक थया, जेणे गुरुनी आज्ञा लइने कोश्याना घेर आवी चित्रशाळाए रहेता थका पट् रस जोजन आहार करता छता शीलगुणे निश्चळ चित्ते दिक्षा लइने प्रथम चोमासु पूर्ण करी कोश्याने प्रतिबोधी समकितनी प्राप्तिना हेतु थया, जेनी अनुमोदना चोराशी चोवीशी सुधी महापुरुषो करशे, एवा उत्कृष्टा थइने चोमासु बदली गुरु आव्या, गुरुए दुःकर दुःकर करणीना

जेणे वार वरस पर्यंत साम्री वार क्रोम सोनैया जेनी साथे खाधा ठे, विषय ञोग ञोगव्या ठे, तेनी साथे चतुर्मासु एकाकीपणे रहेता थका अने मादक आहार करता थका किंचित् मात्र मनथी पण रूग्या नही, मूर्ठा उतारी ठंमी दूर थइने तो सर्वे तजे ठे, पण नजीक थका तजे, तेनी तो वलिहारी ठे वळी अनुक्रमे सिद्धसेन दिवाकर महा प्रञाविक थया, जेणे विक्रम राजाने प्रतिवोधीने जैनी कर्यो, वळी संमतिआदि महा तार्किक ग्रथो रच्या ठे जेनी दृष्टि अतिसूक्ष्म ठे एज काळे जिनञद्रगणी क्षमाश्रमण विशेषावश्यक ग्रंथना कर्त्ता दस पूर्वधर थया ठे सिद्धसेन दिवाकरने अने जिनञद्रगणी क्षमाश्रमणने चर्चाउ थइ ते चर्चामां पण अधिकताइ पणुं सिद्धसेन दिवाकरनुं ञासे ठे, परतु वेउ महापुरुषोत्तम ठे, ञव ञीरु ठे, जीञनु टेरवुं लाव करवावाळा एके नथी, जिनञद्र गणी क्षमाश्रमण सिद्धांतवादी:ठे, अने सिद्धसेन दिवाकर नयवादी ठे, जेनुं मुख दीठे पाप जाय एवा वेउ उत्तम ठे, वळी उमास्वाति वाचक महा प्रञाविक थया, तेमना करेला तत्वार्थ, पर स्मृति आदि ग्रथो घणा ठे महा पंमित, वीर्यवान, पूर्वधर ठे. वळो वयरस्वामी महाप्रञावीक ज्ञानगुणे जन्मथी वृद्धि पामता थका वाल्यावस्थाए पंमितप्राय, सिद्धांतनो पाठ कंठाग्र विनाञणे साञळीने कर्यो ठे जेणे एवा, वळी अनेक लब्धिना पात्र, दस पूर्वनु ज्ञान पाम्या, महा उपकारी थया. वळी देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महा प्रञाविक थया

जेणे वल्लभिपुर नगरे साधुनो समुदाय एकठो मेलवी सि- द्धांत विच्छेद जवाना भयथी गणधर रचित सिद्धांतोना प- रमार्थ बोध साधुओना मुखथी पुछी लइ, संकलना मेळवी शैली प्रमाणे मागधी भाषाए आचारांगादि सिद्धांतो रच्या, ते सिद्धांतोनी टीकाना कर्त्ता महामुनि गीतार्थ अभय दे- वसूरि तथा शिलांगाचार्य अने मलयगिरि आदि थया, ते- मणे विस्तार बुद्धिए गुह्यार्थने छणीने प्रगट करी जेम रा त्रिए दीवो अजवालुं करे तेना प्रकाशे बारीक वस्तु नजर आवे, तेम परोक्ष वस्तु वा सूक्ष्म भाव जाणवामा आवे, एम स्फुट करी देखाड्या ते सिद्धांतो, ने टीका महामुनिना मुखथी मारा जेवा बाळ जीवोने श्रवण करवा, चिंतवन करवाने अर्थे वर्त्तमान अवसरे थाय छे, ते उपकारना कर्त्ता ए महा मुनि छे, वळी हरिभद्र सूरि महा प्रभाविक थया, जेणे चौदसो चुम्मालीस तो ग्रंथो रच्या छे, वळी पाटणनी गादीए सिद्धराज जेसंग तथा कुमारपाळ मोटा छत्रपति राजा थया, तेमना गुरु हेमचंद्र सूरि आ कलिकाळे सर्वज्ञ सरखा महा प्रभाविक थया तेमणे योगशास्त्र अने स्याद्वाद मंजरी आदे घणा ग्रंथो रच्या छे वली सिद्धराज जेसंगनी वखते बीजा पण घणा पंडितोनी सभा हती ते सभामा महामुनि हेमचंद्रसूरिनुं अग्रेसरपणुं हतुं ते अग्रेसरपणाने नहीं सहन करता ब्राह्मण लोको ते आचार्यने एम बोल्या के अते तमारा गुरु अमे छीए कारण के तमे जे व्याक- रण भणो छो ते अमारा वडील पंडितोनुं करेलुं छे. त्या

हेमचन्द्रसूरिए उत्तर कर्यो छे के हुंतो ए व्याकरण जाण्यो नथी, अने तमारा वडीलो अमारा गुरु पण नथी, त्यारे ते पंडितोए पूछयुं के तमे कयुं व्याकरण जाण्या छो? त्यारे हेमचंद्र सूरि बोल्या के हु तो जैनी व्याकरण जाण्यो छुं जिनेन्द्रना मुखथी बाळ अवस्थाए निशाळगर णाना अवसरे देवदेवेंद्रनो अने मनुष्यनो समुदाय मळे छते अध्यापकने सामो बेसारी वीर स्वामीने सुधर्म इन्द्रे तख्ते बेसार्या त्या मधुरध्वनीए भगवान महावीरस्वामीए उचारण कर्युं छे ते व्याकण जाण्योछु. त्या ब्राह्मण लोकोए पूछयु के ए व्याकरण तमने कोणे जणाव्यु? तेनो उत्तर हेमचंद्र सूरिए आप्यो, के ए व्याकरण मनें सरस्वतिए जणाव्युं छे, हुं सरस्वती पुत्र छुं त्यारे पछी हेमचंद्रसूरिए हेमव्याकरण तथा हेमकोश रच्यो छे.ए व्याकरणना आगळ बीजा व्याकरण थूल छे, अने हेम व्याकरण सूक्ष्म छे, वळी हेमचन्द्रसूरिना रचेला ग्रंथोमा सामानिक पुरुषोथी पेसारो पण थतो नथी. जे विशेषोपयोगी होय तेज ए ग्रंथोना भाव जाणी शके, वळी कुमारपाळना वखते दुनिआमा अमार पडो वजडाव्यो छे, हाथी घोडाने गळीने पाणी पाय छे वळी पुंजोने पलाण मारे छे, महा दयाळु ज्ञाता छे, कुमारपाल जेवा जैनी राजा तो बहुधा चोथा आरामां पण नहीं थया होय वळी हिरविजय सूरि महा प्रभाविक थया जेणे अकबर बादशाहने प्रतिबोधी जैनी कर्यो, वळी दुनिआमा अमार पडह वजडाव्यो छे, वळी यशोविजयजी

ग्रामानुग्रामे विचरता थका जव्य जीवोने बोधिबीज पमाकता थका निजात्माने जावता थका, वसो आदि नगरे बे चार चोमासा कर्या छे त्यार बाद वमोदरा, पादरा, मिनोर, विगेरे ग्रामानुग्रामे विचरता थका जंबुसर, आमोद, कजट, अणखी, उठद आदि ठेकाणे विचरी जव्य जीवोने मिथ्यात्व दालिद्र थकी रहित करी, समकितादि गुणे धनाढय कर्या छे, वळी सिनोर, आमोद आदि चोमासा कर्या छे त्यार बाद जरुच, सुरत वगेरे ग्रामानुग्रामे विहार करी विचरता थका जव्य जीवोने अनंतो उपकार करता सवत् १९०५ नी सालमा विंध्याचल पर्वत उपर महुमीना वृक्षनी छाया नीचे एक गुफामा मोटी तपस्या करीने ध्यानारूढ थइ एकाकीपणे निर्जय थका सहज समाधिये वृद्धि पामता महा योगीन्द्र पवित्र वीर्य फोरवीने राग, द्वेष, मोहने उपशमावी वीतरागता जावी छे, धन्य छे ए पुरुषोत्तमने के महा विकट स्थानके निरविघ्नपणे रह्या ज्या वाघ वरुनो तो वासज छे परतु महा मुनिने स्व अतिशय बळे कोइनो उपद्रव नड्यो नथी आजे पण लोको ए महुमीने गु

हुमी कहे छे, त्यार बाद विहार करी

थका जव्य जीवोने वचनामृत

लोचनवत कीधा एम ७५

आदि चोमासा कर्या, त्यार

तळने पावन करता थता

मासा कर्या छे, एम अनतो उ

छे. वळी संवत १९२६ नी सालमां गोधरा वेजलपुर तरफना डुंगरमां एकाकीपणे जइ त्यां रही मोटी तपस्या करी ध्यानारुढ थइ अंतर वृत्तिये शुद्धात्म स्वरूपनो अनुभव कर्यो छे. धन्य छे ए महा योगींद्रने के एवा विकट स्थानके निर्भयपणे रह्या. आजुबाजु तो वाघ वरु घुघवाटा करो रह्या छे, त्यां नजीकना गामोना श्रावक लोकोने केटलेक दिवसे खबर पडी के एक साधु डुंगरमा आवीने रह्या छे. त्यारे श्रावक लोकोए ते महा मुनिने वांदवा, नमस्कार करवाने अर्थे जवुं आववुं शरु कर्युं. भावी श्रावकोए महा मुनिने विनति करी के हे स्वामी अमारा गाममां पधारो, तो पण प्राये मास कल्प पुरो थता सुधी एकाकीपणे समाधिए ए डुंगरमा रहीने त्याथी विहार करी वेजलपुर जइ चोमासुं रह्या. भव्य जीव प्रत्ये वचनामृत मेघधाराए देशना दे छे. त्या श्रोताजनो श्रवण करी, मनन करी, चितवन करी, रहस्यार्थने तद्गत परिणमावे छे त्या तेमनो अभिलापारूप ताप टले छे, अने ममत्वभाव ते परवस्तुने विषे पोतापणानी बुद्धि ते गले छे, अने निज ऋद्धिए संतोप पामता शीतळता वळे छे, एम सद्गुरुनुं निमित्त पामीने भव्य जीवो अनादि तापने टाळी शीतळता पामे छे. एम अनंतो उपकार करता छता महामुनि वर्त्ते छे, वळी चोमासुं उतरे विहार करी गोधरा विगेरे गामे विहार करता थका निजात्माने भावता थका, भव्य जीवोने हितोपदेश देता, शंका संदेहने टाळता, अशंकित करता, अनुक्रमे सुरत पधार्या,

अने चोमासु पण त्याज रह्या मेघाडंबर नाद ध्वनीए गाजता वचनामृत मेघ जळधाराए सींची जव्यजीवोना समुदायने प्रमोदित करी संवेग जावमां स्थिर करता. जेने मोटा पुन्यनो उदय होय ते एवा मुनिना दर्शन पामे, ते महामुनि अनुक्रमे सवत १९३४ नी सालमा फागण शुदमा चमार गाम विहार करी आव्या हता, तेमनुं आगमन जाणी गाम साढलीथी मोदी उमेदजाइ गुलावचंद वगेरे अमे पांच सात जाइओ त्या जइ महा मुनिरायने वादी पंचांगी प्रणाम करी शाता पूछी सन्मुख दृष्टिए सामा वेशी, मुनिराये उपदेश कर्यो ते साजळी, विनंति करी के स्वामी अमे तेरुवा आव्या छीए. अमारा गामे कृपा करीने पधारो तेमणे अमारो जाव जोइने आववानी हा पाडी अने फागण वदमा अमारा गामे आव्या, मोटा आडंबरे सामैयुं करी अगमा प्रमोद जराया छते घणा पुरुषोना समुदाय युक्त वाजते गाजते तेमने लाव्या महामुनिये मगलाचरण करी वचनामृतनु पान करावी संतोष्या, अने त्यां मास कल्प रह्या अमने उपदेश करी जम जेवाने चेतन कर्या अने वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धा करावी त्रणे काळ उपदेश करता हता, सेंकडो माणसनो समुदाय मळी साजळतो हतो, वळी तर्क करी शंका टाळवा पूछता हता, तेनो खुलासो यथास्थित आपता हता वळी न समजाय त्या सुधी हेतु दृष्टांत युक्ति फेरवीने वारवार समजावता हता, पण कटाळता नहीं, वळी कहेता हता के जे पूछशे ते समजशे वस्तु-

गत वस्तुता धर्म रह्यो छे, तेने जाणवुं. वळी हेय उपादेय बुद्धिनु पामवुं ए कांइ सुलभ नथी, ज्यां त्या न पामीए. अमने तो बोधिबीजना दातार ए महामुनिराय छे एमना केटला गुण गाइए, न गाइए एटला उंछा छे चैतर वदमां साढलीथी विहार करी सीनोर, मालशर वगेरे ठेकाणे विचरता अनंतो उपकार करता, हुं पण एमनी साथे एक मास सुधी ज्या विहार करीने जाय त्यां रह्यो हतो. एमनी बरोबरीमां वर्त्तमान अवसरे मारा जोवामा बीजा कोइ आव्या नथी. ए महामुनिने तो घटंतर वृत्तिये जाणे उपयोग ज्योति जगजगायमान होय अने तेथी तिमिरांधकार विलय पाम्यो होय एम भासे छे. एम उपकार करता छता गामेगाम विचरता थका आमोद, जबुसर भरुच थइ सुरत पधार्या, अने चोमासु पण त्यां रह्या त्यार बाद सम्वत १९३६ नी सालमा सीनोरना संघना आग्रहथी श्री वासुपूज्यस्वामीनी प्रतिष्ठा वखते विहार करी त्या आव्या, भव्य जीवोने वचनामृत मेघ जळ वृष्टिए ज्ञानदान दइ बोधित कर्या. एम उपकार करता गामेगाम विचरता थका चोमासा उपर सुरत आवी त्या रह्या निजात्माने भावता थका काळ निर्गमन करे छे, वळी भव्यजीवोने करुणा लावी नय गर्भित देशना आपी, द्रव्य पर्यायनुं जाणपणु करावी वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धा करावे छे, अने जडता टाळे छे. उदिकभावने वस्तु मानवी एज बाह्य भाव छे तेने जडता कहीए, अने वस्तुना स्वभावने वस्तु मानवी ते अंतर-

गत सहज भाव छे, तेने चेतनता कहीए त्यारे आपणी काया, मन, वचन, इन्द्रियो जे प्राप्त थयु तेने उदिक भाव कहीए पूर्वकृतकर्मयोगे मल्यु ते जीव नथी जीवतो अंतर्गत कायामा व्यापकपणे रह्यो, ज्ञानदर्शने उपयोगमय ते जीव छे, एम भेद ज्ञाने व्हेंचण विभाग करी निज स्वरूपमा रमण करे, स्थिर समाधि पामे तेने सामायक कहीए, इत्यादिक उपयोगी वचनो महामुनिना मुखथी अखन्ड धाराए नीकळे, ते वचन माळानु श्रवण करता, आस्वादन करता श्रोताजनो थाकता नथी. तृप्त थता नथी के एटलु ज एवा तो भाविक श्रावको महामुनिना छे. वळी तेमना समीपे अन्य दर्शनीउ पण घणा आवता हता तेमनी साथे तेमना दर्शननी रीतथी वात करता हता. वळी तेनो जे पक्ष हठवादे ग्रह्लो होय तेथी मुक्त करता हता अन्य दर्शनमा जैन दर्शन स्थापवाने शक्तिवंत पोते हता अन्यदर्शनीउ पण आजे तेमना घणा गुण गाय छे वळी सामो जे पुरुष प्रश्न करे तेने न्याय हेतु दृष्टांत युक्ति लगावीने समजाववाने घणा कुशळ हता तर्क वितर्कनो खुलासो करवाने महा चतुर हता वळी सामानो अभिप्राय जाणवाने प्रविण हता. गुणग्राही पुरुषने तो यथार्थ श्रद्धा करी समकित पामवाना हेतु एटले निमित्त कारण हता जेने मोटा पुन्यनो उदय होय ते एवा मुनिना दर्शननो लाभ पामे दर्शन करता गुणग्राहीने मिथ्यात्वादिक पाप जाय, अने तेमना मुखथी वचन सांभ-

ळतां परवस्तुनी अभिलाषा जे तृष्णा, पीपासा ते टळे. ते-
मना गुणनु मनन चिंतवन करता परिणाम पामतां ज्ञाव
संवर अने मकाम निर्जरा प्राप्त थाय, ए लाभनुं पामवुं अ-
पूर्व छे, ते लाभ ज्यां त्या मलतो नथी चोथा आरामा पण
सर्वक्षेत्रे सदाकाळ सद्गुरु संयोग मळवो दुर्लभ हतो. वळी
ए महामुनि रोगादि परिसह सेहेवाने तो अति कठोर
हता, छेल्ली वये चक्षुमां तथा मुखमां घणी गरमी पराभव कर-
वाने उदयागत प्राप्त थइ हतो, कोइ अवसरे मुख पाकी
जतुं हेतु कोइ अवसरे नेत्र चणोठीना रंग प्राय थइने
आंसुनी धारा पडती हती एवी ने एवी स्थिति एक बे
मास पर्यंत पराभव करते छते, अशाता आपते छते पण
महा मुनिए ओसड उपचार चिंतव्या नथी तेमना सेवकोनी
दिलगीरि जोइने बलात्कारे कहेता पण ओसड उपचार
कर्यो नथी, असमाधिना वखतमां समाधि चिंतवी छे,
वळी महामुनि कहेता हता के उपरथी ओसड उपचार
करीने ए रोगनी शांति करीशु तेथी ए प्रकृति क्षीण
थवानी नथी ज्यारे त्यारे दुःख आपशे माटे आ वखते
समताए सहन करवुं, एज ज्ञानीनु लक्षण छे एम चडती
कळाए छेतालीस वरस पर्यंत निग्रथ पदे चारित्र पर्याये
साधक दशा चिंतवी समाधिए मरण करी आराधक थइ
एकउण एंशी वर्षनी वय थये संवत १९४९ ना कारतक वदी
१० ने मंगळवारनी रातना साडानव वागे मनुष्य भव छो-
डी स्वर्गे पधार्या धन्य छे ए पुरुषोत्तमने के मनुष्य भव

पामीने जव्य जीवोने बोधिबीज पमाडी दारिद्र मिथ्या त्वथी दुर करी समकितादि गुणे धनाढ्य अने परव स्तुनी इच्छा वाळाना अजावे तृप्त करी अनंता उपकारना कर्त्ता थइ पोताना आत्माने कृतकृत्य करी समाधिए मरण पाम्या हु पण एज जावने अनुमोडवु इच्छुवु, वळी एमनी ज वखतमा महा मुनि बुटेरावजी थया, ते महात्मा पुरुष आत्मज्ञानी आत्मदर्शी हता, तेमणे अमदावादमा घणा चोमासा कर्या अने जव्य जनोने अध्यात्म जावनो उपदेश करी वस्तुगते वस्तु पणानी श्रद्धा करावी बोधित कर्या ठे नगरशेठ मयाजाइ प्रेमाजाइ तथा दोसी नथुजाइ जीवराज तथा सा प्रेमचद जेठा वगेरे अध्यात्म पक्षी, तत्वनारागी गुणग्राही पुरुषो जोवामा आवे ठे. एम उप-कारना कर्त्ता ए महामुनि आदि घणा थया वळी पाच-मा आराना ठेडा सुधी प्रवर्त्तशे, परतु कोइक अवसरे कोइक क्षेत्रे लाधे, सर्व क्षेत्रे सदा न पामीए माटे पुन्योदय जोगे सजोग मळे बहु श्रुत गीतारथनो खप करवो, बहु मान करवु, विनय साचववो विनय ठे एज गुण निप्पन्न धर्मनु मूल ठे, गीतार्थनो विनय लोकोत्तर फळ दाता ठे, एम गवेषीने गीतार्थोनी स्तुति करी ते प्रमोद जावना जावी अहीं पांचमा आरानो अधिकार समाप्त थयो.

हवे ठठा आरानो जाव गवेषे ठे, ठठो आरो एक वीस हजार वरसनो दु पम दु पम नामे ठे ए ठठो आरो बेसता साधु अने श्रावक बेउना धर्मनो लोप थइ जशे, जिनेंद्र

महावीर स्वामीना शासननो नाश थशे, वळी अग्निनो अतिशय प्राप्त थशे, मनुष्य अने तिर्यंच वेठने ऊभुं रहेवानुं ठेकाणुं पण मळवुं दुर्लभ थइ पडशे, पवन पण घणो प्रतिकुळ वाशे, सूर्यनो ताप घणो पडशे, दुकाळ पण ऊपरा ऊपरी पडशे, माग्या मेघ नही वरसे, वळी वरसशे तो रहेशे नहीं. एम दुःख ऊपर दुःख प्राप्त थशे, भूख तृषा घणी पीडशे, खावा धान्य नहीं मळे, पीवा पाणी नहीं मळे, रहेवा घर नहीं मळे, पेहेरवा वस्त्र नहीं मळे, नग्नपणे वैताढ्यादि पर्वतोना घणां बीलो छे ते बीलोने विषे जइने रहेशे, छ वरसनी वये स्त्री गर्भ धारण करशे, रोग पण घणा नवा नवा ऊदय थशे, मावापनी खबर पुत्र नहीं जुए, एवो कीटण काळ आवशे तेनुं नाम दुःषम दुःषम काळ छे, जेम तिर्यंच पंचेन्द्रिनी जातिमां एक बीजानुं भक्षण करे छे, तेम मनुष्य मनुष्यनुं तथा तिर्यंच मच्छादिनुं निर्दय अति हिंसक थइने भक्षण करशे एवो वखत आवशे; रात दिवस भयमा ने भयमा जशे, मनुष्यनुं पुन्य खवाइ जशे अने जे अति पापी प्राणी हशे ते दुःषम दुःषम काळे पाच भरत अने पाच ऐरवत ए दश क्षेत्रमा मनुष्यपणे जन्म लेशे. वीश वरसनु ते काळे आयुष्य छे, अने बे हाथ ऊंची काया छे, ते आयुष पूर्ण करी मरता सुधी सुख तो छेज नही, पण दुःख आवीने पडशे, ते दुःख भोगवतां संक्लिष्ट परिणामे पाछुं पापनुं बाधवुं थाय, अने पूर्वनुं पाप बांधेलुं ऊदयागत भोगववु, एम पाप योगे दुःखनो

परान्नव जीवोने मोह पल्ली दुष्टनो काळ महात्म्ये घणो वधारे छे शत्रु जोइए तो जीवने कर्म छे एज मोटो शत्रु छे, बीजो कोइ शत्रु नथी, ते कर्ममा अघाति करता घाति बळवान छे, अने घातिमा बळीओ मोह छे, अने मोहमा बळीओ मिथ्यात्व छे वळी काळने शत्रु कहीए तो पाच भरत अने पाच अैरव्रत ए दस क्षेत्रमां अवसर्प्पिणि काळे छठो आरो अने उत्सर्प्पिणि काळे पहेलो आरो एकवीस एकवीस हजार वरसनो ते बेउ मळीने बेतालीस हजार वरसनो काळ ते जीवने शत्रु छे, परंतु शत्रु तो मोह छे, अने ते काळे जीवना क्रूर परिणाम वृत्तिपणे मोह पल्लिना सहचारी थइने सहाय आपी छे जेम अग्निने प्रज्वलित थवामा ग्रिष्म ऋतु अने पवन सहचारी थइ सहाय करे छे तेम जीवना अंत करणने काळ महात्म्ये अतिवक्र करी मूक्या छे, तेथी पापबंधनो ग्राहक थइने नरक अने तिर्यंच ए बे गतिनुं बहुधा आयुष्य बाधी ते गतिये जाय, अने पुन्य बंध करवानी वा सकाम निर्जरा करवानी जे सरळता ते ए काळे ए दशे क्षेत्रे बहुधा नथी ए छठा आरानो अधिकार कह्यो अने अवसर्प्पिणि काळना दसकोडाकोडी सागरोपम छ आरा मळीने पूर्ण थया हवे उत्सर्प्पिणि काळना छ आरानो भाव कहे छे पेहेलो आरो एकवीस हजार वर्षनो दु षम दु षम नामे ते अवसर्प्पिणि काळे छठो आरो कह्यो, एज प्रमाणे दु ख उपर दुख नो परान्नव पाच भरत अने पांच अैरवत ए दश क्षेत्रमा सरखे भावे उत्सर्प्पिणि

काळे पहेले आरे जाणवुं अने बीजो आरो एकवीश ह-
जार वर्षनो दुःषम नामे छे. ते पाचमो आरो अवसर्पिणी
काळे कह्यो ए प्रमाणे सुख दुःख तो दशे क्षेत्रमा उत्सर्पि-
णी काळे बीजा आरामा सरखुं जाणवु हवे त्रीजा
आराना नव्याशी पखवाडीया गये थके प्रथम तीर्थंकर
पद्मनाभ स्वामीनो जन्म थशे ते अनुक्रमे वृद्धि
पामतां, वय प्रणमे अवसरे संसार छोडी दिक्षा लइ
क्षपक श्रेणी माडी घाति कर्म हणी केवलज्ञान केवळ द-
र्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामी त्रिपदी देशना दइ गण-
धर आदि चतुर्विध संघनुं स्थापन करी समवसरण आदि
अष्ट प्रातिहार्यादि ऋद्धि भोगवी सोनाना कमळे पग मुकता
थका ग्रामानुग्रामे विहार करी साधुना वहोळा समुदाये विच-
री अनेक भव्यजीवोने बोधी बीज पमाडी यावत् मोक्षनगरे
पहोंचाडी बोहोतेर वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी अंत छेडे
जोगनो रोध करी अयोगी गुणठाणे अघाति कर्म हणी
कार्मण वर्गणादि पुद्गलना बंधनथी छुटी समश्रेणिए भ-
विष्यकाळे सिद्धि वरशे. एज रीते पाच भरत अने पाच
ऐरवत ए दस क्षेत्रमा प्रथम तीर्थंकरनो जन्म अने नि-
र्वाण जे दिवसे अहीं ते दिवसे त्या एम एक दिवसे जाणवुं
ए त्रीजा आराना काळनु एक कोडाकोडी सागरोपममा
बेतालीस हजार वर्ष उणा एटलु उत्सर्पिणि काळे प्रमाण
छे, अने ए त्रीजो आरो दु षम सुषम नामे छे, ते अवस-
र्पिणि काळे जेम चोथा आरामा अतिभद्रकपणा माटे प्र-

थम ऋजु मूर्खपणानु दुःख कह्यु हतु, तेम उत्सर्पिणिकाळे त्रीजा आरामा प्रथम वक्रपणानु दुःख छे, एटले जेमजेम काळ जशे तेम तेम वक्रतानो व्यय थशे, अने प्राग्भाव जे जिज्ञासा तथा सरलता तेनी वृद्धि थशे, तेथी संतोषी पणुं वृद्धि पामशे, अने असंतोषीपणानी हानि थशे, ते कारणे प्रथम दुःख अने पछी सुख, एम त्रीजा आराना काळनो उत्सर्पिणि माटे चढतो भाव जाणवो वळी ए त्रीजा आरामा अनुक्रमे काळे काळे एटले आतरे आतरे त्रेवीस तिर्थंकर आदि एकसठ सलाका पुरुष थशे, अने एक छेल्ला चोवीसमा तीर्थंकर तथा एक बारमा चक्रवर्ति ए बे चोथा आरामा थशे, अहीं उत्सर्पिणि काळे त्रीजा आरानो अधिकार समाप्त थयो हवे चोथा आराना नव्याशी पखवाडीआ गये थके छेल्ला चोवीसमा तीर्थंकरनो जन्म थशे, तेमनु चोराशी लाख पूर्वनु आयुष्य छे, अने ते काळे बारमा चक्रवर्ति पण थशे, ए चोवीसमा तीर्थंकर अवसरे संसार त्याग करी दिक्षा लइ घातिकर्म हणी केवळज्ञान केवळदर्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामी चतुर्विध संघनु स्थापन करी धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावी अनेक भव्यजीवोने मोक्ष नगरे पहोचाडी आयुष्यना छेडे योगनो रोध करी सिद्धि वरशे ते अवसरे ते काळे पाच भरत अने पाच ऐरवत ए दस-क्षेत्रमा मनुष्य अने तिर्यंच पचेंद्रि सर्वे युगलिया थइ जशे उत्सर्पिणि काळे भावी चोवीशीए तीर्थंकरो थशे तेमना नाम

१ पद्मनाभ	७ उदयनाथ	१३ निःकषाय	१९ यशोधर
२ सूरदेव	८ पेढाळ	१४ निष्पुलाक	२० विजय
३ सुपार्श्वदेव	९ पोट्टिल	१५ निर्मम	२१ मल्लिनाथ
४ स्वयप्रभ	१० शतकिर्ति	१६ चित्रगुप्त	२२ देवनाथ
५ सर्वानुभूति	११ सुव्रतनाथ	१७ सधिमा	२३ अनंतवीर्य
६ देवश्रुति	१२ अमम	१८ सवर	२४ भद्रकृत

ए चोथा आराना काळनुं बे कोडाकोडी सागरोपमनुं प्रमाण छे अने ए चोथो आरो सुषम दुःषम नामे अवसर्पिणि काळे त्रीजो आरो कह्यो ते प्रमाणे सरखे भावे जाणवो, एटले अवसर्पिणि काळे त्रीजा आराना छेडे युगलियांने खावानुं आदि दुःख पड्युं हतु तेम अहीं पण उत्सर्पिणि काळे प्रथम दुःखनो संभव नजरे आवे छे. एटले मनुष्य अने तिर्यंच पंचेन्द्रिनो समुदाय सर्वे काळ महात्म्ये अति भद्रकपणाने पामशे, एटले ऋजु प्राग हता ते ऋजु मूर्ख थशे, त्यां ज्ञातापणुं जशे अने अज्ञातापणु प्राप्त थशे, वळी त्या मोक्षनो मार्ग पाच भरत अने पाच ऐरवत ए दस क्षेत्रमा बंध थशे, वळी मोक्षनी प्राप्ति हेतु चतुर्विध सघ (साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका) तेनो अभाव थशे, वळी दस क्षेत्रमाथी बीजा देवलोक उपरांत देवगतिए जवानो पण अभाव थशे घणी हानि थइ, सुकृतनी साधनता गइ ए दुःख जाणवुं, बाकी युगलियापणानुं सुख छे. ए चोथा आरानो भाव कह्यो. हवे पाचमो आरो त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो सुप॰ ते जेम अवसर्पिणि

काळे बीजो आरो कह्यो ते प्रमाणे उत्सर्पिणि काळे पाचमो आरो जाणवो हवे छठो आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो सुषम सुषम नामे, ते जेम अवसर्पिणि काळे पेहेलो आरो कह्यो ते प्रमाणे उत्सर्पिणि काळे छठो आरो जाणवो, एम चोथो पाचमो अने छठो ए त्रण मळी अनुक्रमे बे त्रण अने चार मळी नव कोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणि काळे, अने पहेलो बीजो अने त्रीजो आरो अनुक्रमे, चार त्रण अने बे मळी नव कोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणि काळे एम बेउ मळी अढार कोडाकोडी सागरोपम पर्यंत युगलियापणे पाच भरत अने पाच ऐरवत मळी दस क्षेत्रमा जाणवो हवे पाच भरत अने पाच ऐरवत ए दस क्षेत्रमा मनुष्य तिर्यंच पचेंद्रि जीवोना समुदायने सुख दु ख अनुभवाय छे, भोगवाय छे ते आश्रीने सामान्य विशेषता कहे छे जेम देवगतिए चार निकायना देवताउं सर्वेने सुख छे परंतु अनुत्तर विमानना देवो सर्वोपरी अधिक सुख अनुभवे छे, ते दृष्टाते मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रिना सुखनी योग्यतानुं अधिक सुख उत्सर्पिणि काळे छठो आरो अने अवसर्पिणि काळे पेहेलो आरो ए बे आरा चार चार कोडाकोडी सागरोपमना सुषम सुषम नामे ते बेउ मळीने आठ कोडाकोडी सागरोपम पर्यंत मनुष्य तिर्यंच युगलिया जीवोने अधिक सुख छे, वळी जेम अनुत्तर विमानथी ऊतु अने देवलोकथी अधिक सुख नव ग्रैवेयकना देवताउ अनुभवे छे, ते दृष्टाते ए बे आरा उपर आठ कोडाकोडी सा-

गरोपमना कह्या तेथी ठंडुं अने बीजा कहेवा ठे तेथी अधिक सुख उत्सर्प्पिणि काळे पाचमो आरो अने अवसर्प्पिणि काळे बीजो आरो त्रण त्रण कोमाकोमी सागरोपमना सुषम नामे, ते बेउ मळी ठ कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत युगलियां सुख अनुभवे ठे जेम नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमान मळी चौद विमानना देवताउने माथे कोइ इंद्र नथी एटले सर्व इंद्र ठे तेम ए चार आराना चौद कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत युगलियां मनुष्योने माथे कोइ राजा नथी एटले सर्वे राजा ठे वळी नव ग्रैवेयकथी ठंडु अने भुवनपति व्यंतर अने ज्योतिषी करता अधिक सुख बार देवलोकना देवताउ अनुभवे ठे ते दृष्टाते उत्सर्प्पिणि काळे चोथो आरो अने अवसर्प्पिणि काळे त्रीजो आरो ए बे सुषम दुःषम नामे बे बे कोमाकोमी सागरोपमना मळी चार कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत जुगलिया सुख अनुभवे ठे, वळी जेम देवलोकना देवो इंद्रनी आज्ञा मानवी पमे तेम अहीं पण अवसर्प्पिणि काळे त्रीजा आराना ठेके कुलगर राजानी आज्ञा जुगलियाने मानवी पमे ए त्रण ठ ठ आराना अढार कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत युगलियाते, देवतानी रीते विना उद्यमे इच्छा करवाथी सुखे काळ निर्गमे ठे, वळी आठमा देवलोक उपरना देवो सर्वे देवताना भवनु आयुष पूरुं करी. ... मनुष्य गतिमा आवी उपजे, बीजी गतिये जाय ... तेम युगलिया ... देवगतिये जाय, पण बीजी ...

तिये जाय नहीं हवे पाच भरत अने पाच ऐरवत ए दस क्षेत्रमा अवसर्प्पिणि काळे पेहेला आराना प्रथम काळे अने उत्सर्प्पिणि काळे छठा आराना छेडे युगलिया सुख अनुभवे, वळी तेमनु त्रण पल्योपमनु आयुष, त्रण गाउनी उंची काया एज प्रमाणे सदैव सरखु जंबुद्वीपनी अकर्म भूमिए देवकुरु अने उत्तर कुरुक्षेत्रे जाणवु, वळी अवसर्प्पिणि काळे बीजा आराना प्रथम काळे अने उत्सर्प्पिणि काळे पाचमा आराना छेडे युगलिया ए भरत ऐरवतनां दसक्षेत्रे सुख अनुभवे, वळी तेमनुं बे पल्योपमनुं आयुष्य, बे गाउनी उची काया, ते प्रमाणे सदैव सरखुं धातकीखंडनी अकर्मभूमिए हरिवर्ष तथा रम्यक्क्षेत्रे जाणवु, वळी अवसर्प्पिणि काळे त्रीजा आराना प्रथम काळे अने उत्सर्प्पिणि काळे चोथा आराना छेडे, भरत अने ऐरवत ए दसक्षेत्रे युगलिया सुख भोगवे, ते प्रमाणे सुख वळी तेमनुं एक पल्योपमनु आयुष अने एक गाउनी उंची काया होय, ते प्रमाणे सदैव सरखु पुष्करवर द्वीपनी अकर्मभूमिए हिमवंत तथा ऐरण्यवत क्षेत्रे जाणवुं, अने अतरद्वीपना युगलियानु आयुष्यतो एक पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं छे, वळी काया आठसो धनुष उची कही छे आहारनी इच्छा एकांतरे थाय अने अपत्तपालणा अगन्यासी दिवस करीने माता पिता काळ करे, माटे अवसर्प्पिणिकाळे त्रीजा आरानो घणो काळ जाय अने अनुमाने एकपल्योपमनो आठमो भाग बाकी रहे त्यारे अंतरद्वीपना युगलीयाने

सदैव भरतऐरवतना दसक्षेत्रथी सरखापणुं अनुमाने संभवे, अने भरतऐरवतना दसक्षेत्रे सदैव सरखापणुं न होय हवे मनुष्य अने तिर्यंच पचेंद्रिने दुःखनी अधिकता जोइए तो, जेम नारकी जीवोने साते नरकमा दुःख छे परतु सातमी नरके सर्वोपरि अधिक दुःख, ते दृष्टाते मनुष्य, तिर्यंच पचेंद्रिनी योग्यताना दुखमां अवसर्पिणिकाळे छठे आरे अने उत्सर्पिणिकाळे पेहेले आरे, ए वे एकवीस एकवीस हजार वर्षना दुःषमदुःषम नामे ए वे आरा मली बेताळीस हजार वर्ष पर्यंतनो काळ ते मनुष्य तिर्यंच पंचेंद्रिने अतिदुःखदायी छे, पांच भरत अने पाच ऐरवत मळी दसेक्षेत्रमा सरखाभावे ते काळे दु ख जाणवु हवे अवसर्पिणि काळे पांचमा आरामा अने उत्सर्पिणिकाळे बीजा आरामा जेम भूत, प्रेत, अवगतिया व्यंतरा ज्या त्या र खडी रखडीने दुःखे भव पुरो करे अने सुख माने, ते न्याये अवसर्पिणि काळे पांचमो आरो अने उत्सर्पिणि काळे बीजो आरो एकवीस एकवीस हजार वरस पर्यंत मनुष्यो मोहनी छाके छक्या थका विकळ थइने जीनेंद्र देवना तीर्थने अणपामते समकितादि गुण स्यानकने अण फरसते बहुधातो दुःखने सुख मानी ए वे आरानां बेतालीस हजार वरस पर्यंत दुःषम काळना पराभवे पीडाता थका जीवो दुःखने अनुभवे वळी जीनेंद्र देवना तीर्थने कोइ एक पाम्या छे, समकितादि गुण स्यानकने फरस्या छे, तेने पण उदिकताना अनुसारे अशाताना कारणनी बहुधा आ काळे अधिकताइ

जोवामा आवे छे धर्मी पुरुषोने धर्म साधन करवामा आ काळे व्याघात् विघ्ननी बहुधा तो बहुलता छे ते कही. हवे पाच भरत अने पाच ऐरवत ए दस क्षेत्रमा, पाच महाविदेह क्षेत्रना मनुष्य तिर्यच पंचेंद्रि करता अढार कोडा कोडी सागरोपम पर्यंत युगलियापणे शाता वेदनीयनुं अधिक सुख, अने बेतालीस हजार वरस पर्यंत महाविदेह क्षेत्रनी अपेक्षाये दु पम काळे अशाता वेदनीयनु दु ख छे, वळी दुःपम दु पम काळे अति दु ख छे एम सुखनुं अने दु खनुं न्यूनाधिकपणुं पाच भरत अने पाच ऐरवत ए दस क्षेत्रमा काळ महात्म्ये जाणवु, हवे अवसर्पिणि काले चोथो आरो अने उत्सर्पिणि काळे त्रीजो आरो दु'पम सुपम नामे एक एक कोडाकोडी सागरोपममा बेतालीस बेतालीस हजार वरस उणाना ए बे आरा मळी बे कोडाकोडी सागरोपममा चोरासी हजारवर्ष उणा ते काळे पाच भरत अने पाच ऐरवत अने पाच महाविदेह ए पदर क्षेत्रे प्राये सरखा भाव कहेवाय अने विशेष अपेक्षाए तो अवसर्पिणि काळे बीजा तीर्थंकर अजीतनाथना वारानो पन्नर क्षेत्रे सरखा भावे काळ कह्यो छे सुख दु ख सरखु छे महाविदेहना पाच क्षेत्रमा सदा सर्वदा उत्सर्पिणि काळे त्रीजा आरानो अने अवसर्पिणि काले चोथा आरानो ज भाव वर्त्ते छे तेनुं कारण एके त्या काल लागतो नथी वळी युगलीयाना त्रीस अकर्मभूमि तथा छप्पन अतरद्वीप मली छयासी क्षेत्रे पण काल लागतो नथी पुद्गलीक सुखनो

अधिक न्नाग युगलियापणे त्रण छ ठ आरानां अढार कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत जीवो न्नरत ऐरव्रत क्षेत्रे न्नोगवे ते पण महाविदेह क्षेत्रे नथी; अने अवसर्पिणि काळे, पांचमा आरे न्नरत ऐरव्रत क्षेत्रे ज्ञुःख न्नोगवे, ठठे आरे अति ज्ञुःख न्नोगवे, वळी उत्सर्पिणि काळे पेहेले आरे अति ज्ञुःख चोगवे, बीजे आरे ज्ञुःख न्नोगवे, ते पण महाविदेह क्षेत्रना जीवोने नथी. त्या तो त्रत्सर्पिणि काळे त्रीजो आरो अने अवसर्पिणि काळे चोथो आरो सदा वर्त्ते ठे ए बे आराना जीवो कर्म बाधवामां पण शुरवीर अने कर्मनो नाश करवामा पण समर्थ ठे. सातमी नरके जवावाळा पण कर्मन्नूमिना सर्व क्षेत्रे ते काळे होय अने मोक्षे जवावाळा पण ते काळे ठे, ते सर्व वज्र ऋषजनाराच संघयणवाळा जाणवा एम ए काळे सर्व वाते अधिकताइ ठे ते कही. हवे अल्प पुन्य बाधवा चोगववानी अपेक्षाये अवसर्पिणि काळे पेहेलो बीजो अने त्रीजो, तथा उत्सर्पिणि काळे चोथो पांचमो अने ठठो ए त्रण त्रण मळी ठ आरा श्रेष्ट ठे अने बहुधा पाप बांधवा न्नोगववानी अपेक्षाये अवसर्पिणि काळे पाचमो ठठो अने त्रत्सर्पिणि काळे पेहेलो अने बीजो ए चार आरा अनिष्ट ठे. मोक्ष साधननी अपेक्षाये उत्सर्पिणि काळे त्रीजो आरो अने अवसर्पिणि काळे चोथो आरो ए बे मळी बे चोवीसीयोना बे कोमाकोमी सागरोपमनो काळ ते श्रेष्ट ठे, कारण के ए काळे तीर्थंकर, केवळी, सामान्य केवळी, गण

धर, आचार्य, उपाध्याय, साधुनो जोग छे, मोक्षनो मार्ग छे, माटे ए बे कोडाकोडी सागरोपमनो काळ अनुमोदवा योग्य छे अने बाकीना अढार कोडाकोडी सागरोपमना अनुमाने दस आरा ते मोक्ष मार्ग धर्म साधननी अपेक्षाये अनिष्ट छे. ए अवसर्पिणि, उत्सर्पिणिनी बे चोवीसी साथे वीस कोडाकोडी सागरोपमनु एक काळ चक्र बार आराए करी पूरण गवेखीने कह्यु ए प्रमाणे काळनु बार आराए करीने अनादि अनंत न्नागे परावर्त्तन जाणवु हवे पूर्वनुं मान कहे छे, चोराशी लाखने चोराशी लाख साथे गुणाकार करीए अने जे आक आवे एटला वर्षे एक पूर्व थाय एटले ७०५६०००००००००० सीत्तेर लाख करोड अने छप्पन हजार क्रोड एटला वर्षे एक पूर्व थाय. हवे अहीं-आ मुहूर्तथी माडीने शिर्ष प्रहेलिका सुधी अनुक्रम जाणवो ते पाचमा कर्मग्रंथे तेनी व्याख्या छे, त्याथी जोइ लेजो, इहा लखी नथी शिर्ष प्रहेलिकाये चोपन अक्षर अने तेना उपर एकसो ने चालीस शून्य मली एकसोने चोराणु आक आवे त्या सुधी सख्या तो काल कह्यो ते गणतरिये काळ गण्यो आवे ते अक माडीये छैये ७५८२६३२ ५३०७३१०२४११५७९७३५६९९७५६९६ ४०६२१८९६६८४८०८०१८३२९६२ ए चोपन आक आगल एकसोने चालीश शुन्य माडीये त्यारे एकसोने चोराणुं अक थाय त्या सुधी सख्याता वर्ष जाणवा हवे पल्योपमनुं प्रमाण कहे छे, ते पल्योपमनो

काळ तो असंख्यातो छे माटे गणत्रीनी अपेक्षा काम आवे नही. अहींआ तो कुवाना आकारे प्यालो कल्पीये, एटले बे हजार धनुष्य लंबाइना आठ हजार हाथनुं प्रमाण थाय तेनो एक कोश कहेता एक गाउ कहीए अने चार गाउने एक जोजन कहीए. ते एक जोजन प्रमाण प्यालाना आकारे गोळाश पणतो उंडो कुवो अने लांबो पहोळो पण एक जोजन प्रमाण कल्पीए अने ते कुवानी परधि त्रण जोजन अने एक जोजननो छठो भाग तेना उपर अधिक, एटली थाय, ते कुवामा देव कुरु अने उत्तर कुरु क्षेत्रना जुगलिया जन्मना दिवसथी ते सात दिवसनी ओटी वालवयना, तेमना मस्तकना वालना अग्र एटले छेल्लो खंड जे एकना बे खंड न थाय एवा बारीक खंडोखंड करीए ते पण बादर खंड कहेवाय, ते बादर खंडोना प्रत्येके एक एक खंडना असंख्याता असंख्याता खंड कल्पीए, ते कल्पित शुक्ष्म खंडोए उपर वर्णवेलो कुवो ते ठांसीने भरीए के तेना उपर चक्रवर्त्तीनु सैन्य चाल्युं जाय तो पण दवाय नहीं, वली गंगा नदीनो प्रवाह पण ए भरेला वालाग्रना सूक्ष्म खंड तेने भेदी शके नहीं वली ज्वाजल्यमान अग्नि पण बाली शके नही अति पवन प्रयोगे पण एक वालाग्र खंड ते उडी शके नही एवो ठासीने भरीए, ते कुवामाथी समये समये एक एक वालनो खंड काढता जेटला काले ए कुवो खाली थाय तेटला कालने सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहीए. एवा दस कोडाकोडी प-

ल्योपमे एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय तेवा अढी सागरोपमना जेटला समय थाय एटला तीर्छा लोकमा द्वीप समुद्र छे एम जाणवुं, अने सो सो वर्षे एक एक वालनो खंड काढता जेटला काले ए कुवो खाली थाय, निर्लेप थाय तेटला कालने एक सूक्ष्म अद्धा पल्योपम कहीए अने एवा दस कोडाकोडी सूक्ष्म अद्धा पल्योपमना कालने एक सूक्ष्म अद्धा सागरोपम कहीए. सागर एटले समुद्रनो पेठे जेनु पार पामवु ते दुर्लभ होय एम सरखापणुं छे, ते कारणे सागरोपम नाम छे ते गवेरुोने कह्युं. ए सूक्ष्म अद्धा सागरोपम कह्युं. तेवा वीस कोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणि अवसर्पिणि थाय तेने कालचक्र पण कहीए वली देवतानुं नारकीनुं तथा युगलीआ मनुष्य तिर्यंचनुं आयुष्य मान तथा कर्म स्थीतिमान, तथा काय स्थिति मान ए सर्वेनु मान ते सूक्ष्म अद्धा पल्योपम सागरोपमनी अपेक्षाये छे, अने एक कालचक्र गवेरयुं तेवा अनंता कालचक्र आगल वही गया ते, कालनी आदि नथी अने आपणो जीव अनादि संबंधे अनाभोग मिथ्यात्वने लीधे चतुर्गति ससार चक्रमा गत्यागती करे छे, ते गति आगतिने हवे गवेखे छे. तेमा प्रथम तिर्यंच गतिये एकेंद्रीथी पंचेंद्रि पर्यंतमां कोण कोण आवीने उपजे ? तो सूक्ष्म बादर पृथ्वी आदि पाचे प्रत्येक स्थावर बादर साधारणमा उपजे, वली पाचे स्थावरमा पोतपोतानी जातीना पुन. पुन. मरीने पोतानो कायामा

उपजे अने उलट सुलट पृथ्वीकायना जलमा, अग्निमा, वायुमा अने वनस्पतिमा उपजे, वली अपकायना पृथ्वीमां, अग्निमा, वायुमा अने वनस्पतिमा उपजे, वली तेउकायना पृथ्वीमां जलमां, वायुमां, अने वनस्पतिमां उपजे, वली वायुकायना पृथ्वीमां, जलमा, अग्निमां अने वनस्पतिमां उपजे वली वनस्पतिना पृथ्वीमां, जलमा अग्निमा, अने वाउकायमां उपजे, वली साधारण वनस्पतिमा सूक्ष्म साधारणना बादर साधारणमा उपजे अने बादर साधारणना सूक्ष्म साधारणमा तथा सूक्ष्म बादर पाचे प्रत्येक स्थावरमां उपजे, वली विकलेंद्रि पण पाचे बादर प्रत्येक स्थावरमां उपजे.संख्याता वर्षना आयुषवाला तिर्यंच अने मनुष्य सन्नि असन्नि पंचेंद्रि ते सर्वे प्रत्येक पाचे बादर स्थावरमा उपजे. वली भूवनपति व्यंतर अने ज्योतिषि ए त्रण अने वली वैमानिकमा सुधर्म कल्प अने इशान कल्प ए बे देवलोक सुधीना देवो अने देवीउ ते पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय ए त्रण स्थावर पर्याप्ता बादरमा उपजे, एक नारकी एकेंद्रिमां आवे नहीं एम एकेंद्रिमा त्रण गतिथी चवीने आववानी गति कही हवे विकलेंद्रिमा कहे छे. बेइन्द्रि, तेइंद्रि अने चौरेंद्रि ए त्रणे पोत पोतानी जातिमा तो फरी फरी मरीने उपजे, वली बेइंद्रि जीवो तेइंद्रि अने चौरेंद्रिमा उपजे, तेइंद्रि जीवो बेइंद्रि अने चौरेंद्रिमा उपजे, अने चौरेंद्रि जीवो बेइंद्रि अने तेइन्द्रिमा उपजे, वली पांचे बादर [illegible] स्थावर विकलेंद्रिमा उपजे, वली

च्यमा पण जाय, असख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्य जुगलियां तेमां पण जाय, देवगतिये जुवनपति, व्यतर अने ज्योतिषी अने वैमानिकमां आठमा सहस्रार देवलोक सुधी पण जाय, वली नरक गतिये जुजपरि सर्प, घो, नोलिया उंदर आदि बीजी नरक सुधी जाय अने खेचर पक्षी मांसनो आहार करवावाला सींचाणा समली आदि त्रीजी नरक सुधी जाय, वली सिंह, चित्रा, कुतरा, बिलाडा आदि हिंसक जीवो चोथी नारकी सुधी जाय, उरपरि सर्प ते नाग काला धोला अने कावरा अने वली अजगर आदि पाचमी नारकी सुधी जाय अने जलचर मछादि रौद्र ध्याने सातमी नरक सुधी जाय. ए सन्नि पंचेंद्रि तिर्यंच संख्याता आयुष्यवालाने मरीने परजवे जवानी चारे गतियो कही अने असंख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच पचेंद्रि युगलिया तो मरीने जुवनपति व्यंतर आदि एक देवगतियेज जाय, बीजी गतिये जाय नहीं, ए तिर्यंचनी गति आगति कही हवे मनुष्यनी गति आगति कहे छे, तेमा प्रथम तो मनुष्यमा चवीने आवी कोण न उपजे ते कहे छे मनुष्य गतिमा असंख्याता वर्षना आयुष्यवाला एक मनुष्य अने बीजा तिर्यंच युगलिया ए बे तो मरीने मनुष्यमा उपजे नहीं ए तो एक देवगतिये जनारा छे, अने एकेंद्रि सुक्ष्म प्रत्येक तथा साधारण टाली बादरस्थावरमायी एक तेउकाय अने बीजा वाउकाय ए बे मनुष्यनी गति पामवाने अयोग्य छे,माटे मनुष्यमा आवे नहीं,बाकीना सर्वे प्राणी मनुष्य

गतिमा आवे, तेमां मनुष्यनो ज्ञव पामीने जे तीर्थंकर थाय अथवा चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव, थाय ते देवगतिथी वा नरक गतिथी आवीने मनुष्य थएला जाणवा, पण मनुष्य गतिथी वा तिर्यंच गतिथी आवेला ए चारेने जाणवा. वली देवगतिथी आवीने वासुदेव, प्रतिवासुदेव थाय तो पांच अनुत्तरविमानथी आवीने थाय नही एम जाणवुं. निश्चे नरकगामी छे माटे अनुत्तरविमानथी वासुदेव आवे नहीं. हवे विशेषे गवेषे छे असन्नि समूर्छिम-मनुष्य अने तिर्यंच ए बे मरीने मनुष्य थाय तो संख्याता आयुषवाला मनुष्य थाय, पण असंख्याता आयुषमा आवे नहीं, अने सन्नि पचेंद्रि संख्याता वरसना आयुष वाला मनुष्य अने तिर्यंच ए बे मरीने मनुष्य थाय ते संख्याता असंख्याता बे ज्ञेदे आयुष्यमा युगलिया अयुगलियापणामा आवे छे माटे संज्ञवे, अने विकलेंद्रि ते बेइंद्रि तेइंद्रि अने चौरेंद्रि ए त्रणे मरीने मनुष्य थाय तो सख्याता आयुष्ये मनुष्यनो ज्ञव पामी अधिकताइ पामे तो सर्वविरति चारित्र ग्रहण करे पण श्रेणी न मांडे ते कारणे विकलेंद्रिथी मनुष्य थयेला तद्ज्ञवे मोक्ष न जाय, वली पृथ्वीकाय, अपकाय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ए त्रणे स्थावरमांथी मरीने मनुष्य थाय ते संख्याता आयुष्ये थयेला जाणवा वली ज्ञुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक ते बार देवलोक, नवग्रैवेयक, अने पाच अनुत्तर विमान सर्वार्थ सिद्ध पर्यंतथी चवीने मनुष्य गतिये आवे,

ते मनुष्य सर्वे संख्याता वरसना आयुष्ये थयेला छे. वली साते नरकथी चवीने संख्याता आयुष्ये मनुष्यमा आवे तेमा पेहेली नरकथी आवी कोइ चक्रवर्त्ती पण थाय, बीजी नरकथी आवीने कोइ वासुदेव बलदेव थाय. त्रीजी नरकथी आवीने कोइ तीर्थकर पण थाय, चोथी नरकथी आवीने कोइ सामान्य केवली थइ मोक्षे जाय, पाचमी नरकथी आवेला अधिकताइ पामता सर्व विरतिपणा सुधी आवे, छट्ठी नरकथी आवेला देशविरति पाचमुं गुणठाणुं कोइ पामे, सातमी नरकथी आवेला समकित चोथुं गुणठाणु कोइ पामे, उपरनु गुणठाणुं ते नवे न ग्रहे. ए मनुष्यमा आववानो अधिकार चारे गतिथी कह्यो हवे मनुष्य गतिमाथी आयुष पूर्ण करी मरीने क्या जाय? तो सर्वे ससार गतिए मनुष्यो चवीने जाय अने पाचमी सिद्ध गतिए पण संख्याता आयुषवाला मनुष्यो उत्तरोत्तर वृद्धि पामता जाय अने संसार गतिये जायतो आर्त्त ध्यान योगे तिर्यंच गतिये बेइंद्रि आदि त्रसमा जाय अने रौद्र ध्यान योगे नरक अथवा स्थावर गतिमा जाय, वली धर्मध्यान ध्याता देवगतिये नवग्रैवेयक पर्यंत जाय अने शुक्लध्यानतो पेहेलो पायो ध्याता अनुत्तर विमान मले, वली बीजो पायो ध्याता केवलज्ञान केवल दर्शन आदि अनंती क्षायक लब्धिनी प्राप्तिये तेरमे गुणठाणे अरिहंतपद मले, वली त्रीजो चोथो पायो ध्याता सर्व कर्म रहित थइ मोक्षे जाय एम जाणी हित अर्थे ' आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ए बे अशुभ

दुःख हेतु जाणी चपल चित्त निवारीने तजवु अने स्थिर चित्ते धर्म ध्यान शुक्ल ध्याननो खप करवो तेथी हित अर्थ प्राप्त थशे मनुष्य भव पाम्यानुं एज सार छे, वली भव्यपणानुं लक्षण पण समकितादि गुण स्थानकनुं पामवुं ए छे समकित प्राप्त न थयु त्यां सुधो भव्यपणु ते पण अभव्य प्राय छे हवे जे मनुष्य गति पामीने सिद्धि वरे ते एक समये एक पण सीजे अने उत्कृष्टा एकसोने आठ पण सीजे ते चारगति आश्रीने उत्कृष्टा गवेषे छे मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला सीजे तो एक समये वीस सीजे, तिर्यंच पंचेंद्रिथी आवीने मनुष्य थइ सीजे तो एक समये दस सीजे, पृथ्वीकाय, अपकाय ए वे स्थावरमाथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये चार सीजे, प्रत्येक वनस्पतिकायमांथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये छ सीजे वली पेहेली वीजी अने त्रीजी ए त्रण नारकीमाथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये दस सीजे, चोथी नारकी पंकप्रभाथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये चार सीजे, देवगतिये भूवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी ए त्रण निकायना देवो मनुष्य थइ सीजे तो एक समये दस सीजे, अने भुवनपति तथा व्यंतर ए वे निकायनी देवीओ मनुष्य थइ सीजे तो एक समये पाच सीजे, अने ज्योतिषीनी देवीओ दस सीजे, वली वैमानिकथी एटले छवीस स्वर्गथी देवो आवी पुरुषवेदे मनुष्य थइ सीजे तो एक समये एकसोने आठ सीजे, देवलोकमा बीजा देवलोक सुधी देवांगनानी

उत्पत्ति छे, ते देवीओ मनुष्य थइ सीजे तो एक समये वीस सीजे. ए आगति आश्रीने सिद्धिवरवानो अधिकार कह्यो. वळी मनुष्यनी गति आगति कही. हवे नारकीनी गति आगति कहे छे नरकमा उपजवावाला सन्नि पंचेंद्रि तिर्यंच अने मनुष्य संख्याता वर्षना आयुष्यवाला साते नरकमा उपजे अने असन्नि तिर्यंच पचेंद्रि संख्याता वर्षना आयुष्यवाला जघन्य आयुष्ये वा मध्यस्थ आयुष्ये पेहेली नरक सुधी जाय अने उत्कृष्टा आयुष्ये असन्नि तिर्यंच नरके न जाय, अने नरकनुं आयुष्य पूर्ण करी चवीने नारकी जीवो एक तिर्यंच पंचेंद्रि सन्निनी पाचे जाति थलचर, जलचर, खेचर, उरपरि अने भुजपरि तेमां संख्याता वर्षना आयुष्ये उपजे वली सन्नि मनुष्यनी पण त्रण जाति स्त्री, पुरुष अने नपुंसक ए त्रणवेदे दस प्राणधारीपणे संख्याता वर्षना आयुष्ये मनुष्यमा उपजे नारकी नारकीमा न उपजे वली देवगतिये पण न जाय, विकलेंद्रि अने स्थावरमा पण न जाय वली जुगलिया मनुष्य अने तिर्यंच पचेंद्रि असंख्याता वर्षना आयुष्यवाला तेमा पण न जाय, असन्नि तिर्यंच अने असन्नि मनुष्यमा पण नारकी न आवे, ए नारकीनी गति आगति बे गतिथी कही. हवे देवतानी गति आगति कहे छे देवता देवगतिमा चवीने फरी न उपजे वली नारकी पण देवगतिए आवे नहीं त्यारे कइ गतिथी आवीने देवगतिमा उपजे ? तो पचेंद्रि सन्नि मनुष्य तथा सन्नि असन्नि पंचेंद्रि तिर्यंच ए बे गति-

वाला चवीने देवगतिमा उपजे तेने गवेपे छे. असंख्याता वर्षना आयुष्यवाला मनुष्य अने तिर्यंच युगलिया तो उत्कृष्टा बीजा देवलोक सुधी त्रण पल्योपमना आयुष्ये उपजे, अने जघन्य ओछा आयुष्ये भुवनपति अने व्यंतरमां उपजे, पण त्रण पल्योपमथी अधिक आयुष्ये बीजा देवलोक उपरांत युगलिया जाय नहीं हवे संख्याता वर्षना आयुष्य वाला तिर्यंच पंचेन्द्रि सन्नि अने असन्नि सर्वे अने वली सन्नि मनुष्यो क्रियाभेदे घणा प्रकारे देवगतिये जाय छे श्री भगवती सूत्रे प्रथम शतके बीजे उद्देशे कह्युं छे के—

अहं भंते असंजय भविय दव्व देवाणं ॥१॥ अविराहिय संजमाणं ॥२॥ विराहिय संजमाणं ॥३॥ अविराहिय संजमा संजमाणं ॥४॥ विराहिय सजमासंजमाण ॥५॥ असन्नीणं ॥६॥ तावसाण ॥७॥ कंदप्पियाण ॥ ८ ॥ चरगपरिव्वायगाणं ॥ ९ ॥ किविसियाण ॥ १० ॥ तिरिच्छियाणं ॥ ११ ॥ आजीवीयाणं ॥ १२ ॥ अभीयोगीयाण ॥ १३ ॥ सलिंगीणं दंसण वावणगाणं ॥ १४ ॥ एतेसिणं देवलोगेसु, उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए गोयमा, असंजय भविय दव्वदेवाणं जहन्नेणं भवणवासिसू उक्कोसेण उवरिमगे विजयेसु ॥ १ ॥ अविराहिय संजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं सव्वठ सिद्धि विमाणे ॥ २ ॥ विराहिय सजमाणं जहन्नेणं भवण उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ॥ ३ ॥ अविराहिय संजमा संजमाण जहन्नेण सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे ॥ ४ ॥ विराहिय संजमासंजमाणं जहन्नेणं भवणवासिसु उक्को-

सेणं जोइसिएसु ॥ ५ ॥ असणीणं जहन्नेण, जवण वासीसू उक्कोसेण वाणवंतरेसु ॥ ६ ॥ अवसेसा सवे जहन्नेणं नवण वासोसू उक्कोसेण वोच्छामि तावसाण जोइसिएसु ॥ ७ ॥ कदप्पियाण सोहम्मे कप्पे ॥ ८ ॥ चरगपरिवायगाणं बम्हलोए ॥ ए ॥ किंबिसियाण लंतए कप्पे ॥ १० ॥ तिरिवियाण सहसारे कप्पे ॥ आजियाणं अच्चुए कप्पे ॥ १२ ॥ अजियोगीयाण अच्चुए कप्पे ॥ १३ ॥ सलिंगी दसण वावणगाण उवरीमग्गे विजएसु ॥ १४ ॥

अर्थ.—असजय कहेता द्रव्यथी जैन मुनि अने भावथी ग्रथि भेदना अभावे मिथ्यादृष्टि माटे असजति कह्या. ते उत्सूत्रनी प्ररूपणा न करे तो जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा नवमा ग्रैवेयक सुधी जाय, (१) अविराहिय संजमाण कहेता अप्रमत्तादि गुण स्थानक योग्य बहु श्रुतगीतारथ श्रुतकेवलो तद्गत भावने पामेला स्याद्वाद वादी अंतर दृष्टि धर्मध्यान शुक्लध्यानना ध्याता उत्सर्ग मार्गना ग्राहकवत सयति ते जघन्यथी सुधर्मकल्प अने उत्कृष्टा सर्वार्थसिद्ध विमाने जाय (२) विराहिय संजमाणं कहेता प्रमत्तादि गुण स्थानकयोग्य अतिचार लगावता थका अपवाद मार्गे चालवावाला सयति ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा सुधर्म कल्पे जाय (३) अविराहिय सजमासंजमाणं केहेता पाचमा गुणठाणाना धारक, रोचकसमकितना ग्राहक, निरतिचारवंत आराधक श्रावक ते जघन्यथी सुधर्म कल्प अने उत्कृष्टा अच्युत बारमा देव-

लोके जाय (४) विराहिय संजमा संजमाणं केहेता देश-विरतिपणामा अतिचार लगावता थका विराधक श्रावक ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा ज्योतिषीए जाय (५) असणीणं केहेता असन्नि तिर्यंच पचेन्द्र ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा वाणव्यंतरमा जाय (६) तावसाणं कहेतां चार बाजुए अग्निप्रज्वलित अने पाचमुं सूर्यना तापे तपता अशक्त थका सहेता एवा तापस अज्ञान तप कष्ट जोगे जघन्य भुवनपति अने उत्कृष्टा ज्योतिषीए जाय (७) कंदप्पियाणं कहेता संजति थइने एकबीजानी हांसी करे मश्करी करे तेने कंदर्पि कहीए ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा सुधर्म कल्पे जाय (८) चरग परिवायगाणं केहेतां चर्क त्रिदंडी तिर्यंचनी दया विशेषे पाले छे वली बे चार भेगा थइने भिक्षा करता ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा पांचमा ब्रह्मदेवलोके जाय (९) किब्बिसीयाणं कहेतां संयति थइने दर्शनमोहनी उदयागतना पाउने पीडाता थका उत्सूत्रनी प्ररूपणा करे वली द्रव्यथी निरतिचार चारित्र पाले ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा लातक नामे छठा देवलोके किल्बिषिया देवतापणे उपजे (१०) तिरिछियाणं केहेतां तिर्यंच पचेन्द्रि अने सन्नि जलचर, थलचर, खेचर, उरपरि सर्प अने भुजपरि सर्प ए पाचे जातिना ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा आठमा सहस्रार देवलोके जाय (११) आजिवीयाणं केहेता आजिविका अर्थी पाखंडी, वेशधारी, गोशाळाना संयमी

ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा बारमा अच्युत देवलोके जाय (१२) अभीयोगीयाणं कहेता सयति थइने मंत्र जंत्र, दोरा, धागा करे वली देव देवीनी उपासना करे तेने अभियोगीक कहीए ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा बारमा अच्युत देवलोके जाय (१३) सलिंगीदंसण वावणगाणं कहेता संयति जेन लिगधारी अल्प कषायी निरतिचारी समकितथी भ्रष्ट थएला श्रद्धा विपर्यासना लीधे पण द्रव्य चारित्रथी भ्रष्ट थयेला नहीं, ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा नवमा ग्रैवेयके जाय (१४) ए देवगतिमा आववानो अधिकार चेगतिथी कह्यो हवे देवता देवगतिनुं आयुष पूर्ण करी चवीने क्या जाय ते कहे छे भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिकमा सुधर्म कल्प अने बीजुं इशान कल्प ए बे देवलोक सुधीना देवो अने देवीउ पृथ्वीकाय अपकाय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ए त्रण स्थावर बादर पर्याप्तामा पण जाय, वली आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना तिर्यंच पंचेंद्रि सन्निमा संख्यातावर्षना आयुष्ये उपजे अने सर्वार्थ सिद्धपर्यंत चारे निकायना देवो सन्नि मनुष्य संख्याता आयुष्यवाला तेमा उपजे, देवता देवगतिमा वा नरकगतिमा, वा तेउकाय वाउकायमा वा सूक्ष्म पृथ्वीकाय आदि प्रत्येक अने वली सूक्ष्मबादर साधारण वनस्पतिकायमा अने वली विकलेंद्रिमा वा असंन्नि तिर्यंच अने मनुष्यमा वा सर्व जातिना अपर्याप्ता (मरे ते) मा वा असंख्याता वर्षना आयुष्यवाला मनुष्यतिर्यंच युगलिया

तेमा आवे नहीं उपजे नहीं. ए देवगतिथी मरीने परभवे जवानो अधिकार बे गतिथी कह्यो. वली चारे गतिमां जीवोनी भ्रमण चक्ररूप गतिआगति अनुक्रमे कही ते मिथ्यात्व भावे जीवने चारे गतिनो संसार छे अने समकित भावे एक मनुष्यनी अने बीजी देवनी ए बे गतिनो संसार छे कारण के नरकनु अने तिर्यंचनुं आयुष्य समकित गुणठाणे वर्त्ततो जीव न बाधे तो शी रीते जाय ? जवुं पडे नही, कदापि समकित पाम्या पेहेला नरक तिर्यंचनुं आयुष्य बांध्युं होय तो समकित पाम्या पछी तेने जवुं पडे नहीं तो न जाय. माटे दुःखनो दातार आत्माने महाशत्रु एक मिथ्यात्व छे बीजो कोइ नथी ते योगे जीवने नरक निगोदनां दुःख भोगववा पडे छे अने नरकना अनंतां दुःख नारकीना जीवो भोगवे तेथी निगोदना जीवने अनंतु दुःख छे. एम सिद्धांत कहे छे अहींआ किंचित् निगोदनुं स्वरूप गवेषे छे

सवैया एकत्रीस

दस चउ राजलोक, असंख्य प्रदेश [illegible],
सूक्ष्म निगोय भर्यो, घी घट ज्युं [illegible]
प्रदेशे प्रदेशे गोलो, असंख्य [illegible],
गोलामा असंख्य कही, [illegible]
निगोय प्रत्येके कह्या, [illegible] जीव,
सिद्धसें अनंतगुणा, [illegible]

अनादि सवध एहो, जनम मरण तिहा,
अव्येवारे व्येवारे बादर थइ या तेंने

अर्थ—उंचपणे चौद राज्य प्रमाण लोक छे, तेना एटले लोकाकाशना प्रदेश असरयाता छे तेनी माहेतो कोरे सूक्ष्म निगोद घीना घडाना दृष्टाते गासीने भर्यो छे. जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेटला गोला छे, एटले एक गोलो एक आकाश प्रदेश फरसीने रह्यो छे, एम असरयाता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण असरयाता गोला रह्या छे ते एक एक गोलामा असख्याता निगोद छे, एटले निगोद शब्दनो अर्थ ए छे के अनता जीवोनु पिंडभूत एक शरीर तेने निगोद कहीए ते प्रत्येक निगोदमा अनता जीव कह्या, ते सर्व सिद्धथी एक निगोदमा अनंतगणा अधिक जीव छे एवुं जिन वचन सिद्धात साक्षीए छे

गोलाय असंखिजा, असंख निगोयउ हवइ गोलो ॥
इक्किक्कमि निगोए, अनंत जीवा मुणेयवा ॥ १ ॥

अर्थ—लोक माहे असख्याता गोला छे, अने अकेका गोला मध्ये असरयाती निगोद छे अने अकेक निगोदमा अनता जीव छे, ते अतित कालना सर्व समय तथा अनागत कालना सर्व समय अने वर्त्तमान कालनो एक समय, एम त्रणे कालना समय भेगा करी तेने अनंते गुणीए एटला एक निगोदमा जीव कह्या छे अने गयो काल तेनी आदि नथी अने आवतो काल तेनो पण छेडो नथी एटले

अंत नथी तेनु शुं प्रमाण बांधीये, तेना जेटला समय थाया थाय तेथी अनतगुणा एक निगोदमा जीव कह्या, तेवी एक गोलामा असंख्याती निगोद अने एक गोलो कह्यो तेवा, लोकमा असंख्याता गोला छे, ए निगोदना जीवोने निगोद साथे अनादि संबध एटले त्यांज जन्मे अने त्यांज मरे छे.

गाथा

अच्छि अनंता जीवा जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो
उववज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव ॥१॥

अर्थ.–निगोदमा अनंता जीवो एवा छे के त्रसपणुं पेहेला कोइवारे पाम्या नथी अनंतो काल पूर्वे गयो अने अनंतो काल जशे पण ते जीवो वारंवार त्याज उपजे अने त्याज चवे एम एक निगोदमा अनंता जीव छे. हवे तेना भवनु प्रमाण कहे छे.

गाथा

सत्तरस समहिच्चा किरइगाणु,पाणमिहुंति खुड्ड भवा॥
सगतिस सयतिहुत्तर पाणुं, पुणइग मुहुत्तंमि ॥१॥

अर्थ.—निगोदिया जीवो ते मनुष्यना एक उश्वासमां सत्तर भव काजेरा करे छे एटले सत्तरवार जन्मीने मरे अने अढारमी वारनो जन्मे छे. अने सात्रीसो तोतेर श्वासोश्वास एक मुहूर्त्तमा थाय.

गाथा.

पणसठ सहस्स पणसय,छत्तिसा इग मुहुत्त खुड्डभवा॥

आवलियाण दोसय, छप्पन्ना एग खुड्ड भवे ॥१॥

अर्थः—निगोदिया जीवो एक मुहूर्त्तमा पांसठ हजार पांचसे ने छत्रीस भव करे अने निगोदनो एक भव बसेंने छप्पन्न आवळीनो छे क्षुल्लक भवनु ए प्रमाण छे ते निगोदना बे भेद एक अव्यवहार राशी निगोद अने बीजी व्यवहारराशी निगोद, तेमा जे बादर एकेंद्रिपणुं भावे त्रसपणुं कोइ वखत पाम्या नथी अने निगोदमाथी कोइ पण काले नीकल्या नथी ते निगोदीआ जीवोने अव्यवहारराशीआ कहीए, ए पेहेलो भेद, अने जे जीवो निगोदमाथी नीकली बादर एकेंद्रिपणु भावे त्रसपणुं पामीने पाछा निगोदमां जइने पड्या छे ते निगोदीआ जीवोने व्यवहारराशीआ कहीए, ए बीजो भेद, अने अहीं मनुष्यपणाथी जेटला जीवो कर्म खपावीने एक समये मोक्षे जाय तेटला जीवो तेज समये अव्यवहारराशी सूक्ष्म निगोदमाथी नीकलीने उचा आवे छे पण व्यवहारराशीमा कोइ जीव वधे घटे नहीं ए सूक्ष्म निगोदमा पृथ्वी आदि पांचे स्थावरना सूक्ष्म जीवो ते सर्व लोकमां काजलनी कुपलीनी पेरे भर्या थका व्यापी रह्या छे, अने तेमा साधारणपणुं तो मात्र एक वनस्पतिमा छे पण चार स्थावरमा नथी ए सूक्ष्म निगोदमा अनंतु दुःख छे, तेनुं उदाहरण कहे छे सातमी नरकनु आयुष तेत्रीस सागरोपमनुं छे, ते तेत्रीस सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला वखत सातमी नरकमा उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपमने आयुषे कोइक जीव

उपजे तेटला भवोमा जेटलुं छेदन भेदननु दुःख थाय ते सर्व एकठु करीए तेथी अनंत गणुं दुःख निगोदना जीवो एक समयमां भोगवे छे यथा दृष्टांते जेम कोइक मनुष्यने साडात्रण क्रोड लोढानी सोयो अग्निथी तपावी कोइक देव समकाले तेना अंगमा खोसे तेथी तेने जे वेदना थाय तेनाथी अनत गणी वेदना निगोद मध्ये छे, अने भव्य जीवने निगोदनुं कारण ते अज्ञान छे, माटे हे भवभीरु भाइओ ! तेनो तमे त्याग करो अने ज्ञाननो खप करो, सद्गुरुनो विनय करो, तेथी आत्मसत्ता अनात्मसत्तानुं जाणपणुं पामशो, तीहां स्वभावनो अने विभावनो भेद जूदो पडशे. वली भुदिकताने वस्तु मानवी तेनो भ्रम टलशे अने अंतर दृष्टि थशे, त्या ज्ञान चेतना जागृति पामशे ए निगोदनो विचार कह्यो हवे काय स्थिति संग्रहणी सूत्रथी तथा देवचंदजी कृत गत चोवीशीमां छठा जिनजीना स्तवनथी गवेषे छे. कायस्थिति एटले जीवो संसार भ्रमणगति चक्रमां नाना प्रकारनी काया ग्रहण करे छे, तेमां जे कायाए मरण पाम्या तेज कायामा फरी फरी जन्मवुं अने मरवुं. बीजी कायामा ज्या सुधी न उपजे तेटला कालने कायस्थीतिनुं मान कहीए तेना प्रथम निगोदीया जीवनी क्षेत्र आश्रीने असख्याता पुद्गल परावर्त्तनी काय स्थिति कही छे, अने काल आश्रीने अनंता काल चक्रनी एटले अनंती उत्सर्पिणि अवसर्पिणिनी व्यवहारराशी निगोद एटले जे जीवो सूक्ष्म बादर निगोद जे साधारण

वनस्पतिमांथी नीकलीने प्रत्येक पांच स्थावर आदि त्रसपणु पामीने पाछा निगोदमां गया तेनी ए उत्कृष्टी कायस्थिति कही अने अव्यवहारराशी निगोदिआ जीवनी कायस्थिति क्षेत्र आश्रीने अनंता पुद्गल परावर्त्तनी जाणवी अने काल आश्रीने भवाभवी जीवनी अनादि अनंत भागे अने भवी अभवीनी उंधे अनादि सांत भागे कहीए, वली सादि सांत भागे पण कहीए ए सूक्ष्म साधारण वनस्पतिकायनी उत्कृष्टी काय स्थिति कही, अने बादर साधारण वनस्पति काय जे बादर निगोद तेनी उत्कृष्टी स्थिति अढी पुद्गल परावर्त्तनी कही छे हवे पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय अने वाउकाय ए चार सूक्ष्म स्थावरनी प्रत्येके एकएकनी उत्कृष्टी कायस्थिति असख्याता कालचक्रनी एटले असख्याती उत्सर्पिणि अवसर्पिणिनी कही छे, अने प्रत्येके वनस्पति साथे पांचे बादर स्थावरनी प्रत्येके प्रत्येके उत्कृष्टी स्थिति सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी कही छे हवे विकलेंद्रि ते बेइंद्रि तेइंद्रि अने चौरेंद्रि तेमनी प्रत्येके प्रत्येके सख्याता हजार वर्षनी उत्कृष्टी कायस्थिति कही छे अने पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय तथा प्रत्येक वनस्पतिकाय मली पांचे बादर स्थावर तथा बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरेंद्रि ए त्रणे विकलेंद्रि मली ए आठ पर्याप्तानी समुदाये भेगी गणतां कालथकी बे हजार सागरोपमनी झाझेरी कायस्थिति कही छे हवे पचेंद्रि तिर्यंचनी अने मनुष्यनी प्रत्येके प्रत्येके उत्कृष्टी

सात आठ नवनी काय स्थिति छे, अने देवता नारकी मलीने ए चारे गतिना पंचेन्द्रिपणानी समुदाये जेगी गणतां कालथकी एक हजार सागरोपमनो झाझेरी उत्कृष्टी स्थीति कही छे अने मनुष्यनी उत्कृष्टी स्थीति त्रण पल्योपम झाझेरी कही छे, आठ नवमां एक नव जुगलीयानो अपेक्षामां लेता वली देवता अने नारको तो आयुष्य पूर्ण करीने फरी देवता देवगतिमा न उपजे अने नारकी नरक गतिमां न उपजे माटे तेमने काय स्थिति न होय, ए उत्कृष्टी काय स्थिति कही अने जघन्यथी तो सर्व जीवनी एक अंतर्मुहुर्त्त प्रमाण काय स्थिति कही छे ए संग्रहणी सूत्रनी गाथा तथा स्तवन.

गाथा.

एसा पुढवाइणं ॥ नवठिइ सपयं तु कायठिइ ॥
चउएगिंदिसु णेया, उसप्पिणीउ असंखिज्जा २६४
ताउ वणंमि अणंता,सखिज्जा वाससहस विगलेसु
पंचिंदितिरिनरेसु, सत्तठ नवाउ उक्कोसा ॥२६५॥
सवेसिंपिजहन्ना, अंत मुहुत्तं भवेय काएय ॥

हवे गत चोवीसीमां छठा जिनजीनुं स्तवन लिख्यते.

जगतारक प्रभु विनवुं, विनतडी अवधाररे
तुज दरसण विण हुं नम्यो, काल अनत अपाररे जग० १

अर्थः—इन्द्र चंद्रादि कहेता देवगतिये वीस भुवनपति, बत्रीस व्यंतर, बे ज्योतीषी अने दस वैमानिक एटले बार देवलोक पर्यंत सर्व मलीने चोसठ इन्द्र छे, अने उपर नव ग्रैवेयक अने पाच अनुत्तर विमानमां तो सर्व देवो इन्द्र छे एटले त्यां तो कोइ सेवनज नथी, ए सर्वे देवेंद्र अने आदि शब्द तथा मनुष्यगतिये नरेंद्र जे चक्रवर्ती, वासुदेव अने बलदेव तेमनु पद कहेता जे तेमना ऐश्वर्यपणानी पुद्गलिक ऋद्धिनी ठकुराइ तेनु इन्द्रि नोइन्द्रि जनित जे विषय सुख तेने रोग जाण्यो कहेता रोग सरखु कोणे जाण्यु, तो जे अंतर आत्माना भावने पाम्या तेमणे जाण्यु छे शामाटे रोग सरखु जाण्यु छे तो कहे छे के शुद्ध निज एटले नीज कहेता पोताना आत्मानु शुद्ध कहेता निर्मल आत्मसत्ताने विषे मल आवरणे करीने रहित शुद्धता कहेता सिद्ध निष्पन्नता, धन्य कहेता क्षायक, लब्धि, केवलज्ञान, केवल दर्शनादि अनंता गुणने अव्याबाधादि अनंता पर्याय पिछाण्या केहेता जाण्या, ओलख्या, ए क्षायक ऋद्धिना रागी थया, अर्थी थया ते जोगे रागना प्रेर्या थका सहज वीर्यनी स्फुर्णाए तद्गत परिणाम पाम्या, सत्तारूपने अनुसरे छे ए स्वरूप केवुं छे तो आत्म कहेता आत्मानी धन्य धन्य केहेता क्षय उपशम भावे गुण पर्यायनी प्रगटता छे अने मूल स्वरूपे आत्मसत्ताए क्षायक भाव छे ते धन्य लब्धिने आपे कहेता कोइने कोइथी आनि अपाय नहीं अने लीधी लेवाय नहीं तो, न चोरे केहेता कोइथी चोरीने लीधी तो

लेवायज केम ? कोण जग दीन कहेतां स्वर्ग मृत्यु अने पाताल ए त्रणने जगत्रय कहीए तेमां वली कोइ जीवदिन एटले कंगाल क्षायक ऋद्धिए रहित आत्मसत्ताये नथी, ते तेने अनुकंपा लावीने आपीये. वली कोणजोरे केहेता तेम कोइ जगतमा जोरावर योद्धो नथी, ते एक जीवनी क्षायक ऋद्धिने वोजो अन्य चोरी लेशे, ना पामी लेशे एम क्षायक ऋद्धिनी आत्माना असंख्याता प्रदेशे अचळता प्रत्येक प्रदेशे अनती अनती ऋद्धि जोइने अनुभवीने निर्जयपणे सवेगनेगी महापुरुषोत्तम तृप्त थया छे, समाधि पाम्या छे. निरीछावेज संतुष्ट थया छे. ते कारणे अनता जीवे जोगवी जोगवीने छोमेली एवी पुद्गलिक अने विनाशक देव मनुष्य गतिये इंद्रादिक पदनी ऐश्वर्यादिक ऋद्धिने कोण इछे ? ए ऋद्धिना इछक तो बाह्य दृष्टि आत्मिक गुणनी अंतर्गत ऋद्धिना अजाण तेउ मिथ्यात्वोदय उदयागतना पराजव संयोगे विकल थयेला दीन कंगाल ते वहिरात्म जावने पामेला ते जीवो जेम पतंग उमीने दीवामा दीपकनुं मनोहर रूप पोतानां विकटा चक्षुवमे जोइने मोहित थका पमे छे ए न्याये मिथ्यादृष्टि जीवो पुन्य पुन्य पोकारता मोहितपणे शुज क्रियाना रागी थइने इछा करता वर्त्ते छे पण तेमने गुणना अजावे यथास्थित मलतुं नथी, अने आत्मज्ञानी आत्मदर्शी जे छे तेमने तो गुण रागीपणाने लीधे प्रशस्त रागे घणुं घणुं पुन्य जे शुज आश्रव ते आवे छे, पण तद्गत अंतरवृत्तिए वंध पामवानो खप नथी,

अर्थ नथी, जेम आवे तेम स्वरूप रमणीपणे ध्यानयोगे निर्जरता जाय छे ते कारणे इन्द्रि नोइन्द्रि जनित अनुकुल विषय सुखने पण ज्ञानी पुरुषो रोग सरखुं यथास्थित जाणे छे अने सत्यपणे श्रद्धा पूर्वक सदहे छे, केवळ आनंदोपेत सहज सुखनाज सकामी अने मोक्षना अर्थी छे ए सम्यक्ज्ञान अने सम्यक्दर्शननु लक्षण छे ते कह्युं (२१)

जिणे आत्मा शुद्धताये पीछाण्यो,
तिणे लोक अलोकनो भाव जाण्यो ॥
आतम रमणी मुणी जगवदीता,
उपदीश्युं तेणे अध्यात्मगीता ॥ ३ ॥

अर्थः—जेणे कहेता जे पुरुषे आत्मा कहेता पोताना आत्माने शुद्धताए कहेतां उपयोगे स्वपर विभाग वहेंचण करीने उपाधीथी न्यारो करीने अन्तःकरणे ऊंडा उतरीने मनजोगने स्थिर करीने पीछाण्यो कहेता जाण्यो अनुभव्यो छे जेणे, तेणे कहेता ते पुरुषे लोक कहेता चौद राजलोकनो अने अलोक कहेता अनंता राज अलोकनो, वली लोकमा रहेला धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, पुद्गलास्ति अने जीवास्ति ए पचास्तिकायनो भाव कहेता धर्म जाण्यो, एटले धर्मास्तिकायनो चलण सहायता अधर्मास्तिकायनो स्थिर सहायता, आकाशास्तिकायनो अवगाहकता पुद्गलनो मीलण विखरणता अने जीवनो ज्ञायकता वली कालनु स्वरूप तो उपचारे छे तेनो वर्त्तना

एम पट् द्रव्यनो धर्म भिन्न एटले जुदो जुदो जाण्यो, ते शाथी जाण्यो ? तो कहे छे के आत्मरमणी मुणि कहेतां आत्मस्वरूपमां रमण करवावाला मुणि एटले ज्ञानी छे ते केवा छे तो जग कहेतां स्वर्ग मृत्यु अने पाताळ तेमां रहेला पदार्थना वदीता कहेता जाण अने वळी चाला छे एम ठाणांगजी आदि सिद्धाते पण कहेलुं छे

एगं जाणइ, सव्वं जाणइ, एगं न जाणइ, सव्वं न जाणइ.

अर्थः—जेणे एक पोताना आत्माने नयनिक्षेप पक्ष प्रमाणे करीने स्याद्वाद दृष्टिए युक्त सत्ता स्वरूपने ग्रहीने अनुभव्यो जाण्यो छे, तेणे सव्वं जाणइ कहेता ते पुरुषे सर्व जाणी लीधु एटले तेने ज्ञानी कह्यो. अने एक न जाणे सव्वं न जाणइ तेनो अर्थ हवे कहे छे—नरकने जाणे, स्वर्गने जाणे, द्वीप समुद्रने जाणे, यतिनो अने श्रावकनो आचार जाणे, जीवनी गति आगति जाणे, जीवना पाचसोने त्रेसठ भेद अने अजीवना पाचसोने साठ भेद वहेंची जाणे, कर्मनी मूल आठ प्रकृति अने उत्तर एकसो ने अठावन प्रकृतिना भेद करीने गणी वाले इत्यादि जाण थाय तो पण एक पोताना आत्माना स्वभावने जाण्यो नथी, वस्तुगते स्वभावने ओळख्यो नथी, सप्रविभाग वेहेंच्यो नथी, उपयोग गोचर आत्माने कर्यो नथी त्यां सुधी ते जीवने अजाण अज्ञानी कहीए, वळी अनाभोग मिथ्यात्व कहीए, माटे ज्ञानीपणुं तो एक पोताना आत्माने जाणी तेमां रमण करे छे जे मुनि तेनुं छे, उपदीश्यु तेणे

अध्यात्मगीता कहेता अध्यात्म एटले अद्भुतोत्र ज्ञान जे पुद्गलिक भावथी रहित तादृश्य आत्मिक ज्ञान वस्तुना मूल स्वरूपने ग्रहण करवु, ते ज्ञान अध्यात्म एटले आत्मा अनात्माना गुण पर्यायनुं जाणपणुं करवु, अनात्म ज्ञानने हेय जाणीने तजवु अने आत्मज्ञानने उपादेय जाणीने ग्रहवु उपदीश्यु तेणे एटले एम आत्म स्वरूपना यथास्थित जाण पुरुषोए गीता एटले अध्यात्म सार, ज्ञानसार आदि अनेक ग्रंथोमा वली आचारांगादि सिद्धांतोमा उपदेश कर्यो छे ते वली अध्यात्म गीताना कर्त्ता देवचंद्रजी कहे छे के हुं मारी मति कल्पनाये कहेतो नथी (३) माटे हे आत्मार्थी भाइओ तमे आत्माने जाणवानो खप करो तेथी समकितादि गुणस्थानकने पामशो वली समयसार नाटक ग्रंथे पण सवरद्वारे कह्यु छे

सवैया तेविसा.

"जो कबहूं यह जीव पदारथ,
औसर पाइ मिथ्यात मिटावे,
सम्यक धार प्रवाह वहे गुन,
ज्ञान उदै मुख उरध ध्यावे,
तो अभि अतर दर्वित भावित,
कर्म किलेश प्रवेश न पावे,
आतम साधि अध्यातमके पथ
पूरण है परब्रह्म कहावे ॥ १६ए ॥

अर्थ —जा कबहु यह जीव पदारथ कहेतां जो कोइ भव्य जीव छे ते, औसर पाइ कहेता काललब्ध पामीने यथा प्रवृत्ति करणे कर्म स्थीति घटाडी अपूर्व करणे अपूर्व वीर्य फोरवी मिथ्यात कहेतां मिथ्यात्व ग्रंथि भेद करीने आत्म प्रदेशे रहेलां मिथ्यात्व मोहनीनां एटले दर्शन मोहनीना अने वली अनंतानुबंधि कषायनी चोकडी ते चारित्र मोहनीना कार्मणदल पुद्गल तेने मीटावे कहेतां निर्जरे, त्या सम्यक् धार कहेता शुद्ध सम्यक्त्व पागे. प्रवाह वहे गुन केहेता, त्यांथी गुन एटले स्वरूपज्ञान जलधारानो अनुभवप्रवाह वहेवा लाग्यो, अन ज्ञान उदे कहेतां अंतःकरणे अनुभव भवने ज्ञानभान सूर्य उदय थयो अने तिमिराधकार विलय पाम्यो त्या पोतानो चेतन चिद्रूप छे, ते उपयोगे निहाळ्यो, दृष्टि प्रत्यक्ष कीधो त्यां मुग्य उरध कहेता उत्तरोत्तर चढती स्थितिये आत्माना मूळ स्वरूपनुं स्वभाव पर्यायनुं ध्यावे कहेता ध्यान करे छे तो कहेतां त्या, अभ्यंतर कहेता आत्माना प्रदेशे प्रदेशे पूर्व द्रव्य अनभां अनता दुरित कहेता ज्ञानावरणादि, अन वाहिर कहेतां रागद्वेष, धर्म कहेता एम उभयभाव थे नहे, कर्म अने उदयागत क्लेश कहेता परानव प्रवेश न पाव [illegible] ज्ञान ध्यानमां प्रवेश न करी शके परंतु [illegible] उभयभाव कर्म उपाधि [illegible] करी ते [illegible] खाय छे आतम साधि केहेतां एम शुद्ध [illegible] समाधिए साधि [illegible] केहेतां [illegible]

पुद्गलिक भावरहित एकताद्रूप आत्मिक भाव ते अध्यातम शैलीनो पंथ पूरण है कहेता परिपूर्ण निर्वहता थका वीतराग परिणतिनी पूर्णता पामे, वळी क्षायक लब्धिनी पूर्णता पण पामे, परब्रह्म कहावे कहेता ते पुरुष परब्रह्म कहेवाय, अरहंत कहेवाय (१६९) एम साधननी पूर्णता अंतर्वृत्तिये ज्ञान जोगे कही वळी एज ग्रंथे सप्तमनिर्जराद्वारे कह्युं छे के

सवैया तेइसा

ज्ञान उदै जीनके घट अंतर,
ज्योति जगी मति होति न मैली ॥
बाहीज दृष्टि मिटी तिन्हके हिये,
आतम ध्यान कला विधि फैली ॥
जे जन चेतन भिन्न लखै,
सुविवेक लिये परखे गुन थैली ॥
ते जगमें परमारथ जानि,
गहै रुचिमानि अध्यातम सैली ॥ २०२ ॥

अर्थ.—ज्ञानउदै जीनके घटअंतर के० जेना घटांतरने विषे ज्ञानउदै केहेतां ज्ञानभाव उदय पाम्यो, त्या विवेक आव्यो निज परनुं भान थयु, पोतानु अतींद्रिय अरूपी रूप भास्यु, अंतर्वृत्तिये लोचनवत चक्षुवत थयो, त्या सहज वीर्यनी स्फुर्णा पाम्यो ते जोगे करणवीर्य स्फुर्णानो अभाव थयो मन वचन अने कायाना त्रण जोग स्थभि गया एटले स्थिर थया, त्या ज्योति जगी केहेता नोकर्म उपाधि

संयोग वादलाना अभावे ज्ञान ज्योति विस्तारे जागृत थइ प्रकाशित थइ ते जोगे अजवालुं वधु थयुं अने घटांतर वृत्तिये व्यापेलो तिमिरांधकार ते विलय पाम्यो मति होती नमैली कहेता मति एटले बुद्धि उज्वल थइ जडता टली अने चेतनता प्रगटी ते हवे फरीने मलिन थाय नहीं बाहिज दृष्टि मिटी तिन्हके हिये केहेता ते पुरुषना हृदय कमलमा कायाने विषे चेतनपणानो भ्रम हतो ते मटी गयो अने बाह्य दृष्टिनो प्रसार गली गयो ते जोगे आतमध्यान कलाविधि फैली कहेतां आतमध्यान एटले आत्माना ज्ञान दर्शनादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय तेनी गवेषण एटले हवे चेतनराय पोतानुं घर संभालवा बेठा, तो पोताना घरमा सत्ताये अनादि सबवे शक्तिभावे अनंती क्षायक ऋद्धि रहेली ते नजरे आवी, रुचिमा आवी एटले ए ऋद्धिमा दृष्टि खुपी, एम ध्यान करवानी [illegible] विधि स्वभावगत फैली एटले विस्तार पामी, जे ज[illegible] भिन्न लखै कहेता जे पुरुषोत्तम एम अनुभवगत [illegible] करी स्पष्ट बोध पामीने जड एटले पुद्गल जे [illegible] अने काया, अने मनना विषय, वचनना विषय [illegible] याना विषय साथे शुभाशुभ सर्वे ते ड[illegible] अहंममत्वपणुं, लोभनी आशा अने विषय[illegible] मोहनी घेलछाए विकलपणुं, स्वस्वरुपथी [illegible] वापणुं, अरुचिपणुं, तेनो कर्त्ता मोहनी [illegible] रारुप ठाक ते भाव उपाधि एम ड[illegible]

ते जरू एटले द्रव्य उपाधिमा प्रथमनी सात वर्गणा समाय छे अने भाव उपाधिमा आठमी कार्मण वर्गणानो समावेश थाय छे एटले द्रव्यभाव उपाधि तेज पुदगल अने अतर्गत व्यापकपणे पोते पोतामा परिणमीने रहेलो, साक्षात् परमात्मा सरखो, सिद्धनो साधर्मी, मोक्षमयी, मोक्षमा रहेवावालो निरजन, निराकार निर्लिप्त, निरावर्ण, तेज चेतन एम भिन्न लखे कहेता जुदो जुदो जाणवामा अनुभववामा आवे सुविवेक कहेता तेनुज नाम भलो विवेक कहीए ते विवेके करीने, लिये परखे गुनथैली के० रत्नत्रयादि अनंता गुण पर्यायनो पूज शुद्धात्म द्रव्य तेज गुण थैलो अने परखे एटले उपयोग दृष्टिए जोइ निहाली परखोने लिये एटले ग्रहण करे ते जगतमा कहेता स्वर्ग मृत्यु अने पातालमा परमारथ जानि कहेता तेने उत्कृष्टो अर्थ जाणवो एम चेतन भावनुं पामवु थाय एथी अधीक बीजो हित अर्थ कोइ पण जगतमा नथी, ते कारणे शुद्धात्म स्वरूपने पामता चेतन परिपूर्ण अर्थ पाम्यो, एम कहीए, गहे रुचि मानी केहेता ए परिपूर्ण अर्थ जे शुद्धात्म स्वरूप ते रुचि मानि एटले रुचिमा लावीने गहे एटले प्रमोदित थइने आनदित थइने ग्रहण करे अध्यात्म शैली के० तेनुंज नाम अध्यात्म शैली छे ॥ २०२ ॥ ते गवेखीने कहो परंतु अध्यात्म शैलीमा चेतन केम आवतो नथी, अध्यात्म शैलीने पामतो नथी, तेनुं कारण शु छे ? तो चेतन अनादि सबधे बहु सयन दशाने ग्रहण करी रह्यो छे, तेने छोमतो

नथी अने जागृत दशामा आवतो नथी, तेथी अध्यात्म शैलीने पाम्यो नहि एटले बहु शयन आदि चेतननी चार दशाउ ठे. कह्युं ठे—यशोविजयजी उपाध्याये साडा त्रणसो गाथाना श्री सीमंधर स्वामीना स्तवननो सोलमो ढाल.

चार ठे चेतनानी दशा अवितथा,
बहु शयन शयन जागरण चोथी तथा ॥
मिश्र अविरत सुयत तेरमें तेहनी,
आदि गुणठाण नय चक्रमांहे मुणी ॥ २ ॥

अर्थः—चार ठे चेतनानी दशा अवितथा के० चेतना शब्दे आत्मानी अवितथा केहेतां यथास्थित साची चार दशाउ ठे, एटले बहु शयन दशा अनादि संबंधे ठे. अने शयनदशा पडता जावे, एम ए बेहु प्रथम गुणठाणे बहिरातम जावे ठे, अने त्रीजी जागृत दशा ग्रंथि भेद पूर्वक चोथा गुणठाणेथी ते सातमा गुणठाणा सुधी कहीए, यावत् उपशम श्रेणिनी अपेक्षाये अगियारमा गुणठाणा सुधी पण जागृत दशा कहीए अने चोथा समकित गुणठाणाथी अगीआरमा उपशांत मोह गुणठाणा सुधी जे चढेला, तेमने क्षायक समकितनी प्राप्ती न होय तो तेना अभावे पडवानो संभव उपशम क्षयोपशम भावनी हानि योगे ठे. ते कारण पडता पडता मिथ्यात्व गुणठाणे आवे तो त्यां घणो काल पण रहे, माटे जागृत दशानो अभाव थाय अने शयन दशानी प्राप्ति थाय ए बीजो शयन दशा

पमना ज्ञाननी अपेक्षाये मिथ्यात्व गुणठाणे कही अने चो-
थी बहु जाग्रत दशा क्षपक श्रेणी मांडे त्यांथी एटले अप्र-
मत्तादि आठमा गुणठाणाथी तेरमा चौदमा गुणठाणा
पर्यंत यावत् सिद्ध पर्यंत बहु जाग्रत दशा संभवे, एटले
बहु शयन दशा अभवी जीवने अनादि अनंत भागे अने
भवी जीवने अनादि सांत भागे कारण के भवी जीव
काल लब्धि पामी यथाप्रवृत्ति आदि करण करी समकित
पामे, त्यां बहुशयन दशा अनादि सबंधे सत्तापणे हती
तेनो अभाव थाय नाश थाय, ते कारणे भवीने अनादि
सांत भांगो ठावे अने अभवी जीव त्रण कालमां पण स
मकित पामे नहीं, माटे सदाकाल बहुशयन दशा संभवे,
ते कारणे अनादि अनंत भांगो अभवीने कह्यो अने बीजी
शयनदशा तथा त्रीजी जागृत दशा ए बे दशा तो सादि
सांत भांगे छे एटले ए बे दशानी आदि पण छे अने अंत
पण थाय, अने चोथी बहु जाग्रत दशानी आदितो छे पण
अंत न आवे माटे सादि अनंत भांगो लागे एम विशेष
अपेक्षाये चार दशा चेतननी करी, परंतु सामान्य अपेक्षाये
बेज दशा चेतननी छे बहुशयन दशानो एक शयन दशामां
समावेश करीए, अने बहु जाग्रत दशानो एक जाग्रत दशा-
मां समावेश करीए तो एक शयनदशा अने बीजी जाग्रत
दशा एम बेज कहेवाय, तेमां प्रथम शयन दशानुं वर्णन
समयसार नाटक ग्रंथना सातमा निर्जरा द्वारथी कहे छे

सवैया एकत्तीसा.

काया चित्र सारीमै करम परयंक भारी
मायाको सवारी सेज चादर कलपना
सैन करै चेतन अचेतनता नींद लीए,
मोहकी मरोर यहै लोचनको ढपना
उदै बलजोर यहै श्वासको सबद घोर,
विषै सुख कारजकी दौर यहै सुपना
ऐसी मूढ दशामै मगन रहै तिहूकाल,
ध्यावै भ्रम जालमै न पावै रूप अपना ॥ १०० ॥

अर्थः—काया चित्र सारी मै कहेतां विषयभोग रमणिक मनुष्य तिर्यंच गतिये उदारिक काया अने देवगति नरकगतिये वैक्रिय काया तद्रूप मेहेलातोमां कर्म कहेता महा मोहनी कर्म प्रकृति स्त्री आदी वेद, तद्रूप परयक कहेता ढोलीउ, भारी कहेता करण वीर्यनी अति शक्तिये पण देवताउ मनुष्यो अने तिर्यंचो न खसावी शके तेवो अनादि संबधे परंपराये ढाली मुक्यो छे ते ढोलीआ उपर मायाकी केहेता शुभाशुभ कपट क्रियानो, सवारी केहेता सरागतानी सेज सथारी पाथरी छे, चादर कलपना कहेतां ते शुभाशुभ क्रिया करणीने विषे मनना अथिरपणाने लीधे विकल्पनी आहट्ट दोहट्ट श्रेणि तद्रूप चादर बीछावी छे, सैयन करे चेतन कहेता एवी सामग्रीमा चेतन शयन करी रह्यो छे. अचेतनता नींद लीए केहेता त्या पोतानुं शुद्धात्म

स्वरूप जूलाने अने चुकीने अचेतनता एटले जकतारूप इंद्रियद्वारे विषयक्तपणे नींद लीए केहेता निद्रा लेता मोहकी मरोर एटले मोहरूप मदिरानो घेनगाए, यहे लोचनको ढपना के० बाह्य अभ्यतर चक्षुयुगल तेथी मींचाइ गया, ढकाइ गया उदै बलजोर के० ए पूर्वकृत कर्मबधनो उदय प्राप्त थयो, ते जोर एटले अति बलवान सचेतन जायने हणनार छे, यहे श्वासको शबदघोर के० ए निद्रागत श्वासो श्वासनो घोर शब्द चालता हता विषे के० पाच इंद्रिना विषयजोग ते विषयजोगने जोगवे ते सुख एटले तेने अज्ञान जावे सुख माने, अने कारज एटले जीवनुं कार्य समजे की एटले एम,दोर एटले अनादि योगनो गवेषणा परिपाटी चाले छे यहे सुपना के० तेज स्वप्नावस्था छे ऐसी के० ए उपर कही तेवी मूढ दशामा के० विकल दशामा मूरख थइने, मगन रहे के० आनद माने प्रमोदित थाय तिहुकाल के० अतीत काल ते गयो काल, अनागत काल ते आवतो काल अने वर्त्तमान काल ते चालतो समय, एम त्रणे काले मिथ्यात्व वशे चेतन पोतानुं स्वस्वरूप जूलीने, ध्यावै भ्रम-जालमे के० कायादि पर सयोगने विषे चेतनपणानो भ्रम मानीने समये समये सात आठ कर्मनी वर्गणाना अनता कार्मणदल विषम जावे ठोमी आश्रव रूप ग्रहीने एकता-पणे आत्मप्रदेश साथे बाधतो बाधतो अनादि संबधे चा ल्यो आवे छे तेथी आत्मसत्ता कर्मवर्गणाए करीने दबाइ गइ छे ते कारणे न पातो रूप अपना के० चेतन पोतानुं

मूल शुद्धात्म स्वरूप पामी शकतो नथी, एनुंज नाम शयनदशा छे. ॥ १९० ॥

हवे बीजी जागृत दशानुं कथन करे छे

सवैया एकतीसा

चित्रसारी न्यारी परयंक न्यारो सेज न्यारी,
चादर भी न्यारी इहां जूठी मेरी थपना ॥
अतित अवस्था सैन निद्रा वहीको उपनै,
विद्यमान पलक न यामै अव छपना ॥
श्वास औ सुपन दोउ निद्राथी अलग बूझै,
सूझै सब अंग लखी आतम दरपना ॥
त्यागी भयो चेतन अचेतनता भाव त्यागो,
भाले दृष्टि खोली के सभाले रूप अपना ॥ १९१ ॥

अर्थः—चित्रसारी न्यारी के० आत्मज्ञान पाम्या थकी न्यारी एटले कायागत पाच इंद्रिउं अने मनादि त्रण योग ते थकी जूदी घटांतर वृत्तिये चित्रसारी एटले आत्माने स्वस्वरूप रमण करवानो रमणिक उद्योतमय प्रकाशित, प्रस्थूल महामोटी, खुल्ले आकाश वली उपद्रवे करीने रहित, आधि व्याधिये करीने रहित, केवल शिवरूप आनंदोपेत, सुखदायक अनुभव भुवननामे महेलात छे, तेमा परयंक न्यारो के० शयनदशामा कह्यो ते थकी जूदो एटले बाह्य भावे मोहराजानी राजधानी छे, अने अंतर भावे चारित्रराजानी राजधानी छे, माटे परयंक एटले चेतनरायने

बेसवा योग्य समजावरूप जद्रासन मान्यु ठे. सेज न्यारी एटले अपूर्व सरलजाव शुद्धोपयोग तद्रूप सेज सवारी ठे, चादर जी न्यारी के० तेना उपर निर्विकल्परूप चादर एटले अजेद जाव ग्राहक तो चादर बीठावो ठे इहां के० पूर्वे शयनदशामा गवेसी तीहां जूठी मेरी थपना के० में अंतर्गत ज्ञानना अजावे मोहितपणे ममत्वे करीने मारापणे मानी लीधेली थापना ते जुठी एटले असत्य ठे, अने उपर ज्ञानदृष्टिए अंतर्गत चेतनजावे चेतननी स्थापना गवेखी, ते यथास्थित सत्य ठे अतीत अवस्था सैननिद्रावही को जपने के० गया काळनी अवस्थाने विषे शयनदशामा निद्रा लेनार पण कोइ बीजा रूपे हुज तु, विद्यमान के० वर्त्तमान कालमा ते अवस्था मारी नथी पलक के० एक पलक मात्र पण न यामे अब ठपना के० शयनदशामा ठुपीने एटले ढंकाइने हवे हु रहु नहीं सदा सर्वदा जाग्रत दशामा उपयोगिक जावे वर्त्तिश श्वास औ सुपन दोउ निद्राथी अलग बुजे केहता पोताना चेतनने शिखामण आपे ठे के हे चेतन तु हवे श्वासोश्वास अने सुपन ए बे निद्राथी अलग एटले ठेटे थइने अलगो थइने उपयोगजावे बुज. एटले आत्मबोधनी वृद्धिकर तेथी करी तने सूजै सब अंग लखो आतमदरपना के० आत्मज्ञानरूप आरिसामा आत्मानुं सर्व अंग एटले अखंड, अविनाशी, निरंजन, निराकार, निराबाध सिद्ध निष्पन्न एवु स्वरूप ठे ते सूजै एटले अनुजववारूप जाणवा, देखवा, सद्दहवामा आवे त्यागी जयो चेतन अचेत-

नता नाव त्यागी के० एवी रीते अचेनता रूप निद्रानो त्याग करीने चेतन त्यागी थयो, एटले अनादि संबंधे निद्रा साथे रागीपणे परिणाम पाम्यो हतो तेनो अंत आव्यो. तिहा नाले दृष्टि खोली के संनाले रूप अपना के० विशुद्ध नेदज्ञान ज्योतिये अंतर चक्षु विस्तारीने देखे तो आत्म सत्ताथी अनात्म सत्ता जूदीज नजरे आवे छे, त्यारे अनात्म सत्ताने चेतन हेय जाणीने निवर्त्ते एटले तजे, अने पोतानी आत्मसत्ता जे शुद्धात्म स्वरूप उपयोगिक नाव तेने उपादेय जाणीने संनाले एटले अनुनवे तेनुज नाम जाग्रत दशा छे, ॥ १९१ ॥ अहीं चेतन निर्नय दशाने पामे अने सात नयनो नाश करे ते नावने हवे अनुक्रमे गवेखे छे, समयसार नाटक ग्रंथना निर्जरा द्वारथी प्रथम आ नवनुं नय निवारण कथन कहे छे,

छप्पय छंद.

नख शिखमित परवान, ग्यान अवगाहन निरखत ॥
आतमअंग अनंग, संग परधन इम अख्यत ॥
छिन नंगुर संसार, विनव परिवार नार इसु ॥
जहा उतपति तिहां प्रलय, जसु संयोग विरह तसु ॥
परिग्रह प्रपंच परगट परखी इह नव नय उपजै न चित॥
ग्यानी निशंक निकलंकनिज,ग्यानरूप निरखंत नित्य॥२२६॥

अर्थ—नखशिखमित परवान के० पगना नखथी ते माथानी शिखा सुधी एटले शरीर प्रमाण क्षेत्रमा चौगति संसार वासी जीव अनादि संवधे पुद्गल मिश्रित लोली

जूत एकमेक व्यवहारना न्याये शयनदशाए कर्म सबंधे चाल्यो आवे छे ते कर्मना बे भेद एक घाति अने बीजो अघाति घाति कर्मना ज्ञानावरणादि चार भेद ते कर्मनो क्षयोपशम थवाथी जीव गति आदि भेदे ऊंचो आवे छे. वली काल लब्धियोगे अने क्षयोपशम वृद्धि पामवाथी घटांतर वृत्तिये ज्ञान ज्योति जगमगे छे, प्रकाश करे छे तेनुं नाम जाग्रत दशा छे, ते जाग्रत दशामा व्यवहार दृष्टि टली गइ कायाने विषे जीवपणानो भ्रम हतो ते भाग्यो, निजपर बुद्धि प्रगट थइ, काया प्रमाण क्षेत्रमा आत्माने सामान्य विशेष उपयोग लक्षणे व्याप्ति केहेता व्यापेलो परिणमेलो कायाथी जूदो जुए छे तो आतम अंग कहेता आत्माना असंख्यात प्रदेश, अने प्रदेशे प्रदेशे अनतु ज्ञान तथा अनंतु दर्शन, तद्रूप अंग एटले चिन्ह मूर्त्ति तेनो अभग केहेता निश्चयनयनी दृष्टिये त्रण कालमा भग न थाय, अविनाशी छे माटे सदा स्थिर भावे रहे. सग कहेतां तेना सगे जे पुद्‌गल छे तेने परधन कहेता मोहरायनी राज्यधानी ज्ञानीओ कहे छे. एम असत्यपणानो अनादि सयोग छे तेज छिन भंगुर संसार केहेता चोगति संसार क्षणभंगुर एटले विनाशी, अने तेने विषे विभव केहेता धन्यादि, अने परिवार केहेता कुटुंबादि ते, भारइसु केहेता तेने एकांते पोतानु मानवु, रखोपु करवु ते कर्मबध हेतु छे, ते कारणे जीवने माथे भार कह्यो ए वस्तु सयोगिक भावे प्राप्त थइ ते ससार व्यवहारमा स्वामित्व सबंधे पो-

तानो कहेवाय, पण वस्तुगते जीवने पर छे तेने हित अर्थे त्रिकरण जोगे वोसरावता जीवना माथेथी भार उतरे एम जाणवुं ज्या उत्पत्ति तीहा प्रलय कहेता आ संसारमा जेनी उत्पत्ति एटले प्रगटता छे, तेनो प्रलय कहेता विनाश छे वली, जासु सयोग विरह तसु के० जेनो संयोग तेनो वियोग पण थाय, एटले संयोगिक भाव सदाकाल रहे नहीं. परिग्रह के० एवो नव प्रकारना परिग्रहनो, प्रपच कहेता अथिर स्वभाव संध्याना रग समान प्रगट पेखी के० प्रगटपणे दृष्टि करीने जोइए तो आ भवनुं भय चित्तमा उपजे नही. ए रीते समजीने जे ज्ञानी होय ते परिग्रहना वियोगनो चिता न राखे, निवारे, अने नि शंक केहेता शंका संदेह रहित निर्भयपणे, नि.कलंकनिज कहेता पोताना आत्मानुं द्रव्यास्तिक नयपक्षे निरावरण निर्लिप्त एवु ज्ञान स्वरूप कहेता उद्योतमय प्रकाशित तेने निरखत नित्य के० सदा सर्वदा बाह्य दृष्टि टाली अतर दृष्टि करी अनुभव चक्षुए निरखे, ए आ भवना भयनु निवारण कथन कर्युं

हवे बीजो परलोक भय निवारण कथन करे छे

छप्पय छंद

ज्ञान चक्र मम लोक, जासु अवलोक मोख्य सुख,
इतर लोक मम नाहि, नाहि जीस माहि दोष दू.ख,
पुन्य सुगति दातार, पाप दूरगति पद दायक,
दोउ खंडित खानिमै, अखंडित है शिव नायक;

इहि विधि विचार परलोक भय नहि व्यापी वरते सुचित;
ज्ञानी निसंक निकलंक निज ज्ञान रूप निरखंत नित ॥२२३॥

अर्थ —ज्ञान चक्र कहेता अनंतु ज्ञान, अनंतु दर्शन, अनंतु चारित्र अने अनतु वीर्य आदि अनंता गुण, वली अव्याबाधादि अनता पर्याय शक्ति भावे तिरोभावि पणे आत्माना विषे प्रदेश प्रदेश प्रत्ये अनंता अनंता रह्या छे, त्यांज मारो रहेवास छे ते मम लोक के० पोताना लोकमा जासु के० एम चेतनरायने पोतानो लोक जणाव्यो. आत्मसत्ताए अनंत चतुष्टयी आदि अनंती क्षायकऋद्धि अनादि सबधे रहेली तेनुं अवलोक के०अतर्गत घटातर धृतिए तद्गत व्यापकपणे परिणाम पामी स्वरूपे उपयोग जोडी अनुभव ज्ञान चक्षुए दृष्टि प्रत्यक्ष निहाली रमण करी अनुभवी, आस्वादी निज ऋद्धिएज तृप्ति पामीए, त्या मोख सुख के० मोक्षना अव्याबाध अतींद्रिय सुखनो विभोगी चेतन थाय, एटले भोगवे, ए चेतनरायने पोतानो लोक गवेषीने कह्यो इतर लोक के० हवे ए कह्यो तेथी अन्य बीजो परलोक जे ससारगति ते मारो लोक नथी, मारो ज्ञान लोक मारी साथे छे नाहि जीसमाहि दोष दु:ख के० मारा ज्ञानलोकमा दोष एटले दूषण नथी, वली दु:ख कहेता अशाता नथी पुन्य सुगति दातार के० परलोकमा सुगति एटले मनुष्यगति अने देवगतिनु दातार एटले देवावालुं ते पुन्य छे पाप दुर्गति पददायक के० दुर्गति जे नरकगति अने तिर्यंचगति तेनुं दायक एटले देवा-

वालुं ते पाप छे. एम दोन कहेता पुन्य अने पाप ए बेथी प्रगट थयो जे चउगति ससार ते खंमित खानिभे के० मोहरायनी राजधानीमा अनादि सबंधे रहेता पण, अखंमित हे के० संग्रहनयनुं ज्ञान करीने जोइए तो आत्मानुं अखम्न अविनाशीपणुं त्रिकाल वृत्तिये न्नासे छे. वली शिव के० उपाधिए करीने शक्तिन्नावे रहित अने नायक के० ध्यान करवाने, स्मरण करवाने, चिंतवन करवाने योग्य साक्त तू परमात्मा परमपूज्य ते पोतानो आत्मा छे इहि विधि विचार के० उपर गवेषी एम जाणता अविधि टालीने अने विधिए चेतन विन्नाग विचारीने परलोक न्नय के० आवता न्नवे डुर्गति पामवानुं वली डु:ख न्नोगववानुं, न्नय नहि व्यापी के० हृदयकमलमां अशाता वेदवा रूप नहि व्यापे, वरतै सुधित के० त्या सदा शुद्ध स्वरूप थको वर्ते. एम ज्ञानी के० आत्मज्ञानी पुरुषोत्तम, परलोक न्नय छेदोने, निःशंक निकलंक के० अशंकितपणे कर्म कलक रहित एवो निज के० पोतानो आत्मा, ज्ञानरूप के० लोकालोकनो ज्ञाता तेने निरखंत नित के० सदा नीरखे ॥ २२१ ॥

ए परन्नवना न्नयनुं निवारण कथन कर्युं हवे त्रीजो मरण न्नय निवारण कथन कहे छे.

छप्पय छंद.

फरस जीन्न नासिका, नयन अरु श्रवण अक्ष इति ॥
मन वच तन वल तीन, सास उसास आउ थिति ॥

[illegible] नाहि जग मरण कहीजे ॥
[illegible] जीव तीहु काल न छीजे ॥
[illegible] नहि मरण जय, नय प्रमाण जिनवर कथित ॥
ज्ञानी निशंक निकलक निज, ज्ञानरूप निरखत नित ॥२२०॥

अर्थ —फरसनी ज्ञातातें फरसइंद्रि, रसनी ज्ञाता ते जीभइंद्रि, गंधनी ज्ञाता ते नासिका इंद्रि अने वर्णनो वली संस्थानन्नो ज्ञाता ते नयन एटले चक्षुइंद्रि अने शब्द जे सुस्वर दुःस्वर अथवा सचित अचित अने मिश्र तेनो ज्ञाता ते श्रवण इंद्रि, ए पांच इंद्रि तथा मन बल, वचन बल अने कायबल ए त्रण बल, श्वासोश्वास अने आयु स्थिति ए दश द्रव्य प्राण जीवना कहेवाय छे, तेनो विनाश एटले हानि थाय, नाश थाय, ताहो के० त्यां जग के० स्वर्ग मृत्यु अने पाताल ए त्रण जगतने विषे, मरण कहीजे के० मरण कहेवाय छे, तथापि ज्ञान प्राण संयुक्त के० जीव पदार्थ ज्ञान चेतना [illegible] प्राण संयुक्त तिहु काल न छीजे के० जीवना ज्ञान प्राण अतीत अनागत अने वर्त्तमान [illegible] कालमां [illegible] नहीं, यह के० एवो, चित्त के० उपयोगे [illegible] चिंतवन करवाथी, नहीं मरण जय के० मरणनो दुःख [illegible] नहीं, एम नय प्रमाण जिनवर कथित के० नय [illegible] लोकमां [illegible] नयवाद अने प्रमाण एटले आगम प्रमाणे एटले देव [illegible] लोकाने विषे, वर एटले अष्ट प्राति- [illegible] गति जे नर [illegible] निकलवा माटे अग्रेसर जे तीर्थंकर [illegible] प्ररुप्यु छे, ते वच-

ननी श्रद्धाये ज्ञानी पुरुषो निःशंकपणे जीवने अजरामर कहेछे,एटले अजर के० घरूपण न पहोंचे वली अमर के०मरे नहीं वळी मरे नहीं तो जन्मेज शेनो? ते कारणे बाल तरुण अने वृद्ध ए त्रण अवस्थाए रहितपणे स्वभाव पर्यायनी अपेक्षा ए जीव छे, अने कर्म पर्याय जे कर्मे करीने उत्पन्न थया एवा नरनरकादि गति पर्याय तेनी अपेक्षाए बाल तरुण अने वृद्ध ए त्रण अवस्थाए रहित छे ते कारणे मरे तो कर्मथकी प्राप्त थया जे, उपर जीवना दश द्रव्य प्राण गवेष्या ते मरे पण स्वभाव पर्यायमय चेतन भाव प्राण धारी ते कदापि न मरे जेने अनादि अनंत भागो लागे छे, ते कारण माटे अविनाशी छे निकलंक निज के० जन्म मरणरूप कलंके करीने रहित निज एटले ज्ञानी आत्मा, ज्ञानरूप एटले उपाधिनो क्षय कारक ज्ञान छे, माटे पुरण समाधिमय अरूपी चेतनने, निरखंत नित कहेता सदा निरखे ॥ १२८ ॥ ए मरण भय निवारण कथन कर्युं हवे चोथो वेदना भय निवारण कथन कहे छे.

छप्पय छंद.

वेदनवारौ जीव जांहि वेदंत सो उजिय ॥
यह वेदना अभंग सुतौमग अंग नाहिविय ॥
कर्म वेदना द्विविध एक सुखमय दुतिय दुख ॥
दोउ मोहविकार पुद्गलाकार बाहिरमुख ॥
जब यह विवेक मनमहि धरत तवन वेदना भय विदित ॥
ग्यानी निशंक निकलंक निज ग्यानरुप निरखंत नित ॥१२९॥

ए दस प्राण विनाश, ताहि जग मरण कहीजे ॥
ग्यान प्राण सयुक्त, जीव तीहु काल न छीजे ॥
यहचिंत करत नहि मरण भय, नय प्रमाण जिनवर कथित ॥
ज्ञानी निशंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखत नित ॥१२७॥

अर्थ —फरसनो ज्ञाताते फरसइंद्रि, रसनो ज्ञाता ते जीव्हाइंद्रि गंधनो ज्ञाता ते नासिका इंद्रि अने वर्णनो वली संस्थाननो ज्ञाता ते नयन एटले चक्षुइंद्रि अने शब्द जे सुस्वर दुःस्वर अथवा सचित अचित्त अने मिश्र तेनो ज्ञाता ते श्रवण इंद्रि, ए पाच इंद्रि तथा मन बल, वचन बल अने कायबल ए त्रण बल, श्वासोश्वास अने आयु स्थिति ए दस द्रव्य प्राण जीवना कहेवाय छे, तेनो विनाश एटले हानि थाय, नाश थाय, ताही के० त्या जग के० स्वर्ग मृत्यु अने पाताल ए त्रण जगतने विषे, मरण कहीजे के० मरण कहेवाय छे, तथापि ज्ञान प्राण सयुक्त के० जीव पदार्थ ज्ञान चेतना तद्रूपभाव प्राण सयुक्त तिहु काल न छीजे के० जीवना ज्ञान प्राण अतीत अनागत अने वर्त्तमान ए त्रण कालमा तूटे नहीं, यह के० एवो, चित्त के० उपयोगे करत के० चितवन करवाथी, नही मरण भय के० मरणनो भय उपजे नहीं एम नय प्रमाण जिनवर कथित के० नय एटले द्रव्यास्तिक नयपक्षे अने प्रमाण एटले आगम प्रमाणे जिन एटले सामान्य केवलीने विषे, वर एटले अष्ट प्रातिहार्यादि ऋद्धिए पूजनिकपणा माटे अग्रेसर जे तीर्थंकर देव तेमणे कथित एटले सिद्धांतने विषे प्ररुप्युं छे, ते वच-

ननी श्रद्धाये ज्ञानी पुरुषो निःशंकपणे जीवने अजरामर कहेछे,एटले अजर के० घरूपण न पहोचे वली अमर के०मरे नहीं वळी मरे नहीं तो जन्मेज शेनो? ते कारणे बाल तरुण अने वृद्ध ए त्रण अवस्थाए रहितपणे स्वभाव पर्यायनी अपेक्षा ए जीव छे, अने कर्म पर्याय जे कर्मे करीने उत्पन्न थया एवा नरनरकादि गति पर्याय तेनी अपेक्षाए बाल तरुण अने वृद्ध ए त्रण अवस्थाए रहित छे ते कारणे मरे तो कर्मथकी प्राप्त थया जे, उपर जीवना दश द्रव्य प्राण गवेष्या ते मरे पण स्वभाव पर्यायमय चेतन भाव प्राण धारी ते कदापि न मरे जेने अनादि अनंत भागो लागे छे, ते कारण माटे अविनाशी छे निकलंक निज के० जन्म मरणरूप कलंके करीने रहित निज एटले ज्ञानी आत्मा, ज्ञानरूप एटले उपाधिनो क्षय कारक ज्ञान छे, माटे पुरण समाधिमय अरूपी चेतनने, निरखत नित कहेता सदा निरखे॥ ३२८॥ ए मरण भय निवारण कथन कर्युं हवे चोथो वेदना भय निवारण कथन कहे छे.

छप्पय छंद.

वेदनवारो जीव जाहि वेदंत सो उजिय॥
यह वेदना अभंग सुतौमग अंग नाहितिय॥
कर्म वेदना द्विविध एक सुखमय दुतिय दुख॥
दोउ मोहविकार पुद्गलाकार वाहिरमुख॥
जव यह विवेक मनमहि धरत तवन वेदना भय विदित॥
ग्यानी निशक निकलंक निज ग्यानरूप निरखंत नित॥

अर्थ—वेदनवारो एटले जाणनारो तेतो जीव छे, एटले जीवनो सामान्य विशेष उपयोग गुण छे, ते जाहि कहेता आत्माना सहज स्वरूप गत त्याहि उपयोग भावे परिणामोने वेदत के० गुण पर्यायादि ऋद्धिने जाणवा देखवापणे वेदवु एटले अनुभववुं, रमण करवु, आस्वादन करवुं सोऊ के०ते, जीव के०ज्ञानी जीवनु स्वरूप छे यह के०ते ज्ञानी जीवनुं स्याद्वाद स्वरूप एज वेदना के०तद्गत् व्यापकपणे सवेदन एटले गुण-गुणगत स्वभावे पर्याय पर्यायगत स्वभावे वेदवु एटले अनुभववुं ते, अभंग के० तेनो त्रणे कालमा भंग न थाय, कारण के एतो आत्मानो तिरोभावीपणे अनादि स्वभाव छे, ते न टले माटे स्वरूप सवेदनपणुं सदा सभवे, सुतौ के० तेतो मम अग केहेता चेतनरायने मारु पोतानुं अग छे पण, नाहि विय के० भपर कह्युं तेथी बीजु कर्म वेदना जे छे, ते नाहि एटले मारी नथी कर्म वेदना द्विविध के० कर्म एटले पूर्व कृत कर्म द्विविध एटले एक शुभ अने बीजी अशुभ वेदना एटले ते कर्मनी उदिकता योगे साताअसाता विपाके प्राप्त थइ ते वेदना एक सुखमय के० शातावेदनी अने बीजी दुःख एटले अशाता वेदनी दोऊ एटले ए बेहु मोहविकार केहेता मोह मदिरानो विकार एटले छाक, जेना हृदय कमलने विषे व्यापेलो छे तेनु अत करण एटले मनयोग चपल छे अथिर छे त्या पुद्गलाकार एटले चेतन पुद्गल आकारे इन्द्रियगत व्यापकपणे रूपी छे, वली वहिर मुख के० मुख्य वृत्तिए वहिर एटले ए बाह्यभावे परिणमेलो,

व्यापेलो अने विषय कषायनो तो ग्राहक ते सुखमय शाता वेदनीय अने दुःखमय अशाता वेदनीयने वेदे पण, शुद्धात्म स्वरूपनो ग्राहक तद्गतभावे परिणमेलो चेतन स्वस्वरूपने अनुभवे, ते अवसरे परस्वरूपने अनुभवे नहीं, अने अनुभवना अभावे वेदवुं कहेवाय नहीं जब के० जे अवसरे यह के० उपर कह्यो एम विवेक के० भेद ज्ञानजोगे निजपर विभाग व्हेंचणरूपे मनमहिं धरत केहेता मने करीने चिंतवत, एटले जीव पुद्गलना भेद जूदाइ रूपे भिन्न परिणमनपणे करत, ते अवसरे चेतन उपाधि रहितपणा माटे शिवरूप छे वली अनुभव अवसरे अनंत चक्षुवंत छे, तव के० ते अवसरे, न वेदनाभय के० नहीं शाता अशाता द्विविध वेदनानो भय विदित के० वेदवारूपे, ते कारणे ज्ञानी निःशंक के० ज्ञानी पुरुषोत्तम नि शंकपणे, निकलंकनिज के० पोताना आत्माने कर्म कलंकथी रहितपणे, केवल ज्ञानरूप के० ज्योतिरूप, निरखत नित के० सदा निरखे ॥१२०॥ ए वेदना भय निवारण कथन कर्युं हवे पांचमो अनरक्षाभय निवारण कथन कहे छे

छप्पय छंद

जो स्व वस्तु सत्ता सरूप, जगमहिं त्रिकालगत ॥
तासु विनास न होइ, सहज निहचे प्रमाणमत ॥
सो मम आतमदरव, सरवथा नहिं सहाय धर ॥
तिहिं कारन रक्षक न होइ, भक्षक न कोई पर ॥

जब यहि प्रकार निरधार किय, तब अनरक्ता जय नसित ॥
ज्ञानी निशक निकलंक निज, ज्ञान रूप निरखंत नित॥२३०॥

अर्थ —जो के० पोताना चेतनने बाह्य भावमा रह्यो थको ज्ञाता जीव, रक्ता भयने छेदीने निर्भय थको शीखामण आपे छे कहे छे के घटमा एटले अंत.करणमा ज्ञाननावे उपयोग करीने देख स्ववस्तु सत्ता के० वस्तु एटले षट् द्रव्य तेमा काळनुं स्वरूप तो उपचारे मान्युं छे बाकी छता पणे पंचास्तिकाय छे, तेमा धर्मास्तिकाय एक द्रव्य छे, अधर्मास्तिकाय एक द्रव्य छे, आकाशास्तिकाय एक द्रव्य छे पुद्गलास्तिकाय अनंता द्रव्य छे, अने जीवास्तिकाय पण अनता द्रव्य छे, तेमा द्रव्य द्रव्य प्रत्ये स्व एटले पोताने विषे पोतापणानी, ते पोताना गुणनी, पोताना पर्यायनी, अने पोताना प्रदेशनी छती छे, तेनुंज नाम सत्ता छे, ते जगमहि के० स्वर्ग मृत्यु अने पाताळ ए त्रण जगतमां त्रिकाळ गत के० अतित, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणे काळने विषे द्रव्य सत्ता स्वरूपने अस्तिपणे पामीए तास के० ए जीव अजीवादि द्रव्यनी सत्ता स्वरूपनो विनाश, न होइ के० द्रव्य द्रव्य प्रत्ये पोताना गुणपर्यायनो, वली प्रदेशनो कदापि विनाश थाय नहि अहीं कोइ तर्क करशे के तमे प्रदेशनु सदा अवस्थितपणुं सर्व द्रव्यने विषे कहो छो, पण पुद्गलना स्वंध सदा मले विखरे छे, मले छे ते परमाणु प्रदेशनी अधिकताइने पामे अने विखरे ते परमाणु प्रदेशनी न्यूनताने पामे तेनुं केम?

तेनो उत्तर हे नाइ ! तमे० कह्यु के पुद्गलना खंध मले विखरे छे ते वात खरी छे, ए पुद्गलने विषे विनाव पर्याय छे, तेथी मले विखरे छे, ते कारणे सिद्धांतकारे सिद्धांतने विषे द्वी प्रदेशीयो मांमीने अनंत प्रदेशी पर्यंत पुद्गलना खधने उपचलित द्रव्य एम कहीने उपचारे द्रव्य मान्यो छे. वली एक परमाणु प्रदेशने अनुपचलित द्रव्य कह्यो छे एटले मले छे तोपण परमाणु पुद्गल पोतानी जूदाइने लइने रह्यो ते सदा जिन्न छे, अजिन्न वृत्तिए कदापि पुद्गल मले नहीं अने मले नहीं त्या विखरवु होय नहीं, ते कारणे द्रव्यास्तिक नयपक्षे त्रणे काले एक रूपे रहे द्रव्यनी सत्तानु ध्रुवपणुं सदा संजवे एवुं सहज के० द्रव्य द्रव्यगत पोतानुं सहज सत्ता स्वरूप छे निश्चय प्रमाणमत के० एम जिनेश्वर जगवानना दर्शनने विषे निहचैनयनो मत एटले पक्ष आगम प्रमाणे छे, ते कारणे, सोमम आतमदरव के० ज्ञाता जीव चिंतवे छे के मारो आतम द्रव्य अनादि संबंधे चौगति संसार चक्रमा त्रमण करता अनंता पुद्गल परावर्त्तन कर्या, अनंतां डुःख सह्या, तो पण वस्तु गते सिद्ध सरखो सत्तावंत पोते छे, ते कोइनी एटले एक जीवने बीजा जीवनी अथवा शुजाशुज पुद्गलनी सहाय लइने छे. तो कहे छे के, सर्वथा नहि सहायधर के० जीव छे ते सर्वथा प्रकारे बीजानी सहायने धारण करतो नथी, पोताना पराक्रमे अखरु अविनाशीपणे पोतानी सत्ताने लइने रह्यो छे तिहि कारन के० ते कारणे रक्षक न होइ के०

अनादि सर्वने जीवनु रखोपु करनार, पालण करनार कोइ अन्य छे नहि, वली जदक न कोइ पर के० अन्य कोइ जीवनु नदण एटले जीवनो घात करनार, जीवनी अतर्गत क्षायक ऋद्धिने पाछी लेनार जोरावर योद्धो पण छे नहि जव के० जे अवसरे, यहि प्रकार के० उपर गवेष्यो तेवी रीते, निरधार किय के० श्रद्धानासन रमणपूर्वक निश्चय करे, तव के० ते अवसरे अनरक्षानय नसित के० मारु रखोपु कोण करशे हु एकलो छुं एम दीनतापणारूप नय नाग्यो जाय तेन चु रहेवानुं पग मुकवानु स्थानक गतिपर्याय दृष्टिवालाने घरे छे, ते कायाने जीव माने, अने अहींआ तो शुद्ध द्रव्यास्तिक नयपक्षे शुद्धात्म स्वरूपने जीव मान्यो जाय छे, ते कारणे रक्षानय नाग्यो एम ज्ञानी निशंक के० रक्षानयनी शकाए रहित थका, निकलंक निज के० पोते ज्ञानी आत्मा स्वरोधे स्फुरणाए चदिकलानमा अव्यापकपणे वर्त्ते, त्या नि कलंक कहोए ज्ञानरूप केहेता एम केवल ज्ञानरूप क्षायक लब्धिनो पूर्णताने निरखत नित के० ज्ञानी सदा अनुसरे ॥ २३० ॥

ए अनरक्षानय निवारण कथन कर्युं हवे छठो
चोरनय निवारण कथन कहे छे

छप्पय छंद.

परमरूप परतक्ष, जासु लक्षन चिन मंडित ॥
परमवेश तहा नाहि, माहि महि अगम अखंडित ॥

सो ममरूप अनूप अकृत, अनमित अतुट धन ॥
ताहि चोर किम गहै, ठोर नहि लहै और जन ॥
चितवंन एम धरि ध्यान जब, तब अगुप्तनय उपसमित ॥
ग्यानी निशंक निकलंक निज ग्यानरूप निरखंत नित ३३१

अर्थ.—परम के० उत्कृष्ट ते केवलज्ञान केवलदर्शन आदि क्षायकभावनी अनंती ऋद्धिए युक्त निजात्मानुं शुद्ध स्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाणे अनुभविने छे. जासु के० तेनुं, लक्षन के० लक्षण चिन के० ज्ञानने विषे मंडित एटले आलेखीत होय ते स्वरूपनुं भासन रमण ज्ञानीने अनुभव अवसरे थाय. परप्रवेश तहा नाहि के० आत्माना स्वरूपने विषे पर एटले पोताथी अन्य जीवादिनो प्रवेश एटले जवुं आववुं नांहि एटले त्रण कालमां छे नहि माहि महि के० महि एटले कायारूप पृथ्वीना माहि एटले वचमां आत्मानुं प्रकाशित स्वरूप खुल्युं मुच आगल छे तो पण अगम के० बाह्य दृष्टिने एटले मिथ्यादृष्टि बहुल संसारी जीवोने पोताना स्वरूपनो गम नथी एटले तेमने दृष्टियेज आवतुं नथी. अखंडित के० आत्माना असंख्याता प्रदेश छे, प्रदेशे अने प्रदेशे अनती क्षायकऋद्धि जे ज्ञानादिक गुण अने अव्याबाधादि पर्याय ते जेम एक प्रदेशे तेम सर्व प्रदेशे सरखी स्थितिए, क्षायक ऋद्धि रही छे, तादृश्य सिद्ध निष्पन्न स्वभावे आत्मानी सत्ता त्रिकाल वृत्तिए अखंडित छे सो केहेता ते ममरूप एटले मारुं चेतन्यरूप अनुप एटले उपमाए करीने रहित निरुपम छे, वली केवुं छे तो अकृत

एटले कोईनु करेलु नीपजावेलुं कृत्रिम नथी, वली केवुं छे? तो अनमित एटले माप विनानु, प्रमाण विनानुं, अतुट एटले अविनाशी जाववुं धन एटले अंतर लक्ष्मी ते आत्म सत्ताए अनंतु धन छे ताहि केहेता त्यां जइने, चौर किम गहै केहेता चोर केम ग्रही शके, गौर नहीं लहै कं० स त्तानी जूमिने ओर जन एटले पोताना चेतनथी अन्य बीजो नहि लहै के० त्रण कालमा न पामे चितवंत एम धरि ध्यान जब के० एम ध्यानने विषे चितवंत एटले उपयोग जावे चिंत वीने आत्म प्रदेशे गुण पर्यायादि ऋद्धि अचल जावेरहेली तेने ग्रहीने एटले ए ऋद्धिमा व्यापकपणुं- परिणमनपणुं, रमणपणुं, अनुजव वले करीने, जब एटले जे अवसरे चेतन मूल स्वरूपे वर्त्ते, तब के० ते अवसरे अगुप्त जय एटले आत्मऋद्धि गुप्त नथी, आछादित नथी, तालाकुची कब- जामां नथी अनुजव अवसरे प्रत्यक्ष प्रमाणे उपयोग गो- चर खुल्लो छे वली अनुजवना अजावे श्रद्धाने विषे परोक्ष प्रमाण गोचर छे, ते खुल्ला धनने साचववानो जय एटले बीक ते। उपशमी जाय अर्थात्जयनो अजाव थाय, ज्ञानी केहेतां ज्ञानीने, ते कारणे निशक एटले चोरजय शकारहित नि- कलंकनिज के० पोतानो आत्मा जय मोहनी आदि दूप णोए करीने रहितपणा माटे निकलक एवु ज्ञान स्वरूप एटले आत्माने अने अनात्माने जणाववावालु उलखाववा वालु, वली अनात्म जावने हेय जाणीने तजाववावालुं अने आत्म जावने उपादेय जाणी समाधि मानी ग्रहाववावालुं

एवं ज्ञान स्वरूप तेने निरखत नित के० सदा निरखे अने त्यां परमानंद पामे॥२३१॥ए चोरनय निवारण कथन कर्युं. हवे सातमो अकस्मात् नय निवारण कथन कहे छे,

छप्पय छंद.

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, सहजसु समृद्ध सिद्ध सम ॥
अलख अनादि अनंत, अतूल अविचल सरूप मम ॥
चिद विलास परगास, वीत विकलप सुख थानक ॥
जहां डुविधा नहि कोइ, होइ तहा कदू न अचानक ॥
जब यह विचार उपजंत तब, अकस्मात नय नहि उदित ॥
ज्ञानी निशंक निकलंक निज, ज्ञानरूपनिरखत नित ॥२३२॥

अर्थ.—शुद्ध केहेता चेतन केवो छे तो उपाधि रहित अने बुद्ध केहेता ज्ञानी, अविरुद्ध केहेता निज स्वरूप रमणताये अने परस्वरूप अरमणताये वर्ते सहजसु केहेतां एम पोताना स्वभावसु समृद्ध के० ज्ञानादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय, तद्रूप ऋद्धिये करीने समृद्धिवंत, सिद्धिसम के० सिद्धपरमात्मानो बरोबरीउं चेतन छे. वली केवो छे ? तो अलख के० लख्यो जाएयो छद्मस्थथी जाय नहीं, केवली भगवान जाणे. वली केवो छे ? तो अनादि अनंत एटले आदि नथी अने अंत पण नथी, आदि अत रहित छे वली केवो छे ? तो अतुल एटले जेनी तुलना वचनयोगे केवली भगवानथी पण न थाय, एटले आठ वरसनी उमरे केवल पाम्या होय अने

तेमनु क्रोड पूर्वनु आयुष्य होय अने केवल पाम्या त्याथी-ज आत्माना गुण पर्यायनी व्याख्या आयुष्यना छेडा सुधी अखंड वाराए करे, त्यारे अभिलाप्य स्वभाव धर्मनो अनंतमो भाग कहेवामा प्ररूपवामा आवे अधिक न आवे, अने अभिलाप्य स्वभाव धर्मथी, अनभिलाप्य स्वभाव धर्म आत्माने विषे अनंतगणो अधिक छे, ते तो केवली भगवाननें वचन गोचर पण थतो नथी माटे अही शेनी तुलना करीए अथवा माप बांधीए आत्मानु स्वरूप ज्ञानी गम्य छे, एटले ज्ञानीने जाणवामा आवे पण कहेवामा एटले वचनयोगे गवेखवामा न आवे माटे अतुल वली केवो छे ? तो, अविचल एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश छे, अने प्रत्येक प्रदेशे ज्ञानादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय रह्या छे, तेमा एक प्रदेशे रहेला गुण पर्याय चलीने बीजा प्रदेशे न जाय, अने बीजा प्रदेशे रहेला गुण पर्याय चलीने पेहेला प्रदेशमा न आवे, ज्या छे त्याने त्याज सर्व प्रदेशे रहे माटे अविचल कहीए "ते स्वरूप मम" केहेता ए स्वरूप चेतनरायने पोतानुं छे, वली केवो छे ? तो चिद्‌विलास केहेता ज्ञानयोगे अनंती ऋद्धिनो भोग वनार एटले विलासी छे. परगास केहेता स्वपर प्रकाशी चेतन छे, वली केवो छे ? तो, वीत विकल्प केहेता संकल्प विकल्प रहित निरविकल्प समाधिमय चेतन छे वली केवो छे ? तो, सुखस्थान केहेता अव्याबाध सुखनु स्थानक जे सिद्ध, ते समइनयनी अपेक्षाए अनादि सिद्ध छे जहां

कहेता आत्मसत्ताये दुविधा के० द्विधा भाव, अचेतन भाव, नही कोइ होइ के० त्रणे काळे न पामीए, एटले शक्तिभावे आत्माने सदा निरावरण कहीए. तहां के० ते स्थानके, कहु न अचानक के० कोइ पण अणचिंतव्यो अचानक भय शोकादि न उपजे, न आवे जब के० जे अवसरे, अह के० ए प्रकारे, विचार उपजंत के० हृदयकमलमां ज्ञान विवेक विचार ध्यानगत चिंतवत, तब के० ते अवसरे अकस्मात भय, नहिं उदित के० उदय पामतो नथी ते कारणे ज्ञानी, निःशक के० भयशंकारहित निर्भयपका वर्ते. वळी निकलंकनिज के० कर्मकलंक रहित, ज्ञानरूप के० जाणवाने योग्य एवुं आत्मानु स्वरूपछे तेने, निरखंत नित्य के० सदा नीरखे छे, जुए छे नित्य एटले आतरार हित पुन. पुनः स्वरूपगत दृष्टि करी छे जेणे तेमने ज्ञानी कहीए. ज्ञानीने बाह्य दृष्टि करवानुं काइ प्रयोजन नथी परंतु ज्ञानी बाह्य भावमां वर्त्तता जोवामां आवेछे, तेनुं कारण एके उदयिक भावनी अपेक्षाए जोवामा आवे छे, नही तो आवे नही पण वस्तुगते वस्तुपणानो बोध एटले जाणपणु तेनुंज नाम ज्ञान छे, अने वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धा तेनुं नाम समकित छे अने पोताना स्वरूपगत रमणिपणुं अने परस्वरूपमां अरमणिपणुं तेनु नाम चारित्रछे, वळी पोताना गुणपर्यायगत एटले गुणगुणनो स्वभाव जुदो जुदो छे वळी पर्याय पर्यायनो स्वभाव पण जुदो जुदो छे एटले अनंता

श्री जैन तीर्थ निर्णय ग्रंथनुं

शुद्धिपत्रक

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१	१४	दवाइ	दवाइ
२	१८	तेहेन	तेहने
,,	१७	ग्रीवंके	ग्रैवेयके
३	१०	भेववीअ	भवेवीअ
,	१३	परावर्तननी	परावर्त्तनी
४	२	ग्रथीभेदथयो	ग्रथिभेदथये
,,	१३	पराय	प्राये
,,	१४	करता	कर्त्ता
५	१७	इहानो	इहाना
७	२	भीन्न भीन्न अपेक्षा	भिन्न भिन्न अपेक्षा
७	६	वचननी	वचन
,,	६	अपेक्षाने	अपेक्षा न
८	४	एटल	एटले
,,	८	सम्यक् सं-वेगेज्ञान	सम्यक् ज्ञान
,,	८	सम्यक स-वेगे दर्शन	सम्यक् दर्शन
,,	९	हतु थाय	हेतु थाय
,,	१०	हतु छे	हेतु छे
८	१३	तमा	तेमा
,,	२२	बीनु	बीजु
९	९	द्रष्टीने	दृष्टिने

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१७	एवरत	ऐरव्रत
१०	६	तीरथ	तीर्थ
,,	२०	सक्षेप	सक्षेपे
११	७	अनानुगा-मीक	अननुगामिक
११	१२	वर्धी	वृद्धि
११	१४	,,	,,
११	२०	महुर्त्तेज	मुहूर्त्तेज
१२	८	अवधी	अवधि
१२	२	महुरतमातो	मुहूर्त्तमांतो
१२	५	अपरमत-स्थानके	अप्रमत्तस्थानके
१२	१०	भागे	भांगे
१२	९	चितवीत-भावने	चितवितभावने
१२	११	उत्सरपीणी अवसरपीणी	उत्सर्पिणि अवसर्पिणि
१३	६	क्षयोज्ञाप-समनी	क्षयोपसमनी
१३	११	पाम्या	पाम्या
१३	१०	क्षयोउपश-मभावे	क्षयउपशमभावे
१४	३	क्षयपसम	क्षयोपशम

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१४	४	क्षयवसम	क्षयोपशम
१७	६	मीथात्वने	मिथ्यात्वने
१७	७	चारीत्र	चारित्र
१७	१४	मीथात्ववसे	मिथ्यात्ववशे
१८	४	गउतमस्वा-मीए	गौतमस्वामीए
१८	२२	तेन	तेने
१९	१३	करीए	कहीए
२०	१	मीथात्व	मिथ्यात्व
२०	९	समकीतपक्षी	समकितपक्षी
२०	१०	मीथात्व	मिथ्यात्व
२०	१२	क्रीया	क्रिया
२०	११	यथारथ	यथार्थ
२०	१६	क्रीया	क्रिया
२०	२२	चारीत्र	चारित्र
२०	२३	क्रीयाने	क्रियाने
२१	१	चारीत्र	चारित्र
२१	३	चारीत्र	चारित्र
२१	३	मीथात्वपक्षी	मिथ्यात्वपक्षी
२१	८	मीथात्वपक्षी	मिथ्यात्वपक्षी
२२	५	क्रीयाने	क्रियाने
२२	५	चारीत्र	चारित्र
२२	८	चारीत्र	चारित्र
२२	९	चारीत्र	चारित्र
२२	१०	स्थीरपणु	स्थिरपणु
२२	१२	क्रीया	क्रिया
२२	१३	चारीत्रनी	चारित्रनी
२२	१४	चारीत्रनी	चारित्रनी
२२	१९	क्रीया	क्रिया
२३	१	रुजुसुत्र	ऋजुसूत्र
२३	३	रुजुसुत्र	ऋजुसूत्र
२४	३	मीथात्वी-जीव	मिथ्यात्वीजीव
२४	४	"	"
२४	६	"	"
२४	१२	स्थीती	स्थिति
२४	१३	स्थीतीवतने	स्थितिवर्तने
२४	१९	अपुरवकरण	अपूर्वकरण
२४	२०	स्थीती	स्थिति
२४	२३	स्थीतीछे	स्थितिछे
२५	२	स्थीती खपावे	स्थिति खपावे
२५	३	स्थीतीछे	स्थितिछे
२५	५	स्थीती खपावे	स्थिति खपावे
२५	५	चारीत्र	चारित्र
२५	७	स्थीतीछे	स्थितिछे
२५	८	स्थीती	स्थिति
२५	१९	महुर्तमाही	मुहूर्त्तमाही
२६	१	महुर्त	मुहूर्त्त
२६	१५	अपुर्वकरण	अपूर्वकरणे
२६	१६	महुर्त	मुहूर्त्त
२६	१६	मीथात्व	मिथ्यात्व
२६	१८	महुर्त	मुहूर्त्त
२६	२०	मीथात्वमो-हनीना	मिथ्यात्वमो-हनीना
२६	२२	महुर्तना	मुहूर्त्तनी
२६	५	अंतहकरणमां	अंतःकरणमां

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२६	८	महुर्त	मुहूर्त
२७	३	मीथात्व	मिथ्यात्व
२७	७	दर्सनमोह-नीना	दर्शनमोहनीनो
२८	१४	गुणपर्यायनी	गुणपर्यायनो
२८	२१	ते पुरुसोमा	ते पुरुषो
२८	२३	सदगुरु	सद्गुरु
२८	२३	सनमुख	सन्मुख
२८	३	आगता	सरागता
२८	४	आगताना	सरागताना
२८	४	प्रेरयो	प्रेर्यो
२९	१	चतुरवधि	चतुर्विध
२९	२	दवादस	द्वादश
२९	३	,,	,,
२९	८	सस्त्र	शस्त्र
३१	२	अदतदान	अदत्तादान
३१	५	एवी	एवीं
३१	१२	ए वेमायी	ए वेमार्थी
३२	१४	मगावची	मगावत्री
३२	२२	वीचारवा	विचरवा
३२	२१	अहीत छ	अहित छे
३४	१४	आभक्षमा	अभक्ष्यमा
३४	१८	पनर कर्मा दान	पन्नरकर्मादान
३५	१३	त्रण भेद थाय छे	त्रण भेदे थायछे
३५	७	सदस्रुतप-णामां	सद्भुतपणामां
३५	१६	चारीत्ररायनो	चारित्ररायनो
३५	१७	तो चारीत्र-रायनी	ते चारित्ररा-यनी
३५	२०	अचुत	अच्युत
३६	१	चारीत्रराये	चारित्रराये
३६	३	एमवीरती	एमविरती
३७	७	क्रीयासो	क्रिया ते
३७	१०	कीया करेछे	क्रिया करेछे
३७	११	क्रीया	क्रिया
३७	११	क्रीयामा	क्रियामां
३७	१३	छेध्यो छे	छेद्यो छे
३७	१६	अजवीमानी	अटवीमा
३७	१८	माहादीक	मोहादिक
३८	६	चारीत्ररायनी	चारित्ररायनी
३९	९	कहीए	करीए
३९	२१	यथारथ	यथार्थ
४०	७	मीथात्वमो-हना	मिथ्यात्वमो-हना
४०	९	फरस	स्पर्श
४०	१७	रजुसूत्र	ऋजुसूत्र
४०	१८	मनजो	मनजोग
४०	२२	रजुसूत्र	ऋजुसूत्र
४४	२३	प्रेरयो	प्रेर्यो
४५	२७	पन्नरसु	पन्नरसु
४६	१७	क्रीयामा	क्रियामां
४६	१९	ओघामा	ओघामां
४६	२३	मीथात्व	मिथ्यात्वशल्य

पृष्ठांक	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
४६	२३	मीथात्व	मिथ्यात्व
४७	७	मीथात्वमो	मिथ्यात्वते
४७	९	मीथात्व	मिथ्यात्व
४७	९	मीथात्वनु	मिथ्यात्वनु
४७	११	अशुभक	अशुभ
४७	१३	चारीत्रायनो	चारित्रायनो
४७	१३	स्थीतीनो	स्थितिनो
४७	१४	मीथात्व	मिथ्यात्व
४८	२	त्रटे	त्रुटे
४८	४	क्षहीए	कहीए
४८	५	अतीथीस वीभोगव्रत	अतीथिसंवि- भागव्रत
४८	११	चारीत्रबीज	चारित्रबीज
४८	१७	चारित्रजन होय	चारित्र नज होय
४८	१८	गीयछोय- विहारो	गीयथ्थोय- विहारो
"	"	गीयच्छ	गीयथ्थ
४८	१९	मणाओ	भणीओ
४९	१६	पत्नर	पन्नर
४९	२२	यथारथ	यथार्थ
५०	१०	चारीत्र	चारित्र
५२	१०	सगट	सघट्ट
५३	३	दोषेण	दूषणे
५३	७	परमारजीने	प्रमार्जीने
५३	८	परीठवणीया	पारीठवणीया
५३	१२	"	"
५३	१८	महुतम	मुहूर्त्तमां
५३	२२	"	"
५४	२१	अतदकरणे	अतःकरणे
५६	४	उत्सरपीणी अवसरपीणी	उत्सर्पिणि अवसर्पिणि
५६	१६	मीथा त्वना	मिथ्यात्वना
५६	१८	मीथात्वनु	मिथ्यात्वनु
५६	२	महुर्त्त	मुहूर्त
५६	३	मीथात्व	मिथ्यात्व
५७	६	तेन	तेने
५७	६	मीथात्वी	मिथ्यात्वी
५७	२२	मीथ्यात्वी	मिथ्यात्वी
५८	२	सर्व	सर्व
५८	२१	अपरमते	अप्रमत्ते
५९	३	अनरमहुर्तनो	अंतरमुहूर्त्तनो
५९	५	मीध्यातत्वनी	मीथ्यात्वनी
५९	१३	भाग	भांगे
६१	४	तेन	तेने
६१	२०	चा०अपेक्षाए	चारित्र अपेक्षाए
६२	११	परिठवर्णाया	पारिठवणीया
६३	११	परिठवणीआ	पारिठवणीया
६३	१२	परमारथ	परमार्थ
६४	२	एनीरवरती	ए निवृत्ति
६४	१९	नवग्रीवेकन- मीले	नवग्रैवेयकन- मळे
६५	६	भव	भाव
६६	१९	नवग्रीवेक	नवग्रैवेयक

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१७	अदर्गतचिंतव्य	तद्गतचिंतव्य
६७	४	तु अनादी	तु अनादि
६७	२२	अतःहकरणे	अतःकरणे
६८	५	फरस	स्पर्श
६८	१३	मोरछा	मूर्च्छा
६८	२१	”	”
६९	१०	”	”
६९	१६	आवलानो	आविलनो
७०	६	कुरउगुरु	कूरगडु
७१	१३	मर्षदानी	पर्षदानी
७२	१९	मोर्छीत	मूर्च्छित
७३	८	तरणे योगीनी	त्रणे योगनी
७३	८	भीन्नता	भिन्नता
७३	११	अवश्यवक्ता	अवश्यवक्तता
७३	१८	एक आभव	एक आभवनो
७३	२०	लाभ छे	क्षोभ छे
७४	१४	आमाने	एमने
७४	२०	असत्तथाय	असत्य थाय
७५	१	चडेछे	चढेछे
७५	७	मोर्छा	मूर्च्छा
७५	८	मोर्छा छे	मूर्च्छा छे
७५	१६	पन्नर	पन्नर
७६	५	उणोद्री	उणोदरी
७६	१३	वळी	वळी
७६	१८	मजं	मज्ज
७६	१८	निद्राविकेहा	निद्राविकहायो

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
७७	१४	कालवेखते	काल वखते
७७	१९	आवलु आपसे	आवेलु आपशे
७७	२२	स्थुति	स्तुति
७८	१६	उष्न	उष्ण
७८	२०	सश्रुरखा	सुश्रुषा
७९	१८	करवी	करवी ने
७९	५	सलीनता	संलीनता
७९	६	अतहःकरण	अतःकरण
७९	९	जोग	जोगे
७९	१२	जोग	जोगे
७९	१२	फरणाए	स्फुर्णाए
७९	१३	अतहःकरण	अंतःकरण
८०	११	मुगतीआर	मुखत्यार
८०	२२	तहेतसामि	तहत्तिसामी
८१	१	सतभाषा	सत्यभाषा
८१	६	तेना वीनय	वीनय तेना
८१	७	चारीत्र	चारित्र
८१	१८	उपज	उपजे
८१	२१	अतहकरणे	अतःकरणे
८२	८	दसभेद	दसभेदे
८३	१०	साधुनु	साधुनु
८३	२३	नीःसकीत	निःसकित
८४	१२	वच्छु	वच्छु
८४	१२	वरतुनो	वस्तुनो
८५	१	वध्वसण	विध्वसण
८५	३	वीखरछे	विखरेछे
८५	८	लाकानो	लोकनो
८५	१४	तने	तेने

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
८५	१७	मीथ्यात्व	मिथ्यात्व
८५	१९	चारीत्रमय	चारित्रमय
८६	१३	अभिलाप स्वभाव	अभिलाप्य-स्वभाव
८६	१३	अनभिलाप स्वभाव	अनभिलाप्य स्वभाव
८६	२०	चारीत्रमय	चारित्रमय
८६	२१	स्थीर	स्थिर
८७	३	क्रीयाना	क्रियाना
८७	४	चारीत्रमय	चारित्रमय
८७	९	सो स्थीर	ते स्थिर
८७	१०	नोंखा नों-खा छे	नोंखो नोंखो छे
८७	१५	गुणगणप्रत्ये	गुणगुणप्रत्ये
८८	७	नीरंजनआ-त्मा	निरंजन आत्मा
८९	२	यथारथ	यथार्थ
८९	७	द्रव्यास्तीक	द्रव्यास्तिक
८९	१५	ज्यातिए	ज्योतिए
९०	९	व्याकपणे	व्यापकपणे
९०	१७	प्रदेशनोघन	प्रदेशनो घन
९०	१९	ससारमेंछे	ससारमाछे
९०	२२	सहित आ-त्मा	रहित आत्मा
९२	२	अर्ग्नीमानही	अग्निमा बळे नहीं
९२	५	चीन	चिह्न
९२	६	चीने करीने	चिह्ने करीने
९२	१०	करतातो	धर्तातो
९३	१८	नर्कगत	नरकगति
९३	१९	नरुगत	नरकगति
९४	३	अनता	अनता
९४	८	केनीशलवछे	केनिराळरनछे
९५	४	आतमाछे	आत्माछे
९५	४	वस्तुनो	वस्तुनो
९५	६	फरसने	स्पर्शने
९६	२१	स्थीर	स्थिर
९६	२३	आतमा	आत्मा
९७	१७	पण	पणए
९८	१२	उर्द्धलोक	ऊर्ध्वलोक
१००	१०	औरवतक्षेत्र	ऐरव्रतक्षेत्र
१००	१५	वे औरवत क्षेत्रछे	वे ऐरव्रत क्षेत्रछे
१०१	८	औरवत	ऐरव्रत
१०२	१५	सुर्यछे	सूर्यछे
१०४	१८	ससारीजीव	ससारीजीव
१०६	७	भव्यपणु	अभव्यपणु अभव्यपणु
१०६	९	परिणमता	परिणमतो
१०७	४	दर्शनावर्णीये	दर्शनावर्णीय
१०७	२१	नि शकपणे	नि शकपणे
१०८	८	फरसतो	स्पर्शतो
१०९	१७	पर्यायार्थिक	पर्यायार्थिक
१०९	२१	पचेंद्रियनो	पचेंद्रियनो
११०	४	सपतिपेदतो	सपतिपदेतो
११५	८	माखीना	माखी [illegible]

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
११६	९	क्रिया	क्रिया
१२०	१६	सजिपचेद्रि	सञ्जिपचेंद्रि
१२०	२१	चेतनना अ- भावे	चेतनाना अ- भावे
१२१	२१	सर्वक्षेत्रे	सर्वक्षेत्रे
१२३	११	क्रोध	क्रोध
१२५	६	कतो	कातो
१२७	१०	आत्माजे क- रे छे	आत्माज करे छे
१२८	२२	द्रष्टात	ए द्रष्टात
१२९	५	कुळाचारन	कुळाचारने
१४५	१३	सातपर्यायछे	सात पर्यायछे
१४८	४	सामाच्ये	सामान्ये
१५३	२०	पवर्त्तन	प्रवर्त्तन
१६५	२१	पर्याथार्थिक	पर्यायार्थिक
१६७	२०	परिणमता	परिणमतां
१७४	१४	इद्रिनोईद्रि	इद्रिनोइद्रिनो
१७७	४	केहीये	कहीये
१७९	५	परोक्षस्पष्ट	परोक्षस्पष्ट
१९०	१०	अनादि सात	अनादि सांत
१९४	२३	सामथ्य	सामर्थ्य
२००	२३	उर्ध्वगातः	उर्ध्वगति
२०५	१०	गीतारथना	गीतार्थना
२२७	१२	उघोवेनो	उद्योतनो
२२८	२०	अतमुहुर्त	अंतर्मुहूर्त
२२८	२१	,,	,,

उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळ महात्म्य ग्रथनु शुद्धि पत्रक.

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२४७	९	सवानवमा- सेपूर्ण	नवमास अने चार दिवस
२५३	२२	नामकर्मनो जीनवधनो	जीननामकर्म- बधनो
२५५	१	धुवेवा	ध्रुवेवा
२५५	१०	द्वादशागी	द्वादशागी
२५५	१६	मार्ग	मार्ग
२५७	१७	अनिवृत्तिगु- णठाणे	अनिवृत्तिकरणे
२५८	११	रीखवदेव स्वामीना अधिकारमा चोरासी सहस्र साधु पछी त्रण लाख साध्वी वधारी लेवु	
२५८	११	त्रण लाख पावहजार श्रावक	त्रण लाख पचास हजार श्रावक
२५९	४	सयोगे हतो	सयोग हतो
२५९	८	सर्वे छे	सर्वे छे
२५९	११	सर्वमा छे	सर्वेमां छे
२५९	१६	समकित	व्यवहार समकित
२६३	९	पाच लाख त्रीजहजार	पाच लाख त्री- सहजार
२६४	१२	बेलाखस- तावनहजार	बेलाखसतावन हजा

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२७६	१६	पोणोपल्या पम	पोणोपल्योपम
२७८	१९	छत्रीससा- गरोपम	त्रीससागरोपम
२८३	२१	अढलक धन	अढळक दान
२८४	१	देहेरा	देहेरा
२८४	५	तरमता	तारतमता
२८९	९	व्याकण	व्याकरण
२९०	१४	सुरारस	सुधारस
२९०	१८	जाए	जाण
२९३	९	१९०९	१९१५
२९५	१६	तिमिरोध- कार	तिमिरोधकार
२९७	९	जतु हेतु	जतु हतु
३००	१०	मोहपल्लिना	मोहपल्लिये
३११	४	तेनो	तेने
३१२	२०	गतिय	गतिये
३१७	८	जाणवा	जाणवा नहीं
३१९	२१	देवागनानी	देवांगनानी
३२३	१९	तिर्यंचपचेंद्रि अने सन्नि	तिर्यंचपचेंद्रि सन्नि
३२५	१८	दासीने	दासीनै
३२७	१	थायाथाय	थाय
३२८	२१	तेत्रीख	तेत्रीस
३२९	१९	तेना	तेमा
३३०	७	भागे	भागे
”	”	”	”
३३०	१९	प्रत्यके	प्रत्येक
३३१	७	देवगतिमा	देवगतिमा
३३२	३	तिरियगते	तिरियवगते
३३१	१३	पज्जतले	पज्जतपे
”	२१	जिनेश्वर	जिनेश्वरु

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
३३२	२३	तळे	टळे
३३३	१	१५	१३
३३३	३	१६	१४
३३३	५	१७	१५
३३४	६	आदिशब्द	आदिशब्दे
३३४	८	ऋद्दिनी	ऋद्धिनी
३३४	१८	स्फुर्णाओ	स्फुर्णाओये
३३५	१३	बादरदष्टि	बादरदृष्टि
३३६	१२	जेणे	जिणे
३३६	१५	तेणे	तिणे
३३७	३	आत्मस्वप- रमा	आत्मस्वरूपमा
३३७	५	वलीचालछि	वली चालोछे
३३९	१	जा करहु	जो करहु
३३९	१३	प्रत्यक्ष	प्रत्यक्ष
३३९	२२	सायछे	क्षायछे
३४२	११	गवेपण	गवेपणा
३४४	१७	करी	कही
३४६	२	रिपयक्त	विपयरक्तपणे
३४६	२३	नपातो	नपावै
३४७	११	जावत्यागी	भावत्यागी
३४९	१	अचेनता	अचेतनता
३५२	१४	विभोगी	विभागी
३५३	७	सासत पर- मात्मा	साक्षात् परमात्मा
३५५	७	रहित छे	सहित छे
३५५	१९	सुतांमग	
३५६	७	सुणडे	
३६१	१७	प्रदेशे	
३६४	९		